लोकनायक

मुरलीधर व्यास

स्मृति ग्रन्थ

बालचद साँड
वास्ते लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रन्थ
प्रकाशन समिति, कलकत्ता

लोकनायक

मुरलीधर व्यास

स्मृति ग्रंथ

स भवानी शकर व्यास 'विनोद'

संस्करण अक्टूबर 1990

मूल्य एक सौ एक रुपये मात्र

प्रकाशक
बालचंद सोढ
वास्ते लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रंथ प्रकाशन समिति कलकत्ता

सम्पर्क
द्वारा संगीता टेक्सटाइल्स एजेंसी
178 महात्मा गांधी रोड (पांचवी मंजिल)
कलकत्ता 700 007

वितरक
जगदीप बिस्सा
शिव ट्रेड हाउस
न्यू सकुलर मार्केट बीकानेर 334 001

आवरण व सज्जा
अमित भारती

मुद्रक
सोखला प्रिण्टर्स
चन्दन सागर बीकानेर

Loknayak Murli Dhar Vyas Smriti Granth
(Biography edited by B S Vyas) Rs 101 00

अपना कुछ भी नहीं

लोकनायक मुरलीधर व्यास का स्वर्गवास हुए अब 19 वर्षों से अधिक का समय बीत चुका है। उनकी मृत्यु के तत्काल बाद जिस पीढ़ी ने जन्म लिया, उसमें से अधिकांश ने आम चुनावों में अपने प्रथम मताधिकार का प्रयोग भी कर लिया है यानी एक पूरी वयस्क पीढ़ी समाज के सामने आ चुकी है। इस पीढ़ी ने मुरलीधर व्यास को काया रूप में कभी नहीं देखा। हाँ, उनके बारे में बहुत कुछ सुना है और उनकी मूर्तियों से प्रेरणा भी ली है। इस पीढ़ी के सामने भी यदि आदर्श नेता की बात उछाली जाए तो पहला नाम जो जुबान पर आएगा वह मुरलीधर व्यास का ही होगा। पुरानी पीढ़ी के लोगों ने तो व्यासजी को अपने सुख दुख के साथी के रूप में खूब देखा परखा था दीन दलितों के लिए जूझते देखा, विधान सभा में गरजते देखा, जनसभाओं में हुंकारते देखा, आन्दोलनों में गिरफ्तार होते हुए देखा, केस पकड़ कर घसीटे जाते और लाठियाँ खाते हुए भी देखा। 1948 से 1971 तक के 23 24 वर्षों का परिदृश्य उनकी स्मृति-पटल में आज भी इतना सजीव और मार्मिक है कि मृत्यु की घटना या उसके बाद के 19 वर्ष भी उसे विस्मृति की ओर नहीं धकेल सकते।

लोग कहते, 'यह व्यक्ति गरीबी में रहा, गरीबी में जीया और गरीबी में मरा लेकिन मन से कभी गरीब नहीं रहा। मानवीय मूल्यों की अपार सम्पत्ति का खजाना हमेशा उसके पास रहा। जब तक जीया, चर्चित रहा। आज भी 'जीवित' नेताओं से कहीं अधिक चर्चित है।'

लोकनायक व्यास को देश के कर्णधारों का सान्निध्य मिला। बचपन में महात्मा गाँधी के वर्धा आश्रम के निकट के नवजीवन विद्यालय में पढ़ते समय उन्होंने गाँधीजी के खूब दर्शन किये, उनके प्रवचनों को सुना। वहाँ आने वाले नेताओं—सुभाष, नेहरू, विनोबा, जाकिर हुसैन, श्री मन्नारायण आदि से प्रभावित हुए और फिर राष्ट्रीय नेताओं के निकट सम्पर्क में आते गये। उनकी प्रतिभा को पहचानने वालों में प्रमुख थे—आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, अरुणा आसफ अली, प्रेम भसीन, अशोक महता, नाथ प, एन जी गोरे और समरगुहा आदि। साथी थे—चन्द्रशेखर मधु दण्डवते, सुरेन्द्र मोहन, समरेन्दु कुन्दु एवं अनेक ऐसे नेता जो आज की राजनीति के दिव्य नक्षत्र हैं। अपने दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के तो वे जीवन पर्यन्त सदस्य रहे। राजस्थान विधान सभा में विरोधी दल के नेता के रूप में उन्होंने जो दस्तावेजी कार्य किये, वे अब इतिहास का अंग बनने जा रहे हैं।

इन सभी कार्यों को करते हुए भी उन्होंने न तो मन में कटुता रखी और न वैयक्तिक विद्वेष को ही अपने जीवन का अंग बनाया। मूल रूप में वे 'राजनेता' थे ही नहीं। उनके जीवन का अध्याय तो संवेदना की स्याही से लिखा हुआ था। वे एक नाट्य लेखक और रंगकर्मी थे, कवि, कलाकार और पत्रकार थे, अच्छे वक्ता, और व्याख्याकार थे और सबसे ऊपर वे एक श्रेष्ठ इंसान थे। उनका फक्कड़पन भी लुभावना था। एक साथ कई ध्रुवों पर संघर्ष करते हुए भी वे 'अजेय' थे। प्रखर विरोधी के भी मन से मित्र थे अतः अजातशत्रु थे।

इस ग्रंथ में मेरा कोई विशेष अवदान नहीं है। मैंने तो सैकड़ों-हजारों लोगों की भावनाओं को पिरोया भर है। कईयों की भाषा और भावों को यथावत् उद्धृत किया है। उनके पत्रों, चित्रों और दस्तावेजों को आधार बनाया है। मौखिक साक्षात्कारों और अनौपचारिक वार्ताओं के आधार पर घटनाओं के तिथिक्रम को व्यवस्थित रूप दिया है। इसके अलावा मेरा कोई योग नहीं है इस ग्रंथ में। हाँ, यह चेष्टा अवश्य रही है कि किसी भी व्यक्ति का न तो चरित्र हनन हो, न उस पर व्यक्तिशः लांछन लगाया जाए। बात जब मुरलीधरजी की करनी है तो दूसरों को लांछित करने या हेय सिद्ध करने का अधिकार हमें किसने दिया? अपनी ओर से ऐसा प्रयास मैंने कभी नहीं किया। जो कुछ लिखा, उद्धृत किया या संकलित किया वह सब पत्रों, दस्तावेजों और साक्षात्कारों के मूल शब्दों पर आधारित है।

अब रही धन्यवाद की बात। स्व. मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रंथ प्रकाशन समिति के अनथक प्रयासों से यह ग्रंथ सामने आया है। व्यासजी के शिष्यों का इसमें विशेष अवदान है। सैकड़ों लोगों ने मौखिक वार्ताओं, साक्षात्कारों, संस्मरणों और दस्तावेजी सामग्रियों से हमें सहयोग दिया है। ये सब धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही उन सभी ज्ञात, अज्ञात व्यक्तियों के प्रति भी हम कृतज्ञ हैं जो मुरलीधरजी के व्यक्तित्व के सम्मोहन से जुड़े हुए हैं और चाहते हैं कि ऐसा ग्रंथ तत्काल सामने आए जो उनके 'नेता' के अमरत्व को रेखांकित कर सके।

ऐसे ग्रंथों में कमियाँ होती हैं और आगे भी रहेंगी। मुरलीधरजी जैसे लोकनायक पर जितनी बातें कही जाती हैं उनसे कहीं अधिक अनकही रह जाती हैं। जो व्यक्ति लोगों के आख्यानों और संस्मरणों में जीवित हो, उसके व्यक्तित्व और कृतित्व पर 200 तो क्या 2000 पृष्ठ भी लिखे जाएँ तो भी कुछ न कुछ तो ऐसा रहेगा जो लिखने से रह गया हो। ऐसी कमियाँ हमें और अधिक लिखने के लिए उत्प्रेरित करती हैं तथा और अधिक ग्रंथ सामने आते हैं। यही तो हमें अभीष्ट है।

यह कहना मेरी अतिरिक्त विनम्रता नहीं कि ग्रंथ में जो भी कमियाँ हैं वे मेरी अपनी हैं। एक इच्छा अवश्य है कि सुधी पाठक कमियों की ओर ज्यादा ध्यान न देकर भावना की ओर देखेंगे।

—सम्पादक

अनुक्रम

न।—
के अन्वषी है,
के पथिक हैं और
पर चलत हुए
के लिए तैयार रहते हैं।

बिम्ब-बिम्ब चैतन्य

लोकनायक मुरलीधर व्यास का नाम लेते ही जो बिम्ब बनता है वह आस्था, विश्वास एवं निष्ठा के व्यक्तित्व का बिम्ब है। बीकानेर की जनता के लिए व्यासजी समाजवादी आंदोलन के प्रतीक भी थे और पर्याय भी। इससे थोड़ा आगे बढ़कर कहें तो उनका नाम सत्य और ईमानदारी का निर्भीकता और त्याग का सेवा और परोपकार का पर्याय था। वे उन लोगों के लिए भी आस्था का केन्द्र थे जिन्होंने समाजवाद का नाम शायद पहली बार सुना था। लोग उनकी बातों से आश्वस्त होते थे क्योंकि वे जानते थे कि व्यासजी जो कुछ कहते हैं वह सच ही होता है। वे राजनीति में सत्य के पक्षधर थे अतः साफ सुथरी और बेबाक राजनीति करते थे। छल छद्म दुराव और दोगलेपन की राजनीति उन्हें रास नहीं आती थी।

आज राजनीति का जो विकृत रूप हमारे सामने आया है व्यासजी उससे एकदम अलग थे। उनकी बातों में न तो राजनीतिक क्षुद्रता की गंध आती थी और न वे राजनीति के घटिया खेल खेलते ही थे। उनके लक्ष्य स्पष्ट विचार सुलझे हुए तथा साधन पवित्र थे। एक चरित्रवान राजनेता के रूप में उन्होंने राजनीति में ईमानदारी चारित्रिक निष्ठा एवं सत्य के अध्याय जोड़े। दूसरे शब्दों में कहें तो उन्होंने राजनीति को विश्वसनीय बनाया।

व्यासजी का एक पारंपरिक समाज में कार्य करना था। वे उसकी सीमाओं रूढ़िगत आस्थाओं और दुर्बलताओं को जानते थे। वे जानते थे कि शताब्दियों तक सामन्ती व्यवस्था में रहने वाले लोगों में कुछ बंधी बंधाई धारणाएँ होती हैं। देवपूजा सामन्तपूजा और पुरानी मान्यताओं की अंधश्रद्धा उनके रक्त में घुल मिल गई है। ऐसे समाज को समाजवादी विचारधारा की ओर ले जाना लोक जागृति के लिए जन जन को जुझारू संघर्ष के लिए तैयार करना और फिर अधिकारों के प्रति निरन्तर सचेष्ट बनाये रखना एक बहुत ही कठिन कार्य था। व्यासजी ने इस कठिन कार्य में भी सफलता प्राप्त की। वे पारम्परिक समाज में जागृत लोक चेतना के केन्द्र बन गये।

यह बात नहीं कि बीकानेर के लोग संघर्ष करना जानते ही नहीं थे। राज सत्ता के समर्थन के साथ साथ राजतन्त्र के विरोध की समानान्तर धारा भी यहां चलती रही

की। इस विचारधारा के प्रतीक थे बाबू मुक्ताप्रसाद जिन्होंने सार्वजनिक व लोक कल्याण कार्यों से चेतना का श्रीगणेश किया था। उन्होंने औषधालय, वाचनालय, प्याऊ तथा शिक्षण संस्थान सरीखी संस्थाओं के माध्यम से जन कल्याण के कार्य किए तथा युवा शक्ति को जोड़कर उसे जागरूक बनाया। असहाय और निर्धन जनों के मुकदमों की निःशुल्क पैरवी करना, राष्ट्रीय नायक वीरों की जयंतियाँ मनाना और इस प्रकार स्वतन्त्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करना उनका लक्ष्य था। जागरूक राज्य सत्ता ने उन्हें निर्वासित कर दिया। आजादी की मशाल को जलाए रखने का कार्य फिर भी जारी रहा। यह संग्राम एवं रघुवरदयाल गोयल जैसे अनेक लोगों ने उस लोक चेतना को जीवित बनाए रखा। पर यह सब स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले की कहानी है।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में मूल्यों की तरह रिश्तों में भी परिवर्तन आया। सामन्ती राज तो चला गया पर सामन्ती संस्कार फिर भी बने रहे। बाबू मुक्ताप्रसाद जैसे पुरोधा और योद्धा अब नहीं थे। जो रह गए उनमें से कुछ सत्ता पक्ष की ओर उन्मुख हो गए और कुछ संन्यास की ओर। एक जबरदस्त रिक्तता थी। एक ऐसी रिक्तता जो भटकाव को जन्म देती है। स्वभाव से सत्ता की ओर रहने वाला पारम्परिक समाज ऐसे समय में सहज ही भटकाव में आ सकता है। ऐसा भी लगा था पर तभी उसकी तंद्रा एक झटके के साथ टूट गई और वह झटका देने वाले थे स्वर्गीय लोकनायक मुरलीधर व्यास।

व्यासजी को लोगों ने सहज रूप में तत्काल ही स्वीकार लिया हो—ऐसी बात भी नहीं थी। लोगों ने उनकी 'विलक्षणता' को देखा परखा, कभी विस्मय किया तो कभी सन्देह। विस्मय इस बात का था कि जो व्यक्ति सादे व्यवहार में इतना सहज, सरल और साधारण हो वह सत्ता के फौलादी पंजों को तोड़ने में कैसे सक्षम हो सकता है? और सन्देह इस बात का था कि वर्षों से आये इस अपरिचित अनजाने व्यक्ति का साथ देना कहाँ तक ठीक रहेगा? फिर जब सन्देह निर्मूलित होने लगा तो विश्वास अंकुरित हुआ। विश्वास से आस्था और आस्था से अनुसरण की प्रवृत्ति जगी और अनुसरण भी इस हद का कि जिस भी आन्दोलन का आह्वान होता हजारों हजारों लोग स्वतः ही उमड़े पड़ते थे। विस्मय से अनुसरण तक की यह लम्बी यात्रा बीकानेर के इतिहास के लगभग दो युगों की यात्रा है।

व्यासजी इतने सरल स्वभाव के थे कि साधारण से साधारण आदमी भी उन्हें अपना समझता था और इतने असाधारण थे कि सत्ता के शक्तिशाली केन्द्र भी उनसे संकोच करते थे। विचारों के इतने प्रखर थे कि सैकड़ों प्रलोभन भी उन्हें डिगा नहीं

मक्त थे और व्यक्तिगत सम्द था म स्तन मधुर भी थे कि विराधियो के प्रति भी उनके मन म काई कटुता नहीं थी। अपने विरोधी विचारधारा के व्यक्तियो के घरेलू समाराहा म बिना झिझक के आ-जा सकते थ पर मचा पर या विधान सभा म उनकी बखिया उधेडने म भी सबस आगे रहत थे। ये बिंदु परस्पर विराधाभास के लग सकते हैं पर उनका समग्र व्यक्तित्व इन्ही सब से मिलकर बना था। लोक व्यवहार म मक्खन की तरह कामल दिखने वाला यह व्यक्ति भ्रष्टाचार के आरोप लगाते समय वज्र से भी अधिक कठोर दिखाई देता था।

वे एक राजनीतिक दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी क सदस्य थे—पर दल के 'टलटल' से फिर भी दूर थे। दल की भीतरी गुटबंदिया म उनका कोई विश्वास नहीं था। उनम सगठन कौशल की अद्भुत क्षमता थी। जिन लागो ने उन पर व्यक्ति वादी होने का आरोप लगाया वे भी जानते है कि जितने अधिक राजनीतिक कार्यकर्त्ता व्यासजी ने दिये उतने वे सब मिल कर भी नहीं दे सकते। व्यासजी द्वारा तैयार किये हुए कार्यकर्त्ता आज भी विभिन्न दलो सगठनो एव सस्थाओ म सक्रिय रूप स कार्यरत हैं। उन्होंने ऐस ठोस कार्यकर्त्ता तैयार किय जो न आदोलना म डरते हैं न जल जाने से न डर कर समझौता करते हैं और न सच्चे माग स विचलित ही होते हैं। राजनीतिक चेतना के लिए जिस मानव शक्ति की जरूरत होती है वह व्यासजी न दी उसे आदालित भी किया और उद्वेलित भी। उस खराद पर चढ़ाया अग्नि परीक्षा म तपाया और खरा सोना बनाया।

व्यासजी का युग राजस्थान म सत्ता म सक्रिय सघर्ष का युग था। उ होने आन्दोलनो की एक शृखला सी चलाई। वे मानते थ कि आदोलन जनशक्ति का और अधिक प्रखर करते हैं उसम और अधिक आत्म विश्वास भरते हैं। गृह निकासी आन्दोलन गोवा आन्दोलन जामसर जिप्सम मजदूरो का आन्दोलन दूध निकासी आदोलन तो मुख्य हैं ही टेके ताग वालो ठेले वाला सरकारी कर्मचारियो विद्यार्थियो रेल्वे कर्मचारियो टक्सी और टक वाला कारखानो के मजदूरो मध्य-अल्प आय व्यापारियों साधारण उपभोक्ताओ से लेकर वकीलो व अन्य बुद्धिजीवियो तक को उन्होने आन्दोलित किय गया। सत्ता पर समझ गया कि व्यासजी के रहते हुए वह भ्रष्ट आचरण नहीं कर सकता और यदि भ्रष्ट आचरण करते पकड़ा गया तो फिर विरोध की सशक्त आवाज और आन्दोलन की तीखी धार स नही बच सकता।

व्यासजी कठिन परिस्थितियो म भी अविचलित रहते थ। घटनाओ का दबाव उन्हें भटका नहीं सकता था। उनके बच्चो की रोटी पर कई बार बिलावो की नजर थी पर उन्होंने कभी समर्पण नहीं किया। भूख की आच न उनको और अधिक

रूप बनाया। हजारों बेघर लोगों के हकों की रक्षा करने वाले व्यासजी अपने लिए एक छोटा सा घर भी नहीं बना सके। हर बच्चे की शिक्षा के लिए लड़ने और जेल जाने वाले व्यासजी अपने बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा का प्रबंध तक नहीं कर पाये थे। जिसका एक पग घर में और एक जन मंच के लिए बेताब हो उससे भला और क्या अपेक्षा की जा सकती है?

विधान सभा में वे चाहे अकेले हों अथवा विरोधी सदस्यों के साथ विरोध करते। वे नेता ही रहे। वे अकेले ही राज्य सत्ता को हिलाने में काफी थे जब और विरोधी दल भी साथ देते तब तो उनकी शक्ति स्वतः ही कई गुणा हो जाती थी। विधान सभा में उनकी सिंह गर्जना अध्यक्ष तक एवं पुलिस आरक्षक इस तरह छाये रहते कि मंत्रिगण मंत्री रूप में उपेक्षा करने की हिम्मत तक नहीं कर सकते थे। राजस्थान भर के समाचार पत्रों ने उनके वक्तव्यों को हमेशा सुविधा के साथ छापा। प्रदेश के सभी लोगों ने उनमें एक सफल लोकनेता की झलक देखी। क्रांतिधर्मी लोगों ने उनको रहनुमा माना और साधारण जनता मजदूरों और मध्यम श्रेणी के लोगों ने उनको समीप के रूप में लिया।

व्यासजी आत्मीयता, सहृदयता एवं अपनत्व के प्रतीक थे। उनकी मधुर मुस्कान, स्निग्ध वाणी, सहजता और प्रेम भावना विरोधियों को भी दिल जीत सकती थी। लोक सेवा उनके जीवन का एक मात्र ध्येय था और लोक जागरण उनका अभीष्ट। अपने सेवापरक और निष्ठापूर्ण जीवन से वे अपने आप में एक संस्था बन चुके थे। वे एक मिसाल थे जिसे आने वाले कई युग अपने सामने रखा करेंगे। व्यासजी ने व्यक्तियों को वर्गों, धर्मों अथवा संकुचित विचार वीथियों में बांट कर नहीं देखा। धर्म निरपेक्षता उनके लिए श्वास की तरह स्वाभाविक प्रक्रिया थी तो लोकतंत्र हृदय के स्पंदन की तरह जरूरी तथ्य। जुल्मों का प्रतिकार करने में वे सदैव अग्रणी रहते थे पर व्यक्ति के कुकर्मों से घृणा करते हुए भी स्वयं व्यक्ति से घृणा नहीं करते थे। वे उत्पीड़ित एवं दलित लोगों के त्राता थे। हर आंख का आंसू पोंछने में तत्पर रहने वाले और हर पीड़ित के हिमायती थे। ऐसे व्यक्ति शताब्दियों में जाकर पैदा होते हैं और जब कभी सामने आते हैं—आने वाली कई शताब्दियों के लिए प्रेरणा के स्रोत बन जाते हैं।

उगते सूरज की साख

व्यासजी न जीवन के कुल 53 बस त ही देखे । जितनी अनुभव यात्रा उ होने इस छोटे से जीवन म की उतनी बिरल लाग ही कर पाते हैं। वे कवि कलाकार रगकर्मी नाटक लेखक व्यायामविद शिक्षक समाजसेवी एव राजनेता तो थे ही मानव मूल्या के पापक और त्यागवृत्ति वाले अपरिग्रही मत भी थे। परिव्राजक क रूप म उन्हाने गाव गाव की परिक्रमा की, प्रदेशा म घूम घूम कर भारत दर्शन किया तथा विदेशो की यात्रा भी की। गरीब की झोपडी मे लेकर राज प्रासादा तक उनकी पहुच थी। जहा मजदूर से मिलन व खुद दौड कर जात थ, मिल मालिक को उनस मिलन क लिए स्वय आना पडता था।

महात्मा गाधी जस महान नेताओ क सम्पक म तो वे बचपन म ही आ गय थे। उनको सुभाषचद्र बोस जयप्रकाश नारायण एव राममनोहर लोहिया जसे क्रातिकारी नेताओ का सानिध्य भी प्राप्त हुआ। एक दशक तक बीकानेर नगर का राजस्थान विधान सभा म प्रतिनिधित्व किया तेईस वर्षो तक प्रतिपक्ष व सघष की राजनीति को सम्बल दिया प्रा तीय स्तर पर दल के अध्यक्ष और म त्री रह तथा राष्ट्रीय कायकारिणी क सदस्य भी बन रह। गौरव मण्डित होकर भी व पूणत सहज सरल निस्पह निरभिमानी एव सब सुलभ थ। त्याग उनका मूल म त्र था तो फक्कडपन उनका स्वभाव। वे मुस्कानें लुटाते थ प्रेम से दिल जीतते थ और विरोधिया तक का अपना बनाने म सिद्ध हस्त थ। 53 वष की उम्र वस तो बहुत छोटी है पर ऐसी विशाल अनुभव सम्पदा को देखत हुए मानव का महानता को आकन क लिए म पर्याप्त है।

व्यासजी का जन्म 4 जुलाइ 1918 का हिंगनघाट नगर म हुआ। यह महा राष्ट्र राज्य क वधा जिल म स्थित है। मध्यम श्रेणी के ब्राह्मण कुल म जन्म लेकर समाजवाद की अलख जगान वाल इस महान नेता का शशव हिंगनघाट म ही बीता। पिता श्री सूरजकरण जी व्यास स जहा उन्होन सकल्प की दढता आर सिद्धान्त प्रियता सीखी वहा माता श्रीमती कस्तूरी देवी स पारम्परिक सस्कार भी प्राप्त किय। पाचवी कक्षा उत्तीण करन क बाद व्यासजी हिंगनघाट स वधा आ गय। छठी स मट्रिकुलशन तक की शिक्षा उ होन मारवाडी विद्यालय वधा म ही

प्राप्त की। यहा उन्हे हास्टल म रहना पडता था—घर स दूर परिजना स दूर ममता क स्नेहिल वातावरण स दूर पर व्यासजी ने जल्दी ही अपन आपको होस्टल क वातावरण म ढाल लिया। नन्हें नन्हें बालका के रूप म उन्हें नय नय मित्र मिले—हम उम्रा का समूह मिला और शीघ्र हा घर जसा वातावरण बन गया। होस्टल क जीवन का सबस बडा सुख यह था कि वहा महात्मा गाधी क दशनो का लाभ सहज म ही मिल जाता था। इसी नव भारत विद्यालय क पास स्थित महिला आश्रम म महात्मा गाधी रहा करत थ। विद्यालय एव छात्रावास पर महात्मा गाधी की विचारधारा का प्रखर प्रभाव था। सारे छात्र खादी के वस्त्र पहनत तथा दश प्रम क गीत गुनगुनाया करत थ। काग्रस सेवा दल क बडे सदस्या की नकल करत हुए व भी अपने छाटे–छाटे सवा दल बनात ब दे मातरम् गात झण्डे को सलामी दते तथा माचपास्ट किया करत थ। इस लघु समार क रचाव म व्यास जी का बडा भारी यागदान था।

गाधीजी वर्धा म भी रहत थे और इसी कारण वर्धा देश विदेश के आकषण का केद्र स्वत ही बन गया। देश क प्राय सभी प्रख्यात नता शिक्षाविद एव समाज सुधारक वहा आते और महात्माजी से मत्रणा किया करत थ। उनम पडित नहरू आचाय कृपलानी जमनालाल बजाज पट्टाभि सीतारामय्या विनोबा भावे काका साहब कालेलकर किशोर लाल मश्रुवाला श्रीयुत् श्री कृष्णदास जाजू कुमारप्पा एव आय नायकम् आदि प्रमुख थ। एक बार सुभाष बाबू भी वहा आय थ उ होन हिन्दी म भाषण दिया था। व्यासजी क जीवन का स्वत ही एक दिशा मिलती जा रही थी। उनका बीज– व्यक्तित्व विकासमान अकुरण की ओर बढन लगा था।

विद्यालय और छात्रालय (छात्रावास) म वड बडे नेताआ क भाषणा का आयाजन किया जाता। काग्रस क गम और नम दल वाल नेताआ के अतिरिक्त समाजवादी विचारका क भाषण भी हाते। व्यासजी उन विचारका क भाषण सुनते, अपनी बालबुद्धि स उनका मूल्याकन करत तथा उनम से जो अनुकूल हाता उसे अपनी विचारधारा का अग बना लेत। यह क्रम निर तर चलता रहा। विद्यालय म उन्हे श्री दामलेजी व छात्रालय म श्री भिडे का माग दशन प्राप्त हुआ। व्यासजी विद्यालय क ता कप्तान थ ही छात्रालय म भी व वर्षों तक कप्तान रहे। विद्यार्थी साथियो म वे इतन अधिक लोकप्रिय थ कि उनक स्थान पर किसी अय का कभी नही चुना गया। जब तक व छात्रालय म रह कप्तान ही बन रहे। श्री गणश शुक्ल भिडे छात्रालय क अधीक्षक थ। उनकी इच्छा थी कि चुनाव हो तथा नया कप्तान बन पर छात्र व्यासजी के अतिरिक्त किसी और को चाहते ही नहा थ। अत कोई परिवतन नही हा सका। कप्तान क रूप म उ होने कभी

किसी छात्र की शिकायत नहीं की। उनकी स्वयं की कार्य प्रणाली ऐसी थी कि शिकायत का अवसर आ ही नहीं सकता था। छात्र स्वतः ही अनुशासित थे अतः स्वतः स्फूर्त प्रेरणा से कार्य करते थे। अधिकारीगण भी आश्वस्त थे कि व्यासजी के रहते अनुशासन की कोई समस्या नहीं आ सकती।

अपने सुगठित शरीर एवं आकर्षक व्यक्तित्व से उन दिनों भी वे लोगों को प्रभावित करते थे। छात्रालय में रहते हुए उन्होंने लाठी व तलवार चलाने का अभ्यास किया। कुश्ती में दक्षता प्राप्त की तथा तैरने में कुशलता हासिल की। वे हर कार्य विशिष्ट योग्यता की सीमा तक किया करते थे। लाठी चलाते समय वे अकेले होते तथा बीस पच्चीस छात्र सामने होते। सबको छूट थी कि वे व्यास जी पर लाठियों का मनचाहा वार करें पर व्यासजी थे कि चक्रावार लाठी चलाकर सबको परास्त कर देते थे। जब साइकिल चलाने की कला सीखी तो उनमें भी विशिष्टता का प्रदर्शन ही किया। वे एक साथ 14-14 छात्रों को बिठा कर साइकिल चला सकते थे। आगे पीछे की खूंटियोंपर आगे पीछे के मडगाडों पर हैण्डल पर कंधों पर एक दूसरे के सहारे से खड़े बैठे 14 छात्र एक ही साइकिल पर चलते तथा ऊपर बैठे छात्र जयहिन्द बोलते। बड़ा ही रोचक दृश्य बनता था।

व्यासजी कुश्ती के भी शौकीन थे। भिन्न भिन्न प्रकार के दावपेच सीखना नियमित दंड बैठकें लगाना अखाड़े में साथियों को ललकारना आदि उनका नियमित क्रम था। एक बार उनकी कुश्ती अपने से दुगुने वजन और डील डौल के लड़के से रख दी गई। लड़का हिंगनघाट का ही था। वर्धा में आयोजित इस कुश्ती ने आकर्षण और कुतूहल का एक ऐसा वातावरण बनाया कि सैकड़ों लोग कुश्ती देखने एकत्रित हो गये। लोग सोचते थे कि व्यास जी अवश्य हारेंगे क्योंकि कुश्ती जोड़ की नहीं थी। बराबरी की जोड़ होती तो बात और थी पर यहां तो दुगुने वजन और डील-डौल का पहलवान सामने था। कुश्ती शुरू हुई और ज्यों ज्यों दाव पेच होने लगे लोगों का विस्मय भी बढ़ने लगा। व्यासजी अनेक दाव पेचों में सिद्धहस्त थे। अतः मौका पाकर उन्होंने विपक्षी पहलवान को ऐसा उठा कर फेंका कि लोग देखते ही रह गये। इस कुश्ती से व्यासजी का आत्म विश्वास और अधिक बढ़ गया। आगे जाकर जीवन में उन्हें कई क्षेत्रों में कई भारी भरकम पहलवानों से जूझना पड़ा तथा लोग जानते हैं कि व्यासजी ने कभी मैदान नहीं छोड़ा।

मेला म उनका विनोद स्थान सभ्य ही बना रहा । अन्य बातो के अलावा वे एक अत्यन्त ही कुशल तराक और फुटबाल के उत्तम खिलाडी भी थ । पानी म घण्टा तरना एक छोर स दूसरे छोर तक तरते हुए निकल जाना ऊचाई स पानी म कूदना शवासन की मुद्रा म बिना हिले डुले काफी समय तक पानी म पड रहना आदि उनके लिए बायें हाथ का खल था । फुटबाल म भी उन्होन अपनी टीम की कप्तानी की थी ।

व्यासजी को सर्वाधिक प्रेरणा अपने गुरुओ से मिली । सौभाग्य स उन दिनो नव भारत विद्यालय राष्ट्रीय गतिविधियो का केन्द्र बना हुआ था । उसके प्रधानाचाय थ श्री ई डब्ल्यू आयनम् जो विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टगोर के सचिव भी रह चुके थे । श्री नायकम् मूलत श्रीलका के निवासी थ । अपने नाम के आग आय नाम लगाकर व आय नायकम् बन गये थे । उन्होने एक बगाली महिला आशा देवी स शादी की । श्री नायकम् जहा भी भाषाओ के ज्ञाता थे श्रीमती आशा नायकम अग्रेजी व संस्कृत म दक्ष थ होने के साथ साथ संगीत के क्षत्र म भी विशेष योग्यता रखती थी ।

जिन अन्य महिलाओ न व्यासजी को अत्यधिक प्रभावित किया उनम सरला बेन एव शाता बेन प्रमुख थी । य दोनो विदेशी महिलाए महात्मा गाधी के आश्रम म रहती और अतिरिक्त समय म नव भारत विद्यालय म अध्यापन भी करती थी । सरला बेन वाणिज्य एव बाल क्रीडाओ के कालाश लेती थी । शाता बेन जो मूलत जमन महिला थी बच्चो को हाकी खेलना सिखाया करती थी । इस तरह श्री आय नायकम श्रीमती आशा आय नायकम सरला बेन शाता बेन छात्रालय के अधीक्षक श्री गणश हरि भिडे एव विद्यालय म श्री दामले जस समर्पित व्यक्तियो के कुशल नतत्व एव अध्यापन म व्यासजी का विकास हुआ । देश के नताओ के निरतर सम्पर्क स उनकी चेतना को सदव स्फूर्ति मिलती रही तथा समाजवादी एव क्रातिधर्मी नेताओ के ओजस्वी भाषणो का उन पर अमिट प्रभाव पडा । बचपन की एसी प्रयोगशाला म स निकला यह किशोर एव नक्षत्र की तरह चमत्कृत हुआ जिसका मूल श्रेय नव भारत विद्यालय के वातावरण को ही है ।

शिक्षा मण्डल की व्यवस्था श्रीयुत् श्रीकृष्णदास जी जाजू अध्यक्ष श्री जमनालाल जी बजाज की देख रेख म करत थ । नव भारत विद्यालय उसी का अग था । त्याग मूर्ति श्री बजाज खोज खोज कर प्रतिभा सम्पन्न लोगो को उस विद्यालय म लाया करत थ । उन्ही दिनो श्रीयुत् श्री म नारायण अग्रवाल मारवाडी शिक्षा मण्डल के मत्री बन कर आये । अपने प्रखर राष्ट्रवादी विचारो स श्री अग्रवाल ने भी छात्रो को

अत्यधिक प्रभावित किया । वे एक प्रमुख शिष्य गान्धी के । [illegible]
में वे विदेशों में भी व्याख्यान कर चुके थे । [illegible]
की शादी सेठ जमनालाल बजाज की द्वितीय पुत्री [illegible]
का आयोजन गांधीजी के वर्धा आश्रम के निकट [illegible]
गया । सारा प्रबंध स्वयं सेवकों के हाथों में था । [illegible]
श्री मुरलीधर व्यास ही थे ।

इस शादी का वर्धा के जन जीवन पर परिवर्तनकारी प्रभाव [illegible] । [illegible]
पर्दे बिना घूंघट के और बिना किसी आडम्बरी [illegible] । [illegible]
वातावरण में वर-वधू ने परस्पर मालाओं का आदान प्रदान किया [illegible] महात्मा
गांधी का आशीर्वाद प्राप्त किया ।

सेठ जमनालाल बजाज एक समर्पित भावना के व्यक्ति थे । [illegible] का
भवन उन्होंने ही बनवाया था तथा सारी व्यवस्था का भार उनके कंधों पर [illegible] ।
बजाज परिवार से व्यासजी का घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया । सेठ जमनालालजी [के]
पुत्र रामकृष्ण बजाज तो व्यासजी के सहपाठी ही थे । व्यासजी के [illegible]
प्रसंगों में वे व्यासजी के साझीदार थे ।

इधर व्यासजी का विद्यार्थी काल चल रहा था और दूसरी ओर देश में आजादी
के आन्दोलन का दौर दिन दिन तेज होता जा रहा था ।

1937 से 1942 तक का समय भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास का
तीव्र आन्दोलनकारी समय था । 1937 में ही अनेक राज्यों में कांग्रेसी सरकारों
का गठन सम्भव हुआ । कुछ अन्य राज्यों में मुस्लिम लीग की सरकारें भी बनी ।
अत्यन्त ही सीमित अधिकारों एवं निरंकुश ब्रिटिश [illegible] के अधीन कार्य
करने वाली ये सरकारें अधिक समय तक नहीं टिक [सकीं] । अन्त उनका विघटन
हुआ । एक बार फिर आन्दोलन ने जोर पकड़ा । बीच-बीच में समझौते भी होते रहे ।
इसी दौरान द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया । अंग्रेजों ने महात्मा गांधी का समर्थन
चाहा ताकि भारतीय सैनिक युद्ध में भेजे जा सकें । महात्मा गांधी ने स्वतन्त्रता
प्राप्त करने की शर्त पर समर्थन देना स्वीकार किया [illegible] अंग्रेजों के विश्वास
घात से वे इतने अधिक तिलमिला उठे कि उन्होंने 9 अगस्त 1942 को अंग्रेजों
भारत छोड़ो की ऐतिहासिक घोषणा कर [दी] । [illegible] जेलों में ठूंस दिये
गये-लाठी चार्ज आंसू गैस और गोलियों की [illegible] एक बार पुन
प्रदर्शित की गई ।

इस एतिहासिक विप्लवी युग म श्री मुरलीधर व्यास 1936 स 1941 तक नव भारत विद्यालय के छात्र रहे। देश म ऐसी युग परिवतनकारी घटनाएँ घटती रहें और व्यासजी जस सवेदनशील छात्र अप्रभावित रह यह कस हो सकता था। गाधीजी का जादू तो उन पर था ही वे समाजवादी विचारका स भी बहुत प्रभावित थ। इस बहुआयामी प्रभाव न भी उनक व्यक्तित्व म भिन भिन सोपान जोड़े।

1937 म श्री आय नायकम् क प्रयत्ना स नव भारत विद्यालय म एक अखिल भारतीय बुनियादी शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री प्रफुल्लचन्द्र राय न की। उसम मुख्य अतिथि का दायित्व निर्वाह किया डाक्टर जाकिर हुसन न जो कालान्तर म भारत के राष्ट्रपति बन। महात्मा गांधी द्वारा उद्घाटित इस सम्मेलन न देश म प्रचलित शिक्षा प्रणाली क समानान्तर बुनियादी शिक्षा प्रणाली का प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव के अनुसार विद्या मन्दिर की स्थापना की गई। नई तालीम सघ का गठन हुआ। भारत क प्राय सभी शीष नता इस अवसर पर उपस्थित थ जिनम पंडित नहरू सरदार पटल और मौलाना आजाद मुख्य थ।

नयी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य था कि शिक्षा सवसुलभ हो—अनिवाय प्राथमिक शिक्षा सभी का प्राप्त हो शिक्षित लोग देहाता म जाकर अन्य लोगा का शिक्षित करें—वे जीवन को स्वावलम्बी बनाने म समथ हा तथा श्रम के प्रति निष्ठा प्रतिष्ठापित हो सक। व्यासजी न भी इसी शिक्षा प्रणाली का ग्रामीणो म प्रचार प्रसार किया।

व्यासजी के जीवन पर श्री आय नायकम् क चरित्र का गहरा प्रभाव पडा। श्री नायकम् नवभारत विद्यालय का शान्ति निकतन जसा शिक्षा क द्र बनाना चाहते थ। उन्होन प्रधानाचाय बनत ही स्कूल म बत का प्रचलन बन्द कर दिया। विद्यालय का समय परिवतन करके प्रात कालीन पारी म व्यायाम अनिवाय कर दिया। जल्दी उठन नियमित काय करने के आदश स्वय क उदाहरण व आचरण स स्थापित किय तथा विद्यार्थियो म राष्ट्रीय भावना का सचार किया। विद्यार्थी व्यायाम के पश्चात नींबू और चना का सवन करत। सारी व्यवस्था किशोर छात्र मुरलीधर व्यास के कन्धा पर थी। नायकम् चाहत थ कि इस विद्यालय के छात्र आगे जाकर नौकरी के चक्कर म नही पडें। स्वावलम्बन से अपना स्वय का धन्धा शुरू कर सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति क लिए उ होने विद्यालय म मिट्टी क खिलौने बनान सिलाई करने बढई का काय करने साबुन बनाने कागज बनान आदि कई

उद्योगा का प्रशिक्षण दिया । भूगोल और इतिहास का ज्ञान सिनेमा स्लाइडस की विधि से देने का प्रयोग भी किया जाता । स्लाइडस के माध्यम से खेती करन की नवीन विधियां का भी ज्ञान दिया जाता ।

उन्ही दिना इस विद्यालय म स्पन के श्री फिशर भी आये जो द्वितीय महायुद्ध मे अपन दश की नीति स नफरत करने के कारण भारत आ गये थे । वे खेलकूद के प्रभारी थे । व गाधीजी क पास आश्रम म रहते तथा छात्रो को खेलकूद की विशिष्ट शिक्षा देते थ । श्री फिशर प्रत्यक काय अपन हाथ से करत । व्यासजी पर उनका भी अनुकूल प्रभाव पडा । आगे जाकर अमरावती म जो प्रशिक्षण उन्हाने लिया उसके पीछे श्री फिशर जसे व्यक्तियो की प्रेरणा ही थी ।

कालान्तर म नवभारत विद्यालय के भवन म गोविन्दराम सक्सरिया वाणिज्य महाविद्यालय आ गया । विद्या भवन अन्यत्र स्थानान्तरित हो गया । स्वावलम्बी विद्यालय मारवाडी विद्यालय आदि अनक स्कूल एक अन्य स्थान पर सवश्री दामल एव गणश हरि भिडे आदि की स्वतन्त्र कमटी के अधीन सचालित हाते रह । जो आज भी चल रह है ।

श्री गणेश हरि भिड तो अधीक्षक थ ही । श्री नबदा प्रसाद केवलिया उप अधीक्षक एव प्रधानाध्यापक बनाये गये । आजकल श्री केवलिया वर्धा म शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय के प्रधानाचाय हैं । व्यासजी क सहपाठियो म रामकृष्ण बजाज, नबदा प्रसाद केवलिया, बलीराम वनमाली गोपीकृष्ण टावरी अयोध्या प्रसाद धाडक नथमल व्यास, विठठल व्यास एव लक्ष्मण सिंह यादव के नाम उल्लेखनीय है । स्वर्गीय श्री बलीराम वनमाली वर्धा म वाणिज्य महाविद्यालय क प्रधानाचाय रह चुक हैं । श्री गोपीकृष्ण टावरी नागपुर के प्रसिद्ध एडवोकेट रहे हैं । श्री लक्ष्मण सिंह यादव न व्यासजी क साथ कई बार अखाडो म जोर किया था । कुश्ती के शौकीन श्री यादव आजकल वर्धा म रहते हैं । वर्धा के इन साथियो म एक उल्लेखनीय नाम सीमान्त गाधी खान अब्दुल गफ्फार खान के पुत्र वलीखान का भी है । वलीखान का व्यासजी स बडा ही आत्मीय सम्बन्ध रहा । यह सम्बन्ध वलीखान क पाकिस्तान चल जान क बाद भी बना रहा ।

खेलकूद के क्षत्र म व्यासजी की अभिरुचि प्रारम्भ स ही थी । उनके शरीर म इतनी स्फूर्ति और शक्ति थी कि व बाहु स बधी हुई साकल का जोर लगाकर तोड देत थ । उन्हान कई बार शारीरिक क्रियाओ के रोमांचक प्रदर्शन भी किये । रिंग बनाकर उसम आग लगाना और धधकती आग म कूद कर पुन निकल आना उनके लिए बहुत ही आसान काम था ।

विद्याध्ययन के बाद उ ग्गा अमरावती म सल्कूर का विनय प्रशिक्षण प्राप्त किया। हनुमान व्यायामशाला अमरावती म व्यलेस्टिग के प्रशिक्षण म शिक्षारवय तर अर्जित सलकूर कौशल म और अधिक विकास हुआ। आग जाकर उ हान स्टोर होम (स्वीडन) म इण्टरनेशनल समर काम हुए स्वडिश जिम्नास्टिक्स म भी भाग लिया। उनकी विरत यात्रा का विस्तृत वृत्ता त आग के अध्याय म है।

कार्यकारी जीवन म प्रवश करन पर व्यासजी न सवप्रथम सोरनराम रामप्रसाद मिल्स लिमिटेड म सहायक टाइम कीपर के रूप म काय करना शुरू किया। यह सन 1941 की बात है। रुचि का काय न हान स व वहां अधिक समय नहीं टिक सके और उस छोडकर अध्यापक बन गय। उ होन कुछ दिना अरोला म अध्यापन किया। बाद म विद्या मदिर वर्धा म अध्यापक बन। उ ह तत्कालीन प्रधानाध्यापक श्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री क नतृत्व म काम करन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री अग्निहोत्री हि दी क उद्भट विद्वान ह। व भोपाल विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रह चुके हैं।

1942 म व्यासजी न अपन ज म स्थान हिंगनघाट म भी अध्यापन का काय किया। उनके द्वारा स्थापित राजस्थानी मण्डल उन दिना काफी लोकप्रिय हुआ। छात्र छात्राओं क अतिरिक्त वयस्क नागरिक भी लाठी सीखन यहां आया करत थ।

एक ही जीवन क्रम म भिन्न भिन्न रुचियां के कई अध्याय साथ साथ चलते रह। सभी अपन आप म विकासमान भी बन रह। यह बात विस्मयजनक भले ही हो पर सत्य है। व्यासजी का जीवन इसी विभिन्नता व सर्वविकास प्रक्रिया का एक ज्वलन्त उदाहरण है। शारीरिक शिक्षा म श्रव्य न ही कुशल व्यक्ति साहित्य जगत म भी उसी कौशल एव सृजनशीलता का निवाह कर—यह कम ही देखन को मिलता है। व्यासजी के जीवन म बहुआयाम स्पष्ट प्रतीत होता था। कवि नाटककार कथालेखक एव स्तम्भलेखक के रूप म उ होन अपन क्षेत्र म प्रसिद्धि प्राप्त की। उनके कई नाटकों का मचन भी किया गया। उनम सर्वाधिक चर्चित नाटक था भारत माता' जिसन हिंगनघाट व वर्धा के जन जीवन म तहलका मचा दिया। 1942 के आन्दोलन के दिनों म यह नाटक हिंगनघाट म खेला गया। भारत की आजादी व क्रान्ति का आह्वान करन वाला यह नाटक तत्कालीन सत्ता के लिए असह्य बन गया। नाटक म भारत माता का बेडियों म जकडा हुआ दिखाया गया तथा क्रान्तिकारी पुरुष व नारी पात्रों न अपने सवादों म विदेशी सत्ता को उखाड फेंकने का आह्वान किया। नाटक नगर भर म चर्चा का विषय बन गया, गुप्तचर लोग उसके मूल लेखक व पार्श्व प्रणेता को खोजने म लग गय। व्यवस्था न उस नाटक को प्रतिबंधित कर दिया। नाटक स्वय व्यासजी का ही लिखा हुआ

था। उ होन अपने विद्यार्थी जीवन म कई नाटक मचित किय जिनम जयद्रथ वध नतवीर कण वीर अभिम यु गरीब किसान और गोरा व भारत माता आदि प्रमुख थ। गरीब किसान और गोरा भी यासजी का लिखा हुआ नाटक था। कण अभिम यु अथवा अजुन के रूप म यासजी की भूमिका सदव सराहनीय रहती थी।

1942 का वष जहा पूरे देश के लिए चेतना का शखनाद था वहा व्यासजी के मानस पर भी परिवतनकारी सिद्ध हुआ। इसी वष वे गाधीजी के आह्वान पर जेल गय। फिर तो जल जान का सिलसिला कुछ एसा बना कि जीवन भर जेल यात्राए जसे उनके स्थायी टाइमटेबुल का अग ही बन गई। अन्य बातों के अतिरिक्त व्यासजी पर यह आरोप भी था कि व ट्राटेस्की व बोल्शेविक पार्टी के कागज पत्र रखते है। गाधी जी क हैंडबिल्स बाटत हैं तथा प्रतिबधित गतिविधियों म भाग लेत हैं। जल यात्रा न उनके मनोबल को और अधिक प्रखर किया—अग्रेजों के विरुद्ध उनकी घृणा और अधिक तीव्र व घनीभूत बन गयी।

रगकर्मी क रूप म व्यासजी चाहत तो फिल्मों के सवाद लेखक व गीतकार भी बन सकते थ, पर ऐसा नहीं हो सका। उन्होंने भारत माता नाटक पर आधारित एक फिल्मी कहानी भी लिखी। प्रसिद्ध अभिनेता किशोर साहू ने जब उस कहानी को पढा तो व इतने प्रभावित हुए कि उस कहानी को पृथ्वीराज कपूर को दिखाया। किशोर साहू चाहत थ कि व्यासजी फिल्म क्षत्र म आ जायें और पृथ्वी थियेटर म काय करना शुरू कर दें। बाद म अन्य क्षेत्र भी खुलत चल जायगे। स्वय पृथ्वी राज कपूर ने पृथ्वी थियेटर म काय करने का प्रस्ताव व्यासजी स किया था। राष्ट्रीय चेतना स जुडे होने क्राति म विश्वास करन सक्रिय राजनीति म आकर अग्रेजी सत्ता के विरुद्ध प्रचार करत रहने आदि की धारा इतनी प्रबल प्रखर थी कि उसके आग फिल्मी जीवन का यह प्रस्ताव टिक नहीं सका। घर वाले भी इसक लिए सहमत नहीं थ। व्यासजी के साथियों न भी विरोध किया।

फिल्म जीवन व्यासजी जसे जीवट और सघषशील व्यक्तित्व के लिए सचमुच ही कम उपयुक्त रहता ? उनके सादगी भर जीवन को देखकर तो सोचा ही नहीं जा सकता कि फिल्मी जीवन के प्रति उनक मन म कोई स्थान भी रहा होगा। अन्तत एक सजग और जुझारू लोक नता क रूप म वे राजनीति के पटल पर जीवन पयन्त छाय रहे।

प्रथम आम चुनाव से पहले

आजादी के शंखनाद के साथ ही साथ भारतीय जनमानस में एक नयी चेतना का सचरण हुआ। लोगों ने स्वतन्त्रता की आरती उतारी नवराष्ट्र के निर्माण के लिए नये संकल्प लिये तथा हुतात्माओं के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए शपथ लेकर देश को आगे बढ़ाने के दृढ़ निश्चय दोहराये। देश आजाद हुआ। पर राजस्थान में अभी भी रियासती शासन प्रणाली चल रही थी। राजाओं के शासन का अन्त नहीं हुआ था। सामन्ती सरकार राजतन्त्र के प्रति दृढ़ लगाव व निपट भाग्यवाद के सहारे जीने वाले अनपढ़ लोग अब भी आशा लगाये हुए थे कि बीकानेर में राजगद्दी बनी रहेगी। 15 अगस्त 1947 से 30 मार्च 1949 तक का समय राजस्थान के लिए ऐतिहासिक उथल पुथल का काल सिद्ध हुआ। दोनों तिथियाँ अपने आप में महत्वपूर्ण थी। जहाँ 15 अगस्त 47 को हम अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने में सफल हुए वहीं 30 मार्च 1949 को राजस्थान के निर्माण के साथ रियासती सत्ता की टिमटिमाती अंतिम ज्योति भी बुझ गई। लोग सदियों की दासता से मुक्त हुए।

लोकनायक मुरलीधर व्यास लोक चेतना के इसी बदलाव के ऐतिहासिक काल में बीकानेर आये। 1948 में बीकानेर आते ही वे सर्वप्रथम पुष्करणा विद्यालय में अध्यापक बने। उनके एक शिष्य श्री सत्यनारायण पुरोहित के अनुसार एक अध्यापक के रूप में श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर की पुष्करणा स्कूल में आये। अध्यापक अनेक आये और चले गये लेकिन श्री व्यास ने अपनी अमिट छाप वहाँ के विद्यार्थियों पर छोड़ी। शाला के समय में जितना ध्यान छात्रों के अध्यापन कार्य पर देते थे उतना ही ध्यान वे शाला के अतिरिक्त समय में छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा देने में दिया करते थे। वे अध्यापक के वेश में सचमुच एक राष्ट्र निर्माता थे।

यह है पुष्करणा स्कूल के एक विद्यार्थी की भावना। जैन स्कूल के छात्र भी व्यासजी से अत्यन्त प्रभावित थे। पुष्करणा विद्यालय की सेवा के बाद जब वे जैन विद्यालय में अध्यापक बने तो उन्होंने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से अपने शिष्यों में राष्ट्रीय भावना का सचरण किया। शारीरिक अध्यापक होने के कारण

व शरीर सौष्ठव पुष्टता स्वास्थ्य एव उत्कृष्ट खेल भावना पर तो जोर देते ही थे, खेल खेल में ही राष्ट्रीय विचारों का आविर्भाव भी करते थे। प्रत्येक क्रीड़ा का अंतिम चरण 'जयहिन्द' के नारे के साथ समाप्त होता था। क्रीड़ा की चरम स्थिति में छात्र 'भारत माता की जय' का जयघोष भी किया करते थे।

व्यासजी के एक समर्पित शिष्य एवं सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री बालचन्द साड के अनुसार व्यासजी का सम्पर्क कई स्मृतियों को जीवन्त बनाये रखने वाला अनुभव था। याद आते हैं उन पाठशाला के वे दिन जब हम स्वर्गीय लोकनायक श्री मुरलीधर जी व्यास के शिष्य होने का सौभाग्य मिला था। हृष्टपुष्ट शरीर तेजस्वी मुखमंडल और भुजदण्ड वाले एक व्यक्ति को जब हमने खादी के चोले, धोती हाथ से सिली बनियान और चप्पलें धारण किये हुए देखा तो बरबस आकर्षित हो गये। उनकी मधुर मुस्कान मृदु व्यवहार और निष्कपट आचरण ने हमको इतना प्रभावित किया कि हमारे मन में सहज रूप से ही शिष्य भाव जागृत हो गया और लगा कि जैसे एक सच्चा गुरु मिल गया है। वे हमें आजादी के संघर्षों की कहानियां सुनाते देश भक्ति की बातें बताते और समाज के प्रति हमारे कर्त्तव्यों की चर्चा करते। समय बीतता गया और उसके साथ ही उनके प्रति छात्रों के मन में अंकुरित आस्था का पौधा भी बड़ा होने लगा।

आस्था का यह पौधा ही कालान्तर में एक विशाल वटवृक्ष बन गया जिसके नीचे शिष्य परम्परा पुष्पित और पल्लवित होती रही। श्री सत्यनारायण पुरोहित और श्री बालचन्द साड ने व्यासजी को केवल अध्यापक के रूप में नहीं वरन राष्ट्रीय भावना भरने वाले एक महान तपस्वी के रूप में भी याद किया है। खेलकूद अथवा अध्यापन तो साधन मात्र थे व्यास जी का साध्य तो राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार प्रसार ही था। भारत माता के प्रति उनके हृदय में जो अनन्य श्रद्धा थी वह उन्होंने अपनी विदेश यात्रा में जहाज के डेक पर से लिखे एक पत्र में भी व्यक्त की थी। उन्होंने यह पत्र अपने एक निकटतम सम्बन्धी श्री शिवकिसन बिस्सा को जुलाई 1949 में लिखा था।

पत्र का आंशिक उद्धरण इस प्रकार है
आज मैं यह पत्र तुम्हें जल जवाहर में बैठे बैठे लिख रहा हूं। इस समय हमारा स्टीमर अदन को पार करके लाल सागर से होता हुआ पोर्ट सय्यद बन्दरगाह की ओर जा रहा है।

'हम लोग 8 जुलाई को स्टीमर पर बैठे थे। जिस समय हम स्टीमर पर बैठे उस

समय सब साथियो के हृदय में आनन्द एवं उल्लास की लहरें हिलोरें ले रही थी। अन्यान्य दशों के नर नारी डेक पर अपने अपने सज्जनों को विदाई देने उपस्थित थे। हमारा दल एक विशेष प्रकार की वर्दी पहने डेक पर आया था। हम सबकी एक प्रकार की वेशभूषा डेक पर उपस्थित समस्त महानुभावों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। एकाएक सीटी हुई। लौह शृंखलाओं से बधा हुआ स्टीमर मुक्त हुआ और धीरे धीरे मन्द गति के साथ किनारे से विलग होकर सागर की लहरों में डोलता हुआ आगे बढ़ने लगा। हम सब साथियों ने वन्देमातरम् गीत एक स्वर में गाते हुए मातृभूमि से विदा ली। सचमुच विदाई का दृश्य अत्यन्त ही रोमस्पर्शी था। एक ओर विश्व दर्शन की अभिलाषा हृदय को आह्लादित कर रही थी तो दूसरी ओर मातृभूमि एवं स्वजनों का वियोग हृदय में एक गुमसुम सी वेदना भर रहा था।

व्यास जी ने लिंगियान्ट टीम आफ इण्डिया के तत्वावधान में लिंगियान्ट आरगनाइजिंग कमेटी स्टोकहोम द्वारा आयोजित शिविर में भाग लेने जाते समय में ये विचार व्यक्त किये थे। जो व्यक्ति मातृभूमि से विदाई से उसके हृदय की उत्कृष्ट राष्ट्र भावना का छोर कहाँ मिल सकता है? ईश्वर ने भी व्यास जी की भावनाओं के साथ न्याय किया तथा अपने शेष जीवन में उन्हें कभी भी मातृभूमि के वियोग की चरम पीड़ा नहीं उठानी पड़ी।

ऊपर तीनों दृष्टान्त एक बात की ओर इंगित करते हैं—व्यासजी चाहे अध्यापक हों अथवा प्रशिक्षणार्थी प्रथम पंक्ति के राजनेता हों अथवा समाज सेवी उनके हृदय का छलछलाता राष्ट्र प्रेम हर घड़ी हर पल हर स्थिति में सामने आता था।

व्यास जी के बीकानेर आगमन को न तो आकस्मिक घटना माना जा सकता है और न संयोग ही कहा जा सकता है। उनका पारिवारिक परिवेश इस नगर से ही जुड़ा हुआ था। व्यास जी का यज्ञोपवीत संस्कार यहीं हुआ। उनके दोनों चाचा सब श्री नाभन्तजी व्यास एवं किसन दत्त जी (जीवनदत्त जी व्यास के पिताजी) यहीं पर रहे। उनकी दादी का स्वर्गवास बीकानेर में ही हुआ। उनके व उनके बड़े भाई वंशीलाल जी के ससुराल भी यहीं पर थे। यह पारिवारिक कड़ी ही उन्हें बीकानेर खींच लाई। उनके पिता श्री सूरजकरण जी दत्तक पुत्र होने के कारण हिंगनघाट रहने लगे थे। यही कारण था कि मूलतः राजस्थानी होते हुए भी मुरलीधर जी एवं उनके तीनों भाई बचपन में हिंगनघाट में रहे।

बीकानेर में वे रोजगार के लक्ष्य से नहीं वरन सेवा भावना से आये। उन्होंने न तो कभी नौकरी पर अधिक ध्यान दिया और न परिवार के भरण पोषण को ही

सर्वोच्च प्राथमिकता दी। लगभग 24 वर्षो तक यहा रहने पर भी वे अपने लिए कोई मकान तक नही बना सके। किरायेदार के रूप म वे जगह जगह घूमते रहे कभी दफ्तरिया के चौक म रहे ता कभी बागडियो के मोहल्ले म रहे, कभी बेनीसर कुए पर स्थित किसी मकान म निवास किया तो कभी सुथारा की बडी गुवाड म आ गये। एक ही मोहल्ले मे दो दो तीन-तीन मकान उन्हें बदलने पडे थ। नगर के निवास स्थानो का यह यायावरीय जीवन यह परिव्रजन यह बार बार का बदलाव असुविधापूर्ण अवश्य था पर एक सेवाभावी फक्कड वृत्ति के व्यक्ति के लिए इसके अतिरिक्त और कोई चारा भी तो नही था।

व्यासजी के जीवन से जन स्कूल के प्रसग भी अविछिन्न रूप से जुडे हुए हैं। जन स्कूल के कायकाल न उनके जीवन को दो नये मोड दिये। एक तो वे उसी अवधि मे लोकनेता के रूप म प्रकट हुए और दूसरे उन्होने शिष्यो के रूप म एक ऐसा समूह पाया जो जीवनभर उनके साथ पाव से पाव मिलाकर चलता रहा। ये दोनो बिन्दु अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जन स्कूल म जब वे आये थे उस समय और बातो से अधिक एक अध्यापक थे। पर जन स्कूल स जब उन्होने विदा ली तो वे और बातो से अधिक एक लोकनेता बन चुके थे। अध्यापक स लोकनेता बनने तक की यह अल्पावधि की यात्रा ही उनके जीवन की अत्यन्त मुखर एव निर्णायक मोड सिद्ध हुई पर इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनका लोकनेता स्वरूप उनके अध्यापक स्वरूप का साथ लेकर चलता रहा। व नेता होते हुए भी गुरु गरिमा स सदा मण्डित रहे। उनके शिष्य उन्हें आज भी सच्चे गुरु की तरह ही याद करते हैं।

जब शिष्यो की बात छिड ही गई तो व्यासजी के बारे म किसी शिष्य की दृष्टि से ही बात को आगे बढाया जावे। व्यासजी के कई समर्पित शिष्य हैं—उनम से एक है श्री बालचन्द साड। स्मृतियो के वातायन को खोलते हुए श्री बालचन्द साड ने व्यासजी के व दिन याद किये जब वे जन स्कूल म शारीरिक शिक्षक थे तथा बच्चो को खेल खेल म राष्ट्रीय विचारधारा से जोडते रहते थ। श्री साड के शब्दो म उन दिनो के बिखरे बिखरे प्रसग इस प्रकार हैं— क्या भूलू क्या याद करू वाली स्थिति आ गई है। उस समय हम बच्चे तो थे ही स्वाभाविक रूप से हमारी रुचि खेलकूद कबड्डी साइकिलिंग अखाडेबाजी तरन आदि मे थी। सौभाग्य से श्री व्यासजी शारीरिक शिक्षा के अध्यापक थ। उनकी प्रेरणा स इन सभी क्षेत्रो म नय नये आयाम खुलने लगे। हमारी रुचि देशभक्ति के गीत नाटक और कविता क प्रति भी बढने लगी।

एक दृश्य याद आ रहा है—साइकिलिंग म निपुण व्यासजी एक साथ 13 बच्चो

को साइकिल पर चढ़ाकर साइकिल चला रहे हैं। अगले चक्के की खूटियों से हैण्डल पर पांव रखकर मैं व्यासजी के कंधे पर बैठ गया हूं। इसी प्रकार दूसरा बच्चा दूसरे कंधे पर बैठ गया है। दो बच्चे आगे की खूटियों पर और दो पिछली खूटियों पर–उनके हाथ व्यासजी के कंधों पर हमारे पांव आगे वाले बच्चे के कंधों पर–जहाज जैसा दृश्य है। एक बच्चा पीछे मडगार्ड पर और एक उसके कंधे पर खड़ा होकर हमारे कंधों पर हाथ रखे है। एक बच्चा साइकिल के हैण्डल पर और एक उसके कंधे पर हाथ फैलाये बैठा है। एक साइकिल के डंडे पर और एक अगले मडगार्ड पर हमारे हाथों को पकड़े हुए। तेरहवां बच्चा हमारे पांवों पर बैठा है। व्यासजी के कंधों पर बैठे हम दोनों के हाथ खुले हैं– व्यासजी साइकिल चला रहे हैं और हम सलामी दे रहे हैं। उपस्थित जन समुदाय की तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गूंज रहा है। याद आ रहा है कि वह दृश्य जैन पाठशाला के वार्षिक उत्सव का था।'

इसके साथ ही एक और दृश्य याद आ रहा है—हम कई बच्चे साइकिल चला रहे हैं—धीरे धीरे धीरे —स्लो साइकलिंग प्रतियोगिता। व्यासजी हमारे साथ साथ चल रहे हैं। सबसे पीछे रहने वाला बच्चा विजयी घोषित हुआ है।

उसी वार्षिकोत्सव का एक दूसरा दृश्य भी सजीव हो उठा। मैं और मेरे साथी बच्चे हाथों में जलती मशाल लिये प्रदर्शन कर रहे हैं। कभी वृत्ताकार होकर घूमर नृत्य जैसे और कभी साथिया (स्वास्तिक) जैसा दृश्य दर्शकों को बड़ा पसन्द आ रहा है। तालियों और वाह वाह की आवाजों से हमारे प्रदर्शन की सराहना हो रही है जो वास्तव में हमारे गुरु की प्रशंसा ही है। इस मशाल प्रदर्शन को बीकानेर की राजकीय फोर्ट हाई स्कूल के प्रांगण में व्यासजी ने हमसे प्रस्तुत करवाया था और काफी सराहना भी हुई थी।

व्यासजी उन दिनों हमें तैरना भी सिखाते थे। उनके साथ हमने तैरने का बहुत अभ्यास किया। वे बहुत ही कुशल तैराक थे। वे कभी पानी के अन्दर मछली की तरह तैरते कभी पानी की सतह पर सांस खींचकर शवासन की मुद्रा में किसी बच्चे को अपने सीने पर बिठाकर तैरते। वे ऊंचे स्थान से पानी में कूदने का अभ्यास भी कराते थे। मुझे अच्छी तरह याद है अभी कुछ ही साल पहले की बात है व्यासजी एक दिन मेरे (पुत्र) राजू को अपने सीने पर बिठाकर उसी शवासन की मुद्रा में काफी देर तैरते रहे। कोलायत के तालाब में यह दृश्य देखकर मैं तो घबरा सा गया था पर व्यासजी निश्चिन्त राजू (राजेन्द्र साड) को लिए हुए तैरते रहे।

उन दिनों की याद करते हुए व्यासजी के निर्देशन में खेले 'वीर अभिमन्यु' नाटक का एक दृश्य सामने आ रहा है। मैं अभिमन्यु की भूमिका में एक जोशीला संवाद बोल रहा हूं—दूसरे बच्चे भी बड़े जोशीले संवाद बोल रहे हैं। हम सभी हाथों में चमकीला रंग की हुई लकड़ी की तलवारें लिए हुए हैं। व्यासजी द्वारा निर्देशित यह नाटक बहुत ही पसन्द किया गया। मुझे याद है कि मैंने व्यासजी द्वारा निर्देशित कई नाटकों में हास्य कलाकार (कामेडियन) की भूमिका भी निभाई थी। उनमें से एक था 'भला भई गप्पी मेरा नाम'—बोल थे– चींटी चढ़ी पहाड़ पर नौ मन काजल सार। हाथी लीने हाथ में और उठ लिये फनकार। भला भई गप्प सुनो भाई सप्प सुनो भाई गप्पी मेरा नाम।'

नाटक के दृश्य के साथ यह भी याद आ रहा है कि व्यासजी हम उन दिनों कई कविताएं भी सुनाते थे। उनमें से कुछ उनकी स्वरचित थीं तो कुछ साथी कवियों की रचनाएँ भी थीं। एक कविता की पंक्तियां इस प्रकार हैं—

युग मुक्त कंठ से कहे मैं भी बदल गया,
तुम पृष्ठ क्यों नहीं खोलते इतिहास का नया ?
हर शब्द पंक्ति में लिखा नूतन विधान है
ज्वालामुखी लिए हुए हर नौजवान है।'

उन्हीं दिनों खेलकूद नाटक आदि के साथ व्यासजी हम लाठी चलाना भी सिखाते थे। दूसरे पर वार करना उसका वार रोकना और चक्करदार लाठी चलाकर बीसों लोगों की लाठियों के वार से अपने आपको बचाना आदि सभी तरह के करतब हम सिखाते थे।"

इन सभी गतिविधियों के साथ स्काउटिंग में भाग लेने का कार्यक्रम भी रहता था। हम कई बच्चों को स्काउटिंग की वर्दी में व्यासजी निवाड़ी मेले में व्यवस्था के लिए ले जाते थे।

व्यासजी के प्रेरक व्यक्तित्व के घनीभूत प्रभाव में आए एक शिष्य की भावनाएं ऊपर की पंक्तियों में हैं। अब जरा उनके साथी अध्यापकों की भावनाओं का आकलन भी कर लिया जाय तो उचित रहेगा। जैन स्कूल में 1931 से 1968 तक सेवा करने वाले अध्यापक श्री सूर्य भानु गुप्ता ने बताया कि "व्यासजी शारीरिक शिक्षा के अध्यापक बनकर जैन पाठशाला में आये थे। उस समय उनका शरीर अत्यंत ही सुगठित था। दीप्त मुखमंडल विशाल भुजदण्ड पुष्ट जंघायें भरा भरा शरीर एवं कसी कसी मांस पेशियां सब मिलाकर उनके तन को एक सुगठित आकार दे रहे थे। छात्रों पर उनका आत्यंतिक प्रभाव व सहकर्मियों में आत्मीय भाव विशेष उल्लेखनीय है।'

वे बताते हैं- यासजी जब जन स्कूल म आये पहले श्री पृथ्वीराज एव बाद म श्री ज्वालाप्रसाद गुप्ता प्रधानाध्यापक थ। विद्यालय के सचिव थ श्री शिवबक्श कोचर नियमो के अत्य त पाब द एव निपट अनुशासनप्रिय व्यक्ति थ । नियमो म जरा सो ढील भी उ ह रुचिकर नही थी । यासजी की सक्रिय राजनीतिक गतिविधिया विद्यालय की प्रक्रियाओ से मल खा ही नही सकती थी । एक तरफ था आदोलन उद्वेलन सभाओ एव जनजागरण हेतु जेल यात्रा का क्रम तथा दूसरी ओर था आचार सहिता स सम्पूण प्रतिबद्ध श्री शिवबक्श कोचर का व्यक्तित्व । यासजी का जन स्कूल से पृथक होना पडा । उनका निष्कासन इ ही दो ध्रुवा के निता त विरोधाभास की चरम परिणति ही था । लेकिन शानदार बात यह थी कि इस निष्कासन ने दोनो के हृदया (शाला मत्री व यासजी) म जमे पारस्परिक स्नेह व श्रद्धा के अकुरण को मुरझान नही दिया । आग जाकर जब यासजी चुनाव म खडे हुए तो स्वय श्री कोचर न अपने ही मोहल्ले म व्यासजी के भाल पर कुकुम लगाकर उनकी अगवानी की थी तथा उ हे विजयी होने का आशीर्वाद भी दिया था ।

यासजी राजनीति म सक्रिय ता थे पर शुरु म वे इतने जागृत नही थे जितने बाद म हुए । पहले उनम उतनी चेतना नही थी । हम तो उ हे केवल अध्यापक ही समझते थे पर धीरे-धीरे वे सभाओ म भाग लने लगे जुलूस आदि निकालन लगे तथा लोगो को पता लगन लगा कि वे एक जननेता हैं ।

व कभी तागे वालो के जुलूस का नेतृत्व करत तो कभी जन समस्याओ पर ज्ञापन देन जिलाधीश कार्यालय जात । इस बीच बहुचर्चित गढ निवासी आ दोलन भी शुरु हो गया था । व्यासजी को राजनीति स दूर रहने व नियमानुसार विद्यालय कार्य करने की सलाह दी गई ऐसा न करन पर चेतावनिया भी दी गई तथा अन्तत उनको सेवामुक्त कर दिया गया । लोक सेवा के आगे आजीविका को गौण समझन वाले यासजी ने इस भी सहर्ष स्वीकार किया पर वे अपने निश्चित माग स विलग नही हुए ।

श्री सूय भानु गुप्ता के अनुसार व्यासजी अपन अध्यापक साथियो को गांधीजी के अतरग प्रसग एव वर्धा आश्रम की गतिविधि के सस्मरण सुनाया करत थ । व अपनी विदेश यात्रा एव वहा के जनजीवन क बार म भी छात्रो व अध्यापक मित्रो को कई रोचक बाते सुनात थे । अपनी मिलनसारिता एव नम्रता के कारण व अध्यापको एव छात्रो दोनो म ही समान रूप से लोकप्रिय थे । अध्यापकगण ता यह जानते ही थ कि यासजी अधिक समय तक सेवा म नहीं रह सकत । जन स्कूल के सचिव श्री शिवबक्श कोचर का भी यही मत था । उनकी धारणा बन

चुकी थी कि यह व्यक्ति उदरपूर्ति के लिए अध्यापक तो बन गया है पर इसका असली लक्ष्य जनता को आंदोलित करना एवं सत्य के लिए संघर्ष करना ही है। अन्ततः जब उन्हें सेवामुक्त किया गया तो अध्यापकों ने भी इसे स्वाभाविक मानकर विरोध नहीं किया। व्यासजी का छात्रों के प्रति प्रेम उनके राजनीतिक जीवन में भी सहायक सिद्ध हुआ। व्यासजी के भावी जीवन की बुनावट में शिष्यों का भी हाथ रहा है-यह सभी लोग जानते हैं।'

जन विद्यालय के एक अन्य भूतपूर्व अध्यापक श्री कानमल चर्चा करते हुए व्यासजी के प्रति भाव विभोर हो गये। उनका मानना है कि व्यासजी के कारण वे भी जनसेवा की ओर उन्मुख हो सके थे। 'एक बार मेरी लड़की जब छत से गिर गई तो व्यासजी उसे लेकर अस्पताल गये तथा चिकित्सा की मुकम्मिल व्यवस्था करवाई। इसी प्रकार मेरे पोते को जब विषम रोग हो गया और पी बी एम अस्पताल के डाक्टर रोग का निर्धारण नहीं कर सके तो व्यासजी ने उसके लिए आयुर्वेदिक चिकित्सा की व्यवस्था करके उसे बचाने में सराहनीय योग दिया।' कानमलजी ने बताया कि 'व्यासजी फक्कड़ वृत्ति के थे तथा उनका सारा झोली झण्डा उनके थैले में ही रहता था। उनको कई बार किराये के मकान बदलने पड़े। कभी इस घर में रहे तो कभी उस घर में। विद्यालय जीवन में उनके कारण गहमागहमी बनी रहती थी। वार्षिकोत्सव का आयोजन तो आज तक लोगों की स्मृति में जीवन्त बना हुआ है।"

बीकानेर के जनजीवन से व्यासजी का सही मायने में जुड़ाव समाजवादी दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के समारोह एवं प्रान्तीय सम्मेलन से हुआ। ये दोनों सम्मेलन 1948 में बीकानेर में आयोजित किये गये। इन सम्मेलनों का एक ऐतिहासिक महत्व था। समाजवादी दल कांग्रेस से पृथक हो चुका था और इस अलगाव के बाद यह उसकी कार्यकारिणी का प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन था। साथ ही भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात समाजवादी दल का भी यह प्रथम सम्मेलन ही था। बीकानेर के लिए ये सम्मेलन दो कारणों से महत्व रखते थे। इस नगर में किसी भी राष्ट्रीय दल के महत्वपूर्ण सम्मेलन का यह पहला अवसर था तथा इसी सम्मेलन के माध्यम से बीकानेर नगर को मुरलीधर व्यास जैसा तपस्वी नेता मिला।

देश के दिग्गज समाजवादी नेताओं ने इसमें भाग लिया। उनमें सर्वश्री जयप्रकाश नारायण डा राममनोहर लोहिया मुनी अहमद्दीन अच्युत पटवर्धन बाबा हरिश्चन्द्र रामनन्दन मिश्र (बिहार) श्यामनंदन मिश्र (नागपुर) मगनलाल बागड़ी ईश्वरी सिंह एवं हीरालाल जैन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। रानी बाजार

स्थित सरावगी भवन के मैदान में सम्मेलन सम्पन्न हुए। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठकें स्थानीय गुण प्रकाशक सज्जनालय में आयोजित की गई जबकि खुल अधिवेशन सरावगी भवन के सामने वाले मैदान में हुए।

समाजवादी नेता श्री भवरलाल स्वर्णकार के अनुसार खुले अधिवेशनों में हजारों नगर निवासी भाग लेते थे। दोहरी दासता में दबी जनता के लिए राजनीतिक चेतना का यह अभूतपूर्व अवसर था। लोगों के उत्साह का ही परिणाम था कि तीनों दिन खुली सभाएं आयोजित की गई।

सम्मेलन की व्यवस्था निम्न पदाधिकारियों के हाथों में थी श्री जे. बगरहट्टा (स्वागत समिति के अध्यक्ष) श्री भवरलाल स्वर्णकार (कार्यालय प्रभारी) श्री सोहनलाल कोचर (कोषाध्यक्ष) श्री प्रतापचंद कोचर (भंडारण व्यवस्थापक) एवं दाऊ गेवरचन्द आचार्य (भोजन प्रभारी) इन सभी के सामूहिक प्रयासों से ही ये ऐतिहासिक सम्मेलन सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न हो सके। राष्ट्रीय स्तर के नेताओं की आवास व्यवस्था भी उत्तम थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार अधिवेशन काल में बाबू जयप्रकाश नारायण को श्री आनन्दराज जी (विश्वज्योति के मालिक) के भवन में ठहराया गया था जहां आजकल गो सेवा संघ का कार्यालय है। डा. राम मनोहर लोहिया श्री चन्द्रधर ईसर की कोठी में ठहरे। आजकल यहां आयकर कार्यालय स्थित है। बाबा हरिश्चन्द्र सरावगी भवन स्थित कार्यालय में ही ठहरे थे। श्री मगनलाल बागड़ी की आवास व्यवस्था सरावगी भवन के सामने सतरसिंह ठेकेदार के क्वाटर में की गई थी।

अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये। कि हीं बिन्दुओं को लेकर स्थानीय कार्यकर्ताओं में रोष भी देखने को मिला। वे चाहते थे कि उनको प्रतिनिधि के रूप में अधिवेशन में भाग लेने दिया जाए तथा कार्यकर्ताओं के लिए आयोजित बैठक में भी सम्मिलित होने दिया जाय। उन्होंने अपनी मांग बाबू जयप्रकाश नारायण तक पहुंचाई। प्रतिनिधियों की इस बैठक को जे. पी. ने ही सम्बोधित किया था। मांग की प्रबलता व औचित्य को देखकर अतत सर्वश्री सत्यनारायण पारीक एवं भवरलाल महात्मा को प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित कर लिया गया। इससे यह अनुमान लगा सकते हैं कि आजादी के प्रारम्भ से ही बीकानेर के समाजवादी कार्यकर्ताओं में चेतना और अधिकारों के लिए संघर्ष करने की ऊर्जा विद्यमान थी। (ज्ञातव्य है कि सम्मेलन में देश भर के 250 प्रतिनिधि भाग ले रहे थे)।

इसी सम्मेलन का एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह थी कि श्री मुरलीधर व्यास का

बीकानेर एव प्रकारान्तर से राजस्थान की राजनीति से सक्रिय रूप से जोड़ा गया। उनका परिचय श्री मगनलाल बागडी ने इन शब्दो म दिया—"मैं आपको एक विश्वस्त और कमठ साथी दता हू। ये मेरे जाचे हुए परखे हुए व्यक्ति हैं। इ होने वर्षा म काम किया है। अत्य त सेवाभावी है।' स्थानीय नताओ एव कायकर्ताओ ने श्री बागडी के प्रस्ताव का सहष स्वागत किया और तब से लेकर मरणोपरा त श्री यास का बीकानेर के साथ तादात्म्य सम्ब ध बना रहा। श्री व्यास से पूव श्री गोपाललाल दम्माणी म त्री थे।

समाजवादी दल मे राजस्थान के मामलो के प्रभारी डा राममनोहर लोहिया थे। यासजी ने सवप्रथम श्री लोहिया के प्रभारीत्व वाले क्षेत्र म काय किया। बाबू जयप्रकाश नारायण जसे तपस्वी नता क साथ साथ लोहियाजी जसे मौलिक सूझ बूझ के नेता का सान्निध्य भी यासजी को सहज ही प्राप्त हुआ। बागडी जी जसे शात दृढ़ निश्चयी एव समस्याओ का निदान करने वाले नेता ने तो उनको अत्यधिक प्रभावित किया ही था। उन दिनो राजनीतिक सभाए स्वणकार पचायत भवन म हुआ करती थी। किसी कारणवश मुशी अहमददीन की सभा चु नीलाल जी की दुकान क पास फुटपाथ पर आयोजित की गई। हि दू एव मुसलमान श्रोताओ को राष्ट्रीय धारा से जोडने व चेतना का शखनाद करने म वह सभा अत्यधिक सफल रही। मुशी अहमददीन के लिए आयोजित सभा की त्वरित व्यवस्था भी इस सम्मेलन की एक उल्लेखनीय घटना बन गई।

उन दिनो बिजली कमचारी हडताल पर थे। सम्मेलन म उनकी मागो का प्रबल समथन किया गया। अतत श्री बागडी क प्रयत्नो से बिजली कमचारियो के साथ सरकार का सम्मानजनक समझौता भी हुआ। य सभी कमचारी स्वेच्छा से सम्मेलन की विद्युत एव मच व्यवस्था म प्राणप्रण से जुडे हुए थे। उनको विश्वास था कि समाजवादी दल उनकी भावनाओ को समझने म अग्रणी रहेगा तथा सक्रिय सहयोग देगा। ऐसा हुआ भी और श्रमिको ने शातिपूण तरीके से पूण अनुशासन म एव सगठित रहते हुए अपनी हडताल को सफल बनाया।

समाजवादी नेता श्री सोहनलाल कोचर के अनुसार व्यासजी महाराष्ट्र स बीकानर आए थे। उनके काम करने का ढग हमे पसद आया। वे एक सनिक की तरह काय करते थे। उनम सघष करने की अदम्य शक्ति और इच्छा थी। सभी लोगो ने इसी इच्छा का स्वागत किया। वे अपने आपको नेता के रूप म थापना पसद नही करते थे। सब साथ मिल जुल कर एक कायकर्ता की तरह काय करते थे। उनमे स्वाथ नही था और वे निर्भीक थे। 1952 के आम चुनावो म हमने लोक सभा एव विधानसभा दोनो के लिए मुरलीधर व्यास का चयन किया।

प्रांतीय कार्यकारिणी ने भी हमारे प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया । लोकसभा में उनकी उम्मीदवारी के पीछे एक मात्र लक्ष्य यही था कि इससे कम से कम पार्टी का प्रचार तो होगा ही। हम जानते थे कि (महाराजा) डा करणीसिंह के मुकाबले कोई भी अन्य उम्मीदवार विजयी नहीं हो सकता। फिर भी एक राजनैतिक दल के रूप में यह उचित समझा गया कि हमारा उम्मीदवार दोनों स्थानों के लिए मुकाबला करे। प्रथम आम चुनाव में यद्यपि हम हार गये पर विधानसभा क्षेत्र में हमें अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली । विजयी उम्मीदवार मोतीचन्द खजांची ने वही चुनाव चिह्न (तीर) लिया था जो संसदीय चुनाव में महाराजा डा करणीसिंह का था । राजघराने के प्रति पुरानी आस्था के फलस्वरूप मतदाताओं ने दोनों स्थानों पर महाराजा को विजयी बनाने की भावना से तीर चुनाव निशान पर मतदान किया । दूसरे स्थान पर धार्मिक भावना से किया गया मतदान रहा जो राम राज्य परिषद के उम्मीदवार दीनानाथ भारद्वाज के पक्ष में गया । इतना होते हुए भी मुरलीधर व्यास को काफी अच्छी सफलता मिली । तीर चुनाव निशान ने मोतीचन्द खजांची की नैया पार लगा दी और वे विधान सभा में पहुंच गए पर एक जननेता के रूप में व्यासजी का व्यक्तित्व तेजस्वी रूप में उभर गया । व्यासजी के लिए यह एक बड़ी सफलता थी।

व्यासजी के साथ पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं की सहानुभूति थी क्योंकि वे अन्य कई लोगों की तरह अपने को नेता नहीं समझते थे–केवल पार्टी कार्यकर्ता ही मानते थे । बीकानेर में समाजवादी दल के गठन की चर्चा करते हुए श्री सोहनलाल कोचर ने बताया कि पहले वे स्वयं (श्री कोचर) प्रजा परिषद में थे, पर कालान्तर में वे प्रजा परिषद की कार्य प्रणाली से ऊब गये । उनके अनुसार इसका मुख्य कारण प्रजा परिषद में जातिवाद का वर्चस्व होना था । श्री गोपाललाल दम्माणी के आग्रह पर वे (श्री कोचर) समाजवादी दल में आये । बाद में प्रजा परिषद के पूर्ववर्ती साथी श्रीयुत् श्रीराम आचार्य श्रीमती कमला आचार्य और श्री जनार्दन व्यास भी समाजवादी दल में सम्मिलित हो गये । श्री गोपाललाल दम्माणी ने जो दल के प्रांतीय एवं राष्ट्रीय नेताओं से मिलकर आये थे–पांच सदस्यों की कार्यकारिणी बनाई। दल में सम्मिलित होने वाले अन्य सदस्य थे सर्वश्री भंवरलाल स्वर्णकार सत्यनारायण पारीक रामेश्वर पाडिया, भंवरलाल महात्मा एवं दादा गेवरचन्द आये । नवनिर्मित दल के अध्यक्ष थे श्री जे बगरहट्टा एवं सचिव थे श्री गोपाललाल दम्माणी । प्रांतीय सम्मेलन में श्री बगरहट्टा एवं दम्माणी ही जाया करते थे।'

पार्टी के कार्यकर्ता श्री गोपाललाल दम्माणी (सचिव) की कार्यप्रणाली से क्षुब्ध थे।

दादा गेवरचन्द तो कडक नाराज थे। हम भी नाराज थे। लोगो का विचार था कि यदि यही काय प्रणाली रही तो श्री दम्माणी को त्यागपत्र देना ही होगा। उधर श्री जे बगरहटटा (अध्यक्ष) के प्रति भी असतोष था। कार्यकर्ताओ को बडे नेताओ से नही मिलाया गया उससे उनम असतोष था। अतत सारे कार्यकर्ता बागडीजी को लेकर जयप्रकाश नारायण के पास गये और कहा कि हम कार्यकर्ता आपस बात करना चाहते हैं।"

'श्री जयप्रकाश नारायण न बात करन के लिए बीकानेर से बाहर चलने की बात कही। अत 20–30 कार्यकर्ता जे पी के साथ शिवबाडी गये और वही पर विस्तार के साथ चर्चा की। श्री जयप्रकाश नारायण ने कार्यकर्ताओ को साम्यवाद एव समाजवाद का अन्तर समझाया, सोवियत रूस की अपनी यात्रा के सस्मरण सुनाये तथा बताया कि वहा पर श्रमिक अपने अधिकारो के लिए विरोध या विद्रोह नही कर सकते। समाजवादी व्यवस्था मे विरोध पर कोई रोक नही है। भारत जसे प्रजातान्त्रिक देश मे समाजवादी दल की नीतिया ही अधिक कारगर सिद्ध हो सकती हैं।

श्री जयप्रकाश नारायण न कार्यकर्ताओ की शिकायत ध्यान स सुनी। इस पूव पीठिका के बाद सम्मेलन म श्री मगनलाल बागडी ने जब मुरलीधर व्यास का कार्यकर्ताओ से परिचय करवाया तो सभी ने उनका स्वागत किया। व्यासजी का अपने साथी कार्यकर्ताओ से सम्पक बढता चला गया और इस प्रकार 1952 म ससदीय एव विधानसभा चुनावो के लिए एकमात्र उम्मीदवार के रूप म सव सम्मति से उनका ही चयन किया गया।'

बीकानेर की जनता का समाजवादी दल के अस्तित्व का शीघ्र ही आभास होने लगा। दल के प्रथम कुछ आयोजनो म भण्डा काण्ड एव माइक काण्ड प्रसिद्ध हैं। वतमान ग्रीन होटल के पीछे एक विशाल मदान था जिसे गाधी मदान कहा जाता था। एक राजनीतिक दल की अधिकाश सभाए वही होती थी। उस दल विशेष ने एकाधिकार की दृष्टि से अपना भण्डा स्थायी रूप से मदान म लगा दिया। किसी भी दूसरे दल वाल के लिए वहा पर सभाए करना कठिन था। क्योकि वहा तो पहले से ही एक दल का झण्डा फहराता रहता था। समाजवादी दल के नेताओ न माग की कि उस झण्डे को वहा से हटाया जाये। यदि ऐसा नही किया तो एक निश्चित तिथि को वे स्वय उस भण्डे को ससम्मान हटा देंगे। घोषणा करने वालो म मुरलीधर व्यास और रामेश्वर पाडिया भी थे। उस समय दल के मत्री थे श्री सत्यनारायण पारीक एव सयुक्त सचिव थे श्री भवरलाल स्वणकार। श्री रामेश्वर पाडिया के अनुसार घोषणा के छठे दिन भण्डा स्वत ही उतार लिया गया और इस तरह लोग एक गभीर राजनीतिक सघष से बच गये।

इस घटना से उत्साहित होकर अपने प्रति पूर्ण आश्वस्त दल ने अनेक अन्य मामलों में भी नेतृत्व देना प्रारम्भ कर दिया। हीरालाल शास्त्री के मुख्यमंत्रित्व काल में उन दिनों राजनीतिक दलों के लिए ध्वनि प्रसारक यंत्र के उपयोग पर नाका रोक थी। इसका उपभोग नगर दण्डनायक की लिखित अनुमति से ही किया जा सकता था। समाजवादी दल ने इस प्रतिबंध का डटकर विरोध किया। रोजाना माइक के साथ गोलबाग स्थल पर मीटिंग होती और पुलिस माइक छीनकर ले जाती। यह क्रम कई दिनों तक चला। दल के नेताओं के विरुद्ध मुकदमे भी दायर कर दिये गये। व्यासजी एवं अन्य नेताओं ने इस काले कानून की सजा दी। उन्होंने नगर दण्डनायक की पूर्वाज्ञा की बात को मानने से इंकार कर दिया।

उन्हीं दिनों मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री का बीकानेर में आगमन हुआ। मुख्यमंत्री के रूप में यह उनकी पहली बीकानेर यात्रा थी। व्यासजी एवं अन्य नेताओं के नेतृत्व में स्टेशन के सामने एक विशाल प्रदर्शन किया गया। मुख्यमंत्री ने दल की मांग को उचित माना तथा माइक सम्बन्धी प्रतिबंध एवं पूर्वाज्ञा के नियम हटा दिये गये। समाजवादी दल के सारे जलसे मास्टर जो श्री बी.एल. शर्मा किराया लिए बिना दल की सभाओं के आयोजन के लिए देते थे लौटा दिये गये।

समाजवादी दल का तीसरा बड़ा कार्य इक्के तांगे वालों की संगठनात्मक शक्ति के प्रदर्शन का था। उन दिनों चनों की आपूर्ति में कमी तथा भावों में तेजी के कारण इक्के तांगे वालों के सामने भरण-पोषण की एक गम्भीर समस्या उपस्थित हो गई थी। व्यासजी ने बीकानेर के समस्त इक्के तांगे वालों की एक यूनियन बनाई तथा सभाओं व जुलूसों के माध्यम से उनकी मांग को सरकार के सामने रखा। प्रत्यक्षदर्शियों का कथन है कि इक्के तांगे वालों का पहला जुलूस अपने आप में इतना लम्बा था जो बाद में कई वर्षों तक देखने को नहीं मिला। एक छोर कोटगेट के भीतर था तो दूसरा कलेक्टर की कोठी पर पहुंच चुका था। आगे के तांगों में लाल टोपियां पहने हुए व्यासजी एवं अन्य नेता थे। इक्के तांगे चालक भी अपने अपने खाली तांगों को लाल टोपियां पहने हुए चला रहे थे। कार्यकर्तागण भी लाल टोपियां में थे। एक रोमांचक दृश्य था। तरह-तरह के नारे लग रहे थे। व्यासजी के नेतृत्व के इस प्रभावी पड़ाव में इक्के तांगे वालों की सारी मांगें मान ली गई। कालान्तर में इक्के तांगे वालों के सशक्त संगठन ने और भी कई पड़ावों पर मोर्चे जीते।

इस बीच व्यासजी ठेले वालों, नगरपालिका के सफाई कर्मचारियों, रेलवे के कर्मचारियों एवं रोशनीघर के कर्मचारियों के हितों के लिए भी निरन्तर संघर्ष

करते रहे। उनकी जायज मागो पर जन-समर्थन के लिए सभाएँ करना, अनुकूल वातावरण बनाना जुलूस निकालना विनप्तिया जारी करना एव सरकारी अधिकारियो से वार्ताए करके मजदूरो के पक्ष म निर्णय करवाना उनकी दैनिक गतिविधियो के अ ग बन चुके थे।

1951 म बीकानेर म नगरपालिका के लिए चुनाव घोषित हुए। उसम भी दल न अपनी प्रारम्भिक शक्ति का परिचय दिया। श्री रावतमल कोचर का सामना करने से लोग डरते थे। क्योकि प्रतिद्वन्द्वी की जमानत जब्त होन की प्रबल सभावना थी। उस समय दल के मन्त्री श्री जनादन व्यास (जय हजारा दल) थ। दल की कार्यकारिणी के निर्णयानुसार श्री सोहनलाल कोचर को श्री रावतमल का मुकाबला करन क लिए खडा किया गया। अन्य वार्डों म भी उम्मीदवार खडे किये गये। श्री सोहनलाल कोचर क समथन म मुरलीधर व्यास, दादा धेवरचन्द जनादन व्यास सत्यनारायण पारीक एव रामेश्वर पाडिया के अतिरिक्त गगानगर के श्री शिशुपाल सिंह एव नोहर के श्रीयुत श्रीनिवास बिरानी भी थे। शानदार सभाओ और घर घर प्रचार के कारण प्रबल जन समथन की स्थिति बनने लगी। वार्डों म भी दल की शक्ति बढ रही थी, जन कालेज के विद्यार्थियो एव श्री ताराचन्द सोमानी का सहयोग भी श्री कोचर को मिल रहा था।

राजनीतिक घटनाचक्र इस बीच तेजी से चलने लगा। शरणार्थियो की ओर से माग करवाई गई कि हम मे से बहुत से लोगों का नाम मतदाता सूची म नही है। अत निर्वाचन अवध माना जाना चाहिए। अतत निर्वाचन से केवल एक दिन पूव निर्वाचन के स्थगन की घोषणा कर दी गई। दल ने इसे भी अपनी विजय ही माना।

1948 से 1951 तक व्यासजी के सहयोगी श्री जनादन व्यास (जय हजारा दल) के अनुसार बीकानेर म दो नेता अत्यन्त प्रभावशाली हुए हैं- आजादी स पूव के दिनो म बाबू रघुवर दयाल गोयल एव आजादी के पश्चात् श्री मुरलीधर व्यास। 1950 51 म समाजवादी दल क मत्री श्री जनादन व्यास के नेतृत्व म दल ने सडक कूटो आदोलन मशाल जुलूस एव घास की कमी के विरुद्ध अभियान चलाया था। लोकनायक मुरलीधर व्यास एव जे बगरहट्टा के साथ वे भरतपुर एव जोधपुर के अधिवेशनो मे गये दल के निए अथ सग्रह करने बम्बई गये तथा समाजवादी दल की शाखा का गठन करने चूरू भी गये। चूरू म उन्हें सवश्री अद्भुत शास्त्री फाल्गुन व्यास एव कमलेश व्यास का सहयोग प्राप्त हुआ। बम्बई म तीनो नेता (मुरलीधर व्यास जे बगरहट्टा एव जनादन व्यास) स्वर्गीय भरत व्यास के निवास स्थान पर ठहरे तथा स्व अशोक महता एव मगनलाल बागडी के सौजन्य

स दल के लिय अथ सग्रह किया । 1952 क प्रथम आम चुनाव म जना न यास यद्यपि यासजी क विरुद्ध स्वतत्र प्रत्याशी क रूप म खडे हुए पर दाना का पारस्परिक प्रेम सम्बन्ध यथावत बना रहा ।

व्यासजी ने जनहित म समपण भाव से काय किया फलत प्रबल जन समथन मिला लोकप्रियता के बढते हुए अहसास और जन समथन के कारण समाजवादी दल आगे बढता चला गया । 1952 के निर्वाचन क बाद श्री मुरलीधर व्यास का नेतत्व और अधिक प्रखर हा गया । उ ह जनता का स्नेह व विश्वास और राष्ट्रीय नताओ का विश्वास अधिक प्राप्त हान लगा ।

आन्दोलन की आँच का कुन्दन

व्यासजी का जीवन अनवरत आन्दोलनो की एक लम्बी और अनथक कहानी है। उनके साथी समाजवादी नेता श्री माणिकचन्द सुराणा के अनुसार, 'स्वर्गीय व्यास के निकटतम सम्पर्क म व आन्दोलनो म सर्वाधिक नजदीक रहन वाले व्यक्तियो म स मैं भी एक हू। स्वर्गीय व्यासजी की प्रेरणा के सबसे बडे श्रोत मघष व आन्दोलन ही थे। श्री व्यास सघष म सदव निर्भीक और आन्दोलनो म अग्रणी रहे। उनकी मान्यता थी कि प्रत्येक आन्दोलन समाजवादी पार्टी को आगे बढायगा और उसम एकरसता पदा करगा। स्वर्गीय व्यास का जीवन बीकानेर डिवीजन के जनजीवन से जुडे आदोलनो का इतिहास है।'

विधानसभा चुनाव मे उनके प्रतिपक्षी काग्रेस प्रत्याशी श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित न भी व्यासजी द्वारा जनहित म किये गये सघर्षो एव मानवीय गुणो की साक्षी दी है। उनके अनुसार जन साधारण की समस्याओ क लिए अकले ही जूझ पडने को व्यासजी सदव ही तत्पर रहते थे। स्वातन्त्र्योत्तर काल म जब भी बीकानेर म आन्दोलन हुए श्री व्यास जी जेल कारावास मे अवश्य रहे हैं। उनके नजदीक के लोग अच्छी तरह जानते है कि समाजवादी विचारो के प्रति तो वे एकनिष्ठ थे ही धम निरपेक्षता और लोकतन्त्र के प्रति भी वे पूरे आस्थावान थे और साम्प्रदायिकता से उन्हें पूरी नफरत थी। दुर्भाग्य से आज श्री व्यासजी हमारे बीच नहीं है पर बीकानेर नगर निवासियो को समाजवादी विचारो की ओर अग्रसर करने म उनका जीवन खप गया और यही उनके जीवन की बडी सफलता रही है।

श्री सत्यनारायण पारीक ने व्यासजी की विशेषताओ का वणन करते हुए कहा है उनकी सगठन एव वक्तत्व शक्ति अपार थी। जननेता के रूप म उनकी सवत्र ख्याति थी। कठिन से कठिन परिस्थितियो म भी अविचलित रहकर अपने लक्ष्य की पूर्ति म लगे रहना उनकी खूबी थी। उनकी जिंदादिली अपरिमित थी। गरीबो की लडाई लडने म व हमेशा आगे रहे। चाहे वह सन 54 का गहू निकासी आन्दोलन हो या 56–57 का नामसर आन्दोलन उन्होन आगे बढकर नतत्व किया और समाजवादी आन्दोलन को पुष्ट किया।

उनके एक अन्य चुनाव प्रतिद्वन्द्वी श्री मूलचन्द पारीक न अपने विचार इस प्रकार

व्यक्त किये हैं ' ' स्वतन्त्रता के बाद बीकानेर के प्रतिपक्षी दलों का जो इतिहास रहा है उसमें से अगर व्यासजी के सम्बन्धित अंश व घटनाओं को निकाल दिया जाय तो वह महत्वहीन हो जायगा। अनगिनत सभाओं में अपने जोशीले भाषणों में गरीब श्रमिकों व मध्य वर्ग को प्रभावित करने वाली तात्कालिक राजमर्रा की समस्याओं व मुद्दों को जिस ढंग से वे उठाते थे उस पर शासन को सदैव सतर्क नजर रखनी पड़ती थी। प्रशासन जानता था कि व्यासजी का एक एक शब्द कसौटी पर कसा गया खरा है। सभाओं द्वारा जनमत तयार कर उसे संगठित करने व उसे आन्दोलन का रूप देने की उनमें उत्कृष्ट कला व सामर्थ्य थी। उनका व्यक्तित्व स्थानीय स्तर से प्रादेशिक स्तर का हो गया था और राष्ट्रीय स्तर पर उभरने की प्रक्रिया में था। वे जनप्रिय कार्यकर्ता व नेता थे। श्रमिक आन्दोलन को संगठित करने में उनका अपूर्व योगदान रहा है। जिधर से निकलते लोग उनके पीछे हो जाते और उन्हें अपना दुख-दर्द व समस्याएं बताते। हर एक की मदद करना उनकी प्रवृत्ति में था। बीकानेर के राजनैतिक इतिहास पर स्वाधीनता से पूर्व जिस प्रकार मुक्ता प्रसादजी वकील रघुवरदयालजी गोयल और मघारामजी वैद्य आदि के व्यक्तित्व व त्याग की अविस्मरणीय छाप है उसी प्रकार स्वातन्त्र्योत्तर काल में स्वर्गीय मुरलीधरजी व्यास के व्यक्तित्व की अमिट छाप है और सदा रहेगी। आज भी उनका नाम काम और प्रतिभा लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

राजस्थान के पूर्व गृह मंत्री प्रोफेसर केदारनाथ (जनता पार्टी) व्यासजी द्वारा संचालित कई आन्दोलनों में सहभागी रहे हैं। उन्होंने गेहूं निकासी आन्दोलन जामसर आन्दोलन चूरू व गंगानगर के किसान आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके अनुसार व्यासजी की एक विशेषता यह थी कि वे किसी भी जन आन्दोलन के लिए जूझने को तयार रहते थे। चाहे वह आन्दोलन राजस्थान के किसी भी कोने में क्यों न हो। भ्रष्टाचार के विरुद्ध निरंतर अभियान चलाते वाले व्यासजी ने अपने आन्दोलनों को हमेशा जन आधार दिया। उनके लिए कार्यकर्ताओं को तयार किया तथा संघर्ष के लिए जनजागृति पैदा की। उनके पास निष्ठावान कार्यकर्ताओं की एक टीम थी। यह टीम साधारण परिवार के कार्य-कर्ताओं की थी। किसी भी परिस्थिति में निर्भीक होकर आगे बढ़ना उनके चरित्र की एक विशेषता थी।

1952 एवं 1957 के मध्य जितने भी आन्दोलन हुए उनमें गेहूं निकासी आन्दोलन व जामसर जिप्सम आन्दोलन तो मुख्य हैं ही व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में गोआ का मुक्ति आन्दोलन भी अग्रणी है। व्यासजी इन समस्त आन्दोलनों की मूल धारा से जुड़े हुए थे। जन जागृति के व्यापक फलक पर साधारण समझ

जाने वाले वर्गों को अपनी सगठनात्मक पहचान करवाने म तथा उनम सघष के माध्यम से सफलता प्राप्त करने की भावना भरने म व हमेशा सचेष्ट रहे। 1952 से 57 तक की राजनीतिक चेतना के इतिहास के व केन्द्र बिन्दु थे। उनका साथ देने वाले तो साधारण वर्गों के लोग ही थे । तागे वाल रेडी वाले, दफ्तर के बाबू, छोटे दूकानदार मजदूर किसान व गरीबी के बीच जीने वाले असख्य दीन हीन असहाय लोग उनके सहकर्मी थे। उनक नेतृत्व म यह जनशक्ति कभी सभाओ के रूप म तो कभी जुलूसो के रूप म अपने आपको अभिव्यक्त करती थी। आदोलनो म इसी जन शक्ति की तज धारा का लेकर व आग बढते थे। बीकानर म स्वातन्त्र्योत्तर काल मे राजनीतिक चेतना की यह शुरुआत थी । सभाओ और जुलूसा मे लगने वाले नारे ('चना चबीना चीनी दो वर्ना कुर्सी छोड दो' माग रहा है राजस्थान, रोटी कपडा और मकान 'हर जोर जुलम की टक्कर मे हडताल हमारा नारा है अथवा रोटी रोजी दे न सके वह सरकार निकम्मी है) जोश–खरोश क साथ–साथ जन चेतना को भी चरिताथ करते थ । इसी राजनीतिक चेतना के वातावरण म शुरु हुआ ऐतिहासिक गेहू निकासी आन्दोलन जिसन बीकानेर की जनता की अद्भुत सघष क्षमता को प्रकट किया।

बीकानर म अनाज की कमी थी। सरकारी गोदामो एव भण्डारणो म जमा गेहू जब बीकानर से बाहर भेजा जाने लगा तो उसका बीकानर म जबरदस्त प्रतिरोध हुआ। जन सभाओ जन मोर्चो जुलूसो एव चक्का जाम कायक्रमो द्वारा बीकानेर की जनता का रोष प्रकट होने लगा। सरकार गहू निकासी के निणय पर फिर भी अडिग थी। उधर पूरा जनमानस उद्वेलित होकर हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तयार था। लोगो म अद्भुत जोश था। 23 दिन तक चलने वाले इस ऐतिहासिक आन्दोलन से जसे पूरा का पूरा नगर जुड गया था। आन्दोलन का सूत्रपात करन और उस के लिए वातावरण बनाने का मुख्य श्रेय व्यासजी को ही है।

लक्ष्मीनाथ जी के मन्दिर म व्यासजी क आह्वान पर श्री शिवकिशन आचाय कजलसा न 9 दिनो का अनशन किया। पूरे 23 दिनो तक बाजार बद रहे। शायद इतना सुसगठित जन आन्दोलन बीकानेर म पहले कभी नहीं हुआ था।

यह अनाज निकासी आन्दोलन जनवरी 1954 स शुरु हुआ। धारा 144 को तोडकर जेलें भरने का जो माहौल बना वह आज भी इतिहास की अमिट घटना रूप म राजस्थान म अपनी अनुगूज बनाए हुए है।

इस आन्दोलन म 300 स भी अधिक गिरफ्तारिया हुइ। जन सघष समिति के अध्यक्ष श्री रावतमल कोचर मन्त्री सत्यनारायण पारीक, उपमत्री श्री ताराचन्द

सिवानी प्रचार मंत्री चम्पालाल राका व मानिकचन्द सुराना तथा समिति के सदस्य वयोवृद्ध पत्रकार श्री जे बगरहट्टा, श्री मुरलीधर व्यास श्री त्रिपुरारिसिंह, श्री पेवरचन्द श्री द्वारकाप्रसाद जोशी श्री द्वारकाप्रसाद पुरोहित, श्री दाऊदयाल जोशी श्री मूलचन्द सवर श्री मघाराम वद्य आदि नेताओं ने गिरफ्तारियां दी।

गेहू निवासी आन्दोलन के बारे म गोकुल घी वाले ने बताया व्यासजी ने मिलिट्री एरिया म गेहू से भरे हुए ट्रक के आगे सबसे पहले मुझे लेटने का आदेश दिया। ट्रक को जाना है तो हमारी छातियो के ऊपर से जायगा वर्ना नही जा सकता। चारो तरफ पुलिस वाले खडे थे। पूरा शहर उल्टा हुआ था। सबसे पहले मुझे गिरफ्तार किया गया। बाद म कई गिरफ्तारियां हुई। 23 दिन तक चलने वाले इस सत्याग्रह म प्रतिदिन जत्थे के जत्थे गिरफ्तार किये जाकर जेल म भेजे जाते थे। जेल म व्यासजी ने पृथक श्रेणी लेने से इन्कार कर दिया। हम लोग खान पीने का सूखा सामान ले लेते तथा स्वय बनाकर एक साथ खाते थे। सैकडो लोग गिरफ्तार किये गये। उनम डी पी जोशी प्रोफेसर केदार एव द्वारकाप्रसाद पुरोहित भी थे। रात को हम अलग अलग बरको म रखे जाते पर दिन के समय सभी लोग साथ हो जाते थे।"

श्री भँवरलाल स्वणकार के अनुसार गेहू आन्दोलन के दौरान प्रजा समाजवादी पार्टी के सचिव श्री सादिक अली भी बीकानेर आये थे। 29 जनवरी 1954 को कोचरो म एक आम सभा हुई जिसे भवरलाल महात्मा ने सम्बोधित किया। उसी रात श्री भँवरलाल स्वणकार राष्ट्रीय नेताओ को बीकानेर की स्थिति से अवगत करवाने दिल्ली रवाना हो गये। उन्होने श्री मुश्ताक अली से बातचीत की। स्व श्री डी० डी० वशिष्ठ ने कहा कि यह राज्य का मामला है अत माथुर भाई से बात करनी चाहिए। जो दल मे राजस्थान के मामले के प्रभारी हैं।

श्री सादिक अली दो दिनो तक बीकानेर म रहे। रेल्वे स्टेशन पर उनका भव्य स्वागत किया गया था। रतन बिहारी पार्क म विशाल सभा हुई हजारो लोग उसम उपस्थित थे। कार्यकर्ताओ की मीटिंग श्री जवाहर लाल अजमानी के घर (रतन बिहारी के सामने) हुई थी जिसे श्री सादिक अली ने सम्बोधित किया था।

इससे पूर्व बीकानेर के कई वरिष्ठ नेता गिरफ्तार हो चुके थे। सभाओ और प्रदर्शनो म लोग बराबर भाग लेते थे। बीकानेर म जब धारा 144 लगा दी गई तो गगाशहर म सभाएँ की जाने लगी।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास तत्कालीन राष्ट्रपति डा सवपल्लि राधाकृष्णन् श्री यू एन ढबर श्रीयुत् श्रीमन्नारायण एव श्री प्रभुदयाल डाबडीवाला के साथ।
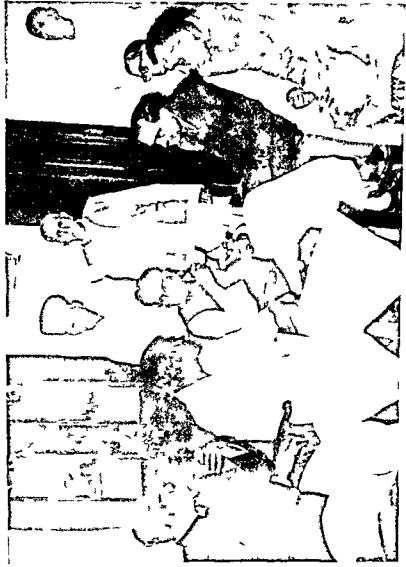
लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के साथ लोकनेता सर्वश्री मुरलीधर व्यास, माणकचन्द सुराणा रतनलाल रामपुरिया और प्रभुदयाल डाबडीवाला। खड़े हैं सर्वश्री जेठमल कोचर, जड़ियाजी सुनार और गंगादास कौशिक।

लोकनेता स्व मुरलीधर व्यास राष्ट्रीय काग्रेसी नेताओ के साथ प्रमुख नेता है श्री जवाहरलाल नेहरू श्री ढेलर
श्री गोविन्द वल्लभ पत, श्री लालबहादुर शास्त्री आदि
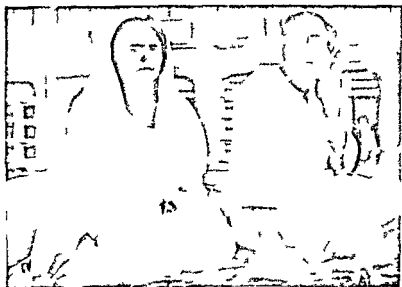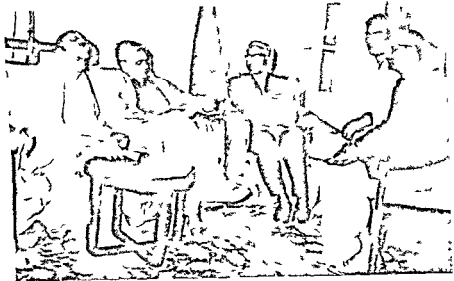
तत्कालीन मुख्यमंत्री सुखाडिया को ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए गंभीर मुद्रा में लोकनेता स्व
श्री मुरलीधर व्यास। साथ हैं श्री हनुमानदास आचार्य एडवोकेट
श्री नारायणदास रंगा एवं श्री सत्यनारायण पुरोहित।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास अपने दिग्गज पार्टी नेताओं के साथ। साथी हैं
स्व श्री धनराज वरगोत्रा हरभजनसिंह रतनलाल पुरोहित मुल्का गोविन्द रेड्डी
रामकृष्णन, रामचन्द्र राव और सुरेन्द्र मोहन आदि

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर यास बीकानेर नगर क गणमान्य नागरिका के साथ
प्रसन्नता क क्षणो मे। यासजी के पास खड हैं बीकानर क स्व महाराजा
करणीसिहजी श्री जनादन यास सम्पतलाल स्वजाची एव
नारायणदास रगा आदि।

प्रजा समाजवादी नेता श्रीनाथ पै की बीकानर यात्रा पर अगवानी करत हुए लोकनता
श्री मुरलीधर व्यास जीप चला रह है। साथ म हैं श्री शिवकिशन जाशी डी डी वशिष्ठ
श्री श्रीकृष्ण शर्मा प्रेमरतन मोदी कल्याणसिह श्यामजी थानवी आदि

गोआ मुक्ति आन्दोलन के सदर्भ म वेलगाम म आ दोलनकारी
साथिया के साथ श्री मुरलीधरजी व्यास

स्व श्री मुरलीधर व्यास के ज्ञापन पर मुख्यमंत्री सुखाडिया को कुछ सचेत करते हुए राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कामराज नाडार। साथ में खड़े हैं,श्री हरिदेव जोशी।

प्रजा समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय समिति का अध्ययन शिविर (मैसूर, 1969)
श्रीमती प्रमिला दंडवते, विजय प्रधान, समरेन्द्र कुंडू, मधु दंडवते, रतनलाल कपूर,
अरुणा मेहता और सुरेन्द्र मोहन के साथ स्व. श्री मुरलीधर व्यास राजनैतिक सोच के
क्षणों में। खड़े हुए श्री रामकृष्णन्।

जा समाजवादी दल के राष्ट्रीय कार्यक्रम में मंच पर लोकनेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास।
साथ में हैं प्रमुख शीर्षस्थ नेता सर्व श्री शिवप्पा, श्री नाथ पै, सुरेन्द्र मोहन,
पीटर अलवरिस, शिशिर कुमार, बसावन सिंह, समर गुहा आदि।
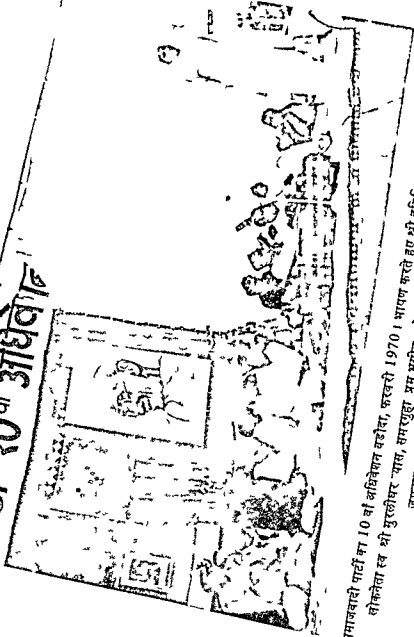
प्रजा समाजवादी पार्टी का 10 वाँ अधिवेशन वडोदा, फरवरी 1970। भाषण करते हुए श्री हरिविष्णु कामथ। साथ ही मंच पर बठे हैं लोकनेता स्व श्री मुरलीधर 'यास, समरगुहा प्रम भसीन सुरेन्द्र मोहन हरभजनसिंह, नाथ प, नाना साहब गोर जमुनाप्रसाद शास्त्री का गोविन्द रेड्डी, पीटर अलवारिस आदि

लोकनता स्व श्री मुरलीधर यास तत्कालीन प्रधानमत्री इदिरा गाधी व मथुराप्रसाद माथुर के साथ

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास नेताओ के बीच रेल्वे मजदूरो की मागो के सम्बन्ध मे गहरे चिंतन मे। साथी है श्री नाथ पै श्री ज बी चौबे, श्री टी एन वाजपेई तथा श्री रघुवस सरहदी आदि।
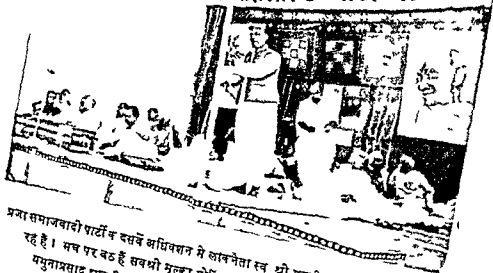
प्रजा समाजवादी पार्टी के दसवें अधिवेशन मे लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास सबोधन कर रहे हैं। मच पर बैठे हैं सर्वश्री मुल्का गोविंद रेड्डी जी जी परीख, एन जी गोरे, यमुनाप्रसाद शास्त्री नाना हॅगल मधु दडवते, प्रेम भसीन, हरभजन सिंह एव एच वी कामथ।

गोवा विमुक्ति आन्दोलन में सम्मिलित होकर बीकानेर लौटने पर जनता द्वारा भव्य स्वागत से अभिभूत स्व. श्री मुरलीधरजी व्यास एक भाव मुद्रा में

प्रजा समाजवादी पार्टी की विशाल जनसभा म जनता को सबोधित करते हुए स्व श्री मुरलीधर व्यास। मच पर विराजमान है श्री अशोक महता। पास म बठ हैं श्री सत्यनारायण पारीक और श्री मानिकचन्द सुराणा
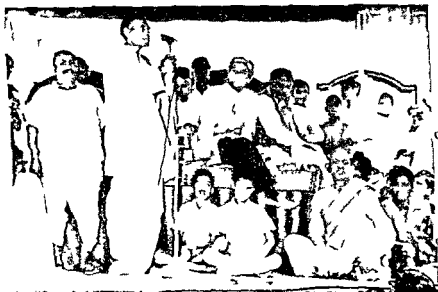
बीकानेर म समाजवादी नता श्री नाथ प की अध्यक्षता म आयोजित महती जनसभा म लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास जनता को सबोधित करत दिखाई दे रहे हैं। साथ म समागी हैं दादा घवरचन्द एव बूला महाराज व्यास आदि
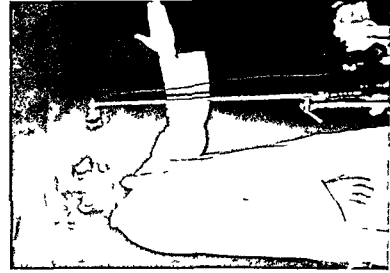
राजनतिक परिवतन क लिए जनता की एकता को ही सीधा
सपाट माग बताते हुए एक महती जनसभा म स्वर्गीय
श्री मुरलीधर व्यास भाषण देते हुए

प्रखर राजनतिक पीडा की अभिव्यक्ति की मुद्रा म स्व
श्री मुरलीधर व्यास एक महती जनसभा मे
जनता को सबोधित करते हुए।

बीकानेर क तप तपाय समाजवादी नेता तो इसम कूद ही पड़े थे बाहर स भी चौधरी हरदत्तसिंह व श्री एच के व्यास आय। य लोग भी गिरफ्तार हुए। आन्दोलन चलता रहा। बीकानेर म सभाए नही होने दी तो गगाशहर म हुई। अन्त विपुल जनशक्ति के आगे सरकार को झुकना पड़ा। श्री मगनलाल बागड़ी व श्री जयनारायण व्यास तत्कालीन मुख्यमत्री राजस्थान के बीच म आयोजित वार्ता क आधार पर अनाज की निकासी रोकने का निणय लिया गया। सारे आन्दोलनकारी नेताओ को रिहा कर दिया गया। रिहाई के बाद साले की होली पर एक ऐतिहासिक जन सभा हुई। बीकानेर की जनता ने अपने प्रिय नता मुरलीधर व्यास सहित सभी आन्दोलनकारियो का जिस तरह स्वागत किया वसा स्वागत कई कई वर्षों तक देखने को नही मिला। एक ऊचा मच दूर दूर तक दिखाई दने वाला जनसमूह छज्जो अटारियो खिड़कियो तक म भरे हुए लोग जमीन पर तिल रखने की जगह नही—और विजय क उस माहौल म असख्य फूलमालाओ से लदे हुए जननायक मुरलीधर व्यास और उनकी जयजयकार के गगन भेदी नारे—सगठित जन जागृति का इतना ममस्पर्शी दृश्य स्वातन्त्र्योत्तर काल म प्रथम बार ही देखन को मिला।

गेहू निकासी आन्दोलन स्थानीय समस्याओ के प्रति व्यासजी की सजगता का एक दृष्टात है वही गोआ मुक्ति आन्दोलन उनक उत्कृष्ट देशप्रम राष्ट्रीयता एव त्याग तथा उत्सग की भावना का ज्वलन्त प्रमाण है। आजाद भारत पर नासूर की तरह चिपक पराधीन गोआ को पुन राष्ट्र की मुख्यधारा म जोड़न क लिए एक जबरदस्त सघष छेड़ा गया था। पूरे भारतवष स सत्याग्रहियो के जत्थे गोआ जा रह थ। पुतगाली शासको न गिरफ्तारिया स लेकर जघन्य गोली काण्डो एव हत्याओ का एक दुर्दान्त सिलसिला चला रखा था। निहत्थ आन्दोलनकारियो पर बबर अत्याचारो की घटनाओ स पूरे भारत म रोष था। आजादी के दीवान शुद्ध गाधीवादी तरीको से गोआ म प्रवेश करन एव तिरगा लहराने के लिए सब कुछ न्यौछावर करन को तयार थे।

महात्मा गाधी क आशीर्वाद स वर्धा म पनपन वाली युवा पीढ़ी क एक सहभागी क नात व्यासजी इस राष्ट्रीय आन्दोलन स दूर कस रह सकत थे? पूरे देश म बढ़ रहे जोश खरोश एव बलिदानी माहौल म बीकानेर न भी सक्रिय योग दिया। व्यासजी क नतत्व म 5 सदस्यो का एक जत्था आत्माहुति की भावना लेकर बीकानेर से रवाना हुआ। मोहता क चौक से एक विशाल जुलूस के रूप म इन सत्याग्रहियों को विदा किया गया। वह रोमाचक दृश्य अभी तक भी हजारो लोगो को याद है।

राजनतिक परिवतन के लिए जनता की एकता को ही सीधा सपाट माग बताते हुए एक महती जनसभा मे स्वर्गीय श्री मुरलीधर यास भाषण देते हुए

प्रखर राजनतिक पीडा की अभिव्यक्ति की मुद्रा म स्व श्री मुरलीधर व्यास एक महती जनसभा म जनता को सबोधित करते हुए।

बीकानेर के तपे तपाये समाजवादी नेता तो इसमें कूद ही पड़े थे, बाहर से भी चौधरी हरदत्तसिंह व श्री एच के व्यास आये। ये लोग भी गिरफ्तार हुए। आंदोलन चलता रहा। बीकानेर में सभाएं नहीं होने दी तो गंगाशहर में हुई। अंतत विपुल जनशक्ति के आगे सरकार को झुकना पड़ा। श्री मगनलाल बागड़ी व श्री जयनारायण व्यास तत्कालीन मुख्यमंत्री राजस्थान के बीच में आयोजित वार्ता के आधार पर अनाज की निकासी रोकने का निर्णय लिया गया। सारे आंदोलनकारी नेताओं को रिहा कर दिया गया। रिहाई के बाद साले की होली पर एक ऐतिहासिक जन सभा हुई। बीकानेर की जनता ने अपने प्रिय नेता मुरलीधर व्यास सहित सभी आंदोलनकारियों का जिस तरह स्वागत किया वैसा स्वागत कई कई वर्षों तक देखने को नहीं मिला। एक ऊंचा मंच दूर दूर तक दिखाई देने वाला जनसमूह छज्जा अटारियां खिड़कियां तक में भरे हुए लोग जमीन पर तिल रखने की जगह नहीं—और विजय के उस माहौल में असंख्य फूलमालाओं से लदे हुए जननायक मुरलीधर व्यास और उनकी जयजयकार के गगन भेदी नारे—संगठित जन जागृति का इतना मर्मस्पर्शी दृश्य स्वातंत्र्योत्तर काल में प्रथम बार ही देखने को मिला।

गढ़ निकासी आन्दोलन स्थानीय समस्याओं के प्रति व्यासजी की सजगता का एक दृष्टांत है वहीं गोआ मुक्ति आंदोलन उनके उत्कृष्ट देशप्रेम राष्ट्रीयता एवं त्याग तथा उत्सर्ग की भावना का ज्वलंत प्रमाण है। आजाद भारत पर नासूर की तरह चिपके पराधीन गोआ को पुन राष्ट्र की मुख्यधारा में जोड़ने के लिए एक जबर दस्त संघर्ष छेड़ा गया था। पूरे भारतवर्ष से सत्याग्रहियों के जत्थे गोआ जा रहे थे। पुर्तगाली शासकों ने गिरफ्तारियों से लेकर जघन्य गोली कांड एवं हत्याओं का एक दुर्दान्त सिलसिला चला रखा था। निहत्थे आंदोलनकारियों पर बर्बर अत्याचारों की घटनाओं से पूरे भारत में रोष था। आजादी के दीवाने शुद्ध गांधी वादी तरीकों से गोआ में प्रवेश करने एवं तिरंगा लहराने के लिए सब कुछ न्यौछा वर करने को तैयार थे।

महात्मा गांधी के आशीर्वाद से वर्धा में पनपने वाली युवा पीढ़ी के एक सहभागी के नाते व्यासजी इस राष्ट्रीय आंदोलन से दूर कैसे रह सकते थे? पूरे देश में बढ़ रहे जोश खरोश एवं बलिदानी माहौल में बीकानेर ने भी सक्रिय योग दिया। व्यासजी के नेतृत्व में 5 सदस्यों का एक जत्था आत्माहुति की भावना लेकर बीकानेर से रवाना हुआ। मोहतों के चौक से एक विशाल जुलूस के रूप में इन सत्याग्रहियों को विदा किया गया। वह रोमांचक दृश्य अभी तक भी हजारों लोगों को याद है।

व्यासजी के साथ गोआ आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वालों में से एक सत्य नारायण हर्ष के अनुसार 'उन दिनों जनता में एक जबरदस्त जोश था। गोआ में श्री एन जी गोरे एवं अन्य नेताओं की गिरफ्तारी ने उस जोश के माहौल को और अधिक गरमा दिया था। बीकानेर से गोआ के लिए प्रस्थान करने वाले जत्थे के सेनानियों में भी उसी जोश की झलक देखी जा सकती थी। श्री मुरलीधर व्यास के नेतृत्व में जाने वाले सत्याग्रही थे सर्वश्री मकसूद भारद्वाज सत्यनारायण हर्ष भँवरलाल हर्ष एवं मकसूद माली। इन पांचों बलिदानी व साहसी आन्दोलनकारियों का जत्था बीकानेर से रवाना होकर अपने कार्यक्रमानुसार सर्व प्रथम जयपुर पहुंचा। बीकानेर स्टेशन पर हजारों लोगों ने जय जयकार के नारों से उन्हें विदा किया। जनता का सहयोग सराहनीय था। आर्थिक सहयोग एवं मनोयोगपूर्ण अन्य सहयोग के कारण ही यह कारवां आगे बढ़ सका था। मोहतों के चौक से लेकर स्टेशन तक स्थान स्थान पर मालाओं से स्वागत किया गया। उधर जयपुर में भी यही स्थिति थी। जयपुर के निवासियों ने श्रीमती भगवतीदेवी के नेतृत्व में आत्माहुति के लिए तत्पर एक जत्थे को ऐसे जोश खरोश के साथ विदाई दी। राजस्थान से बीकानेर और जयपुर के ये दो जत्थे एक साथ रवाना हुए। सवाई माधोपुर होते हुए सभी साहसी सूरमे बम्बई पहुंचे। रास्ते में सभी मुख्य स्टेशनों पर जनता ने हमारा स्वागत किया।

हमारे सामने लक्ष्य स्पष्ट था 15 अगस्त 1954 को गोआ में तिरंगा झण्डा लहरा के रहेंगे। फिर चाहे प्राण जायें या रहें जेलों में डालें या लाठियां बरसायें गोलियों से भूनें या लम्बे कारावास में रखें कुछ भी करें या कुछ भी हो लबों पर यही नारा था कि लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे।

यह कारवां अन्ततः बम्बई पहुंचा। वहां एक दिन रुक कर देश भर से आये अन्य जत्थों से सम्पर्क किया। गोआ विमोचन समिति ने सम्पूर्ण स्थिति एवं वातावरण से अवगत करते हुए उन्हें आगे का कार्यक्रम बताया। 14 अगस्त को जो जत्था कसललोक स्टेशन पहुंचा उसमें राजस्थान सहित अन्य प्रान्तों के लगभग 250 300 सत्याग्रही थे। 15 अगस्त के दिन तिरंगे झण्डे की छत्रछाया में गोआ में प्रवेश करना था।

आन्दोलन के कारण रेल एवं बस मार्ग बन्द कर दिये गये थे। कसललोक से आगे बढ़ने के लिए और गोआ में प्रवेश करने के लिए खुश्की मार्ग के अलावा और कोई मार्ग नहीं था। जोश में कोई कमी नहीं थी। ऊबड़ खाबड़ मार्ग पहाड़ी रास्ते जंगली पशुओं की डरावनी आवाजें असंख्य पेड़ एवं झाड़ियां उतार चढ़ाव का

श्रृंखलाएं एवं उन सबके बीच बढते हुए अविराम ठोस कदम 'हमने सोचा कि यदि हल्ला करते हुए आगे बढेंगे तो जगली पशु भाग छूटेंगे। हमने ऐसा ही किया, जोर जोर से नारे लगाते हुए आगे बढते रहे। यह रास्ता लगभग चार पांच किलोमीटर का ही था, पर था बडा डरावना। हम इसी बात से शक्ति या प्रेरणा मिल रही थी कि चाहे कुछ भी हो 15 अगस्त को गोआ पहुचना ही है।'

पहाडी रास्ते में आगे बढते बढते अतत सभी लोग रेल लाइन तक पहुच जो सत्तर पचहत्तर फीट की गहराई में थी तथा पहाड को काटकर बनाई गई थी। रेल लाइन तक पहुचने के लिए भी पहाडी पगडडियों एवं सुविधा के लिए नीचे उतरने वाली पैडियो का सहारा लेना पडा। स्थान स्थान पर पुलिस की चौकिया थी। बम्बई-पूना-बेलगाव और कसलरोक-सभी स्थानो पर पुलिस का ब दोबस्त था। यहा तक कि पहाड काटकर बनाई गई रेल लाइन पर भी एक स्थान पर पुलिस की व्यवस्था की गई थी। सुरक्षा के लिए तनात पुलिस दल की इस टुकडी ने सत्याग्रहियो को आगे जाने के लिए मना किया पर लोग अपने सकल्प से विचलित नही हुए। लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे' की गगनभेदी ध्वनि बराबर गूजती रही।"

'बम्बई की पुलिस ने कोई विशेष प्रतिरोध नही किया। उसने तो आगे के खतरे की चेतावनी देने के लिए ही आन्दोलनकारियो को रोका था पर जब बुलद हौसले व दृढ सकल्प देखे तो उनको आगे बढने दिया गया। सत्याग्रही लोग अब रेल मार्ग के साथ साथ चलने लगे। यह रेलमार्ग भी आगे गुफाओ में से होता हुआ निकाला गया था। कई फुट लम्बी गुफा में से निकलने के बाद एक खभा था जिस पर बम्बई की सीमा के समाप्त होने का सकेत था। जाहिर था कि इसके आगे गोआ की सीमा शुरू होती है। रेल्वे सिगनल के बाद फिर एक छोटी गुफा थी। उसे पार करते ही हम पहाड पर काले काले आदमी दिखाई दिये—पुर्तगाली पुलिस के आदमी। उन्होने ऊपर से बेतार के तार से नीचे सदेश भेजा ताकि पुर्तगाली पुलिस व सनिको की टुकडियों चौकन्नी हो जायें।

आगे एक और गुफा थी। लम्बी सी गुफा। कोई तीन सौ चार सौ फुट लम्बी। बम्बई की पुलिस सिगनल से लगभग 100 150 फुट दूर थी। सत्याग्रही लोग उस काली भयावह गुफा में घुस चुके थे। गुफा में एक ओर तो हिन्दुस्तानी लोग थे और दूसरी ओर दुर्दात पुर्तगाली सनिक। सिगनल से सौ डेढ सौ फुट पार करके सभी दृढ सकल्पी लोग मौत के मुह में स्वय ही आये थे। एक ओर सत्य त्याग एव उत्सर्ग का जलजला था तो दूसरी ओर पराधीन गोआ के विदेशी शासकों की ओर से तनात सैन्य बल था।'

व्यासजी के साथ गाआ आन्दोलन म सक्रिय रूप स भाग लेन वाला म से एक सत्य नारायण हष के अनुसार उन न्नि जनता म एक जबरन्स्त जोश था। गाआ म श्री एन जी गार एव अ य नताआ की गिरफ्तारी न उस जोश के माहौल को और अधिक गरमा न्यिा था। बीकानेर स गाआ क लिए प्रस्थान करन वाल जत्थ के सेनानियो म भी उसी जोश की झलक देखी जा सकती थी। श्री मुरलीधर यास क नतत्व म जाने वाले सत्याग्रही थ सवश्री महन्त भारद्वाज सत्यनारायण हष भॅवरलाल हष एव मन्न्त माली। इन पाचो बलिन्नानी व साहसी आन्दोलनकारियो का जत्था बीकानेर स रवाना होकर अपन कायक्रमानुसार सव प्रथम जयपुर पहुचा। बीकानेर स्टेशन पर हजारो लोगो न जय जयकार के नारो स उन्हे विदा किया। जनता का सहयोग सराहनीय था। आर्थिक सहयोग एव मनोवज्ञानिक अ य सहयोग के कारण ही यह कारवा आगे बढ सका था। मोहता के चौक स लेकर स्टेशन तक स्थान स्थान पर मालाआ स स्वागत किया गया। उधर जयपुर म भी यही स्थिति थी। जयपुर क निवासियो ने श्रीमती भगवतीन्वी क नतत्व म आत्माहुति के लिए तत्पर एक जत्थ को इसी जोश खरोश क साथ विदाइ दी। राजस्थान स बीकानेर और जयपुर क य दो जत्थ एक साथ रवाना हुए। सवाई माधोपुर होत हुए सभी साहसी सूरम बम्बई पहुचे। रास्त म सभी मुख्य स्टेशनो पर जनता न हमारा स्वागत किया।

हमारे सामने लक्ष्य स्पष्ट था 15 अगस्त 1954 को गोआ म तिरंगा झण्डा लहरा क रहगे। फिर चाह प्राण जायें या रह जेला म डालें या लाठियां बरसायें गालियो स भूनें या लम्बे कारावास म रखें कुछ भी करें या कुछ भी हो सबका एक यही नारा था कि 'लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे।

यह कारवा अन्तत बम्बई पहुचा। वहा एक दिन रुक कर दश भर स आये अन्य जत्थो से सम्पक किया। गोआ विमोचन समिति न सम्पूण स्थिति एव वातावरण से अवगत करते हुए उन्हें आगे का कायक्रम बताया। 14 अगस्त को जो जत्था कसलराक स्टेशन पहुचा उसम राजस्थान सहित अन्य प्रांतो क लगभग 250 300 सत्याग्रही थ। 15 अगस्त क दिन तिरंगे झण्डे की छत्रछाया म गोआ म प्रवेश करना था।'

आन्दोलन क कारण रल एव बस माग बन्द कर दिय गय थ। कसलराक से आगे बढने क लिए और गोआ म प्रवेश करन क लिए सु की माग के अलावा और कोई माग नहीं था। जोश म कोई कमी न थी। ऊबड खाबड माग, पहाडी रास्त जगली पशुआ की डरावनी आवाजें असख्य पेड एव झाडिया उतार चढाव की

शृखलाए एव उन सबके बीच बढते हुए अविराम ठोस कन्म 'हमने सोचा कि यदि हल्ला करत हुए आगे बढ़ेंगे तो जगली पशु भाग छूटेंगे। हमन एसा ही किया, जोर जोर से नारे लगाते हुए आगे बढते रहे। यह रास्ता लगभग चार पाच किलोमीटर का ही था, पर था बडा डरावना। हमे इसी बात से शक्ति या प्रेरणा मिल रही थी कि चाहे कुछ भी हो 15 अगस्त को गोआ पहुचना ही है।'

पहाडी रास्ते म आगे बढत बढते अतत सभी लोग रेल लाइन तक पहुचे जो सत्तर पचहत्तर फीट की गहराई म थी तथा पहाड का काटकर बनाई गई थी। रेल लाइन तक पहुचने के लिए भी पहाडी पगडडिया एव सुविधा क लिए नीचे उतरने वाली पडिया का सहारा लेना पडा। स्थान स्थान पर पुलिस की चौकिया थी। बम्बई-पूना-बेलगाव और कसललोक-सभी स्थाना पर पुलिस का बन्दोबस्त था। यहा तक कि पहाड काटकर बनाई गई रेल लाइन पर भी एक स्थान पर पुलिस की व्यवस्था की गई थी। सुरक्षा क लिए तनात पुलिस दल की इस टुकडी न सत्याग्रहिया का आगे जान के लिए मना किया, पर लाग अपने सकल्प स विचलित नही हुए। लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे की गगनभेदी ध्वनि बराबर गूजती रही।"

'बम्बई की पुलिस ने कोई विशेष प्रतिरोध नही किया। उसन तो आगे के खतरे की चेतावनी देन के लिए ही आ दोलनकारिया को रोका था पर जब बुल द हौसले व दढ सकल्प देखे ता उनको आगे बढने दिया गया। सत्याग्रही लाग अब रेल माग क साथ साथ चलन लग। यह रेलमाग भी आग गुफाआ म स होता हुआ निकाला गया था। कई फुट लम्बी गुफा म स निकलन के बाद एक खभा था जिस पर बम्बई की सीमा के समाप्त हाने का सकेत था। जाहिर था कि इसके आगे गोआ की सीमा शुरू होती है। रलवे सिगनल के बाद फिर एक छोटा गुफा थी। उस पार करत ही हम पहाड पर काले काले आदमी दिखाई दिये—पुतगाली पुलिस क आदमी। उ होने ऊपर स वेनार क तार म नीचे स दश भेजा ताकि पुतगाली पुलिस व सनिको की टुकडियाँ चौक नी हो जायें।'

आग एक और गुफा थी। लम्बी सी गुफा। कोई तीन सौ चार सौ फुट लम्बी। बम्बई की पुलिस सिगनल स लगभग 100 150 फुट दूर थी। सत्याग्रही लोग उस काली भयावह गुफा म घुस चुके थ। गुफा म एक ओर ता हि दुस्तानी लाग थ और दूसरी ओर दुर्दा त पुतगाली सनिक। सिगनल स सौ डढ सौ फुट पार करके सभी दढ सकल्पी लाग मौत के मु ह म स्वय ही आय थ। एक आर सत्य त्याग एव उत्सग का जलजला था तो दूसरी ओर पराधीन गोआ के विदेशी शासको की ओर स तनात स य बल था।

'विदेशी सनिकों ने हम आगे बढने स मना किया, पर हमने अपने वही नारे गु जाय 'लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे।' नेताओ के हाथो म तिरंगे झण्डे थे। एक तरह से हमारा प्रण पूण हो चुका था। गोआ की धरती 15 अगस्त का दिन– हाथो म तिरंगे झण्डे और मु ह म भारत माता की जय' की आवाजें।

'पराधीनता की दुर्गन्ति शक्ति के मु ह पर तमाचा लग चुका था और अब वह बौख लाई हुई शक्ति हम आगे बढने से रोक रही थी। आग आगे झण्डा लिये हुए जो लोग चल रहे थे उनम व्यासजी तो प्रमुख थे ही बीकानेर के श्री मरूदत्त भारद्वाज के हाथो म भी झण्डा था। हम लोग चार चार पाच पाच की कतारा म आग बढ रहे थे। आगे क झण्डाधारियो से हम (सत्यनारायण हप एव कुछ अ य लोग) आठ दस कतारें पीछे चल रहे थे।

किसी के हाथ म दल विशेष का झण्डा नही था—भारत की एकता का प्रतीक तिरंगा ध्वज ही आग बढ रहा था। इतने म बिना किसी विशेष चेतावनी के धाय धाय की आवाजें आन लगी। गोलिया चलन लगी थी। हमार सामन ब दूकों से लस सनिक थे और इस तरफ हम निहत्थे सत्याग्रही थे। काली भयावनी गुफा और मौत की डरावनी छाया सबको निगलने के लिए तयार थी।

हम समझाया गया था कि गोली चलते ही लेट जाना। हम सभी धरती पर लेट गये। उधर गोलियो के कारण भगदड मच चुकी थी कुछ लोग हमारे ऊपर ही आ पड थ। व जीवित थ या मृत घायल थ या स्वस्थ कुछ भी पता नही पड रहा था। धाय धाय धाय जब समाप्त हुई तब पता चला कि तीन सत्याग्रही शहीद हो चुके थे बहुत से जख्मी थ। लोग किसी तरह उठकर घुटना के बल चलते चलते गुफा स बाहर आग। गुफा क बाहर जब दृश्य देखा तो ज्ञात हुआ कि तीन मृतको क अलावा घायलो की सख्या बहुत अधिक थी।'

व्यासजी क वक्ष क पास चोट लगी थी। खुशकिस्मती स गोली वक्ष क ऊपर से होत हुए निकल गई। श्री मरू दत्त भारद्वाज क बायें हाथ म और पेट की बायी तरफ गोलिया लगी थी। गुफा म मर ऊपर आकर गिरन वालो म श्री मरूदत्त भारद्वाज ही था। हम तीन चार साथी उस उठाकर लाय थ। सत्याग्रही लोग घायलो और मतको को उठा–उठाकर बाहर लान म लग थे। बडा ही करुण मार्मिक दृश्य था पर हौसला अब भी बुल द था। कई साथी आग्रह कर रहे थे कि हम वापिस गुफा म जायेंगे पर नेताओ ने समझाया कि हमारा लक्ष्य पूरा हो चुका है। भारत का तिरंगा झण्डा गोआ की धरती पर लहरा दिया गया। आजादी क दीवानो न अपने खून स मा के भाल पर तिलक कर दिया। अत्या चारियो के दमन के बावजूद सकल्प सिद्ध हो चुका।

'अनमने होते हुए भी हम लाग अपने शहीदा के शवा का लेकर पुन सिगनल तक आये।

मत्यु की घटनाआ के कारण हम शोक सतप्त तो थे, पर कायरता बिल्कुल नही थी। सिगनल स 150–200 फुट दूरी पर तनात बम्बई की पुलिस ने तत्काल ही कसल्लोक वायरलस सदेश भेजा और आग्रह किया कि उस स्थान तक रेलगाडी भेजी जावे। यद्यपि आन्दोलन क कारण रल माग बन्द कर दिया गया था पर इस घटना को ध्यान म रखत हुए हमारे लिए सिगनल से थाडी दूर आगे तक रेल की व्यवस्था कर दी गई। जा इजिन रलगाडी का लेकर आया था उसे बिना मुडे उल्टे–उल्टे ही रेलगाडी को लेकर रवाना हाना था।"

"मतको म एक थे श्री नत्थूराम। वे मथुरा के निवासी थे। उस समय साधारण बूदाबादी भी हो रही थी। शहीदा के शवो एव गभीर रूप से घायल सत्याग्रहिया के लिए उसी समय उपलब्ध लाठिया व कम्बला स स्ट्रेचर बनाय गय और सबको रेलगाडी म पहुचाया गया। कसललोक से गोआ की दूरी रेल माग से लगभग 30–35 किलोमीटर है पर इस स्टेशन (कसलर्लोक) से गोआ की तरफ वाले माग म 10 15 किलामीटर पर भारतीय पुलिस की बहुत अच्छी व्यवस्था की गई थी। सत्याग्रहियो ने घटनास्थल (गुफा) से दो किलोमीटर तक शहीदा के शवा को स्ट्रेचरा पर पहुचाया जहा से रेलगाडी की व्यवस्था की गई थी। पच्चीस-तीस घायला म स कुछ गम्भीर रूप से घायल थे–उनक लिए भी पर्याप्त व्यवस्था की गई।

बेलगाव स्टेशन पर गोआ विमाचन समिति ने सत्याग्रहिया की अगवानी की। रात्रि का समय होन से मनक साथियो के शवा को एक सुरक्षित स्थान पर रखा गया। घायला को उपचाराथ तत्काल ही बेलगाव क अस्पताल म ले जाया गया। व्यासजी के कधे पर चोट के निशान थे जबकि मरुदत्त भारद्वाज गभीर रूप से घायल होने वाला म थे। 16 अगस्त का दिन। शहीदो के दाह सस्कार म पूरा बेलगाव ही जस उमड पडा। बाजार बन्द स्कूलें बद प्रतिष्ठान बद। आगे–आगे तीन अर्थिया और उनके पीछे चलन वाले हजारा–हजारा आबाल वृद्ध जन—बडा ही मार्मिक दश्य था। पूरे सम्मान के साथ शहीदा का दाह सस्कार किया गया। उसक बाद श्मशान से थोडी दूरी पर ही व्यासजी का ओजस्वी भाषण हुआ। चूकि व्यासजी वहा की स्थानीय भाषा म नही बोल सकत थे अत वे अग्रेजी म बोले। तिलगम भाषा भाषी एक व्यक्ति न जहा आवश्यक समझा उसका आशय—

अंग्रेजी नहीं जानने वालों को समझाया। व्यासजी ने कहा कि जब तक गोआ आजाद नहीं होगा, भारत की आजादी अधूरी ही रहेगी। एन जी गोरे जैसे अनेक राष्ट्रीय नेता गोआ की जेलों में बंद हैं और अन्य लोग भी कटिबद्ध हैं कि चाहे प्राण जायें या रहें पराधीनता के इस नासूर को भारत माता के शरीर पर नहीं पनपने देंगे।

'16 एवं 17 अगस्त को बेलगाव में रहने के बाद 18 तारीख को सत्याग्रही पुनः अपने गंतव्य स्थान की ओर बढ़े। इन तीनों दिनों में घायलों का कुछ उपचार हो चुका था। फिर भी इनकी देखभाल की परम आवश्यकता थी। बेलगाव से बम्बई तक स्थान स्थान पर हर स्टेशन पर लोगों ने सत्याग्रहियों का भावभीना स्वागत किया। लोग चाय डबलरोटी खाद्य पदार्थ फल एवं मिठाइयां स्वतः ही चला चला कर लाते रहे। जाते समय भी स्वागत था तो आते समय उससे भी अधिक स्वागत हो रहा था।

बम्बई से भिन्न भिन्न प्रांतों के जत्थे अपने अपने स्थानों के लिए पृथक पृथक रवाना हो गये। अभी तक तो 250–300 साथी एक साथ ही यात्रा करते रहे थे। बम्बई में किसी सभा का आयोजन नहीं हुआ पर समाचार पत्रों ने इस सारी घटना को प्रमुख स्थान देकर प्रकाशित किया। गोआ विमोचन समिति को पूरी घटना की जानकारी दी गई। बम्बई में हमें थोड़ा रुकना पड़ा क्योंकि वहां भी श्री मरूदत्त भारद्वाज का इलाज हुआ था।

बम्बई से जयपुर आये। वहां बड़ी चौपड़ पर एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। श्रीमती भगवती देवी एवं श्री मुरलीधर व्यास के अतिरिक्त अन्य नेताओं ने अपने विचार प्रकट किये। फिर हम बीकानेर आये। जुलूस की शक्ल में हजारों लोगों ने हमारा स्वागत किया। रतनबिहारी पार्क में एक ऐतिहासिक आम सभा भी हुई। लगा कि बीकानेर वासी उस समय उमड़ पड़े थे। व्यासजी की सिंह गर्जना उस मीटिंग में जिन्होंने सुनी उन्हें वह आज तक याद होगी। मरूदत्त भारद्वाज को अस्पताल से लाया गया। व्यासजी ने उसके हाथ एवं पेट पर गोलियों से आहत स्थल दिखाये। तुरन्त ही उसे वापिस अस्पताल भेज दिया गया। कई नेताओं एवं कवियों ने अवसरानुकूल भाषण दिये व कविताएं प्रस्तुत की। जब व्यासजी बोलने को खड़े हुए तो कई मिनटों तक शेरे व्यासजी–जिन्दाबाद के नारे गूंजते रहे।

बीकानेर के आन्दोलनों के इतिहास में जामसर के जिप्सम मजदूरों के अनेक आन्दोलन अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। जामसर धीरेरा लूणकरणसर सूरतगढ एवं अन्य स्थानों पर जिप्सम खनिज को निकालने वाली कम्पनी मेसर्स बीकानेर जिप्सम

लिमिटेड की स्थापना भूतपूर्व बीकानेर राज्य के समय म ही हो गई थी। प्रारम्भ म उसे बीस वष का लीज प्रदान किया गया पर कालान्तर म उसकी अवधि म वृद्धि कर दी गई। राजस्थान सरकार का नियत्रण पहले 40 प्रतिशत हिस्सा पर बाद मे 51 प्रतिशत हिस्सा पर हो गया।

अपनी स्थापना स लेकर 1967 के आदोलना तक कम्पनी की व्यवस्था एक ही मनेजिंग एजे सी के हाथ म रही थी। व्यासजी पहले व्यक्ति थे जि होने कम्पनी के मजदूरा की दुदशा देखकर उ ह सगठित होने एव अपने अधिकारो के लिए सघप करने के लिए प्रेरित किया था। सघप करने के प्रारम्भिक दिना की याद करते हुए जिप्सम मजदूर यूनियन नेता श्री बजरग लाल ओझा न अपने एक लेख जिप्सम मजदूरो के मसीहा म उस समय की स्थिति का वणन इस प्रकार किया है

जिप्सम मजदूरा के आ दालन की शुरुआत व्यासजी न उस समय की जब इस उद्योग म कायरत मजदूरा की दशा अत्यत शोचनीय थी। मालिका द्वारा मजदूरो का भयकर रूप स शोपण किया जा रहा था। उनकी नौकरी की कोई सुरक्षा नही थी और न ही किसी प्रकार का मजदूर हितपी कानून इस उद्योग पर लागू था। बेराजगारी की विभीषिका से पीडित मजदूर चार आन प्रति टन लोडिंग की मजदूरी अपमान और मालिका की मरजी पर नौकरी पर रखे जान और निकाल दिये जान जसी असहनीय स्थिति को सहन करने के लिए मजबूर थे। उन दिना जिप्सम कम्पनी के बाबू तक का भी अधिक तनख्वाह नही मिलती थी। मजदूर अन्दर ही अन्दर सिसकता था पर खुला विरोध प्रदर्शित कर नौकरी गवाने से डरता था।'

'ऐसी विपम परिस्थितिया म श्री व्यासजी ने जिप्सम मजदूरा की दयनीय स्थिति स द्रवित होकर उन्हें सगठित करने का बीडा उठाया। सन 1954 म व्यासजी न सवप्रथम जिप्सम मजदूरा की यूनियन बनाने का प्रयास आरम्भ किया। एक एक मजदूर की झोपडी म वे गये और मजदूरा का उनके कानूनी अधिकार से अवगत करवाया। अन्याय के विरुद्ध सगठित आवाज उठान की उ ह प्रेरणा दी।'

एक तरफ दारुण विवशता दो जून पट भरने की भीषण समस्या, विपन्नता और गरीबी तथा दूसरी तरफ निरकुश व्यवस्था स्वेच्छाचारिता, सवेदनहीनता एव शोपण। भ्रू दा म मिलाप होने की कोई सभावना तक नहीं थी। ऐसी स्थिति म एक मात्र माग था सघप का और व्यासजी ने वही चुना। विवश और दयनीय आतकित और सशकित मजदूर सघप के लिए तत्काल तयार हो गया हो ऐसी बात नही थी। वह डरता था कि कही सघप की बात होठा पर आ गई तो नौकरी से

छुट्टी होते देर ही नहीं लगगी। भीतर ही भीतर वह तिमता था पर मुह खोलने की हिम्मत नहीं करता था।

श्री बजरग लाल आभा के अनुसार– प्रारम्भ म डरे हुए मजदूर व्यासजी से मिलने के उजाले म मिलने से उनके साथ देख जाने से घबराते थे। जिसस कम्पनी के जासूस व्यासजी और मजदूरों की प्रखर गतिविधि की रिपोर्ट मालिकों तक पहुचाते थे। इसलिए व्यासजी रात म लोगों से मिलते उन्हें उत्साहित करते। आखिर कुछ दिनों बाद श्री रहीम शाह और श्री रतनलाल आदि 8 10 साहसी लोगों का सगठन बनाया और उसे कानूनी रूप दिया। धीरे धीरे और मजदूर भी सगठन के सदस्य बने। सन् 1956 म मजदूरों की मांगों को लेकर पहली हडताल हुई।

जिस मजदूर ने कभी मौखिक विरोध तक नहीं किया था वह हडताल जसी स्थिति के लिए तयार हो गया। नाक पर दम भी उसने अपनी रोटी और रोजी को और तयार हो गया मरने के लिए, लाठियों के वार सहने के लिए और जल जाने के लिए। स्वच्छाचारिता और निरकुश व्यवस्था ने पहला आक्रमण कानूनी शिकजे के रूप म किया। औद्योगिक अशान्ति म हडताल को गर कानूनी घोषित करवा दिया गया। आशय स्पष्ट था — या तो काम पर आओ या नौकरी से निकाल जाने को तयार रहो। मजदूरों ने नफा-नुकसान हो चुना। अपने उठे हुए मस्तक को झुकाने वाली पट की पुकार के आगे घुटना टेकना नहीं किया।

सभी श्रमिक पुरुष और महिलाए हाथ पर हाथ धरे बठे थे। सारा काम ठप्प था। न खुदाई न ढुलाई और न माल की लदाई—कुछ नहीं। इधर भूख की व्यथा सता रही थी पर उधर व्यवस्थापकों की व्यवस्था भी चरमरा रही थी। सभाओं जुलूसों और नारों ने मजदूर के आत्म बल को काफी बढा दिया था। उसने एक बार भय को जो छोडा तो पूरी तरह ही छोड दिया। 25 जून 1956 को प्रारम्भ हुई यह हडताल लगातार 35 दिनों तक चली। इसम सात हजार मजदूरों ने भाग लिया। गिरफ्तार होने वालों म व्यासजी के साथ जमाल शाह पीर और रहीम शाह भी थे। मजदूरों के साथ साथ आमसर की जनता ने भी इसम भाग लिया। मजदूर परिवारों की सहायताथ बीकानेर से अनाज कपडे और रुपये भेजे गए। लोगों ने स्वच्छा से सहायता की।

एक शक्ति झुकी पर वह मजदूर की शक्ति नहीं व्यवस्था की शक्ति थी। मजदूरों की सगठित शक्ति को पहली मान्यता उस समय मिली जब उनकी वेतन वद्धि तथा अन्य सुविधाओं की मांगों को ट्रिब्यूनल म देना स्वीकार कर लिया गया। इस सफलता ने मजदूरों को विपुल आत्म विश्वास दिया। बीकानेर की जनता के हृदय

म व्यासजो के प्रति और अधिक श्रद्धा का सचार भी हुआ । जन जन यह समझन लगा कि व्यासजी दलितो पीडितो एव शोषितो के पक्षधर हैं। अन्याय की हर ताकत का जबडा तोडने मे व्यासजी सदा आगे रहते हैं। ऐसी धारणाए बलवती हुई ।

दूसरी जबरदस्त हडताल 1958 म हुई । द्वितीय आम चुनावा से सिर्फ एक वष बाद । यह पहली हडताल से अधिक व्यापक और घनीभूत थी क्योकि यह दो महीना तक चलती रही थी । एक बार फिर मजदूरो ने अपने चूल्हे चक्की को दाव पर रख दिया था—और वह भी एक दिन के लिए नही पूरे साठ दिना के लिए। इस बार मजदूर पहले स अधिक सगठित थ । उनकी यूनियन की सदस्य सख्या मे भारी वद्धि हो चुकी थी और उसके नेता साथी मुरलीधर व्यास विधायक बन चुके थ । हडताल को असफल करन के लिए प्रब धको ने हर सभव उपाय काम मे लिया । आर्थिक प्रलोभन तो पहले ही असफल हो चुका था । इस बार मार पीट का दौर चला जिसम राधेश्याम गौड और गोपालसिह चौकीदार के चोटें आई । दमन चलता रहा । व्यासजी गिरफ्तार कर लिये गये । मजदूरा ने लगातार भारी सख्या म गिरफ्तारिया देकर बीकानेर की जेल को भर दिया । श्री एन० जी० गोरे श्री अशोक मेहता और श्री नाथ प आदि प्रजा समाजवादी पार्टी के अनेक राष्टीय स्तर के नेता बीकानेर आये और इस हडताल के मुख्य कारणा—वतनवद्धि बोनस छुट्टियो प्रोविडेण्ट फण्ड काम की परिस्थितिया आवास आदि न्यायोचित मागो पर राष्टव्यापी नजर पडी । निरन्तर गिरफ्तारियो व मजदूरा की अटूट एकता के कारण प्रशासन और जिप्सम मालिक घबरा गये और मजदूरा की सभी मागें न्यायाधिकरण के सामने प्रस्तुत करदी गई । मजदूर एकता को तोडन की जो भी कोशिश की गई वह निष्फल हुई।

समाजवादी नेता एव सासद श्री नाथ प के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध समाजवादी नता श्री एन जी गोरे ने भी हडताल के प्रसग म महत्वपूण काय किया । व्यास जी के 15 नवम्बर 1958 के पत्र के उत्तर म श्री गोरे ने 18 11 1958 को लिखा कि वे भारत सरकार के श्रम मत्री से मिल कर इस प्रकरण म कायवाही करने के लिए कहगे । पत्र का एक उद्धरण "It would appear that inspite of all our efforts it has not been possible to make the Minister of Labour to take any concrete steps in regards to the Gypsum Mine workers strike Now that I am in Delhi, I shall immediately contact the Labour Minister and see whether he can be persuaded to do something in the matter . .

श्री गारे के प्रयत्नो से श्रम मंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा के ससदीय सचिव श्री एल एन मिश्रा बीकानेर आये। उधर अजमेर से कसीलियेशन अधिकारी को भी बीकानेर भेजा गया। श्री नाथ प, श्री एल एन मिश्रा तथा कन्सीलियेशन अधिकारी-तीनो की रिपोर्ट म इस बात पर जोर दिया गया कि मजदूरो की मागो पर विचार करना अत्यावश्यक है। यास जी एव श्री रमेश चन्द्र शुक्ला (मंत्री जिप्सम मजदूर यूनियन) सहित सभी गिरफ्तार लोगो को जेल से रिहा कर दिया गया तथा मजदूरो की मागो को ट्रिब्यूनल म देने का निणय लिया गया। इस प्रसग म समाजवादी नेता श्री अशोक मेहता एव श्रम उपमंत्री श्री आबिद अली की भी महत्वपूण भूमिका रही। व्यास जी एव रमेश चन्द्र शुक्ला वार्तालाप के लिए दिल्ली गये तथा श्री आबिद अली से मिले। 1960 म ट्रिब्यूनल ने जो अवार्ड दिया उस म मजदूरो की सभी महत्वपूण मागें मान ली गई। 20 अगस्त 1960 को हुए दीघकालीन समझौते के अनुसार ग्रेड सशोधन महगाई भत्ते के निर्धारण तथा कार्यानुसार मजदूरी की दरो म परिवतन कर दिया गया। 1958 की हडताल म श्री राधेश्याम गौड सहित अनेक नेताओ को सेवा मुक्त कर दिया गया था। मामला सर्वोच्च न्यायालय तक चला और आखिर कम्पनी को समझौता करना पडा। तीन चौथाई भुगतान के आधार पर सभी को वापिस सेवा म ले लिया गया।

श्री वीरेन्द्र नाथ गुप्ता (सचिव जिप्सम माइ स वर्क्स यूनियन) के अनुसार 1962 स 1966 तक व्यास जी यूनियन क सरक्षक रहे। इस बीच 1963-64 के सत्र म एक बार पुन प्रदशन एव गिरफ्तारिया हुई। श्री मोहनलाल सुखाडिया (मुख्य मंत्री, राजस्थान) के सामने प्रदशन करने के आरोप म जामसर यूनियन पदाधिकारियो सहित 21 श्रमिक गिरफ्तार किये गये। इनम सवश्री राधेश्याम गौड (अध्यक्ष जिप्सम माइ स वर्कस यूनियन) उम्मेद सिंह सु दर लाल एव ओमप्रकाश बसल भी थे। रेल्वे म म यूनियन सहित अनेक यूनियनो ने गिरफ्तारियो के विरुद्ध जन आन्दोलन म भाग लिया।

1966 एव 1967 के यूनियन-चुनावो म यास जी को पुन महामंत्री पद पर नियुक्त किया गया। इस बीच वकल्पिक यूनियन के बन जाने स मजदूरो म फूट पड चुकी थी तथा स्थानीय प्रबधक उस फूट का लाभ उठाकर व्यास जी द्वारा सचालित यूनियन की मा यता समाप्त करना चाहते थे। वे इसम सफल नहीं हो सके क्योकि यास जी का प्रभाव इतना जबरदस्त था कि जब व भाषण करते तो यूनियन छोडकर जाने वाले मजदूर भी पश्चाताप करने लगते तथा पुन मुख्य धारा म आ मिलत थ। उनके व्यक्तित्व के प्रभाव क आगे प्रलोभन अथवा अ य उपाय चल ही नही सकत थे।

इस बीच दीघकालीन समझौता समाप्त हो जान से नये दीघकालीन समझौते की तयारियाँ प्रारम्भ हुई। यूनियन की तरफ से श्री रतनलाल एडवोकेट, कम्पनी की आर से श्री आन " प्रवान बरिस्टर सुप्रीम कोट तथा सरकार की ओर से श्रम आयुक्त श्री ए एन राय न भाग लिया तथा अन्तत समझौता हो गया। चूंकि समझौते म लोडिंग श्रमिका को सम्मिलित नही किया गया था अत 1967 म उनके पक्ष म 15 दिना की एक और हडताल हुई जो जामसर धीरेरा, लूणकरणसर तथा सूरतगढ चारो स्थानो पर चली। श्रमिक 41 पसे प्रति टन की जगह 44 पसे प्रति टन की माग कर रहे थ। व्यास जी एव श्री बी एन गुप्ता वार्ता के लिए दिल्ली गये तथा श्री जयसुख लाल हाथी (श्रम मन्त्री, भारत सरकार) से विचार विमश किया।

मामला यायाधिकरण को सौंप दिया गया और तब जाकर हडताल समाप्त हुई। इससे व्यास जी द्वारा सचालित यूनियन की शक्ति और अधिक बढ गई। समझौते का एक लाभ यह भी हुआ कि उसके अनुसार भविष्य म जब कभी विभागीय श्रमिको की वेतन वृद्धि होगी उसका आनुपातिक लाभ लाडिंग श्रमिका को भी मिलेगा। परिणामस्वरूप 1967 म जो दर 44 पस थी वही आजकल 3 रुपये 50 पसे प्रति टन है।

जामसर जिप्सम कम्पनी क मजदूर आन्दोलन की अनुगूज जन सभाआ के साथ साथ राजस्थान विधान सभा तथा केन्द्रीय म त्रालया के स्तर पर भी सुनाई देती थी। 1967 के आम चुनाव से पूव व्यास जी क नेतत्व वाले मजदूर सगठन को शिथिल करने के लिए कई प्रयास किये गये। एक समानान्तर सगठन—राष्ट्रीय जिप्सम कमचारी सघ बनाया गया। उसकी ओर स 12 सूत्री मागा का ज्ञापन देकर घोषणा की गई कि यदि मागें पूरी नही की जायेगी तो मजदूर जबरदस्त हडताल के लिए विवश हो जायेंगे। मागा के समथन म एक मजदूर को भूख हडताल पर बठाया गया। विधान सभा कायवाही के एक अश के अनुसार 'हरिदेव जोशी (खनिज म त्री) से कोई बात करने आए। कहा मागें इतने दिना म पूरी नहा होगी तो एसा करेंग। भूख हडताल की घोषणा कर दी। भूख हडताल का मामला बिगडने लगा जमा नही। तब क्या हुआ? तार एक यहा से गया चलो बात चीत हो गई है, भूख हडताल समाप्त कर दो और फसला हो गया। सारी मागें मन्जूर हो गयी।"

इस माग पत्र के सिलसिले म माडलगढ (भीलवाडा) के तत्कालीन विधायक श्री पुराहित भी भूख हडताल पर बठे थ। व्यासजी ने तो आजीवन मजदूरा की

मागा का समथन किया ही था, अत उन्होंने इन 12 सूत्री मागा के समथन म भी अपना वक्तव्य दिया और सरकार स माग की कि मजदूरा के साथ याय किया जाय। चार पाच दिनां म ही श्री हरिदेव जोशी के आश्वासन क आधार पर भूख हड़ताल समाप्त कर दी गई तथा ऐसा प्रचारित किया गया कि सारी मागें म जूर हो गइ हैं और श्री हरिदेव जोशी का पच के रूप म नियुक्त किया गया है। श्री हरिदेव जोशी द्वारा प्रसारित नोटिस की भाषा इस प्रकार थी — 'बीकानेर जिप्सम कम्पनी लिमिटेड और राष्ट्रीय जिप्सम कमचारी सघ, बीकानेर के बीच म औद्योगिक विवाद के लिए उनके आपसी समझौते द्वारा मुझे पच नियुक्त किया गया है और उनका समझौता भारत सरकार के श्रम मन्त्रालय द्वारा भारत सरकार के गजट म उक्त धारा 3-10 (1) औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 के *अधीन प्रकाशित किया जा चुका है।* औद्योगिक विवाद सम्ब धी सभी व्यक्तियो और कामगारा को सूचित किया जाता है कि अगर उनको इस सम्ब ध म कोई प्रतिवेदन देना है तो 8 6 66 तक अपने ऐतराज प्रस्तुत करें — हरिदेव जोशी

व्यास जी न जन सभाओ और विधान सभाओ म वस्तु स्थिति बताते हुए कहा कि *यह सरासर गलत है कि नोटिस भारत सरकार के गजट म प्रकाशित किया जा* चुका था। नोटिस पर 29 मई की तारीख है (जिसम लिखा है कि यह श्रम मन्त्रालय क गजट म प्रकाशित हो चुका है) पर गजट म 4 जून को प्रकाशित हुआ है। इस तरह म त्री महोदय न गलत बयानी की है। उन्होंने कहा कि सारी मागें पहले स ही औद्योगिक विवाद क रूप म ट्रियूनल के सामने हैं। फिर ट्रियूनल स अपने आप लेकर पच फसल की बात करना कानून की अवहेलना है। कोई भी आरबिट्रेटर (पच) नियुक्त होन से पहले सबको मौका देना चाहिए, फिर एतराज आने चाहिए और फिर मा यता हो तो उस सघ से बातचीत की जानी चाहिए।

नये सघ की मा यता तो है नही और श्री जोशी न आरबिट्रेटर होना म जूर कर लिया। यह सारा दिखावा है गर कानूनी काम है। एक भी माग म जूर नही हुई है।

व्यास जी न इस सम्ब ध म भारत सरकार के तत्कालीन वरिष्ठ मन्त्री बाबू जगजीवन राम को पत्र लिखा। श्री जगजीवन राम न अपने पत्र म लिखा कि—

As for recognition of the Gypsum Karmchari Sangh by the Management it has been explained to the Management that recognition granted to the Sangh without verification of member ship would not be regarded as *recognition under the code of*

discipline ' व्यास जी ने कहा कि बाबू जगजीवन राम ने लिखा है कि कानून राज्य सरकार का है पर किसी का पक्ष लेकर गलत काम किया गया है।' इस तरह उन्होने सारी गलत कार्यवाही के खिलाफ लिखा है।'

व्यास जी ने एक और माग की चर्चा करते हुए कहा कि हमारी एक माग थी–ठेकेदारी प्रथा समाप्त करो। यह मामला ट्रिब्यूनल म चल रहा था। श्री हरिदेव जोशी ने ट्रिब्यूनल के निर्णय की प्रतीक्षा किए बिना फसला दे दिया कि ठेकेदारी प्रथा रहनी चाहिए। पता नही वे ' इस कम्पनी के साथ क्या सौदा करते हैं? जिप्सम कम्पनी की बलेंस शीट (1966) म खच के बारे म लिखा है 'Including advertisement published in the souvenir for Rs 5000 (five thousand only)" यह विज्ञापन सरकारी दल की स्मारिका म दिया गया है। कम्पनी क शेयम म 40 प्रतिशत शेयर सरकार के हैं। अत अपने दल को दिलाया गया यह चदा गर कानूनी है। श्री मानिक चन्द सुराणा ने भी इसकी खिलाफत करते हुए कहा था इस अण्डरटेकिंग म 40 प्रतिशत शेयर सरकार क हैं और 40 प्रतिशत शेयर होने के कारण भारत सरकार ने कहा है कि यह पब्लिक अण्डरटेकिंग की श्रेणी म आ जाती है। ऐसी पार्टी को सरकार स्वय चन्दा दे रही है जो सरकार की पार्टी है तो एक प्रकार स सरकार अपने आपको चन्दा दे रही है। व्यासजी ने बताया कि अब तक जिप्सम कम्पनी ने पार्टी को 25 हजार का चन्दा दिया है जो गर कानूनी है। इसे चदे के कारण मत्रिगण कम्पनी के पक्ष मे फसले दे देते हैं। व्यासजी जसे जागरूक जन नेता और मजदूर नेता ने हर स्तर मजदूरो के हितो की परवी की। यहा तक क वकल्पिक समानान्तर तथा अमान्यता प्राप्त सघ की 12 सूत्री मागो का भी (जो मजदूरो क पक्ष मे थी) उन्होने तत्काल समथन किया पर समय आने पर उस सघ' क स्वरूप का पर्दाफाश भी किया।

मजदूर व्यास जी के साथ थे और साथ ही रहे।

जिप्सम माइ स वकस यूनियन की एक विज्ञप्ति म कम्पनी की अव्यवस्था मनेजिंग समिति की अक्षमता निरथक व्यय करने की प्रवृत्ति एव कम्पनी पर लाखो रुपया के अलाभकारी व्यय को लादने की आलोचना की गई। विज्ञप्ति ने ठेकेदारी प्रथा पर भी प्रहार किया। विज्ञप्ति के अनुसार–कतिपय अधिकारी कम्पनी के लाभ की मोटी धनराशि नाना प्रकार के कुचक्र चलाकर हडप जाते हैं। माग उठी कि शीघ्रातिशीघ्र प्रब ध करके कम्पनी को अधिक हानि से बचाया जाय उसका लाभ बढाया जाय ताकि मजदूर वग जिसके खून पसीने की कमाई स इस कम्पनी का

सचालन होता है उसे अपन परिश्रम का उचित मुआवजा वेतन आदि के रूप म प्राप्त हो सके ।

विज्ञप्ति ने उन कुछ ठेका का वणन किया जो अधिकारियो द्वारा समय समय पर स्वीकृत किये गये । विज्ञप्ति म कहा गया कि समस्त निरथक एव अनुत्पादक खर्चों म आवश्यतानुसार कटौतियां करक कम्पनी का लाभ म लाया जाय ताकि मजदूरा को वेतन वृद्धिया बोनस प्रोविडेण्ड फण्ड आदि न्यायिक सुविधाए मिल सकें ।

दूध निकासी आदोलन (1970) क दिनो म जब व्यासजी गिरफ्तार हो गये और एक बार ऐसा लगा कि जनता का जोश कुछ ठण्डा पड रहा है उस समय जामसर के जिप्सम मजदूरा ने ही गिरफ्तारियां देकर आदोलन को पुन गतिशील किया था । जामसर जिप्सम मजदूर नेता श्री वीरेन्द्रनाथ गुप्ता के अनुसार तीन चार दिनो तक कोई गिरफ्तारिया नही दी जा सकी । व्यासजी का (जेल से) लगातार यही सदेश आ रहा था कि गिरफ्तारिया दो । अतत मैंने अपने साथियो सहित जामसर सदेश भिजवाया कि जस भी हो जितने भी हो बीकानेर आआ गिरफ्ता रिया देने के लिए जुलूस निकालने का ऐलान कर दिया गया । मोहता के चौक म जुलूस का आयोजन किया गया । जुलूस का समय 11 बजे का था । एक बजे तक कोई यक्ति नही आया । बडी निराशा हो रही थी पर तु मन म आत्म विश्वास था कि जामसर का मजदूर व्यासजी के आदेश को नही टाल सकता और हुआ भी यही । दो ट्रका म करीब 80 साथी जामसर से आ गय । श्रमिका म उत्साह आ गया । मोहता का चौक नारा स गूज गया । सघष म जान आगई ।

जामसर के मजदूर जिस प्रकार 1954 म व्यासजी के प्रयासो स सगठित होकर खड हुए थ उसी प्रकार 1970 म भी उनके साथ ही जुडे थे । 1954 1958 1966 एव 1967 क आदोलनो स व्यास जी के प्रति उनका विश्वास दढ से दढ़तर होता चला गया । 1971 म व्यास जी क निधन न मजदूरो स उनका एक सवप्रिय नेता, एक पुरोधा एक योद्धा एव एक सघषशील रहनुमा छीन लिया ।

व्यासजी क अन य समथक एव सक्रिय कायकर्ता श्री गोकुल जी (घी वाले) ने भी आन्दोलना के दौर मे व्यासजी के नेतत्व कौशल की एव उनको मिलने वाले प्रबल जनसमथन की बातें बताई हैं । उनक अनुसार व्यासजी की चारित्रिक एव नतिक भावना इतनी प्रबल थी कि कोई भी आथिक प्रलोभन उनका विचलित नही कर सकता था । ' व्यासजी न जामसर जिप्सम कम्पनी के शोषण क खिलाफ मजदूरा को हडताल क लिए प्ररित किया था । मजदूरो क साथ साथ नागरिको ने भी

गिरफ्तारिया दी । मुझे भी जाममर म गिरफ्तार किया गया था । श्री राधेश्याम गौड एव श्री रहीम शाह जसे नेताआ ने व्यासजी का साथ दिया । श्री बजरग ओझा भी आन्दोलना मे सक्रिय थ । लगातार होने वाली गिरफ्तारिया एव मज दूरो की सघष क्षमता को देखकर कम्पनी को झुकना पडा और मजदूरो के पक्ष म समझौता करना पडा । ' आर्थिक प्रलोभना की चर्चा करत हुए श्री गाकुल घी वाले ने बताया कि कम्पनी का एक ठेकेदार मेरी घी वाली दूकान पर आया । उसने बताया कि कम्पनी जीप देने को तयार है । एक खाली चक बुक भी व्यासजी के सामने रखी गई लेकिन व्यासजी ने इस प्रलोभन को ठुकरा दिया । उन्होंन कहा कि यदि कम्पनी रुपये देना ही चाहती है ता मजदूरा को दे ताकि व हडताल नही करें । मजदूरा को रुपया मिलगा तो वे हडताल नही करेंगे । मेरा साथ छोड देंगे और कम्पनी को फायदा होगा । " बाद म व्यासजी न आम सभाआ म इस प्रलो भन का जिक्र भी किया । श्री नाबूलाल आचा के अनुसार– व्यासजी को मालिका ने प्रलोभन दिया जो उन्होंने स्वीकार नही किया और उनकी खुले आम भर्त्सना की । स्वर्गीय प्रेमनारायण वद्य (एक समय म नगर काग्रेस के अध्यक्ष) ने भी सुथारो की बडी गुवाड म आयोजित एक आम सभा म इस प्रलोभन की चर्चा की थी तथा कहा कि व्यासजी ननिक मूल्या के जबरदस्त हिमायती थ । श्री राधेश्याम गौड ने बताया कि कम्पनी न 1956 की हडताल के समय व्यासजी का सम्पूण चुनाव खच देने की पशकश तक की थी पर उन्होंन सभी प्रलोभना का निरस्कार क साथ ठुकरा दिया ।

आन्दालना की इस सघष भरी सस्कृति मे सच्चे और निष्ठावान नेता श्री व्यास बीकानेर के जनमानस पर छा गय । आगे आन वाले दा चुनावा म बीकानर की जनता न उन्हें विजयी बनाकर उनक प्रति अपन अगाध विश्वास का प्रकट किया ।

सिंह गर्जना का एक दशक

विधायक के रूप म एक जन प्रतिनिधि का काय क्षेत्र केवल क्षेत्रीय ही होता है लेकिन यदि वह अपने क्षेत्र स आगे बढकर पूरे प्रात का प्रतिनिधित्व करने लगे और जनता उसके इस स्वरूप को मान्यता दे तो वह वस्तुत जननायक बन जाता है। मुरलीधर व्यास केवल क्षत्रीय विधायक नही थ। वस्तुत व जननायक थे। राजस्थान के किसी भी कोने म चले जाइये—उनके आज भी असख्य प्रशसक मिलेंगे। कोटा बूदी हो या भीलवाडा झालावाड हो या बासवाडा भरतपुर धौलपुर या अलवर हो जोधपुर, अजमेर अथवा ब्यावर हो बाडमेर हो या जसलमर रतनगढ हो या सागानेर—हर स्थान पर हर गरीब क हिमायती हर समस्या क जागरूक चितक और हर हक के पहरेदार के रूप म श्री व्यास को लोगो ने अपने मन स सम्मान दिया उन्हें अपना नेता माना। यही कारण था कि व्यासजी जब विधान सभा म सिंह गजना करते थे तो उनकी बात केवल बीकानेर परिक्षेत्र तक सीमित नही रह कर पूरे प्रात की समस्याओ स जुडी रहती थी। एक राष्ट्रव्यापी राजनीतिक दल की राष्ट्रीय काय कारिणी क सदस्य होने के नाते उनकी बात और भी अधिक गभीरता स ली जाती थी। यह सर्वविदित था कि व प्रजा समाजवादी दल क 15 मुख्य नेताओ मे से एक थ। राष्ट्रीय कायकारिणी क उनके साथी नेताओ म श्री एन० जी० गोरे प्रभ भसीन एस० एन० द्विवेदी मधु दण्डवते नाथ प तथा पीटर अल्वारिस जसे तप तपाये लोग थे। श्री यास जब विधानसभा म गूजत थ तो स्वाभाविक ही था कि उनकी बात को सत्ता पक्ष एव विरोधी पक्ष दोनो ही गम्भीरता से लते।

राष्ट्रीय तथा प्रातीय यक्तित्व होने के कारण समय का अभाव स्वाभाविक होना है। उन्होन अपने विधानसभा क्षेत्र की इस कारण पहरेदारी म कोई ढील की हो इसकी तो कल्पना ही नही की जा सकती। 1957 स 1966 तक दस वर्षों तक उन्होने निरतर बीकानेर की ज्वलत समस्याओ का उत्तरदायी लोगो के सामने रखा तथा उनके समाधान का अनथक प्रयास किया। बीकानेर के निवासी जानत है कि कोट गेट के सामने रेलवे फाटक की समस्या उनके लिए निरतर सिरदद रही है। आज चाहे कुछ भी कह या कोई भी दल इसे किसी भी तरह प्रस्तुत करे पर यह सच है कि यास जी ने विधानसभा का सदस्य बनते ही इस ज्वलत समस्या पर मत्रियो का ध्यान आकर्षित कर दिया था। उनकी एक विशेषता यह थी कि

वे अपने पूरक प्रश्नो द्वारा म त्री के मुह से सारी जानकारी लेने म बडे निपुण थे। कभी कभी तो मन्त्रियो के लिए जवाब देना कठिन हो जाता और टालमटोल वाली स्थिति आ जाती, पर यासजी लगातार पूरक प्रश्न पूछते जाते। एक विधायक के रूप मे वे कितने जागरूक थे तथा कितनी तत्परता स जानकारी लेते थे इसका एक उदाहरण 20 फरवरी 1959 की विधानसभा की कार्यवाही से दिया जा सकता है (पृष्ठ 495 496 497)

श्री मुरलीधर व्यास क्या मुख्यमन्त्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे ? क्या यह सच है कि केन्द्रीय सरकार कोटगेट बीकानर के मुख्य बाजारो म पडने वाले दोनो रेल के फाटको को हटाने के लिए सचेष्ट है, पर राज्य सरकार इस हेतु अपने हिस्से की राशि नही दे पा रही है ?

राजस्व म त्री (श्री दामोदर लाल व्यास मुख्यमन्त्री की ओर से) राज्य सरकार भारत सरकार स रेलवे लाइन को ही मुख्य बाजारो से हटान के विषय मे बातचीत कर रही है। अतएव राज्य सरकार के सहयोग न देने तथा अपने हिस्से की राशि न दे पान का अभी तक प्रश्न ही नही उठता।

श्री मुरलीधर व्यास बातचीत कब से कर रहे हैं ?

श्री दामोदर लाल व्यास तारीख तो मुझे मालूम नही है। इसकी प्रोग्रेस यह है कि राज्य सरकार के सुप्रिन्टेंडिंग इन्जीनियर और नादर्न रेलवे के जो इजीनियर हैं उनके बीच बातचीत चल रही है। गवनमट आफ इ डिया को आल्टरनेटिव साल्यूशन भेज दिया है और वह विचाराधीन है।

श्री मुरलीधर व्यास क्या भारत सरकार उसको हटान के पक्ष म नहीं है या राज्य सरकार ? भारत सरकार स इस बारे म किस प्रकार की बातचीत चल रही है ?

श्री दामोदर लाल व्यास बातचीत चल रही है। मन बाजार से रेलवे लाइन हटा दें और दूसरी जगह लगा दें।

श्री मुरलीधर व्यास उसके लिए क्या सुझाव आप लोगो न भारत सरकार के सामने रख हैं ?

श्री दामोदर लाल व्यास ओवर ब्रिज या अण्डर ब्रिज के बजाय रेलवे लाइन को दूसरी तरफ डाइवर्ट करना चाहते हैं। मन बाजार स दूर।

श्री मुरलीधर व्यास गवनमण्ट आफ इण्डिया स तो पालियामेण्ट म एक प्रश्न किया गया था। उसके उत्तर म यह कहा गया कि राजस्थान सरकार न अपने हिस्से का रुपया नहीं दिया है इसलिए काम रुका हुआ है। क्या यह सही है ?

श्री दामोदर लाल व्यास यह पुरानी बात है। ताजा बात मैं अज कर रहा हू।
श्री मुरलीधर व्यास ताजा बात क्या है ? आप ताजा बात बताइये।

श्री दामोदर लाल व्यास पहले यह प्रपोजल था कि आवर ब्रिज या अण्डर ब्रिज बना दिया जाय। गवनमेंट आफ इण्डिया गवनमेण्ट आफ राजस्थान से हिस्सा चाहती थी तो गवनमेंट आफ राजस्थान ने कहा कि यह तो टेम्परेरी सोल्यूशन है और 20 वर्षो बाद म वही डिफिकल्टी पदा होने वाली भी है। परमानेण्ट साल्यूशन यह है कि लाइन हटाकर दूसरी तरफ डाइवट कर दी जाय और अण्डर ब्रिज या आवर ब्रिज के लिए जो 20—25 लाख रुपया खच किया जाना है वह बच जाता है तो बच जाय। इस बात को गवनमेण्ट आफ इडिया के इजीनियरिंग विभाग ने माना है और यह बात गवनमेण्ट आफ इडिया का रफर कर दी गई है। अब फाइनल डिसीजन के लिए विचाराधीन है।

व्यासजी न 1957 से ही इस समस्या को विधानसभा म उठाना शुरु कर दिया था पर हम देख रहे है कि फरवरी 1959 की स्थिति मे और आज की स्थिति म कोई अ तर नही आया है। रेलवे लाइन वही की वही है तथा फाटक उसी तरह अवरोध बने हुए हैं। भीड भाड अवश्य बढ गई है और उसी अनुपात म जनता की तकलीफें व परेशानिया भी बढी ही हैं। व्यासजी स कोई भी मत्री यह कह कर अपनी बला नही छुडा सकता था कि बातचीत चल रही है। ऐसे उत्तर के सदभ म वे अवश्य पूछते बातचीत कब स चल रही है ? उसकी क्या प्रगति है ? रुकावट है तो क्या है ? काम कब तक होने की आशा है ? दोषी कौन हैं ? विलब क्या हुआ ? ऐस जागरूक जन नेता से कोई भी सरकार सहज म ही गोल मोल उत्तर देकर नही बच सकती थी। यही कारण था कि व्यासजी के प्रश्नो को हमेशा गभीरता से लिया जाता था।

रेल फाटको पर आवरब्रिज की समस्या को 6 माच 1963 को पुन उठाया गया। तत्कालीन विधानसभा सदस्य श्री मानिकच द सुराना के मूल प्रश्न के उत्तर म जब श्री भवानीशकर नदवाना (मत्री राज सरकार) न कहा कि रेलवे फाटको को हटाने का प्रस्ताव रेलव बोड क विचाराधीन है तथा रेलव विभाग एस्टीमट तयार कर रहा है तो श्री मुरलीधर व्यास ने पूरक प्रश्न के माध्यम स जानकारी लनी चाही कि मामला रेलवे बोड म कब म विचाराधीन है। सभा की कायवाही का आशिक उद्धरण इस प्रकार है

श्री मानिक चन्द सुराना एस्टीमेट बन चुका है। माननीय मत्री जानकारी करें ?
श्री भवानी शकर नदवाना नहीं बना है। जानकारी करके बता रहा हू।

श्री मुरलीधर व्यास इस सम्ब ध म क्या हो रहा है ? पाच साल से इस बारे म पूछ रहे हैं ? इस समय राजस्थान सरकार ने क्या निणय लिया है ? बता दीजिये।

(इस बि दु के बाद अध्यक्ष महोदय ने सावजनिक सम्पक कार्यालय के लेखाओ के बारे म श्री भरासिंह को बोलने का निर्देश दिया पृष्ठ 1256 57 तारांकित प्रश्नोत्तर–6 माच 1963 विधानसभा की कायवाही का वृता त)

इस तथ्य से एक बात स्पष्ट होती है कि श्री मुरलीधर व्यास 1957 से ही इस प्रकरण को उठाते चले आ रहे थे। सरकार की ओर से प्राय यही उत्तर मिलता था कि एस्टीमेट तयार हो रहे हैं कि मामला रेलवे बोड के विचाराधीन है, कि राजस्थान सरकार ने भारत सरकार को कुछ सुझाव दिये हैं। आज भी स्थिति कुछ भि न नहीं है मामला वही है जहा 1957 म या उससे भी पहले था।

व्यासजी किसी भी स्थान के बारे म प्रश्न पूछते समय यह अवश्य ध्यान रखते थे कि उससे बीकानेर का कितना हित हो सकता है। बात चाहे जयपुर के बारे म पूछें पर क्षेत्रीय हितो म टकराहट न हो और अपने निर्वाचन क्षेत्र के हितो पर कुठाराघात नही होन पाये इस ओर वे सदव सतक रहत थे।

अपने एक प्रश्न (6 माच 1961 पृष्ठ सख्या 754) के उत्तर म जब उपमत्री शिक्षा श्री पूनमच द विश्नोई ने बताया कि महाराजा कालेज जयपुर से अ ग्रेजी हि दी, सस्कृत की स्नातकोत्तर कक्षाओ को राजस्थान विश्वविद्यालय को दने का सरकार ने अभी निणय नहीं लिया है तो श्री व्यासजी ने जानना चाहा कि क्या राज्य सरकार ने यूनिवर्सिटी को कोई सिफारिश की है कि इस प्रकार की कक्षाए खोलनी चाहिय। सक्षिप्त उद्धरण इस प्रकार है—

श्री पूनमच द विश्नोई खुद ही (यूनिवर्सिटी खुद ही) अगले सशन म कुछ विषयो की पोस्ट ग्रेजुएट क्लासें खोल रही है।

श्री मुरलीधर व्यास जो निणय लिया है क्या उसके अ तगत है जयपुर म इस विषय की क्लासें खोलना ?

मुख्य मत्री (श्री मोहनलाल सुखाडिया) अगर यूनिवर्सिटी अपने वहाँ पर कक्षायें खोलती है तो महाराजा कॉलेज म कटौती नही की जावेगी।

श्री मुरलीधर व्यास पर बीकानेर म तो खोल दी जावेंगी—यह तो निश्चय हो गया है।

श्री मोहनलाल सुखाडिया यूनिवर्सिटी पर निभर करता है कि वह क्या करती है ?

श्री मुरलीधर व्यास एकेडेमिक कौंसिल ने फसला किया है कि जो इस तरह की क्लासेज हैं वे यूनिवर्सिटी के अ तगत ले ली जावेंगी।

श्री मोहनलाल सुखाडिया क्लासें ली जाने का प्रश्न नहीं है। जो क्लासें वे चालू करते हैं उ ह महाराजा कालेज म भी चालू रखा जावे—यह नहीं होना चाहिए। यह गवनमण्ट ने निणय ले लिया है। अब उनकी अपनी फेसिलिटी के मुताबिक जो क्लासें वे शुरू करेंगे उनको हम कण्टी यू नहीं करेंगे।

श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर क सम्ब ध म भी कोई निणय लिया है, पोलीटिकल और साइ स की क्लासें खोलने का ?

श्री मोहनलाल सुखाडिया   बीकानर का यहाँ यूनिवर्सिटी की क्लासें खोलन स इसका सम्ब ध नहीं है।

बीकानेर के निवासी जानते हैं कि अ तत 1967 के आम चुनाव से पूव जन व छात्र आन्दोलन के माध्यम स ही कुछ कक्षाए खोलन क लिए सरकार को विवश किया गया था। जो काम सरकार न 1966 म स्वीकृत किया उसकी माग श्री व्यास 1961 म ही कर चुके थे। सरकार 1961 म उस काम के लिए यह कहती थी कि यह यूनिवर्सिटी पर निभर करता है कि वह क्या करती है।' उसी सरकार ने 1966 म निणय लेकर कक्षाए खोलने की स्वीकृति दी।

बीकानेर नगर म फायर ब्रिगेड की आवश्यकता को प्रतिपादित करत हुए श्री व्यास न 27 माच 1962 का विधानसभा म माग की थी। ऊन की प्रमुख व्यापारिक मण्डी होने के कारण बीकानेर को फायर ब्रिगड म प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मूल प्रश्न एव उसके उत्तरो क उद्धरण इस प्रकार हैं (तारांकित प्रश्न पष्ठ सख्या 2710, 2711)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानर)   क्या गह म त्री निम्न प्रश्न का उत्तर देंगे ?

(1) क्या यह सत्य है कि बीकानेर म फायर ब्रिगड की व्यवस्था न होने से शहर म आग लगन पर काफी नुकसान होता रहता है ?

(2) बीकानेर म ऊन का व्यापार प्रमुख होने स सरकार आवश्यक समझती है कि वहां फायर ब्रिगड की अविलम्ब व्यवस्था की जाय ? यदि हां तो कब तक ?

गहमत्री श्री मथुरादास माथुर

(1) जी हां। ऐसी स्थिति राजस्थान के साधारणतः सभी प्रमुख नगरो म है।

(2) प्रमुख नगरो क लिए ऐसी व्यवस्था क लिए भारत सरकार स अनुदान देने

की याचना की गई है। समुचित प्रावधान होने पर यत्र आदि उपकरण की व्यवस्था अगले वर्ष 62-63 म होने की सभावना है ।

श्री मुरलीधर व्यास इसमे यह बात कह दी कि राजस्थान के प्रमुख नगरो म ऐसी स्थिति है। मेरा बीकानेर शहर के बारे म पूछना है क्योकि वहा ऊन की बहुत बडी मण्डी है और इस तरह आग लग जाने से देश का बडा नुकसान होता है। लास्ट ईयर भी ऊन की बहुत सी गाठें जल गई। ऊन राष्ट्रीय धन है। उसके जल जाने से राष्ट्र को नुकसान होता है। इसलिए वहा फायर ब्रिगेड की सबसे अधिक आवश्यकता है।

श्री मथुरादास माथुर इस साल पसा मिलेगा, भारत सरकार से, तो बीकानेर का पूरा ध्यान रखूगा।

फायर ब्रिगेड की आवश्यकता का उल्लेख ऊन जसे राष्ट्रीय धन के परिप्रेक्ष्य मे करना और मत्री से आश्वासन ले लेना कि (प्रमुख नगरो से प्राथमिकता देते हुए) 'बीकानेर का पूरा ध्यान रखा जायेगा," यह बात श्री व्यास की निरन्तर तत्परता एव अपने क्षेत्र के हितो की रक्षा की सबल भावना को ही उजागर करती है।

श्री भीमसेन (काग्रेसी विधायक) के मूल प्रश्न के उत्तर म श्री चन्दनमल बद (उद्योग मत्री) ने बताया कि लूनकरनसर म प्लास्टर आफ पेरिस की फक्टरी के लिए सम्बधित कम्पनी ने विदेशो म जाच करवाने के लिए सलोनाइट भेजा है, उसकी जाच से पता चलेगा कि क्या उससे प्लास्टर आफ पेरिस बन सकता है। श्री भीमसेन ने प्रश्न किया कि जब बीकानेर म उसी सलोनाइट से प्लास्टर आफ पेरिस बन रहा है तो लूनकरनसर म क्या नही बन सकता है। श्री व्यास ने बीच म बोलते हुए एक महत्त्वपूर्ण सूचना दी। (विधान सभा की कार्यवाही दिनाक 6 अप्रल 1962 के पृष्ठ सख्या 2713 के वृतान्त के अनुसार)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) फक्टरी वालो ने लीज लिया था तो उस लीज म यह शर्त थी कि प्लास्टर आफ पेरिस का कारखाना खोलेंगे। लीज को 15 वर्ष हो गये पर अभी तक नही खोला है। लीज के अनुसार काम नही होता है तो उसकी लीज को खत्म क्यो नही किया जाता।

श्री चन्दनमल बद मुझे जानकारी नही है कि उनके लीज म इस प्रकार की बात है।

श्री मुरलीधर व्यास लीज म है—आप देखें।

श्री व्यास इस प्रकार पूरे परिक्षेत्र के हितों के प्रति सदैव जागरूक रहते थे। फैक्ट्रियों ने क्या समझौता किया है, उसकी क्या क्या शर्तें हैं शर्तों का पालन क्यों नहीं हुआ आदि सभी बिन्दुओं पर उनकी जानकारी सटीक रहती थी। जिप्सम आंदोलन के साथ व्यासजी का नाम हमेशा ही जुड़ा हुआ रहता था। एक तरफ वे मजदूरों में जागृति फैलाना अपना कर्त्तव्य समझते थे तो दूसरी ओर बीकानेर में जिप्सम वाल बोर्ड की फैक्टरी लगवाने उसे औद्योगिक लाइसेंस दिलवाने एवं उचित सुविधाएं उपलब्ध करने जैसे विषयों पर विधानसभा में निरन्तर मांग करते रहते थे। ऐसे अनेक प्रसंगों में से एक प्रसंग विधानसभा की कार्यवाही से उद्धृत किया जाता है (पृष्ठ 1719 तारांकित प्रश्नोत्तर 245 दिनांक 18 10 62)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) क्या योजना मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे

(1) बीकानेर में वाल बोर्ड (Wall Board) का कारखाना खोलने के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार ने क्या सिफारिश की है ? (2) इस कारखाने के खोलने के सम्बन्ध में अब तक सरकार की ओर से क्या कार्यवाही की गई ? (3) यह कारखाना कब तक खुल जाने की सभावना है ?

उपमंत्री योजना (श्रीमती कमला बेनीवाल) (1) बीकानेर में जिप्सम वाल बोर्ड का कारखाना खोलने के सम्बन्ध में भारत सरकार के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रालय ने लाइसेंस कमेटी का निम्नलिखित सिफारिश की है

In view of the utility of the material and its several advantages the Mineral Industrial Directorate recommends issue of the Industrial Licence applied for by the party provided

1 the terms of foreign collaboration would be subject to the approval of the Govt and

2 the concurrence of the Heavy Chemicals Directorate from the point of availability of Gypsum rock for the purpose is given '

(2) इस कारखाने को खोलने के लिए राज्य सरकार ने दिनांक 19-6-61 को भारत सरकार से औद्योगिक लाइसेंस प्रदान करने की सिफारिश की है तथा फैक्टरी लगाने के लिए उचित सुविधाएं उपलब्ध करने का आश्वासन भी दिया है।

(3) चूंकि अभी तक भारत सरकार द्वारा लाइसेंस नहीं प्रदान किया गया अतः इस सम्बन्ध में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

श्री मुरलीधर व्यास सन् 61 मे भारत सरकार को इसके लिए लिखा गया, लेकिन अब तक भारत सरकार ने लाइसेस प्रदान नही किया। फिर से भारत सरकार को इस सम्बन्ध म रिमाइण्ड किया गया है ?

श्रीमती कमला बेनीवाल लान्सस कमेटी की मीटिंग 23-12-61 को हुई थी। कुछ पाव दो पार्टी पर लगाई थी। पार्टी ने उसे मानने को एग्री कर लिया है लेकिन जिस पार्टी के साथ कोलेबोरेशन चल रहा है, वह फाइनल हो जान पर काम शुरु होगा।

प्रकरण कही का हो, उसम पूरी सूचना के साथ बालना तथा अतत उसे अपने क्षेत्र की आवश्यकता से जोड लेना व्यासजी की कुशलता का अग था। दिनाक 6 माच 1961 को लालसोट को बिजली देने के प्रसग म श्री प्रभूलाल ने अपने क्षेत्र की आवश्यकता को प्रतिपादित किया तो मत्री श्री हरिश्चन्द्र ने आश्वासन दिया कि काय 1961 के सितम्बर अक्टूबर तक पूरा हो जायेगा। श्री प्रभूलाल के यह कहन पर कि 1953 म भी ऐसा ही कहा गया था, व्यास जी ने बीच म बोल्ते हुए कहा कि 'इधर खभे हैं तो बिजली नही है और दूसरी तरफ बिजली है तो खभे नही हैं इसका क्या कारण है? श्री हरिश्चन्द्र ने अपने उत्तर म जब लालसोट क्षेत्र की चर्चा की तो बीकानर क जागरूक प्रहरी ने बात को पलट कर अपने क्षेत्र से जोडते हुए कहा– इसके पहले कई स्थाना पर खभे नही थे इसलिए बिजली नही दे सके और इधर खभे पडे रहे तो जब फसला हुआ तो खभे उधर क्यो नही लगाये ?
श्री हरिश्चन्द्र आप कौन सी जगह के लिए फरमा रहे हैं ?

श्री मुरलीधर व्यास सारे इलाके ऐसे ही हैं।

श्री हरिश्चन्द्र आप किसी पर्टीक्यूलर जगह के बारे म बतायें, कौन सी जगह है ?

श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर–चूरू क्षेत्र के अदर। वहा पर आप खभा की वजह से बिजली नहीं पहुचा सके।

लालसोट क्षेत्र म खभे इस विवाद म अप्रयुक्त पडे रह कि बिजली लालसोट से दौसा दी जाय या सवाई माधोपुर से गगापुर होती हुई लालसोट आये और 6 साल तक खभे इसी कसमकस म बिना तारो के लगे रहे। व्यासजी जसे जागरूक व्यक्ति का यह कहना स्वाभाविक ही था कि बीकानेर–चूरू क्षेत्र म तो खभो की कमी के कारण बिजली नहा मिलती है जबकि लालसोट म 6–6 वर्षों तक खभे यो ही बेकार खड रहते हैं। मामला कही का हो उनका ध्यान बीकानर पर ता रहता ही था। यही उनके नेतृत्व की विशेषता थी। बीकानर के लोग आश्वस्त थ कि

उनका पहलुआ पूरी तरह से जागरूक है अत जनहित के काय म इस क्षत्र की उपेक्षा नहीं होने दी जायगी।

बीकानेर नगरपालिका क्षत्र म स्लम क्लियरेंस एव सनीटेशन" के बारे म भी व्यासजी ने विधानसभा म समय-समय पर प्रश्न पूछे। जब उ हें ज्ञात हुआ कि जोधपुर नगर के लिए 10 लाख रुपय स्वीकृत किये गये हैं तो बीकानेर का हित तत्काल ही उनक सामने आया तथा उन्होने जानना चाहा कि (1) क्या बीकानेर नगरपालिका ने स्लम क्लीयरेंस एव सनीटेशन के लिए सरकार से कोई रकम मागी है तथा (2) क्या वह रकम उस दी गई है। जब उत्तर नकारात्मक दिया गया तो उन्होने समाचार पत्रों का हवाला देते हुए बताया कि जोधपुर के लिए 10 लाख रुपयो की राशि स्वीकृत हुई है। मत्री के यह कहने पर कि 61-62 म जोधपुर को कोई रकम नहा दी गई व्यासजी ने मामले को समाप्त किया। प्रसग जोधपुर का हो या जयपुर का प्रश्न-यह था कि जब जोधपुर जयपुर के लिए रकम दी जा सक्ती है तो बीकानेर को उससे वचित क्यों रखा जावे। अगर नगरपालिका माग न भी करे तो भी जनप्रतिनिधि को तो अपनी ओर से प्रयत्न करके राशि का प्रावधान करवाने का प्रयास करना ही चाहिए (तारांकित प्रश्न 242 पृष्ठ 1709 18-10-62 की कायवाही स)

कही पर लाठी चाज हो या गाली चलान की घटना हो व्यास जी किसी भी घटना पर अत्यन्त उद्वलित हो जाते थे और पूरे तथ्यों के साथ विधानसभा म उस घटना क्रम पर बहस किया करत थे। कुचामन लाठी चाज एव बोरावड रतनगढ तथा झझुनू म गोली काण्डो की उन्होंने न सिर्फ भत्सना की पर तथ्यपरक भाषण भी दिय। झझुनू गोली काण्ड सन् *1962* की ऐसी हृदयविदारक घटना थी जिसम एक व्यक्ति की मृत्यु हुई तथा अनक घायल हुए। झझुनू म विवाद सवर्णो एव अनुसूचित जाति वालो (मेघवालो) के बीच कुए पर जल भरने के बिन्दु पर था। घटनाक्रम ने ऐसा विस्फोटक मोड लिया कि उसकी परिणिति गोलीकाण्ड जसी नृशस अमानवीयता के रूप म हुई।

पुलिस का पक्ष था कि कुछ हरिजनो ने उनको सूचित किया था कि कुछ सवण लोग उनको कुए पर पानी नहीं भरने देते। इस पर छुआछूत एक्ट के अन्तगत दिनाक 3 5 62 को मुकदमा दज किया गया। स्थिति को खराब होते देख एस० पी० पुलिस फोस एव मजिस्ट्रेट को बुला लिया गया। जब हरिजन कुए पर पानी भरने गये तो लगभग 500 600 सवर्णो ने उनको भगाने के लिए पत्थर फेंकने शुरु कर दिये। जब पुलिस हरिजनो की सहायता के लिए आगे बढ़ी तो भीड ने मारो-

मारो" कहते हुए पुलिस पर भी पत्थर फके। पत्थर से एक का सटेबल के सिर और नाक पर सगीन चोट आई। भीड मारो–मारो कहती आगे बढी और का स–टेबल को नीचे गिराकर मारने लगी ता पुलिस को आत्मरक्षा म गोली चलानी पडी। मजिस्ट्रेट ने पहले अश्रु गस फिर लाठी चाज का हुक्म दिया था तथा अ त म गोली चलानी पडी। पुलिस के अनुसार 410 बोर के 12 फायर किये गये। दो व्यक्ति गोली लगने से मौके पर ही गिर गये। पाच का गिरफ्तार किया गया। पुलिस की रिपोट के अनुसार मुलजिमान के पास लाठी, जेई, गडासे आदि हथियार थे।

श्री यास ने तथ्यपरक बिदुओ एव घटनास्थल के स्वय के निरीक्षण के बल पर जो बातें कही वे उसके बारीक विश्लेषण को प्रकट करने वाली थी। उनके अनुसार (1) यदि भीड के पास हथियार होते तो का सटेबल को नीचे गिराकर लाठी या गडासे से मारते। उसे पत्थरा से क्या मारते ? (2) यदि पुलिस का स–टेबल को गिराकर लोग मारने लगे तो पुलिस उस अपराधी या अपराधिया को गोली से मार देती पर तु 410 बोर के 12 फायर क्या किये गये और कई लोग गोली के शिकार क्यो हुए ? श्री व्यास ने घटना की भयावहता बताते हुए कहा कि–

(1) वहा ज्यादा से ज्यादा 100–150 आदमी थे। उधर पुलिस क भी 100 व्यक्ति थे। उनके पास अश्रु गस के गोले आदि भी थे। घटनास्थल के किसी यक्ति को गाली लगने की बात तो समझ म आती है पर मकान पर खडे आदमी को गोली क्यो लगी ?

(2) उसके 12 वप के बच्चे के भी गोली लगी। कान के बीच मे गोली लगने से उसका जबडा फट गया, दात टूट गये और बोलने से लाचार हो गया। उस बारह वप के बच्चे एव 11 वप की बालिका को क्यो गिरफ्तार किया गया ? इन पर 307 के अ तगत हत्या का अभियोग क्या लगाया गया ?

(3) जो सिद्ध मारा गया उसके घर की छत खून से लथपथ कमीज खून से लथपथ थी। ऐसा क्यो ? पुलिस की नशसता इस हद तक थी कि फायरिंग के बाद उसकी लाश को ब दूक की नोक पर लारी म ले गये, छोटे छोटे बच्चा को गिरफ्तार किया।

(4) पुलिस के अनुसार पूरे राजस्थान म उन दिनो 5 गोली काण्डो म 74 आदमी मरे जबकि अकेले झझेऊ म ही 16 आदमियो को गोली लगी थी।

(5) गालिया जानबूझकर अधा धुध चलाई गई। यह इस बात से प्रकट होता है कि एक बारह साल की बच्ची के पट के नीचे गाली लगी। एक स्त्री क स्तन पर गोली लगी तथा एक बच्चे क कान क पास गोली लगी।

(6) गाली लगने क बाद पुलिस घरा म गई आदमिया का बाहर निकाला तथा लाठी चाज किया ताकि बता सके कि लाठी चाज किया गया था। जाच करन पर मालूम होगा कि लाठी चाज बाद म किया गया पहले नही किया गया था।

(7) घायला के मुकम्मिल इलाज की व्यवस्था तक नही की गइ। पत्रकारो तथा अ या ने जब हास्पीटल म भरती करवान का प्रब ध किया तो भी अत्याचार जारी रह। अस्पताल म भी छोटे-छोटे बच्चा का हथकडिया म रखा गया। 100 घरा की बस्ती के 55 व्यक्तिया पर मुकद्दमा चलाया गया।

(8) हत्या के जुम म फमन के भय स लोग गाव छोडकर भागने लगे।

अपने भाषण के बीच उन्हान बार बार कहा कि वे छूआछूत के खिलाफ हैं 'मेरी समझ म नही आता कि एक दिन पूव रिपोट दज होती है और जब उन्होंने कहा कि पानी नही भरने दिया जाना ता पुलिस का काम था कि जो लोग इस काम म रुकावट डाल रहे थ उनके खिलाफ कानूनी कायवाही करती। (पृष्ठ 1800 विधानसभा कायवाही 18 10 62) जहा तक छूआछूत का प्रश्न है म इसक पक्ष म नहा हू। प्रश्न यह है और म जानना चाहता हू कि गाली क्या चलाई गई ? म उस कुए पर पहला आदमी हू जा जाने को तयार हू मगर काई चल। (पष्ठ 1817 वि० स० कायवाही 18 10 62) सविधान के अ तगत गहम त्री जी किसी हरिजन को गाव-गाव कुआ पर चढाने क लिए चलेंगे तो मैं गृहम त्री जी के साथ गाव गाव चलने का तयार हू और चढन को तयार हू। (पष्ठ 1819 वि० स० कायवाही 18 10 62)।

इतना सब होते हुए भी श्री यासजी की मा यता थी कि गोलिया अकारण चलाई गइ जबकि भीड की आर से कोई उत्तजना नही थी। श्री व्यास ने इस प्रकरण म निरन्तर यायिक जाच की माग की तथा विधानसभा सदस्या की सवदलीय समिति का मौक पर जाकर तथ्या के अ वपण करने की सुविधा देने के लिए कहा। श्री व्यास न जब यह प्रकरण विधानसभा म उठाया ता उनका साथ देने वालो म सवश्री भरासिह शखावत मानिकचन्द सुराणा, योगेन्द्र हाडा अब्दुल जब्बार श्रीउमरावसिह माहरसिह राठौड एव श्री कुमारानन्द आदि क नाम उल्लेखनीय हैं। इस छोटी सी बस्ती म अश्रुगस के 7 गाले छाडन 11 चक्र गालिया चलाने व

401 मजकेरिंग के प्रयाग की सभी न भत्सना की। गृहम त्री को भी मानना पडा कि गोली चलान की घटना से सरकार व्यथित है तथा पुलिस को निर्देश दे दिये गये हैं कि असाधारण स्थिति को छाडकर अ य मामलो म गोली नही चलाई जावे।

यह था उनकी जागरूकता का एक ज्वल त उदाहरण। जहा पुलिस के अनुसार घटनास्थल पर केवल 30 पुलिसमन भेजे गये थे तथा गोली काण्ड म एक मृतक, दो घायल एव 5 को गिरफ्तार करना दिखाया गया था वहा श्री -यास ने बताया कि एस० पी० सहित 100 पुलिस वाल अश्रुगम एव गोलियो सहित वहा मौजूद थे तथा गोली काण्ड म एक मतक, 24 घायल एव 55 व्यक्ति गिरफ्तार किये गये तथा छाटे छोटे बच्चा तक पर 307 के मुकद्दम चलाये गय। जहा पुलिस ने अत्य त सयम के प्रदशन के बाद आत्मरक्षा म गोली चलाने की विवशता बताई वहा श्री व्यास न कहा कि गोलिया अधाधुध तथा अकारण चलाई गई। छत पर खडे -यक्ति के शरीर को गोलियो से छलनी कर दिया गया। एक बच्चे के कान के पास स्त्री के स्तन पर तथा बच्चो के पट के नीचे गाली लगने से स्पष्ट होता था कि जिसने जो चाहा उसी दिशा म गोली चला दी। निहत्थी जनता पर यह एक पाशविक बल प्रयोग था। पुलिस ने भीड को जइयो एव गण्डासो से युक्त बताया था पर श्री यास ने कहा कि यदि ऐसा होता तो भीड पत्थरो का प्रयोग क्यो करती गिरे हुए का स्टेबल पर जइया व गण्डासो स ही वार करती। जहा पुलिस ने कहा कि हरिजनों पर वार किया गया वहा श्री -यास ने कहा कि पूरे घटना क्रम म एक भी हरिजन के चाट नहीं लगी सभी सवण घायल हुए। विधानसभा की इस आक्षेपो भरी बहस मे गृह म-त्री को मानना पडा कि वे -यायिक जाच के लिए तयार हैं। उ-होने यह भी कहा कि पुलिस को कठोर निर्देश दिये गये हैं कि असाधारण स्थिति के अतिरिक्त कहीं पर गोली नही चलावें।

मजदूरा की हडताल के प्रसग म श्री व्यास उस समय तक चुप नही बैठते थे जब तक कि सदन म उस पर चर्चा नही हो जाती। कोई भी सवाल हो और मूलत चाहे वह किसी भी सदस्य ने रखा हो मजदूर नेता श्री मुरलीधर व्यास उस पर अपने विचार आग्रहपूवक व्यक्त करते तथा अपने पक्ष को निर-तर पुष्ट करते रहते थे।

राजस्थान के एक लाख से भी अधिक मजदूरा ने माथुर कमेटी की अभिशसाओ को लागू करने के लिए 5 मई 1965 को साकेतिक हडताल एव 9 मई से पूण हडताल पर जान का नोटिस दिया था। स्थगन प्रस्ताव श्री रामान द अग्रवाल न रखा पर उसे स्वीकार नही किया गया। विधान सभा का अन्तिम दिन

(16 4 65) होने के कारण विरोधी दलो के सदस्या ने माग की कि इस महत्व पूण मामले पर उसी दिन सदन म बहस की जाय। मजदूरा की 9 मांगा म 5 00 रुपये म स्वीकृत महँगाई भत्ते का भुगतान करना अ तरिम राहत दना तथा शत प्रतिशत न्यूट्रलाइजेशन का सिद्धा त मानना आदि बातें सम्मिलित थी। स्थगन प्रस्ताव स्वीकार नहा होने के बावजूद सवश्री रामान द अग्रवाल, योगेन्द्र हाण्डा मुरलीधर व्यास मरोसिह सतीश च द्र अग्रवाल एव प्रोफेसर केदारनाथ आदि ने निरन्तर मॉग की कि विधानसभा का अतिम दिन होने के कारण इस बिन्दु पर तत्काल बहस की जाय अ यथा हडताल की स्थिति म उत्पादन पर जबरदस्त प्रभाव पडगा अशान्ति होगी तथा 100 मजदूर सघो के एक लाख से अधिक मजदूरो पर उसका असर पडेगा। अध्यक्ष ने इनम से प्राय प्रत्यक सदस्य को बठ जाने का आदश दिया पर व बोलत रह। अन्त म सदन से बहिष्कार करके उ होने अपना रोष प्रकट किया। श्री व्यास एव अध्यक्ष व मन्त्री के मध्य जो बहस हुई वह अविकल रूप से इस तरह है

(विधानसभा कायवाही 16 अप्रल 1965 पष्ठ सख्या 10026-10027)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) माननीय उपाध्यक्ष महोदय यह एडजोनमेण्ट मोशन था इस पर मेरे भी हस्ताक्षर हैं।

श्री उपाध्यक्ष यह एडमिट ही नही हुआ है।

श्री मुरलीधर व्यास यह एक महत्वपूण सवाल उठ रहा है सारे मजदूरो की तरफ से सरकार को हडताल का नोटिस दिया गया है

श्री उपाध्यक्ष आडर प्लीज। माननीय सदस्य आप कुछ तो नियमो का पालन कीजिये कुछ तो व्यवस्था रखें।

श्री मुरलीधर व्यास आज के बाद सदन की कायवाही नही आज सदन की काय वाही खत्म होने जा रही है। जो हडताल का नोटिस सारे मजदूरो ने दिया है यदि इस पर सरकार ने विचार नही किया और मजदूरो ने हडताल की तो इसका सारे राज्य पर बहुत बुरा असर पडगा। मत्री महोदय ने इस सम्बन्ध म तयारी की है, इसलिए मैं अज करता चाहूगा कि इस पर व इस समय उनके पास जितनी सूचना उपल ध है उसके आधार पर स्टेटमेण्ट दें।

उपाध्यक्ष इज द मिनिस्टर गोइग टू मेक ए रिप्लाई ?

श्री मथुरादास माथुर नो सर।

श्री भरोसिंह (किशनपोल जयपुर) यह बहुत ही महत्वपूर्ण मसला है

श्री हरिप्रसाद शर्मा (पाटन) मजदूरो और राजस्थान के हित का प्रश्न है~

श्री मुरलीधर व्यास आज सदन की बैठक समाप्त हो जायगी।

श्री उपाध्यक्ष जब यह एडमिट ही नही हुआ तो कैसे मत्री महोदय को बाध्य कर सकते हैं ?

श्री मुरलीधर व्यास आप मत्री महोदय से जितनी जानकारी उनके पास उपलब्ध है उसके आधार पर वक्तव्य दिला दें। मत्री महोदय से कुछ न कुछ वक्तव्य दिला दें। मत्री महोदय कुछ न कुछ वक्तव्य देंगे उससे लाभ होगा क्योंकि 5 रुपया कम्पेनरी की—वह भी इन लोगो को नही मिली। केजुअल लेबर 15 15 साल के हैं।

बीकानेर म बाढ की स्थितिया बहुत कम आती हैं पर फिर भी जब कभी औसत से अधिक वर्षा हो जाय तो निचले इलाको म पानी भर जाता है। बीकानेर निवासी एसी भयावह स्थितियो के भुक्तभोगी बन चुके हैं। सूरसागर के पानी को खाई तोडकर उसमे भरना पडता है। गिनानी एव हनुमान हत्थे के लोग जल प्लावन से बीकानेर के अन्य भागो से कट जाते हैं। यातायात अवरुद्ध हो जाता है तथा सकडो मकान गिर जाते है।

1960 की बाढ के सम्बन्ध म(राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही से उद्धृत)
श्री मुरलीधर व्यास क्या इम्प्रूवमेण्ट बोर्ड ने राज्य सरकार को इसके लिए सूचना दी है कि इतना नुकसान हुआ है और उसम इतने रुपया की जरूरत है और इतने मजूर कर दिये जावें ?

श्रीसम्पतराम दी इम्प्रूवमेण्ट कमटी हैज नाट रिकमेण्डेड बट द कलेक्टर एण्ड द कमिश्नर हेव सबमिटेड देअर प्रपोजलस एण्ड दे आर अण्डर दी कसिडरेशन आफ द गवनमेण्ट।

श्री मुरलीधर व्यास मैं तो यह कहता हू कि सिटी इम्प्रूवमेण्ट बोर्ड के पास जब कि 8 या 10 लाख रुपये हैं तो उनम से भी कुछ रुपया खच करके लोगो को राहत पहुचाने की योजना बनायें।

श्री सम्पतराम मैंने कहा कि इसके लिए कमेटी बनाई गई है। 50 हजार रुपये की तुरन्त सहायता देने के लिए सरकार ने आदेश दे दिये हैं।

श्री मुरलीधर व्यास पुलिया टूट गई और इसमें सारा पानी उसके टूटने से मोहल्ला म चला गया और मोहल्लो म 8 या 10 दिन तक खराब पानी भरा रहा। उसको रोकने के लिए प्रब घ नहीं होगा तो अगले साल भी यही स्थिति होगी और फिर बहुत से मकान टूट जायेंगे। क्या इस रोकने के लिए निश्चित योजना बनी है ?

श्री सम्पतराम द गवनमण्ट हैज आलरेडी एप्रीशियेटेड द ू एक्सप्ले ड बाई आनरेबल मेम्बर स्टेप्स हैव बीन टेकन बाई द गवनमेण्ट। मनी हैज बीन सण्ट एण्ड द प्लान स्केल इज देयर।

व्यास जी ने जो बात 1960 के सत्र म कही थी वर्षों बाद वह अत्यन्त भयावह स्थिति क रूप म सामन आई। भयानक वृष्टि स निचल इलाको म पानी भर गया, मकान कई दिनो तक जल प्लावित रहे सैकडा मकान गिर गये लोगो म आतक व्याप्त हो गया तथा खाई को तोडकर जल की निकासी करनी पडी। उनके शब्द कितने सटीक थ। उसको रोकने क लिए प्रब घ नही किया गया तो भी यही स्थिति होगी और फिर बहुत स मकान टूट जायेंगे।'

स्थिति वही की वही है। वही सूरसागर वही गिन्नाणी और वही हनुमान हत्था। हर साल पानी भर जाने और मकान गिरने की सभावना आज भी बनी हुई है। एक और दृष्टान्त देना उचित होगा जिससे यह ज्ञात हो सके कि नगर की जल समस्या के समाधान के लिए व्यासजी हमेशा कितने सजग एव सक्रिय रहा करते थे।

(9 अप्रेल 1958 की विधान सभा की कायवाही स उद्धत पृष्ठ 6815 6816)
श्री मुरलीधर व्यास क्या सावजनिक निर्माण मत्री बताने का कष्ट करेंगे–

(1) क्या बीकानेर की जल व्यवस्था सुधारने सम्बन्धी कोई योजना सरकार के विचाराधीन है ?

(2) बीकानेर शहर म रिजरवायर निर्माण का जो आश्वासन दिया था उसका काय कब स प्रारम्भ होगा ?

श्री मुरलीधर व्यास मेरे कहने का मतलब यह है कि क्या इस प्रकार का आश्वासन चुनाव के समय मुख्यमत्रीजी ने दिया था कि आपके यहा पानी की समस्या हल होगी और जल्दी ही रिजरवायर बनाया जायगा ?

श्री नाथूराम मिर्धा (सावजनिक निर्माण मत्री) मुझे ठीक स पता नही। वसे मान सकते हैं कि आश्वासन दिया होगा तब ही विचाराधीन है।

श्री मुरलीधर व्यास कब स विचाराधीन है ?

श्री नाथूराम मिर्धा थोड़े अर्से से।

श्री मुरलीधर व्यास कब तक पूरी कर दी जायेगी ? यह पानी का ममला है, गभीरता से उत्तर मिलना चाहिए। यह योजना कब तक पूरी होगी ?

श्री नाथूराम मिर्धा मैं निश्चित अवधि नही बता सकता क्योंकि 18–20 योजनाए चल रही हैं जो तीन साल से चल रही हैं। आपके यहा की जो समस्या है उसम समय लगेगा क्योंकि पहले योजना बनगी फिर एस्टीमेट तयार होगा। सक्शन होगी। इसम लाखो रुपयो का मामला होगा। धन पर्याप्त मात्रा म उपल घ कराना होगा। इसम समय लगेगा।

राष्ट्रीय समस्याओ पर जब कभी बहसें होती श्री व्यास उनम अग्रणी रहा करते थ। राष्ट्र प्रेम एव राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के मामले म उनकी उत्कट देश प्रेम की भावना उनके ही कथन से यहा उद्धृत हैं। ये सभी बातें उन्होन समय समय पर विधान सभा क सन्दभ म कही थी।

पचायत चुनाव क सन्दभ म 'चुनाव की प्रणाली जिस तरह हमारे देश म चल रही है उसमे काफी धन खच होता है काफी समय भी खच होता है। बार बार चुनाव चलत रहते हैं। कभी पचायतो के कभी म्यूनिसिपलिटी के कभी आम चुनाव। यदि देश म नयी प्रणाली चलात तो पचायतो म्यूनिसिपलिटियो एव आम चुनाव सब साथ हो जाते जिससे देश म नया वातावरण आता और देश की जनता का ध्यान भी बार बार न बटकर एक आम चुनाव की तरफ आ जाता। बाद म लाग दूसर काम म लग जाते। चुनाव म भी यह लोगो को भान कराना चाहिए कि चाह पचायत क चुनाव हो या पचायत समिति जिला परिषद एम एल ए या एम पी के चुनाव हो सब एक साथ हो जायें तो वोटरो को इसस भान होगा कि इन सबम हमारा हाथ है। इससे यह होना कि राजस्थान ने एक नई पहल दी है तथा बार बार जो चुनाव म खर्चा होता है और बार बार जो चुनाव म बातें आती हैं वे भी समाप्त होती (विधानसभा कायवाही 31 अक्टूबर 1964 पष्ठ 242 से 244 तक)

नागालण्ड क प्रसग पर व्यास जी क विचार—नागालण्ड नाम स ऐसा लगता है कि नागाओ का अलग लण्ड है हिन्दुस्तान से अलग भूमि है। इस प्रकार स भी पथ मालूम पड़ता है कि हमारे देश से जस अलग भूमि वाला प्रदेश है। जहा तक नाम का सवाल है—मैं तो समझता हू कि यह नाम न होकर नागप्रदेश हो जाय तो अच्छा है। नागा भी हट जाय क्योंकि नागकन्या को अजुन जो वहा गय थे हमारा प्राचीन मल भी है और नाम किसी लड़की के नाम पर नही होता

सिंह गजना का एक

बल्कि वहा रहने वाले के नाम पर होता है। अगर इसका नाम नागप्रदेश हो जाये तो यह नाम हमारी संस्कृति के साथ जुड़ता हुआ हो जाता है।'

चीन के आक्रमण के सम्बन्ध में व्यासजी के विचार—जिस समय हमारे देश पर कोई हमला करे वहा पर बातचीत करना और शान्तिमय तरीके से बातचीत करने म पहली बात तो यह है कि शांति से बात करने का मौका तो बाद का है। पहला मौका तो उनको अपनी सीमा से खदेड़ देने का है। वे हमारे ऊपर हमला करते हैं हमारी चौकियों पर कब्जा करते जा रहे हैं तो मैं समझता हू कि शांति और समझौते की बात नहीं है बल्कि सारे देश को मिलकर इस देश के अन्दर एक राष्ट्रीय भावना के आधार पर देश में राष्ट्रीय सरकार इस मौके पर बनाई जा सकती है। जबकि दूसरा देश हम पर हमला करता है तो एक मौका आता है।

सारे भेद भावों को भुलाकर राष्ट्रीय सरकार की घोषणा करके राष्ट्रीय भावनाओं का सही तरीके से उपयोग करना चाहिए। सबसे पहला काम यह होना चाहिए कि हर आदमी पूरी ताकत लगाकर सद्भावना के साथ देश रक्षा का जो प्रश्न उठा है उसे पूरा करे। सब लोगों को मिलकर देश की एकता के लिए कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना चाहिए (विधानसभा कार्यवाही विवरण 22 अक्टूबर 1962 पृष्ठ 2020 से 2023 तक)

राजस्थान विधान सभा में तत्कालीन वित्तमंत्री श्री बालकृष्ण कौल ने जब यह कहा कि यह भी शंका वाली बात थी कि हमला (चीन का हमला) था या क्या था तो सभी विरोधी सदस्यों ने शोरगुल करना शुरू कर दिया। सभी ओर से माग की गई कि वित्त मंत्री अपने शब्द वापिस लें। उनका कहना था कि जब तक ये शब्द वापिस नहीं लेंगे आगे कार्यवाही नहीं चलने दी जायेगी। बहस में भाग लेने वाले सदस्य थे श्री उमरावसिंह ढाबरिया मानिकचन्द सुराना, भैरोंसिह शेखावत, मुरलीधर व्यास विजयसिंह झाला, नागेन्द्र नाथ झाला श्रीमती नगेन्द्र बाला एव सतीशचन्द्र अग्रवाल आदि। सभी ने माग की कि वित्तमंत्री महोदय सदन से माफी मागें। अतत सभानेत्री को व्यवस्था देनी पड़ी कि मंत्री महोदय आप अपने शब्द वापिस ले लें अन्यथा उनको एक्सपंज कर दिया जायेगा। श्री मुरलीधर व्यास ने जब जोर देकर कहा कि हमला हुआ या नहीं—यह मानते हैं या नहीं तो वित्तमंत्री को कहना पड़ा हुआ है। मानता हू हमला है।' एक और स्थल पर जब व्यासजी ने कहा कि जब आसन की तरफ से व्यवस्था दी जा चुकी है तो आप अपने शब्द वापस ले लें। नहीं तो उन्हें एक्सपंज किया जायगा। श्री कौल ने कहा कि—यह व्यवस्था हो चुकी है तो यह लिख लीजिए कि यह मेरा स्टेटमेन्ट गलत है तथा थोड़ी देर बाद में कहा कि आसन की यह व्यवस्था है तो मैं शब्द वापिस लेता हू"।

बहस के दौरान आगे जब श्री कौल ने कहा कि मैं मानता हूं कि चीन का हमला हुआ था पर यह कौन से दिन हुआ यह मैं नहीं कह सकता तो फिर विवाद छिड़ गया। अंतत मुख्यमंत्री महोदय के यह कहने पर कि 'चाहे न हम पर 20 अक्टूबर को एग्रेशन किया है—इसमें दो राय नहीं हो सकती है और न ही आग मानने की तैयारी रखते हैं मैं खुद उनसे (वित्तमंत्री) से चाहूंगा कि अगर उन्होंने ऐसा कहा है तो उनके लिए साफ तौर पर उन्हें क्षमा याचना करनी चाहिए। वित्तमंत्री को कहना पड़ा कि अगर माननीय सदस्यों को ऐसा लगे कि मैंने उस चीन का हमला नहीं माना है तो मैं उसे वापिस लेता हूं' (विधानसभा कार्यवाही 16 अप्रेल 1965 पृष्ठ 10119 से 10134)

इस प्रसंग में मंत्रिमण्डल पर अविश्वास प्रस्ताव भी रखा गया तथा यह प्रबल मांग की गई कि वित्तमंत्री को हटा दिया जाय। श्री मुरलीधर व्यास ने कहा था 'हम लोगों ने प्रस्ताव रखा है उसमें बहुत बड़ी ताकत है। राजस्थान की विधानसभा में विरोधी पक्ष के लोग या सरकारी पक्ष के लोग देश पर हमला होने की तारीख के बारे में कोई शंका करते हैं तो इतना जागरूक है कि इस प्रकार के मंत्री को फौरन बर्खास्त करना चाहिए उसकी मांग करता है। इससे देश को नुकसान नहीं होता, बल्कि जागरूक होता है।'

अंतत मुख्यमंत्री के भाषण के उपरांत उपाध्यक्ष ने नियमों को शिथिल करते हुए अविश्वास प्रस्ताव रखने की जो मांग थी—उसे अस्वीकार कर दिया। मुख्यमंत्री जी ने अपने भाषण में कहा कि वित्तमंत्रीजी निश्चित रूप से देशभक्त हैं तथा कोई गलतफहमी नहीं फैले एवं पोलिंग रेडियो इसका दुरुपयोग नहीं करे इसलिए उनको माफी मांगने की सलाह दी गई थी।

यह सम्पूर्ण प्रसंग विधायक के रूप में अन्य विरोधी सदस्यों की तरह श्री व्यास की जागरूकता को भी प्रकट करता है। साथ ही यह भी प्रकट करता है कि सत्ता पक्ष हो या विरोधी पक्ष—देशभक्ति एवं देश प्रेमके मामले में सभी ने एक ही भावना से अनुप्रेरित होकर काम किया (विधानसभा कार्यवाही 16 अप्रेल 65 के पृष्ठ संख्या 10170 से 10205 तक के विवरणसे उद्धृत)

कच्छ के रन पर आक्रमण के प्रसंग में जागरूक विधायक श्री मुरलीधर व्यास ने अपने भाषण में सवाल उठाये हम जानना चाहते हैं कि जिस प्रकार यह महसूस करते हैं कि चिन्ता का विषय है तो क्या ऐसी परिस्थिति में राज्य सरकार ने इस स्थिति को रोकने के लिए किस किस प्रकार से क्या क्या कार्यवाही की है और उसको रोकने के लिए क्योंकि इसमें देश की सुरक्षा और घुसपैठ को रोकने

का सवाल है इस मामले म अ ?? क्या केद्रीय सरकार को उससे अवगत कराया है। यह भी सरकार कर र ी है या नही और क्या कर रही है और क्या नहीं ? जसा बाडमर से आने वाले माननीय सदस्य ने बताया कि स्थिति कभी खराब है । तो आप इस सिलसिल म क्या कर रहे है ? आप इस सिलसिले म जरूर बतावें । यदि इस सदन म नहीं बता सकते तो साथियो को को फीसेंम म लेकर बतावें

(8 अप्रेल 65 की कायवाही से)

प्रजातन्त्र म कही पर पत्रकार पर हमला हो और जन प्रतिनिधि उस प्रश्न के लिए विधानसभा म अड नही जावे यह बात श्री यास के लिए सभव नही थी। पत्रकारा पर होने वाले एक ऐसे ही प्रकरण के प्रश्न म उन्होंने विधानसभा म एक स्थगन प्रस्ताव रखा था जिस पर सदन मे बहस करने अथवा नही रखने का निणय तो ले लिया गया था पर उसकी जानकारी सदन म नही दी गई थी। 6 माच 1961 को इस प्रश्न को लेकर काफी वाद विवाद हुआ। अध्यक्ष महोदय श्री यास को बार बार बठने का निवेदन कर रहे थे पर श्री यास जानकारी लेने के लिए अडिग थे। उन्होने बार बार कहा कि मैं बठने को तयार हू पर इस प्रकार के स्थगन प्रस्ताव को जब मत्री महोदय का सूचना दे दी जाती है पत्रकार को पीटा जाता है या आपने (बठ जाने की) जो व्यवस्था दी है उसे मैं मानने को तयार हू पर मैं यह जानना चाहता हू क्या डेमोक्रेसी का इस प्रकार लगातार गला घोटा जाय और जवाब नही दिया जाय । उनके कई अधूरे वाक्य कायवाही म मिलते हैं। कायवाही का अतिम अश इस प्रकार है—

श्री अध्यक्ष आडर प्लीज। मै फिर कहता हू कि माननीय सदस्य बठ जायें वर्ना मुझ सारजे ट–एट–आम को आदेश देना होगा

श्री मुरलीधर व्यास डमोक्रेसी का इस प्रकार लगातार गला घोटा जाय और जवाब नहीं दिया जाय

श्री अध्यक्ष आडर प्लीज। आप बठ जायें। मैं सार्जेण्ट–एट–आम्स को आज्ञा देता हू कि माननीय सदस्य को बाहर ले जायें।

श्री मुरलीधर व्यास यह गलत सिद्धा त है आप इस तरह करते हैं

श्री अध्यक्ष आप कृपया सदन छोडकर चले जायें।

श्री मुरलीधर व्यास हमेशा इस प्रकार की कायवाही की जाती है

श्री अध्यक्ष आडर प्लीज

(सारजेण्ट एट आम्स द्वारा कुछ प्रयास के बाद श्री मुरलीधर यास निष्कासित कर दिये गये) (विधानसभा कायवाही 6 माच 1961 पष्ठ सख्या 796 से 799 तक)

कुशलगढ म दिनाक 30 अक्टूबर 1964 को नागरिको की पिटाई का मामला उठाकर श्री यास ने उपाध्यक्ष महोदय के माध्यम स सम्बधित मत्री को आदश दिलवाने म सफलता प्राप्त की कि सम्पूण तथ्य उसी दिन शाम तक इकटठे किय जावें। कायवाही का आशिक उद्धरण इस प्रकार है

श्री मुरलीधर व्यास मुभम कल टक काल पर बात हा गई। खेद इस बात का है कि मत्री महोदय की बात नही हो सकी। मरी इफोर्मेशन इस प्रकार है कि कई लागो के सिर फोड दिय गये। उनका बेरहमी से पीटा गया हालत बुरी हो गई कुशलगढ म हडताल है और उसके साथ साथ तीन आदमी गिरफ्तार कर लिय गये हैं। इतनी बडी बात हो जान पर भी सरकार उसको दबाना चाहती है चीफ मिनिस्टर खुद की मैंन बता दिया। आपको रात का समय मिला सवेरे का समय मिला अगर आप अब भी नहीं बता सकत तो फिर स्थगन प्रस्ताव का मतलब क्या ? उपाध्यक्ष महोदय आप अपनी तरफ से व्यवस्था दें कि 12 बज से 3 बजे तक यह जानकारी हम दी जाय।

श्री उपाध्यक्ष मत्री महोदय शाम तक हो सके तो इस बारे म तथ्य इकटठे करें

30 अक्टूबर की घटित घटना की सम्पूण जानकारी श्री व्यास को उसी दिन मिल जाना और 31 अक्टूबर को सदन म इस पर चर्चा का होना यह बताता है कि व ऐसे प्रकरणो म अत्यन्त जागरूक रहत थे। (विधान सभा कायवाही 31 अक्टूबर 1964 पृष्ठ सख्या 4 स 5 तक)

शाम तक जानकारी जब नही मिली तो उन्होंने उस प्रश्न को पुन उठत हुए कहा मैं मुख्यमत्री जी स मिला हू। मरी उनस बातचीत हुई है। जसा पता लगा उसके अनुसार बात भी बताई है। क्या स्थिति है क्या स्थिति नही है इस का थोडा और स्पष्टीकरण करें। इस सदन के अन्दर माननीय उपमत्री जी कह कि उनको पता नही है—जबकि आपन सवेरे यह व्यवस्था दी थी कि दिन भर मे मालूम कर लें और दो तीन बजे तक स्पष्टीकरण करें। आपने खुद ने यह व्यवस्था दी थी। मुझ खेद है भीतरी एरिया क अन्दर पुलिस के जरिये लोग मर जायें गिरफ्तार कर लिय जाए बाजार बन्द रह लोगो के सिर फोड दें और इन सब की जानकारी मुख्यमत्री को हो और उपगृहमत्री उन सबको छिपान की बात करें। मैं समझता हू यह बुरी परम्परा है

श्री निरञ्जननाथ आचाय आपन कल एडजोनमट मोशन दिया। हमन टेलीफोन स जानन का प्रयत्न किया। हम आशा थी कि कुछ सामग्री मिल जायेगी। डिस्ट्रिक्ट मजिस्टेट स भी कान्टेक्ट किया गया। अब मैं क्या कहू। यह आप मुझे

बतलायें कोई सामग्री नही मिल पाई है। अगर आप कहे तो मैं खडा रहू (विधान सभा कार्यवाही 31 अक्टूबर 1964 पष्ठ सख्या 293–294)

शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नो पर श्री मुरलीधर व्यास सदा ही बडे जागरूक रहते थे। गाधी जी के सिद्धान्तो के अनुसार उनका मानना था कि सभी को प्रारम्भिक शिक्षा बुनियादी शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। वे उच्च शिक्षा की तुलना म प्राथमिक शिक्षा पर अधिक जोर देते थे। जोधपुर तथा उदयपुर म विश्वविद्यालयो की स्थापना के बिल पर 1962 म उन्होने जो विचार प्रकट किये व शिक्षा के प्रति उनकी निष्ठा और दृष्टि को प्रकट करने वाले हैं। जितनी आबादी राजस्थान की है उतनी ही केरल की है। जिस स्थान (केरल) पर 90 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं वहा पर एक ही यूनिवर्सिटी काम करती है और जहा (राजस्थान) म 15 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं वहा एक काम कर रही है दूसरी बन रही है तीसरी का बिल आ रहा है। आखिर इसके बन जाने पर क्या भार पडेगा? आर्थिक बोझ सभलेगा या नही और यदि भार स्वरूप हो जाता है तो दूसरे क्षेत्र जिनका हम उत्थान करना चाहते है प्राथमिक शिक्षा वह ही पड़ी है प्राथमिक स्कूलो म बच्चो के बठने के लिए चटाइया नही है और कोई साधन नहीं है जब मामूली गाव है। स्कूल खोलने के लिए कहा जाता है ना यह कहा जाता है कि साधन नही हैं। इसलिए आपको तुलनात्मक दृष्टिकोण से देखना पडेगा कि जो राज्य एक गाव म प्राइमरी एजूकेशन के लिए स्कूल खोलने के लिए कहता है कि साधन के अभाव म नही कर सकते वही राज्य सारे हिन्दुस्तान म ढिढोरा पीटने के लिए राजस्थान म एक नही तीन तीन यूनिवर्सिटी बना रहा है। मैं निवेदन करना चाहता हू कि म श्री महोदय राजस्थान की वित्तीय स्थिति जनता के सामने रखें और बिल के साथ उसका साधन रखें कि इसका कितना खर्च होगा। तीसरी पचवर्षीय योजना म हम प्राइमरी एजूकेशन के लिए यह चाहते हैं कि प्राइमरी एजूकेशन अनिवार्य हो। लेकिन जब प्राइमरी शिक्षा का प्रश्न आता है तो कहते हैं कि हमारे पास पसा नही है। तीसरी पचवर्षीय योजना म हम मानते हैं कि अनिवार्य शिक्षा हर छात्र के लिए करेंगे चौदह साल के बच्चो के लिए शिक्षा अनिवार्य हो जायगी। लेकिन इसके लिए पसा कहा से आयेगा? मेरा स्पष्ट मानना है कि राजस्थान म हायर एजूकेशन पर इतना खर्च नही करना चाहिए। आप राजस्थान म तीन तीन यूनिवर्सिटी खोल दें पर राजस्थान की माली हालत ऐसी हो कि प्राइमरी एज्यूकेशन के लिए आप एक कमरा नही बना सकते बच्चो के लिए आप एक चटाई नही रख सकते सर्दी म बच्चे सीमेन्ट के ऊपर बठते हैं। इस प्रकार के सकडो नही हजारो स्कूल मिलेंगे जहा बठने के लिए चटाई तक

नही है। तो एक तरफ हमारी हालत यह है और दूसरी और हम इतना खच करत हैं तो राजस्थान शिक्षा क क्षेत्र म इतना बढ नही गया है–केरल के मुकाबले म, मसूर के मुकाबले मे जहा शिक्षित लोग इतने अधिक हैं (और जहा एक–एक विश्वविद्यालय है) यूनिवर्सिटी का जो सुझाव रखा है उसके पहले एक वित्तीय मापन रखना चाहिये। इसके साथ हमारी सरकार को यह आश्वासन देना चाहिये कि तीसरी पचवर्षीय योजना म जहा किसी गाव के आदमी माग करेंगे कि हमारे यहा स्कूल खुलना चाहिए तो उनको आप पहले मौका देंगे। हमे दोनो बाता को तुलनात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिये। मैं साफ शब्दो म कहना चाहता हू कि राजस्थान म दूसरी यूनिवर्सिटी की इतनी आवश्यकता नही है जितनी प्राइमरी एजूकेशन की है। इसस लोक्त न आगे बढ सकता है (विधानसभा कायवाही का विवरण 6 अप्रेल 1962 पृष्ठ सख्या 2798 से 2801 तक)

य विचार 1962 म प्रस्तुत किये गये थे। इतने वर्षों बाद देखें तो मालूम होगा कि जोधपुर व उदयपुर विश्वविद्यालय बन जाने के बाद भी उनका कायक्षेत्र अत्य त सीमित है। जोधपुर विश्वविद्यालय तो केवल जोधपुर शहर के नगरपरिषद क्षेत्र तक ही अपना क्षेत्राधिकार रखता है। प्राय सम्पूण भार तो राजस्थान विश्वविद्यालय पर ही है। नाम के तीन विश्वविद्यालय होने पर भी काय की दृष्टि से 90 प्रतिशत भार राजस्थान विश्वविद्यालय को उठाना पडता है। इस परिप्रेक्ष्य म देखें तो ज्ञात होगा कि यदि उस समय 1962 म दो और विश्वविद्यालय न बनाकर सम्पूण जोर प्राथमिक शिक्षा उच्च प्राथमिक शिक्षा पर दिया जाता तो समीचीन होता।

किसी महाविद्यालय म व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रश्न को जब कई विरोधी सदस्यो ने 18 अगस्त 1964 को विधान सभा म उठाया तो शिक्षा की पवित्रता म विश्वास रखन वाले श्री व्यास ने उसकी तत्काल जाच की माग की और कहा शिक्षा जसे पवित्र स्थान म भी यदि आप इन चीजो के लिए सख्त कदम नही उठायेंगे तो नेताजी की (तत्कालीन गृह मत्री भारत सरकार) की दुहाई देना बेकार है। इतने सारे तथ्यो के रहते हुए भी यह आज किस तरह से कह सकते हैं (कि भ्रष्टाचार नही है)। अगर नही है तो आप इन तथ्यो की जाच कराए। साहस दिखाए कि जाच इस सदन के भी एक कमेटी के रूप म की जाकर शिक्षा विभाग के सारे रिकाड को देखकर जाच करके एक रिपोट सदन म दे। जसे *गुलजारी लाल नदा* कहते हैं कि जडामूल से भ्रष्टाचार नष्ट करना है तो आप कमटी की बात स्वीकार कर लें। आप भी कहते हैं कि भ्रष्टाचार समाप्त करना चाहत है तो विरोधी दल की तरफ स भी जो फाइलें और कागजात पश हुए हैं उनकी जाच कराना चाह तो कमटी

बनालें और जाच करालें शिक्षा मत्री (हरिभाऊ उपाध्याय) से निवेदन करना चाहता हू कि आप गाधीजी के साथ भी काफी रह हैं। आपके मामले में कहा जाता है कि सत्य का जहा तक सवाल है उसे दबाना नहीं चाहते। आप इसमे भी सत्य की जाच करना चाहते हैं तो 5 आदमियो की एक समिति की घोषणा करके इस मुद्दे पर जाच करवावें जो अपनी रिपोर्ट सदन में रख सके। इतना मौका (अवश्य दें) ।

श्री व्यास पूरे आग्रह एव तीव्र तत्परता के साथ अपनी बात रखा करते थे। उनका लक्ष्य रहता था कि किसी भी तरह से हो शिक्षा क्षेत्र की पवित्रता को बनाये रखा जाना चाहिए। उन दिनो (1964 में) श्री गुलजारीलाल नन्दा गृहमत्री भारत सरकार के भ्रष्टाचार उन्मूलन के बहुचर्चित कदम उठाये जा रहे थे तथा भारत में एक प्रकार का शुद्धि आन्दोलन जैसा वातावरण दिखाई दे रहा था। उस वातावरण का एव शिक्षा मत्री के व्यक्तिगत गुणो का हवाला देकर श्री व्यासजी अपनी बात को मनवाने का हर सभव प्रयास किया करते थे।

मातृभूमि के प्यार एव सैनिको के कल्याण के प्रति भी श्री व्यास अत्यन्त सजग थे। 1964 में कच्छ के रन पर आक्रमण के समय उन्होने 29 सितम्बर 1965 को विधानसभा में कहा था,

सकटकालीन परिस्थिति में व्यक्तिगत दृष्टिकोण दलगत दृष्टिकोण देश का दृष्टिकोण नहीं हो सकता आज जब देश को ऊचा समझते हैं तो इतना ही कहना चाहूगा कि आपको ही केवल मातृभूमि से प्यार है आपसे ज्यादा प्यार हम देश से है। हम इस मौके पर कहना चाहते है कि मत्रियो की सख्या में कमी करें । जहा तक देश में सकटकाल का सवाल है, हमारे सामने दृष्टिकोण वही रहेगा अपने देश के प्रति हम अपने कर्तव्य को पूरा करेंगे। हमारा देश है। देश केवल किसी व्यक्ति या पार्टी का नहीं हो सकता । (विधानसभा कार्यवाही 29 सितम्बर 1965 पृष्ठ सख्या 1482 से 1486 तक)

सैनिको के कल्याणकारी कार्यों के लिए विधानसभा में माग करते हुए श्री व्यास ने विधानसभा में कहा था सैनिको को इस बात की प्रेरणा मिले कि सरकार जमीन दे रही है और आसानी से दे रही है इसलिए भूतपूर्व सैनिको को जल्दी से जल्दी (जमीन) देने के नियम बनाकर सरकार अलाट क्यो नहीं करती है?' इस प्रश्न पर श्री रामप्रसाद लढ्ढा (उपमत्री राजस्व) ने आश्वासन दिया कि कालोनाइजेशन की पालिसी के निर्माण की बात पूरी होते ही यह काम जल्द ही कर दिया जायगा। (विधानसभा कार्यवाही 2 सितम्बर 1963 पृष्ठ सख्या 46)

इन दोनों दृष्टा न्तों से यह सिद्ध होता है कि मातृभूमि के प्यार को पार-पार म लिए हुए श्री व्यास उन सनिको एव भूतपूर्व सनिकों के कल्याण के प्रति भी अत्यन्त सजग रहते थे जो मातृभूमि के लिए अपना सवस्व देने को हर पल तयार रहते हैं। उनकी ये भावनाए मात्र भावुकता की नही होकर यथाथपरक थी। गोआ मुक्ति आदोलन के समय पुर्तगाली सत्ता का सामना करने के लिए गोलियो की बौछार की सम्भावना के बीच भी श्री व्यास निहत्थे सत्याग्रहियो के एक नेता के रूप म वहा गये थे। अपने देश की अखण्डता एव महानता म उनको दृढ़ विश्वास था। राजनीतिक लाभ की दृष्टि से सकटकालीन स्थिति म ऐसी कोई बात नही कहते थे जिससे शासक दल पथ की परेशानी म पडे या जिससे विरोधी ताकतें बेजा प्रचार कर लाभ उठा सकें।

उद्योग धधो को प्रोत्साहन देने एव उनके लिए आवश्यक कच्चे माल की व्यवस्था करने सम्बधी सकल्प पर बोलते हुए श्री व्यास ने 9 अप्रैल 1965 को जो बातें कहीं वे उनकी अनुभव विपुलता एव उद्योग विकास की प्रखर भावना को प्रकट करती हैं। देश के विकास का एकमात्र साधन यदि कोई है तो वह साधन हमारी हस्तकला या गृह उद्योग है। उसको यदि प्रोत्साहन नही मिला तो चाहे हम देश म बडी से बडी इण्डस्ट्री को प्रोत्साहन देदें और उसके जरिये कई लोगो को काम देदें, पर मेरी यह मान्यता है कि सरकार जब तक इन छोटी हस्तकलाओ के लिए ग्राम और हर जगह साधन उपलब्ध करके इनके पास पहुचायगी तो सही मान म प्रति व्यक्ति आय बढेगी और बेकारी की समस्या का समाधान होगा। गरीब देश म यदि हमने बडी इण्डस्ट्री मे बहुत पैसा लगा दिया और हस्तकला उद्योग को प्रोत्साहन नही दिया तो देश बहुत पीछे रह जायगा आज छोटे उद्योग, हस्तकला को जो साधन देने चाहिए व उनको नही मिलते। आज रगाई के बारे म बताया गया कि 10 हजार लोग रगाइ का काम करने वाले राजस्थान म हैं। जहा पक्के रगो का सवाल है जो कि इम्पोर्ट होकर आते हैं—वहा हमारे यहा पर ऐसे रग नही है। उनको ठीक तरह से रग नही मिल पाते। इसी तरह से हम देखते हैं कि दूसरी चीजो के मामले के अन्दर कि जो छोटे उद्योगो म रा मटिरियल मिलना चाहिए वह नही मिल पाता है। आज बीकानेर म तपेली (बतन) उद्योग है, पीतल के बरतनो का उद्योग है और दूसरे छोटे छोटे काम होते हैं। उनका सवाल है तो उनको रा मटिरियल नही मिलता है। रा मटिरियल आप बडे बडे उद्योगपतियो को दे देते हैं। वे लोग बाहर ही कुछ लोगो को ब्लैक म बेच देते हैं और जिन लोगो को रा मटिरियल मिलना चाहिए उनको नही मिलता है। 1961 तक जो रा मटिरियल का कोटा दिया

गया जो पीतल का स्टील का ताम्बे का कोटा दिया गया वह बड़े बड़े कपटलिस्टस को दे दिया गया। उनके द्वारा इसका इस्तेमाल नहीं किया गया और वह कोटा उनके द्वारा बिक चुका है। नतीजा यह होता है कि छोटे छोटे लोग जो बरतन बनाने वाले हैं दूसरी चीजें बनाने वाले हैं लोहे की बाल्टी बनाने वाले हैं सिगड़ी बनाने वाले हैं–उनको कोटा नहीं दे पाते हैं। कोटा बड़े बड़े लोग हजम कर जाते हैं और उसका ब्लैक हो जाता है।

श्री व्यास ने कोटा देने ढक करने एव भ्रष्टाचार करने सम्बन्धी एक प्रकरण विधानसभा म प्रस्तुत किया जो कलकत्ता के किसी व्यापारी से सम्बंधित था तथा जिससे कोटा परमिट के मामले म भ्रष्ट आचरण प्रकट होता था। विधान सभा के अन्य विपक्षी सदस्यो सवश्री रामानन्द अग्रवाल योगेन्द्रनाथ हाडा आदि ने भी उस प्रकरण म जाच की माग की।

एक स्थान पर उत्तेजित होकर श्री व्यास ने यहा तक कहा कि चोरियो को मत छिपाओ। इससे देश बदनाम होता है (विधान सभा कायवाही पृष्ठ सख्या 8556 से 8572 दिनाक 9 अप्रल 1965) श्री व्यास अपने कथनो की पुष्टि म एक से अधिक प्रमाण प्रस्तुत किया करते थे कभी कभी तो विधानसभा म इसस खलबली जसी स्थिति पदा हो जाती। समाचार पत्रो का इसम अपनी सुखिया मिला करती थी।

विधानसभा म व्यासजी ने सावजनिक हित के प्रत्यक प्रकरण पर अपने विचार प्रकट करने का काम पूरी जिम्मेदारी एव दायित्व स निभाया। प्रकरण चाहे कसा ही हो वे उस पर पूण तथ्यगत जानकारी देन अथवा प्राप्त करने म सक्रिय रहते थे। उन्होने समय समय पर जो बिन्दु उठाये उनम शिक्षको के क्विसेशन पी डब्ल्यू डी एव बागायत कमचारियो क प्रमोशन स वेटरनरी कालेज तथा डूगर कालेज के निर्माण काय, सस्ते अनाज की दूकानें खुलवाने के प्रश्न पुलिस अत्याचार आदि अनेक बातें सम्मिलित थीं। व्यासजी के चुनाव अभियान (1962) के समय प्रकाशित बुलेटिन पुस्तिका क पृष्ठ आठ पर अंकित किये गये शब्द हैं– यदि उनके भाषणो एव प्रश्नो का ब्यौरा प्रकाशित करें तो उससे एक बडी पुस्तक बन जायेगी। विधान सभा की अधिकृत काय विवरण की 500 पुस्तकें कार्यालय म हैं कोई भी नागरिक वहा पहुचकर उनके कार्यों का लेखा जोखा ले सकता है। उसी पुस्तिका म एक दो शेर भी दिये गये हैं जो इस प्रकार हैं

यू ही दुनिया म कोई इज्जतो शोहरत नहीं पाता
बशर को खिदमते मुल्को वतन मुमताज करती है

मुरलीधर ही इन्सानियत का वह नमूना है
कि जिस इन्सान पर इन्सानियत भी नाज करती है

इन्सानियत जिस इन्सान म अपनी पूणता की छवि देखेगी, उसी पर नाज करेगी। अपने लघु जीवन म पूणता की स्थिति म पहुच पाना सब क लिए तो लगभग असभव बात है, पर यदि कोइ व्यक्ति अपने ही दृष्टान्तो एव उदाहरणो द्वारा जीवन के कुछ मानक तय कर ले कुछ प्रतिमानो को मूर्तिमत कर सके, अग्नि परीक्षाओ म कुन्दन बन कर बाहर आ सके-तो यह आने वाली पीढियो का माग दशक तो अवश्य बन सकता है। राजनीति के दलदल म तो यह कहावत चरि ताथ होती है कि काजल की कोठरी म काहू ही सयान जाय, एक लीक काजर की लागि है प लागि है।' पर उसम से भी बेदाग निकल आना और "जस की तस धरि दीनी चदरिया" वाली स्थिति उत्पन्न कर देना कुछ विरल मनस्वी एव सत्यनिष्ठ लोगो का ही काम है। आने वाली पीढियां जब इस पीढी के कार्यो पर अपनी निर्णायक टिप्पणी देंगी तो अवश्य कहेंगी कि यहां एक ऐसा इन्सान था जो न तो प्रलोभन क आगे कभी डिगा न भय स आतकित हुआ और न पद एव प्रतिष्ठा के मोह म अपन पथ से विचलित ही हुआ। वह अपने जीवन काल मे लोकनायक बन चुका था। मरने के बाद जनता न उसकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए स्वेच्छा स एव बिना किसी सरकारी वित्तीय सहायता के एक नहीं दो दो प्रतिमाए स्थापित करक उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की।

आज बीकानर म जितनी भी मूर्तिया है उनम-से जो राजा महाराजाओ एव सेठो साहूकारो आदि की हैं-उनक लिए तो धन की समस्या का प्रश्न ही नहीं रहा। जो सरकार द्वारा निर्मित की गई हैं उनका पृथक इतिहास है पर जन उमाव के साथ निधन से धनी तक सबके सहयोग स एव दलगत राजनीति स परे रहकर सभी वर्गो ने श्री व्यास की प्रतिमाओ के निर्माण म जो सहयोग दिया वह अपने आपम एक अनूठी कहानी है।

विधानसभा के दस वर्षो म प्रति वष चार माह के न्यूनतम हिसाबसे भी 1000-1200 नियमित बठकें अवश्य हुई होगी। इतनी लम्बी अवधि तक श्री व्यास के व्यक्तित्व की छाप तत्कालीन विधानसभा के अधिवेशनो पर बराबर बनी रही। उनम कई बार सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव आये कई बहिर्गमन के किस्से हुए कई बार उन्ह जबरन निष्कासित किया गया और कई बार वे स्वय वाक आउट कर गये। ऐस भी मौके आये जब भ्रष्टाचार के किसी बिन्दु पर व अकेले ही अड गये। व दूसरो क सहयोग का स्वागत करते थे पर उसके लिए

प्रतीक्षा करना उनको रास नहीं आता था। जो बात उनको कहनी होती उसके लिए उस समय चलने वाली किसी भी बहस का सहारा ले सकते थे। अध्यक्ष उन को टोकते कि 'माननीय सदस्य जो बात कह रहे हैं वह बहस के बिन्दु से सम्बन्धित नहीं है' पर वे घूम फिर कर उसी बात पर आ जाते और कहते 'अध्यक्ष महोदय मैंने जो प्रश्न उठाया है वह इस बिन्दु के अन्तर्गत ही आता है। यदि भ्रष्ट आचरण चलता गया तो वक्तव्य उक्त बिन्दु की पूर्ति कैसे हो सकती है।' अप्रासंगिक होने का खतरा उठाकर भी श्री व्यास अपनी बात तो कह ही जाते थे।

उनके वक्तव्य तथ्यपरक घटनापरक एवं पुष्ट प्रमाणपरक होते थे। लाठी चार्ज अथवा गोली काण्ड के समय के खून से लथपथ कपड़े अथवा भिन्न भिन्न स्थितियों के चित्र लाना नहीं भूलते थे। अकाल के समय आदिवासियों द्वारा खाई जाने वाली घास की रोटियां तक विधानसभा में लाने और प्रदर्शित करने में वे नहीं चूकते थे। उनका व्यक्तित्व बीकानेर नगर तक सीमित न रहकर पूरे प्रांत के साथ जुड़ गया था।

विरोधी नेताओं में से जिन चन्द लोगों के नाम श्रद्धा से लिये जाते हैं—उनमें उनका नाम प्रायः पहले क्रम में ही आता था। इसका एक कारण भी है। विधानसभा के सदस्य बनने से पूर्व और पश्चात दोनों काल में वे फक्कड़ ही रहे न घर था मकान न कोई उल्लेखनीय चल अचल सम्पत्ति और न चुनाव लड़ पाने जितनी धनराशि ही उनके पास रही। उन्होंने किराये के जितने मकान बदले राजस्थान के किसी भी शीर्षस्थ नेता के जीवन में ऐसी विभीषिका नहीं आई होगी। घर का कोई समारोह हो या कोई अन्य काम—लक्ष्मी की अकृपा तो उन पर बनी ही रही। चुनाव की गाड़ी तो जन सहयोग से चलती रही और यह फक्कड़ अलमस्त मसीहा गरीबों से सीधा जुड़ाव रखने के कारण गरीबों की समस्याओं पर बोलता रहा प्रदर्शन व सभाएं आयोजित करता रहा लाठियों के वार सहता रहा और जरूरत पड़ने पर गाओं आन्दोलन में गालियों का सामना करते हुए निहत्था निकलता रहा।

तभी तो वे अपने जैसी कई युगीन हस्तियों के होते हुए भी इतिहास पुरुष कहलाने की स्थिति में आये। लोगों ने उन्हें जीवन काल में भी सम्मान दिया और मरणोपरान्त अपनी आस्था का केन्द्र बना लिया। ऐसे पुरुष युगों—शताब्दियों में नहीं तो कम से कम कई दशकों में जाकर ही पैदा होते हैं।

विजय का दशक विधान सभा के बाहर की गतिविधियाँ

जन समस्याओ को लेकर सघप करने वाले तप पुन श्री मुरलीधर व्यास ने आन्दो लना क माध्यम स पूरे राज्य को जीवन्त बनाये रखा। समस्याएँ चाहे मजदूरो और किसानो की हो अथवा अल्प वेतन भोगी कमचारियो की श्री व्यास उन्हे उजागर करन म सदव अग्रणी रहते थे। उन्होने न तो कभी जेल यात्राओ की परवाह की और न लाठी खाने की न झूठे मुकद्दमो स वे डरे और न किसी प्रलोभन स विचलित ही हुए। 1957 स 1966 तक विधान सभा की सिंह गजनाएँ तो उनके व्यक्तित्व को उद्घाटित करती ही है पर व्यापक एव विषद जनमच पर उनकी भूमिका उसस भी ज्यादा रोमाचक है।

समाजवादी नेता श्री मन जी गोरे ने व्यासजी के इन्ही गुणो से अभिभूत होकर कहा है 'स्वर्गीय मुरलीधर जी का भूलना मरे लिए मुमकिन नही। इन जसे दृढ हृदय और पक्के इरादे क साथी आर कहाँ दिखाई देते है? उन्होने अपने परिवार की चिन्ता की न खुद के स्वास्थ्य की। राजस्थान म उन्होने ही समाजवादी विचार धारा प्रस्तुत की। उनकी स्मृति का बार बार प्रणाम।'

साम्यवादी (मा) नता श्री मोहन पुनमिया न व्यासजी क गुणो का इस प्रकार स याद किया है साथी मुरलीधर व्यास प्रदेश के उन गिनती के चिन्तनशील और सघपरत अग्रणी कायकर्ताओ म से थे जिन्होने राजस्थान क साम न्ती एव जातिगत वातावरण म समाजवाद व वामपक्ष की विचार धारा की अलख जगाई। एक चौथाई शताब्दी तक एक ही लगन और धुन से उन्होने बीकानेर क्षेत्र के ही नही वरन् पूर प्रदेश के समाजवादी आन्दोलन को विकसित करने का प्रयत्न किया था। उस क्षेत्र का ऐसा कोई जन आन्दोलन नही था जिसका उन्होने नेतृत्व प्रदान नही किया हो। व्यक्तिगत जीवन म सादगी मित्रो क बीच मिलन सारिता, सावजनिक जीवन म निडरता तथा सिद्धान्तो की कट्टरता—ऐसे सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी साथी मुरलीधर व्यास की देश और प्रदेश की वतमान हालत म आज कितनी आव श्यकता है यह अपने अपने ढग से उसी काम म सलग्न हम साथियो का महसूस हो रही है।'

भारतीय जनता पार्टी (पूर्व म जनसघ) के नेता श्री भरो सिंह शेखावत के विचार से स्व श्री व्यास एक निर्भीक ईमानदार और निष्ठावान जन नता थ। विधान सभा म मुझे भी उनक साथ विपक्ष म काय करने का अवसर मिला था। मैंने सदव उन्ह सिद्धा ता पर अटल रहने वाला व्यक्ति पाया। उनका अभाव सन्व अनुभव किया जाता रहेगा।

समाजवादी साम्यवादी एव भारतीय जनता पार्टी क उक्त तीन नताओ क उद्गारा म एक बात समान रूप स कही गई है और वह यह है कि व्यासजी निर्भीक ईमान दार निष्ठावान दृढ हृदय एव पक्के इरादा वाल चितनशील एव सघर्षशील जन नेता थे।

व्यासजी की 1957 से 1966 तक की गतिविधियाँ इन सभी विचारा की पुष्टि करने वाली है। 1957 के चुनावो म बीकानेर की जनता ने मुरलीधर व्यास को अपना जन प्रतिनिधि चुना था। कुल 24000 मतदाताआ ने मतदान किया। उनम स आध स अधिक अर्थात् 12500 लोगों न उनके पक्ष म मतदान किया। शेष 6 उम्मीदवारा को कुल मिलाकर 11500 मत ही मिल पाये। जागरूक जनता का निणय उनके प्रति जबरदस्त स्नह का परिचायक था। 1962 क चुनाव पूव एक विवरणिका प्रकाशित की गई। उसक अन्त म निम्न पक्तिया हैं जो व्यासजी के पूरे जीवन की नुमायन्गी करती हैं—

> यू ही दुनिया म कोई इज्जतो शोहरत नही पाता
> बशर को खिदमत मुल्को वतन मुमताज करती है
> मुरलीधर ही इन्सानियत का वह नमूना है कि जिस
> इन्सान पर इन्सानियत भी नाज करती है।

विधायक बनन के अगल ही वष अर्थात् 1958 म उन्हाने जामसर जिप्सम मजदूरा क आन्दोलन का नेतृत्व किया तथा निरन्तर 60 दिना तक चलन वाली शानदार हडताल की अवधि म मजदूरा के मनोबल को बनाय रखा। हडताल इतनी कामयाब रही कि उस उच्चतम स्तर तक गभीरता स लिया गया। तत्कालीन श्रममत्री श्री गुलजारी लाल नदा ने अपन सम्सदीय सचिव श्री एल एन मिश्रा को जामसर भेजा। उधर समाजवादी नता श्री एन जी गोरे नाथ पाई और अशोक महता भी बीकानेर आये। व्यासजी क सफल नतृत्व म मजदूरा की सभी मागें ट्रिब्यूनल म देने क बाद मानली गई। यह अपन आप म आन्दोलना क इतिहास की एक घटना बन चुकी है। पूववर्ती अध्याय म जामसर आन्दोलन का विस्तृत वणन हो चुका है। यहां तो 1958 की गतिविधिया के सन्दभ म इसका उल्लेख भर कर रहे हैं।

1957 एव 58 मे विधान सभा म बीकानेर म मेडिकल कालेज की स्थापना की माग को व्यासजी ने पुरजोर शब्दो म रखा तथा उस तत्काल प्रारभ करने की बात कही। उधर मेडिकल कालेज के निर्माण काय मे व्याप्त भ्रष्टाचार को उन्होने जन मचा पर डटकर विरोध किया तथा नींव के काम मे ली गई कच्ची इटो का कच्चा चिटठा जनता की अदालत म प्रस्तुत किया। भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने एक अप्रेल 1959 को मडिकल कालेज का शिला यास किया था। 19 अप्रेल 1959 को नव—गठित नागरिक स्वतनता समिति की एक विशाल सभा मे भापण देत हुए श्री मुरलीधर व्यास (विधायक) ने कहा 'मेडिकल कालेज की नीवो मे कच्ची इटो को लगाकर भ्रष्टाचार किया गया है। मैंने खुद दो प्रतिष्ठित व्यक्तियो की मौजूदगी मे मेडिकल कालेज की इटो की जाच पडताल की। हाथ म इटो को पकड कर दबाते ही वे टूट गई। उनम धूल थी जिससे यह साबित हो गया कि इटें कच्ची थी और उनको लगाकर ठेकेदार ने सरकार को धोखा दिया है। श्री व्यास ने आग कहा कि इस काण्ड का पर्दाफाश करने वाले समाचार पत्र इन्कलाब के दो पत्रकारो को हथकडिया लगाई गई यदि इन्कलाब म ठेकेदार को भ्रष्टाचारी और कच्ची ईटें लगाने वाला कहने पर हथकडिया पहनाई गई है तो मैं भी कहता हू कि मडिकल कालेज की नीवो म कच्ची ईटें लगा कर भ्रष्टाचार किया गया है। मैं राजस्थान सरकार स कहता हूँ कि वह मुझे भी हथकडिया पहना-दे या फिर उसे हथकडी लगावे जिसने भ्रष्टाचार किया है।

श्री मानिक चन्द सुराणा के सयोजन मे गठित नागरिक स्वतन्त्रता समिति की सब दलीय सभा म प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए श्री व्यास न पूरे काण्ड की निष्पक्ष जाँच की माग की थी जिसे उपस्थित जन समुदाय ने हाथ उठाकर अपनी स्वीकृति प्रदान की। सभा म सवश्री मानिक चद सुराणा, रघुवर दयाल गोयल, रावतमल कोचर, सत्य नारायण पारीक ताराचद सीपाणी, मदनसिंह मूलचद पारीक शिवकृष्ण आचाय आदि नेताओ न अपने विचार प्रकट किये। व्यासजी ने इस काण्ड को 15 अप्रेल 1959 को विधान सभा म भी प्रस्तुत किया तथा बीकानेर म पत्रकारो के साथ अमानवीय और गर कानूनी पुलिस व्यवहार की निन्दा की। स्पीकर के यह कहन पर कि मसला विचाराधीन है व्यासजी ने वाक आऊट करके अपने विरोध को प्रदर्शित किया। प्रस्ताव के पक्ष मे बोलने वाला म सवश्री गिरधारी लाल भोबिया एव सतीश चन्द्र अग्रवाल प्रमुख थे।

बीकानेर म रेल्वे कमचारियो के प्रमुख आदोलन जब भी हुए सभी राष्ट्र व्यापी आन्दोलनो के सदम मे ही हुए थे। ऐसे दो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं-पहला 1960 मे और दूसरा 1968 म। 1960 का आन्दोलन केन्द्रीय कमचारियो की राष्ट्र व्यापी

हडताल के प्रसग म था जिसमे रेल्वे, सचार परिवहन एव अन्य केन्द्रीय विभागा के कमचारी सम्मिलित थ। 12 जुलाई 1960 स 17 जुलाइ 1960 तक चलने वाली इस हडताल ने देश की अथ व्यवस्था एव सामान्य जन जीवन को प्रभावित करके रख दिया। स्वतत्र भारत म यह अपने प्रकार की पहली बडी हडताल थी। हडताल का प्रभाव बीकानेर म पडना ही था। उत्तरी रेल्वे का प्रमुख केन्द्र होन के नाते यहा की हडताल और भी ज्यादा मुकम्मिल और असरदार रही। व्यासजी का रेल्वे कमचारियो के साथ प्रगाढ सम्बन्ध था। उनके चुनावो एव अन्य जन आन्दोलना म रेल्वे कमचारी प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से हमेशा ही उनके साथ रहे। अत यह स्वाभाविक था कि ऐस विशाल आन्दोलन म व्यासजी का सहयोग एव मार्ग दशन उनको मिलता। नार्दन रेल्वे मेन्स यूनियन की वकशाप शाखा के तत्कालीन मत्री श्रीयुत् श्रीनारायण ने उन दिना मे व्याप्त कमचारी-असतोष एव जबरदस्त आन्दोलन का वणन इन शब्दा म किया है 1960 म पहली हडताल हुई। मैं सचिव था। व्यासजी हमारे परम सहयोगी थे। मैंने भूमिगत रह कर हडताल का सचालन किया लकिन सारा काम व्यासजी के परामश पर होता था। शहर म धारा 144 लगी थी। डागा बिल्डिंग क पास व्यासजी को गिरफ्तार किया गया। उस समय उनके साथ दुव्यवहार भी किया गया था। बाल पकडे गये-घसीटा गया-बदतमाजी की गई। व्यास जी ने अधिकारिया से कहा कि इस अभद्र व्यवहार की सजा तुमको भुगतनी होगी। हडताल अवधि मे कुल 650 लोग गिरफ्तार किये गये जिनम 562 रेल्वे कमचारी थे। शेष अन्य केन्द्रीय कार्यालया क लोग थे। गिरफ्तार होने वालो म कामरेड श्रीकृष्ण हरिराम कश्यप भरतसिह सैंगर जब्बर अली आदि मुख्य थे। उन दिना सभाओ पर प्रतिबध था-राष्ट्रपति के अध्यादेश से हडताल को अवध घोषित कर दिये जाने से हम अपने पर्चे भी छपा नही सकते थ। साइक्लोस्टाइल्ड प्रतिया से ही काम चलाना पडता था। हमारी हडताल म व्यासजी द्वारा दिये गये सहयोग को हम भुला नही सकते। रेल्वे कमचारियो की उन्होने सहायता की और कमचारियो ने उनका साथ दिया। मजदूर दिवस (एक मई) और यूनियन स्थापना दिवस (26 जून) को प्रतिवष हम लोग उन्हें बुलाते और भाषण करवाते। हम उनकी चुनाव सभाओ की व्यवस्था करते और जुलूसो म सम्मिलित होते थे।

1958 की जामसर मजदूरा की हडताल 1959 म मेडिकल कॉलेज भ्रष्टाचार काण्ड तथा 1960 म केन्द्रीय कमचारियो की केसदम म व्यासजी की भूमिका से स्पष्ट हो जाता है कि वे मजदूरा और अल्प वेतन भोगी कमचारियो के प्रबल समथक और हितपी थे। भ्रष्टाचार के किसी भी प्रकरण को किसी भी हालत म बरदाश्त नही करते चाह उनको उसके लिए कितना ही सघष क्या न करना पडे। प्रतिकूल

राजस्थान के चुनावों में भी नियमों का खुला उल्लंघन हो रहा है। इन चुनावों में सरकारी कर्मचारियों का दुरुपयोग, जाति भावनाओं का ज्वार, सत्ता बल एवं धन बल का प्रयोग तथा निर्धारित चुनाव राशि से बीस पच्चीस गुना अधिक खर्च आदि की यदि निष्पक्ष जांच की जाय तो हर चुनाव अनियमित साबित हो सकता है। विरोधी दलों के पास धन का इतना अभाव है कि इन सब के खिलाफ 'इलेक्शन पिटीशन' नहीं कर सकते। फिर भी नागरिकों को इस विरोध में जागरूक होकर लड़ना अत्यन्त आवश्यक है। तारीख 15 जनवरी को मैंने जब बूंदी के म्यूनिसिपल चुनावों को देखा तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। इन छोटे चुनावों में राजस्थान के मन्त्रियों का जमघट, बल प्रयोग और धन प्रयोग जिस तरह से हुआ उसे देखकर हर नागरिक दांतों तले अंगुली दबा सकता है। राष्ट्रीय झण्डे लगी हुई मोटरें घूमती रहीं। घर-घर जाकर नागरिकों को दबाया गया। एक डिप्टी मिनिस्टर ने आम सभा में कुरान की आयतें पढ़कर कहा कि हुकूमत का साथ देना हमारा मजहब सिखाता है। यह जनतन्त्र की हत्या ही नहीं विचारों की हत्या है।

उसी दिन (16 जनवरी) दोपहर को कोटा नगर में एक वृहद् तांगा जुलूस भी निकाला गया था जिसका नेतृत्व प्रांतीय मंत्री श्री मुरलीधर व्यास ने किया। यह जुलूस मोटर स्टेण्ड से कैथूनी पोल, टिपटा, पाटनपोल, बजाज खाना, रामपुरा, लाडपुरा होता हुआ कलेक्टर की कोठी तक पहुंचा। जुलूस में कोटा बूंदी परिक्षेत्र के सभी महत्वपूर्ण नेता सर्वश्री हीरालाल जैन, महावीर प्रसाद शर्मा, मदनलाल पाटनी, शांतिचन्द्र जैन आदि सम्मिलित थे। श्री मुरलीधर व्यास ने अपने प्रेरणाप्रद भाषण में तांगे इक्कों का राजस्थान व्यापी संगठन बनाने का आह्वान किया। कोटा शहर में तांगों का इतना लम्बा और संगठित जुलूस पहले नहीं निकला था।

उसी साल 26 जनवरी से भरतपुर में किसान सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ जिसका नेतृत्व राजस्थान समाजवादी पार्टी के संयुक्त सचिव श्री राम किशन ने किया। इसमें दस गांवों के भूमिहीन किसानों ने बंजर भूमि पर हल चलाओ मांग के अन्तर्गत जमीन पर ईख उगाने के अभियान का सूत्रपात किया। संघर्ष समिति के आह्वान पर एक हजार से अधिक स्वयं सेवकों की भरती की गई। दल के प्रांतीय नेताओं ने भरतपुर आन्दोलन को गति देने के लिए किसानों को उदबोधित किया। श्री मुरलीधर व्यास उनमें अग्रणी थे।

1958 एवं 1960 में प्रजा समाजवादी पार्टी ने दो प्रान्त व्यापी आन्दोलन किये जिनमें हजारों व्यक्तियों ने भाग लिया तथा सैकड़ों व्यक्ति जेलों में भेजे गये। ये आन्दोलन जनता की समस्याओं को लेकर किये गये। हीरालाल जैन (संस्थापक,

कार्यकर्ता-सम्राट श्री मुरलीधर व्यास फड़ बाजार बीकानेर में एक बड़ी चुनाव सभा में जनता का आह्वान कर रहे हैं। दूर-दूर तक अपार जन-समुदाय तालियों की गड़गड़ाहट से व्यासजी की जय जयकार कर रहा है।

लोकनेता श्री व्यास के नेतृत्व में बीकानेर के सिंहद्वार कोटगेट के आर-पार जन समुदाय के जुलूस का एक दृश्य

सरदारशहर जनसभा म मच पर भीमपांडियां के लोक चेतनात्मक गीतो का आन द लेते हुए
दलबल सहित स्व श्री मुरलीधरजी व्यास प्रबुद्ध श्रोता मुद्रा म त लीन ।
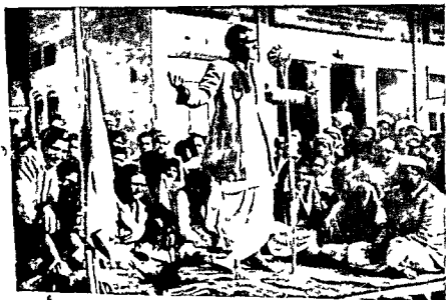
सरदारशहर की एक महती जनसभा को सबोधित करत हुए लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास ।
पास म बैठे ह श्री मोहनलाल डागा ।
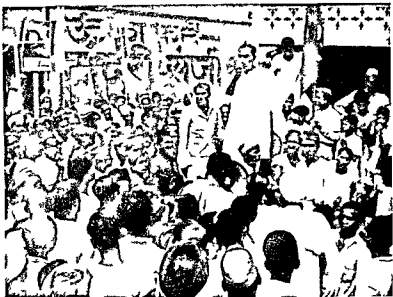
रतनगढ रेलवे स्टशन पर एक महती जनसभा को सबोधित कर रहे हैं श्री मगनलाल बागडी
और साथ म हैं लोकनेता स्व मुरलीधरजी व्यास

लोकनता स्व श्री मुरलीधर यास सरदारशहर म एक महती
जनसभा को सबोधित करते हुए।
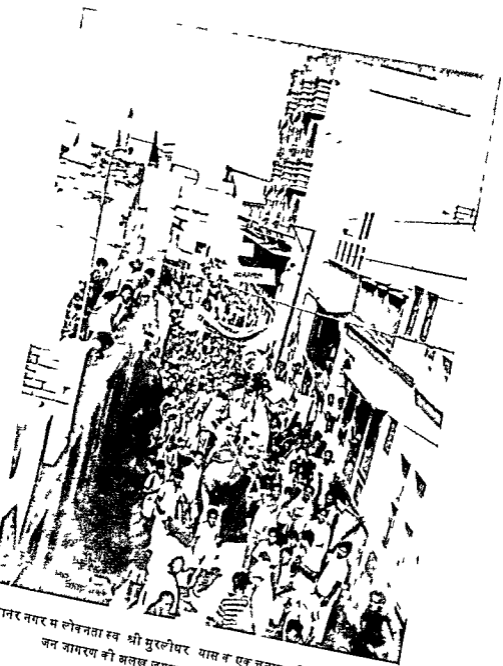
ानर नगर म लोकनता स्व श्री मुरलीधर यास क एक चुनाव अभियान का लम्बा जुलूस जन जागरण की अलख जगाता हुआ आगे बढता दिख रहा है।

स्व श्री मुरलीधर व्यास के चुनाव अभियान की एक भव्य नामा यात्रा।
प्रिय चुनाव चिह्न झोपड़ी का आह्वान।

जामसर मजदूर आन्दोलन के संदर्भ में जेल के सीखचों में जननेता स्व
श्री मुरलीधर व्यास की एक क्रांतिकारी झांकी

लाकनना स्व श्री मुरलीधर -याम क नतृत्व में जामसर जिप्मम मजदूर यूनियन क नेता हाथा म हथकडियां खनखनात नाचत-गाते अपनी मागों का पुरजार बु-्री से अभिव्यक्त कर रहे हैं। साथ म है श्री राध-याम गोड।
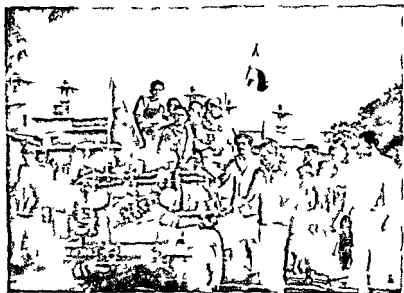
बीकानेर रलवे स्टगन पर श्री भाय प की भ-य शोभा यात्रा आग ब- रही है। जीप चाल्क स्वय लोकनता स्व श्री मुरलीधर -यास जीप को आग बढा रह हैं।

श्री मुरलीधर व्यास के साथ समाजवादी दल के कुछ सक्रिय सदस्य ।
बायें से श्री शिवकिशन बिस्सा श्री नेमीचन्द बिस्सा, स्व श्री नन्दलाल सुथार
श्री मुरलीधर व्यास श्री ईश्वरकुमार व्यास तथा श्री बालकृष्ण आचार्य ।

बायें से (खड़े हुए) सब श्री मूलचन्द पारीक, मुरलीधर व्यास प्रभुदयाल रेगर तथा
दूसरी पंक्ति में (बायें से) सब श्री कालूराम हटीला, अभयचन्द्र शर्मा एवं द्वारकाप्रसाद पुरोहित

एक निश्छल गभीर मुद्रा म युवा जननता
श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर क
शिखरचद सुराना के सग्रह स प्राप्त)

स्व श्री मुरलीधर यास गणवेश म

लाकनता स्व श्री मुरलीधर यास
गणवेश म सलामी लेत हुए

स्व श्री मुरलीधर व्यास एक भाव मुद्रा म

राजस्थान समाजवादी दल) न 'लोक जीवन' जयपुर के गणतन्त्र विशेषांक (1965) म इन आन्दोलनो का वणन किया है।

बीकानेर के आंदोलना के इतिहास म 1958 की 29 दिवसीय हरिजन हडताल भी अपना महत्त्वपूण स्थान रखती है। हडताल का प्रारभ भ्रष्टाचार के एक प्रकरण से हुआ। एक सफाई इ सपक्टर के भ्रष्ट आचरण के प्रश्न को लेकर हरिजन नेता एव म्यूनिसिपल कमचारी श्री चादाराम अपने 6 साथियो सहित भूख हडताल पर बठ गये। सफाई इन्सपक्टर को मुअतल नही किय जान पर दिनाक 23 जुलाई 1958 मे नगरपालिका के समस्त कमचारियो एव हरिजनो ने हडताल करदी। पूरा शहर सडाध से ग्रस्त हो गया बीमारिया फलने लगी और जनजीवन दूभर हो गया। मोहल्ला समितियो, सेवा-दल के स्वय सेवको एव जोधपुर व अजमेर से आये हुए सफाई कमचारियो के प्रयत्न भी स्थिति म कोई मूल भूत अन्तर नही ला सके।

श्री ज्वाला प्रसाद तत्कालीन अध्यक्ष नगर पालिका अजमेर अपने साथ हरिजनो का दल एव उपकरण लेकर आये। सफाई शुरु होते ही हरिजन महिलाएँ टेक्टरो के आगे लेट गई—कहा ट्रेक्टर चलाना हो तो हमारी छातियो पर से चलाओ। इस क्रम म कइयो के साथ मारपीट और दुव्यवहार भी हुआ।

1 अगस्त 1958 को दानी बाजार म आयोजित आम सभा म विधायक मुरलीधर व्यास ने कहा ' नगर की सफाइ का दायित्व नगर पालिका पर है वह उसे निभाने म सवथा असफल रही है। एक भ्रष्ट अधिकारी को मुअतिल करने के स्थान पर उसने शिकायत कर्ता को ही मुअतिल कर दिया। वह अनियमित तथा निंदनीय है।

सरकार ने हडताल को अवध घोषित कर दिया था। नगरपालिका कमचारी सघ की मान्यता रद्द कर दी गई एव 37 कमचारी हिरासत म ले लिय गय। व्यासजी ने कमचारियो के विरुद्ध दमनकारी कदमो की निंदा की। अन्य प्रमुख नेता और सघष समिति के सदस्य थे सवश्री मानिक चद सुराणा पूणानद व्यास ताराचद सीपानी, रोशन लाल चान्दरतन आचाय प्रकाश गुप्ता एव मवर लाल स्वणकार। 20 अगस्त' 58 के तत्कालीन सासद पन्नालाल बारूपाल एव क हैया लाल वाल्मीकि के प्रयत्नो स हडताल समाप्त हुइ। सभी गिरफ्तार साथी छोड दिय गय। मुकदमे हटा लिये गये सफाई इन्सपक्टर का किसी अ य पद पर स्थाना तरण करके जाच प्रारभ कर दी गई तथा हडताल अवधि का वतन आर्थिक सहायता के नाम पर स्वीकृत कर दिया गया। दोनो सासदो न भी अपनी विज्ञप्ति म वही बातें कहीं जो सघष समिति के नता कहते आये थ।

चुनाव पूव वष 1961 म विभिन्न प्रत्याशियो के दावा एव उनको मिल सकने वाले जन समथन का जायजा लेने के लिए सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री अशोक मेहता बीकानेर आये। उन्होंने सभावित प्रत्याशियो एव उनके समथको के अतिरिक्त विभिन्न प्रतिनिधि मण्डलो व सामान्य जनता से बातचीत की तथा निणय लिया कि श्री मुरलीधर व्यास ही ऐसे प्रत्याशी हैं जिन्हें आगामी चुनाव (1962) म विजय प्राप्त हो सकती है। उन्हें प्रबल जन समथन प्राप्त है। श्री अशोक मेहता की अभिलाषा के आधार पर प्रजा समाजवादी दल की राष्ट्रीय समिति ने श्री व्यास को प्रत्याशी बनाये जाने पर अपनी स्वीकृति प्रदान की और उधर व्यास ने अपने प्रबल प्रतिद्वन्दी काग्रेसी प्रत्याशी श्री मूलचन्द पारीक को हरा कर अशोक मेहता के निणय की सायकता को सिद्ध कर दिखाया।

व्यासजी को बीकानेर का जन प्रतिनिधित्व करने के लिए 26 फरवरी 1962 को एक और अवसर मिला। लगातार दूसरी बार विधायक चुनकर बीकानेर की जनता ने उनके प्रति अपना स्नेह एव विश्वास प्रकट किया।

बीकानेर विधान सभा क्षेत्र के निर्वाचन अधिकारी का प्रमाण पत्र अविकल रूप से दिया जा रहा

I Returning officer for Bikaner Assembly constituency in the State of Rajasthan hereby certify that I have on the Twenty Sixth day of February 1962 declared **SHRI MURLIDHAR VYAS** of **BENISAR WELL BIKANER** to have been duly elected by the said constituency to be a member of the Legislative Assembly and that in token thereof I have granted to him this certificate of election

Sd/–

Place Bikaner		Returning officer
Date 26 2 62	SEAL	for the Bikaner Assembly Constituency

इस प्रमाण पत्र को यहा देने का मुख्य आशय एक और भी है। व्यास जी ने इस प्रमाण पत्र को भी सजावट की तरह कहीं नहीं रखा उसे कहीं फाइल म डाल दिया। फिर उसी की पीठ पर विधानसभा म उठाये जाने वाले बिन्दुओ का सारसक्षेप लिख लिया। उनके हाथ से जो बिन्दु इस पर लिखे गये हैं उनमे हनुमानगढ म फर्टीलाइजर प्लाट चलाना लिफ्ट जल व्यवस्था कृषि विश्वविद्यालय गगानगर छोटे कम

चारियो को लाभ, तीसरी योजना की प्राथमिकताए, प्रति व्यक्ति आय आदि कई बिन्दु हैं। उनकी पंजिकाओं में तथा इधर बिखरे पन्नो मे ऐसे अनेक पन्ने मिल जायेंगे जिन पर आगे पीछे उनके हाथ से ऐसे कई बिन्दु लिखे हुए हैं। इससे यह जाहिर होता है कि व्यास जी हर समय व्यस्त रहते थे जहा जो याद आया उसे वही उसी क्षण लिख लिया। चिट पर, कागज पर फाइल पर यहा तक कि महत्वपूर्ण दस्तावेज के आगे पीछे कही पर भी व जरूरी बात लिख कर रख लेते और फिर उसे पूरे जोर से सभाओ मे जुलूसो मे आपसी बातचीत मे और विधानसभा मे उठाते।

व्यासजी ने निष्ठावान कार्यकर्ताओं का एक विशाल समूह तैयार किया था। ये कार्यकर्ता बिना किसी लाग लपेट अथवा स्वार्थ के उनके लिए रात दिन तत्पर रहते थे। चुनावो से पूर्व रात रात भर जागकर पोस्टर चिपकाना मचो की व्यवस्था करना घर घर जाकर प्रचार करना प्रतीक स्वरूप छोटी छोटी झोंपडिया (चुनाव चिह्न) बनाकर जगह जगह रखना लोगो की जेबो पर बिल्ले लगाना लाउड स्पीकर से दिन भर प्रचार करना और अपना काम धन्धा छोडकर पूरे समय सम्पूर्ण निष्ठा से काय करना इन कार्यकर्ताओ की विशेषता थी। व्यासजी भी अपने कार्यकर्ताओ पर जान न्योछावर करते थे। किसी का भी कही भी किसी भी परिस्थिति मे कोई काम पड जाए वे आधी रात को भी उसके लिए तैयार रहते थे। उन्होंने कभी ना करना नही सीखा। इक्के तांगे वाला हो व्यापारी हो या सरकारी कर्मचारी सभी के लिए हर समय तत्पर रहने वाले व्यासजी ने अपने व्यवहार से ही सबको 'अपना बना रखा था।

राजस्थान के पूर्व गृहमन्त्री प्रो केदारनाथ के अनुसार व्यास जी को कार्यकर्ताओ से प्रगाढ स्नेह था। उन्होने निष्ठावान कार्यकर्ताओ का एक मजबूत समूह तैयार किया जो जन जागृति के अभियान मे हमेशा उनके साथ रहा। वे विशेषत साधारण परिवारो के लडको को कार्यकर्ता बनाते थे। उनके सामने जो समाज था उसमे अधिकाश लोग अनपढ धर्म कर्म के खाचो मे विभाजित एव पुरानी विचारधारा के लोग थे। व्यासजी ने ऐसे पारम्परिक समाज मे जागृति पैदा करके उसे राष्ट्र की मुख्य धारा से जोडा। बीकानेर नगर को यह उनकी बहुत बडी देन है।

व्यासजी अपने सम्पूर्ण क्षेत्र के विकास के लिए अत्यधिक सजग एव क्रियाशील रहते थे। 7 अप्रेल 1962 को उन्होने जन प्रतिनिधियो की एक विशेष बैठक मे भाग लिया जो तत्कालीन सासद डा करणीसिंहजी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई थी। बैठक मे गगानगर कृषि विश्वविद्यालय की माग का पुरजोर समर्थन दिया गया। गगा

नगर मे कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए जो ठोस आधार दिये गये व निम्नानुसार हैं —

1 गगानगर म गगनहर भाखरा एव राजस्थान नहर स जलआपूर्ति होती है अत सिंचाई एव उत्पादन की दृष्टि से यह जिला राजस्थान म अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

2 गगानगर के सूरतगढ म राजकीय कृषि फाम पहल स ही स्थित है जिसक विस्तार की प्रबल सभावनाए है।

3 पयोग एव शोधकर्ताओ क लिए इस क्षेत्र म सभी सुविधाए उपलब्ध हैं और पशुओ क फाम एव दुग्ध शालाओ की स्थापना क लिए भी यह जिला एक आदश स्थल है।

4 राजस्थान क अन्य क्षेत्रो म विकास होना रहा है अत पूरे राजस्थान के सर्वांगीण विकास क लिए यह आवश्यक है कि गगानगर म कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय।

सभागिया म डा करणीसिंहजी एव मुरलीधर व्यास क अतिरिक्त मोहरसिंह राठोड (विधायक चुरू) मानिक चन्द सुराणा केदारनाथ (गगानगर) फतहसिंह हरिशकर लक्ष्मणसिंह रूपाराम जुगल एव रामकिशन आदि सम्मिलित थे।

बठक म यह माग की गई कि बीकानेर लूनकरनसर क्षेत्र म प्रस्तावित सुरक्षा सनाओ क प्रयोग क्षेत्र (आर्टीलरी रेंज) को अयत्र निर्धारित किया जावे क्योकि बीकानेर जसे विकासमान शहर की आवश्यकताओ एव राजस्थान नहर के कारण कृषि उत्पादन क्षेत्र म विकास क कारण यह क्षेत्र सुरक्षा प्रयोगो के लिए अनुपयुक्त है। बठक म स्पष्ट किया गया कि सुरक्षा के प्रश्न को सभी सभागी उच्चतम महत्व देते हैं पर इसक लिए जोधपुर जिल क आतरिक क्षत्र एव मध्यप्रदश के कई क्षत्र अत्यन्त उपयुक्त हैं। बीकानर जस पिछडे हुए जिल म राजस्थान नहर के कारण विकास की जो सभावनाए बनी हैं उसका निर्बाध लाभ उसे मिलना ही चाहिए। दोनो प्रस्तावो पर बीकानर चुरू एव गगानगर क जन प्रतिनिधियो एव महत्वपूण नताओ ने हस्ताक्षर किय थ पर सबसे ऊपर दो हस्ताक्षरकर्ता थ डा करणीसिंहजी (सासद) एव मुरलीधर व्यास (विधायक)

एक तरफ सभाओ और जुलूसो म सक्रिय नेतृत्व करना, दूसरी ओर विधान सभा म जनता क व्यापक हित क प्रश्नो को पूरी शक्ति स उठाना और तीसरी तरफ जन प्रतिनिधियो को एकत्रित करक अपन क्षेत्र क विकास क लिए तत्परता दिखाना ये सभी व्यासजी क बहु आयामी व्यक्तित्व क हिस्से थ। विधान सभा म प्रामाणिक

जानकारी रखने के लिए व्यासजी को पूरा 'फीड बक' मिलता था। पलाना कोलरी मजदूर यूनियन के अध्यक्ष श्री अर्जुनराम का 4 सितम्बर 1963 का पत्र दृष्टव्य है।
आज सवाद पत्रो से यह जानकारी प्राप्त हुई कि आपने पलाना खान म काम म ली जा रही कच्ची पक्की ईंटो का मामला ध्यान दिलाव प्रस्ताव के अन्तगत विधान सभा मे रखा था परन्तु अध्यक्ष ने विस्तारपूर्वक कायवाही के लिए इट पेश करने की अनुमति नही दी। इस सम्बन्ध म विधान सभा म जो कुछ बहस हुई उसकी रिपोट की प्रतिलिपि यदि आप लौटती डाक स यहा भेज सकें ता हमारे लिए यह सभव होगा कि हम उन सारी बाता को ध्यान म रखते हुए आपके पास विस्तार पूवक रिपोट भेज सके। इसके लिए आप लौटती डाक से हम कायवाही की नकल भिजवाए। आपने हाउस म जो कुछ प्रयत्न किया है उसकी हम कद्र करत हैं। (पी सी एम यू। 591। बी। 2078। 63 दिनाक 4–9–63)

विधानसभा म जन प्रतिनिधित्व करते हुए भी व्यासजी मजदूरा के व्यापक हित म कितने रुचिशील थे–इसका एक उदाहरण सिंदडी फर्टीलाइजस फील्ड वकस यूनियन जामसर के श्री एम एल गुप्ता के पत्र के निम्नाकित उद्धरण हैं–

'एक पत्र आपको पहले भी दिया था। आशा है मिला होगा। कृपया तकलीफ करके पता करें कि केस रफरेन्स का क्या हुआ और गवनमेन्ट इस विषय म क्या उदासीन है? क्या हम फिर हडताल करनी होगी? अगर ऐसा है तो कृपया लिखें कि कब तशरीफ ला रह हैं ताकि तयारी शुरू करें हम सब की ओर से चरण वन्दना विधान सभा के सदस्य होत हुए भी वे कवल सदन की कायवाहियो तक सीमित नही रहत थ। वे तो सदा सक्रिय राजनीति म विश्वास रखत थे। जनता की मागो क लिए सघष करने म और आवश्यक हो तो आन्दोलन करन और जेल जाने म विश्वास करते थे। फिर चाहे वह बीकानेर का आन्दोलन हो या चूरू गगानगर अथवा प्रात के किसी भी हिस्से का हो— व्यासजी उसके सचालक क रूप म कमान अपने हाथा म ले लेते थे। सितबर–अक्टूबर 1964 का चूरू का व्यापक जन असतोष एव उसम उनका नेतृत्व इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है। वे उस समय तक चन नही लेते थे जब तक जनता की समुचित मागे नही मान ली जाय अथवा आन्दोलना म होने वाले बबर व्यवहार की जाच की व्यवस्था नही की जाय।

3 अक्टूबर 1964 चुरू का पूरा जन जीवन अस्त व्यस्त हो चुका था गत दिना हुए लाठी चाज के कारण पूण हडताल विशाल जुलूस जिलाधीश कार्यालय की ओर बढ रहा था। नेतृत्व कर रहे थे श्री मुरलीधर व्यास। दस हजार लोगो के इस विशाल जुलूस को सम्बोधित करत हुए उन्होने जिलाधीश कार्यालय के सामने आयोजित सभा म कहा—

यह भण्डा देश क गणराज्य का निशानी है। भारत क सविधान म हम बुनियादी अधिकार दिय हैं कि हम अपन न्याय सगत अधिकारा के लिए आन्दोलन करें चालें और लिखें। कानून को आप स्वय नी तोडते हैं। निहत्थी भीड पर आपकी पुलिस ने लाठी चाज किया। किसी न पत्थर नही मारा। हम इसकी यायिक जाच की माग करते हैं। (युवक रतनगढ 6-10-64)

व्यासजी क नेतृत्व म महिलाए भी जेल जान अथवा किसी भी जुल्म का प्रतिकार करने म आग रहता थी। जुलूस म महिलाओ का जत्था भी था। विशाल जन समुदाय गगन भेदी नारे जत्था म गिरफ्तारिया नगर म आम हडताल व्यासजी क साथ हाथापाई जनरोष म उबाल दूसर दिन हडताल का और अधिक व्यापक प्रसार एव अतत व्यास जी की गिरफ्तारी। गिरफ्तार होने वाला म मुरलीधर व्यास चौधरी नरेन्द्रपाल सिंह एव चपालाल उपाध्याय प्रमुख थे। लगभग 150 कायकर्ता भी गिरफ्तार किये गये। श्री माणकचन्द सुराणा की रहनुमाई म आन्दोलन बल पकडता रहा। अतत जाच की माग माननी पडी। 6 अक्टूबर 64 को राज्य सरकार के विशेष आदेश से व्यासजी और उनक साथ राजगढ और चुरू जेल म बद अ य लोगो को बिना शत रिहा कर दिया गया।

1964 म पोकरण तहसील म नमक क्षेत्र के 30 से 90 एकड तक भूमि के आवटन का प्रश्न सामन आया। पूववर्ती जागीरदारा का इस नमक बहुल समृद्ध क्षेत्र मे ठेके के आधार पर भूमि का आवटन किया जान लगा। इससे ग्राम मलार बाप और पोकरण क गरीब निवासिया के हिता पर कुठाराघात हो रहा था। व्यासजी ने इस आवटन को नयी जागीर प्रथा की शुरुआत की सज्ञा दी तथा गरीब निवासियो के हिता म माग की कि 5 स 10 एकड के छोटे छोटे भू खण्ड छाटे और मध्यम दर्जे के नमक उत्पादका को आवटित किये जावें तथा उनको इस काय के लिए ऋण भी दिये जावें। भू-खण्ड उसी को मिलना चाहिय जो आवेदन क क्रम म वरीयता म आते हो। इसस गरीब ग्रामीणा को रोजगार के अवसर प्राप्त होगे।

व्यासजी ने श्री रतनलाल पुरोहित एडवोकेट जोधपुर के साथ इस प्रसग पर तत्कालीन उद्योग मत्री राजा हरिश्चन्द्र स मुलाकात की तथा बाद म इस प्रकरण का विधान सभा म भी उठाया। राजस्थान के मुख्य मत्री एव भारत सरकार के नमक आयुक्त को भी पत्रो द्वारा अवगत रखा गया तथा सासद डा करणी सिंहजी से आग्रह किया गया कि व छोटे एव मध्यम श्रेणी क नमक उत्पादका के हिता की लोकसभा म परवी करें।

चौधरी हरदत्त सिंह के स्वगवास से रिक्त हुई भादरा नोहर विधान सभा सीट के लिए विरोधी दलों के आह्वान पर 4 अप्रेल, 1965 को एक आम सभा भादरा म आयो जित की गई जिस व्यासजी ने सम्बोधित किया। सभा म श्रीयुत् श्री भगवान धिरानी सूरजमल यादव (पूव प्रधान भादरा पचायत समिति) सत्यनारायण सर्राफ एव रामकिसन भाम्भू (पूव विधायक) आदि लोगो क भी भाषण हुए तथा विरोधी दलो की ओर से सयुक्त रूप से एक ही उम्मीदवार क चयन पर विचार किया गया। इसी वष व्यासजी न भादरा निवासियो की जल समस्या को जन सभाओ और विधान सभा म उठाया। श्री झूमरमल अध्यक्ष, नगरपालिका भादरा ने पत्रो द्वारा केन्द्रीय स्तर तक यह प्रकरण भेजा था पर उस व्यासजी क सहयोग स ही बल मिल सका। श्री झूमरमल ने अपन 26-2-65 क पत्र म लिखा था प्रस्तुत पत्र क साथ कस्बा भादरा के नागरिको को जो पानी पीने के लिए मिलता है उसका एक नमूना भेज रहा हू। कृपया इसका एक घूट पान करने का कष्ट करें। पीने पर ज्ञात होगा कि जिस पानी को पशु भी पीना पसन्द नही करत उसे भादरा के 15 हजार लोग सेवन करने के लिए विवश हैं।

प्रकरण कही का हो, व्यासजी उसके लिए अपन प्राण पण स जुट जात थे तथा उस समय तक चन नही लेत थे जब तक उसकी पूण जाच नही हो जाती और उपचारात्मक उपाय नही किय जात।

1965 म बीकानर परिक्षेत्र म भयकर रूप स चेचक का रोग फल गया। व्यासजी ने इस क्रम म चिकित्सा अधिकारियो और सरकार का ध्यान दिलाया तथा अनेक जन सभाओ म आहवान किया कि नागरिको क स्वास्थ्य के लिए इस रोग की शीघ्र रोक थाम जरूरी है। सरकार की ओर स इस बात की जाच करन के लिए श्री पी एल ऋषि सचालक चिकित्सा एव स्वास्थ्य विभाग का अध्यक्षता म एक समिति नियुक्त की गई। समिति को यह देखना था कि चेचक की रोकथाम क लिए समय पर कायवाही की गइ या नही। भविष्य म चेचक नहीं फले इस सबध म भी उसे अपन सुझाव देने थे। श्री ऋषि के 2 माच 1965 क पत्र के आधार पर व्यासजी ने सभी सबधित लोगो स मुलाकात करके अपन सुझाव दिये तथा बताया कि चेचक के उन्मूलन के लिए शहर म व्याप्त गन्दगी का हटाया जाना अत्यावश्यक है। अपन पत्र म श्री ऋषि न व्यासजी को लिखा था मुझे कमेटी की तरफ से आपको इस काय के लिए खास तौर पर निमन्त्रित करन का आदेश मिला है। अत आप कृपया कमटी का इसम सहयोग देकर कमटी को कृताथ करें।

सयुक्त समाजवादी दल क अध्यक्ष श्री एस एम जोशी क जयपुर आगमन के अवसर

पर माणकचौक म आयोजित रली म व्यास जी ने समाजवादी ताकतो को बिखरने से बचाने व एकीकृत करने पर जन दिया। (लोकजीवन 2 अप्रल 1965)

'राज्य विधानसभा म ससोपा दल क नता श्री मुरलीधर व्यास ने समाजवादी समाज की स्थापना को जीवन का लक्ष्य मानकर काम करन की सलाह देते हुए कहा कि समाजवाद राजनतिक नारा नही है। श्री व्यास ने कहा कि देश म समाजवादियो की यह भारी विजय है कि आज साम्प्रदायिक और प्रतिक्रियावादी दल भी अपने अपने विशेषण लगाकर किसी न किसी रूप म समाजवाद का स्वीकार करत जा रहे हैं। उन्होन कहा कि देश का उज्ज्वल भविष्य समाजवाद म ही निहित है। सभा म मास्टर आदित्येन्द्र एव चौधरी नरेन्द्रपालसिंह क भाषण भी हुए।'

व्यासजी के एक और अन्यतम साथी एव स्वतन्त्रता सनानी श्री सत्यनारायण सर्राफ (भादरा) राजनीतिक घटनाक्रम म उनके निकट सम्पक म रहे। 24 माच 1965 के पत्र म उन्होने अपनी भूख हडताल के सबध म विवरण दिया है। उनकी ही भाषा म ये विचार इस तरह हैं सुखाडिया को जो आपन नगा किया उसके लिए बहुत धन्यवाद। कृपया एक नकल सुखाडिया के खिलाफ जो आवेदन पत्र आप राष्ट्रपति को भेज रहे है मुझ भेजें तथा विधान सभा की एक छपी किताब इस सबध में विधान सभा मे सुखाडिया क विरुद्ध जो मसाला पश किया और उस पर जो बहस हुई भी भेजें। मरा व भाई थिरानी का भूख हडताल करने का इरादा है। या तो भारत सरकार जाच आयोग बिठावे नहीं तो हम लोग भूख हडताल करग।

तत्समय म सुखाडिया राजस्थान की राजनीति म एक मिथ' की तरह थे और उसे तोडना अत्यावश्यक था। इस प्रसग पर सुप्रसिद्ध विचारक चिन्तक श्री नन्दकिशोर आचाय ने सुखाडिया क मिथ का तोडन म व्यासजी का प्रमुख भूमिका को इस प्रकार रूपायित किया है भारतीय राजनीति म डॉ लोहिया की सब से महत्वपूर्ण देन थी नेहरू के मिथ को तोडना। भारतीय लोकतत्र को पुष्ट करने क लिए यह आवश्यक था कि इस व्यक्तिवाद से बचाया जाए—इसी दृष्टिकोण से डॉ लोहिया ने भारतीय राजनीति पर नेहरू के बढते जा रहे सम्मोहीय प्रभाव का—विशेषत अन्य वरिष्ठ नेताओ के देहावसान क बाद—लगातार विरोध किया। इस प्रदश म ठीक यही भूमिका श्री मुरलीधर व्यास की रही। राजस्थान एक सामन्तवादी प्रदश था और आजादी के बाद श्री सुखाडिया क नेतृत्व म धीरे धीरे यहा सामन्तवादी प्रवृत्ति काग्रेस शासन म भी असर दिखाने लगी थी। स्व व्यास न आरम्भ से ही यह महसूस कर लिया था कि इस सामन्तवादी प्रवृत्ति वाले प्रदेश म नवजात लोकतत्र को यदि ठीक दिशा म विकसित करना है तो उस नव सामन्तवादी प्रवृत्तियो से बचाना होगा। यही

कारण है कि उन्होंने प्रारभ से ही सुखाडिया के 'मिथ" को तोडने के प्रयत्न किये और उनके शासन की भूलो और अनुचित कार्यो पर कठोर प्रहार करने की नीति अपनाई। यही कारण रहा कि श्री सुखाडिया का जितना विरोध राजस्थान के समाजवादी खेम द्वारा हुआ उतना अन्य किसी वग द्वारा नही हो सका। इस दृष्टि से राजस्थान म स्व व्यास जी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूण मानी जायेगी।

मिथ' तोडने वालो म यद्यपि व्यासजी अकेले नहीं थे, पर अग्रणी अवश्य थे यह बात दिनाक 22 अप्रेल 1965 को प्रधानमत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को दिये गये ज्ञापन से स्वत ही प्रमाणित हो जाती है जिसम 17 प्रमुख व्यक्ति (विधायक एव अन्य नेता) सम्मिलित थे पर सब से ऊपर श्री मुरलीधर व्यास का नाम अकित है। नेताओ म व्यासजी के अतिरिक्त सवश्री मानिक चद सुराणा उमरावसिंह ढावरिया, हीरा भाई विट्ठल भाई, प्रो केदार नाथ नत्थी सिंह, मुकुट बिहारी लाल गोयल, जय नारायण सालोदिया मानधाता सिंह नाथू लाल करोल, उदी लाल बोरिदया, मौरा भाई दुर्गाराम योगेन्द्र नाथ हाडा (सभी विधायक) मास्टर आदित्येन्द्र अध्यक्ष राजस्थान सयुक्त समाजवादी दल तथा देवी सिंह सासद आदि प्रमुख थे। अपने प्राक्कथन म इन नेताओ ने आरोपो की पृष्ठभूमि के सदभ म कहा कि हम राजस्थान विधान सभा और उसके बाहर के विभिन्न प्रतिपक्षी दलो के प्रतिनिधिगण राजस्थान के मुख्य मत्री के अनुचित कार्यों, भ्रष्टाचार के स्पष्ट कृत्यो घोर कुशासन और पक्षपात के नग्न नृत्य से पीडित होकर उनके विरुद्ध आरोप पत्र प्रस्तुत करते हैं। एक राज्य के मुख्य मत्री को जिसने काग्रेस हाई कमाण्ड को राज्य के दस वर्षीय 'शानदार और स्थिर शासन' से विस्मित करने म सफलता प्राप्त की है भ्रष्ट कार्यों म सक्रिय रूप से भाग लेते देखते रहना हमारे लिए असहनीय है। जिन्होंने इस स्थिर शासन को देखा है वे जानते हैं कि इसकी प्राप्ति सावजनिक धन को बलि चढा कर हुई है। यह स्थिरता जडता म परिवर्तित हो गई है। इस तथाकथित स्थिर शासन ने अनेक गठन्बधन देखे हैं तथा इस प्रक्रिया म व्यक्ति पूजा के विकास को अवसर मिला है पद और सत्ता के दुरुपयोग से मुख्यमत्री एव उसके निकट सम्बधियो साले बहनोई दामाद आदि ने जिनके पास पहले कुछ नहीं था विशाल सम्पतिया अर्जित की हैं। भूतपूव मुख्य मत्री श्री हीरालाल शास्त्री, श्री टीकाराम पालीवाल स्व श्री जयनारायण व्यास और भूतपूव प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष और अब इस अरोप पत्र पर हस्ताक्षरकर्ता श्री आदित्येन्द्र आदि शीर्षस्थ काग्रेसी नेताओ न भी भ्रष्टाचार और पक्षपात के आरोपो से काग्रेस हाई कमान को अवगत कराया था। यह कहना प्रसगानुकूल होगा कि सलग्न आरोप राजस्थान विधान सभा म कई बार व्यक्त किये गये किन्तु परिणाम नही निकला। मुख्य मत्री जी उपेक्षा करते रहे।

आरोप पत्र म 42 आरोप लगाये गय। थोड से समय म सम्पत्ति' क अ तगत बताया गया है कि मुख्य मत्री बनन स पूव श्री सुखाडिया अत्य न सीमित साधनो वाले व्यक्ति थ परन्तु मत्री बनन ही उन्हान गलत और गर कानूनी साधनो का उपयोग करत हुए सम्पत्ति का सग्रह करना प्रारभ कर दिया। उनस बार बार अपनी सम्पत्ति की सावजनिक घोषणा की माग की गई पर व इस अस्वीकार करत रह। सम्पत्ति सबधी प्रकरण 10 अगस्त 1964 को श्री उमराव सिंह ढाबरिया द्वारा विधान सभा म भी उठाया गया था। भूमि पर अनधिकृत कब्जा म उदयपुर विश्वविद्यालय क पास क साढे तरह बीघा कृषि योग्य भूखण्ड को अवाप्त करने की बात उठाई गइ। इसके लिए एक छोटे स माफीदार श्री पानरी को राज्य कोष स भारी मुआवजा तथा पुनर्वास अनुदान दिलाया गया और एक छोटी सी धनराशि दकर उसकी कृषि योग्य भूमि हथिया ली गई।' अपन सबधियो के नाम बडे भारी भूखण्ड राजस्थान के बूदा जिल म आवटित कराये गये जिनका मूल्य लाखो रुपए होता है। इन सबधियो म कुछ तो अवयस्क ही थ। य भूखण्ड भूमिहीन किसानो को दिये जाने थ पर आवेदन पत्र प्रस्तुत किये जाने पर भी उनको भूमि नही दी गई।

मक्का और चावल क प्रतिबधित निर्यात को खाद्यान्न सकट क बावजूद खोल दिया गया तथा व्यापारियो स अवध धनराशि प्राप्त की गई। पानरवा जगल का ठेका अपने अतरग मित्र श्री गुलाम अब्बास को साधारण रकम म दिला कर राज्य कोष को अपार हानि पहुचाई गई। 1957 म जो ठेका 18000 रुपयो पर छोडा गया उसक लिए डेढ लाख रुपया प्रतिवष की बोलिया अन्य व्यक्तियो की थी पर उन पर विचार नही किया गया। 29 जनवरी 1965 को ठेका समाप्त होने पर करार क अनुसार जो चार लाख रुपयो की लकडी कटी पडी थी वह राज्य सरकार की सम्पति होनी थी लकिन निश्चित तारीख के बाद भी ठकदार को लकडा उठान की स्वीकृति दे दी गई। इस तरह राज्य कोष का भारी हानि हुई। 1964 के राज्य प्रशासन की आडिट रिपोट म स्पष्ट लिखा है कि केवल 1954 स 1957 तक ही राज्य कोष का दस लाख रुपये की सीधी हानि हुई है।

जयपुर उद्योग लिमिटेड का 60 लाख रुपया क ऋण की स्वीकृति के पीछे व्याप्त भ्रष्टाचार क प्रश्न को स्वय श्री जयनारायण व्यास ने उठाया था। नाथवारा जाच आयोग क सम्मुख उपस्थित सभी सबधित पक्षों न भी स्वीकार किया था कि इस प्रक्रिया म दो लाख 51 हजार रुपय लिये गये। इस उद्योग को अन्य अग्रदेय (Advances) भी दिये गये जिनको बाद म 'जमा-खच' कर दिया गया अथवा विज्ञापनो पर व्यय क रूप म बता दिया गया।

अन्य आरोपों में कोटा-परमिट दिये जाने, एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को कालान्तर में प्रशासनिक अधिकारी के पद तक पहुँचाने तथा सम्बन्धियों को धन और पद की सुविधा देने की बातें थीं। विशेष कर श्री आर्य का मामला उठाया गया जो चालीस रुपये माहवार के तुलवारिया (चतुर्थ श्रेणी पद पर) थे, पर जिन्हें आबकारी और कर विभाग का सहायक उपायुक्त बना दिया गया। सम्बन्धियों द्वारा भूमि की धांधली एवं बीमा एजेंसियों की प्राप्ति के अन्तर्गत 'अधिक अन्न उपजाओ आंदोलन' के नाम पर लाखों रुपयों की सैकड़ों बीघा भूमि आवंटित करने तथा बीमा एजेंसियों के नाम पर लाभ कमाने की बातें कहीं गई हैं। एक सम्बन्धी का कोटा में स्ट्रा बोर्ड फैक्टरी लगाने तथा 14 पैसे प्रति क्विंटल की मामूली दर से दो लाख मन घास काटने का अधिकार देने की बात भी आरोप पत्र में है। पूरे कोटा परिक्षेत्र में यही एक मात्र ऐसा जंगल था जिसे लीज पर दिया गया तथा इस तरह राज्य कोष को नुकसान पहुँचाया गया।

अभ्रक की खानों में रायल्टी की कमी की घोषणा करके खनिज स्वामियों को लाभ दिया गया और उसके बदले कांग्रेस द्वारा आम चुनाव के लिए धन प्राप्त किया गया। आरोप पत्र में अजन्ता होटल उदयपुर, स्वदेशी कॉटन मिल उदयपुर एवं विनेयल कैमिकल लि० कोटा के प्रसंग में की गई अनियमितताओं का भी उल्लेख है। नीम का थाना में लाइम स्टोन का एकाधिकार देने, नेहरू अवार्ड के नाम पर राजनीतिक लाभ लेने के लिए कुछ जमींदारों को अनुचित मुआवजा दिलाने, उदयपुर, भीलवाड़ा एवं गंगानगर के बस मार्गों के राष्ट्रीयकरण को बार बार स्थगित करके अपने सम्बन्धी बस मालिकों को लाभ पहुँचाने आदि के ब्योरेवार उदाहरण दिये गये हैं। यह भी बताया गया कि जय समन्द झील के मछली भंडारों के ठेके को निरंतर पन्द्रह वर्ष तक केवल 50 हजार रुपये प्रतिवर्ष के हिसाब से स्वीकृत किया जाता रहा। यह अत्यन्त अनियमित था क्योंकि यदि यह ठेका नीलाम किया जाता तो इससे छः गुना राशि में नीलाम होता।

अन्य बिंदुओं में फिजिकल ट्रेनिंग कॉलेज, जोधपुर के भवन क्रय में अनियमितता, कोटा वितरण में धांधलेबाजी, बारह हजार बीघा भूमि का चार बड़े पूंजीपतियों में वितरण, गैर कानूनी मुआवजा, कुछ शैक्षणिक संस्थाओं के प्रति पक्षपात, कम्पनियों से चंदा, विधान सभा के सदस्यों को भ्रष्ट करने के प्रयास, प्रशासन को भ्रष्ट करने के निर्णय तथा सामान्य व्यक्तियों को अपने राजनीतिक लाभ के लिए मंत्री पदों पर नियुक्तियां आदि प्रमुख हैं।

यह ज्ञापन 22 अप्रैल 1965 को तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को दिया गया। प्रस्तुत करने वाले थे सर्व श्री मुरलीधर व्यास, मानिकचंद सुराणा

उमरावसिंह ढाबरिया मानधाता सिंह तथा रेवीसिंह सासद। व्यासजी ने पूरे राज स्थान म घूम घूम कर जन सभाओ के माध्यम से उक्त आरोपा की चर्चा की तथा उनके विरोध म जनमत तयार किया। उनके भाषणा म व्यक्तिगत दुर्भावना न होकर राज्य के व्यापक हिता की बातें ही हुआ करती थी।

फरवरी 1966 के प्रथम सप्ताह म व्यासजी बडतिया (मुगेर बिहार) म अपन दल के सम्मेलन म भाग लेने गय। पाच दिवसीय सम्मेलन की समाप्ति पर दिनाक 6 फरवरी 1966 का व कलकत्ता पहुचे। पनी हुई नई राजनीतिक स्थिति म दल क लिए ससाधन एकत्रित करन क अतिरिक्त बिहार-बगाल क वरिष्ठ नताओ स सम्पक करना भी इस यात्रा का एक उद्देश्य था। श्यामजी थानवी और श्यामजी आचाय भी उन दिना कलकत्ता म थ। कलकत्ता स्थित अपन शिष्या सहयोगिया और सहकर्मिया की सहायता से समाधन सबधी काय तो हुए ही वरिष्ठ नेताओ स मत्रणाए भी हुइ।

दिनाक 6 फरवरी को प्रात 11 बजे अपर इण्डिया स स्यालदाह स्टेशन पर पहुँचने पर उनका शानदार स्वागत किया गया। फूल मालाओ स उन्ह लाद दिया गया गुलदस्त दिय गय तथा नेगे व्यासजी जिन्दाबाद क नारा स प्लटफाम गूज उठा। व्यासजी क आगमन स पूव प्रसारित एक विज्ञप्ति म कहा गया था— जन क्रांति क अगुआ प्रजा समाजवाद के महान् स्तम्भ राष्ट्रीय समिति क सदस्य राजस्थान के प्रसोपा एम एल ए राष्ट्रीय नता श्री मुरलीधर व्यास का विराट वीरोचित स्वागत किया जाय। जिल क तमाम केन्द्रा व वाड सचिवा से ही नहीं समस्त प्रजा सोशलिस्ट सदस्या क साथ बगाल म रहन वाले तमाम राजस्थानी व धुआ स भी अपील की गई कि ज्यादा स ज्यादा तादाद म स्टेशन पर पहुँच कर स्वागत करें। हम नाज है व्यासजी पर। व यू पी सी पी व बिहार का दौरा करते हुए जिला पश्चिमी कलकत्ता प्रसोपा के विशेष अनुरोध पर कलकत्ता पहुँच रहे हैं।

व्यासजी की इस यात्रा क साथी श्री हनुमान दास आचाय के अनुसार— 'वहां पर मोहम्मद अली पाक म एक आम सभा हुई। वह इतनी जबरदस्त हुई कि बगाल के लोगा न राजस्थान के शेर की गजना को सराहा तथा इन्हाने सुभाष की याद को ताजा कर दिया।

राजस्थान लौटन पर व्यासजी पुन अपन विविध सेवा कार्यों म जुट गय। शिक्षा सबधी प्रश्ना पर व अपन ही ढग से सोचत थ। शिक्षकों क लिए सेवा नियमा के सम्बन्ध म उनकी मान्यता थी कि इसम यान्त्रिकता और जडबद्धता नहीं होनी चाहिए। आयु एव अनुभव के साथ ही शिक्षक का ज्ञान परिपक्व होता है अत

उसके लिए सेवा म प्रवेश की आयु 40 वष तक मान लेनी चाहिए तथा उसे सेवा निवृत्ति मे भी कुछ वर्षों की छूट मिलनी चाहिए। इस वि दु पर उ होन निर तर प्रयास किये। उनके एक पत्र के उत्तर मे दिनाक 29 माच 1966 को तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री व्रज सु दर शर्मा न लिखा —"अध्यापकों की नियुक्ति हेतु 40 वष तक की आयु के प्रावधान को जन सेवा आयोग ने स्वीकार नही किया है। अभी इस विषय म सरकार और आयोग के बीच विचार विमश चल रहा है। वहा की स्वीकृति के पश्चात् यह निणय पूण रूप ग्रहण कर सकेगा। उप शासन सचिव (शिक्षा) ने भी व्यासजी के प्रयासो के सदभ म लिखा कि' आयु सीमा को बढाने म कुछ वधानिक कठिनाइया उपस्थित हुई हैं जिनके निराकरण करने की कायवाही की जा रही है। जब तक निराकरण नही हो जाता तब तक भर्ती वतमान नियमो के अनुसार होती रहेगी। इन अडचनो को हटाने के बारे म कायवाही की जा रही है। आशा है कि इनका निराकरण भी शीघ्र हो जायगा।

राष्ट्रपति ज्ञानी जलसिंह ने गत वष शिक्षको की सेवा निवृत्ति 60 वष की आयु म करने का जो सुझाव दिया था वह व्यासजी की मूल प्रस्तावनाओ से मेल खाता है। अनेक स्थानो पर व्यासजी ने कहा कि शिक्षको के सेवा–प्रवेश एव सेवा निवृत्ति की आयु सीमा म छूट मिलनी चाहिए। कालान्तर म राजस्थान सरकार ने समय-समय पर इस प्रकार की छूटो की घोषणा भी की और इस तरह उनके प्रयत्नो को यत् किंचित सफलता मिली।

मजदूरो की कई मागो को लेकर 31 माच 1966 को राज्य व्यापी बद का आह्वान किया गया था। इसमे समस्त विरोधी दल एव ट्रेड यूनियन्स के नेता सम्मिलित थे। बीकानेर म भी इसका व्यापक प्रभाव पडा। बन्द के निर्धारित दिन से दो दिन पूव 29 माच को साकेतिक हडताल रखी गई। सभावित अशान्ति की आशका से प्रशासन ने दिनाक 29 3 66 को प्रात 4 बजे स एक सप्ताह के लिए धारा 144 लगा दी और तीन भूख हडताली नेता सवश्री हुकमा राम, भारत भूषण एव पूर्णानन्द को गिरफ्तार कर लिया। मुरलीधरजी जस सजग एव मजदूर हितषी नता इस सारे परिप्रेक्ष्य म मौन दशक बन कर नही रह सकते थे। उन्होने धारा 144 को भग करने की सावजनिक घोषणा की। उन्होने कहा— यह हमारे प्रजातान्त्रिक अधिकारो का दमन है तथा सविधान विरोधी कृत्य है—हम इस सहन नहीं कर सकते। इस आन्दोलन म व्यासजी सहित कई समथक गिरफ्तार हुए। जेल म व्यास जी ने भूख हडताली मजदूर नताओ क नतिक समयन म स्वय भी भूख हडताल की। उनका कहना कि सभावित अशान्ति की आशका मात्र से एक शान्तिमय आदोलन

को कुचलना सरासर गलत है। प्रशासन ने भी इस स्थिति को समझा और 31 मार्च को धारा 144 उठाते हुए व्यासजी एवं अन्य नेताओं को रिहा कर दिया।
मई दिवस (1 5 1966) को व्यासजी ने मजदूरों की एक विशाल सभा को सम्बोधित किया। इससे पूर्व एक मशाल जुलूस स्थानीय रेल्वे मैन्स यूनियन के कार्यालय से निकल कर मुख्य जनपथ से होता हुआ, सभा स्थल (रतन बिहारी पार्क) पहुँचा श्री हरि किशन शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित सभा में संसद सदस्य श्री प्रियरंजन गुप्ता श्री मुरलीधर व्यास एवं श्री मानिकचंद सुराणा मुख्य वक्ता थे। श्री व्यास ने मजदूरों के अभाव-अभियोगों पर बोलते हुए कहा 'यह शर्म की बात है कि दौलत पैदा करने वाले मजदूर भूखों मर रहे हैं तथा उनके श्रम से उत्पन्न पूंजी चन्द निठल्ले लोगों की तिजोरियों में जा रही है। हम संगठित होकर इस स्थिति का मुकाबला करना है। व्यास जी प्रतिवर्ष मई दिवस की सभाओं में बोलते थे और मजदूरों के साथ उनका आत्मीय तादात्म्य संबंध भी था।
फलौदी नगर पालिका के चुनावों के बार बार स्थगन से विक्षुब्ध स्थानीय जनता ने उसका विरोध किया और प्रशासन को ज्ञापन आदि दिए लेकिन उसका प्रभाव नहीं होता देख कर प्रभावोत्पादक कार्यवाही के लिए व्यासजी को बुलाया गया। 12 मई 1966 को निर्धारित चुनाव 12 जून तक स्थगित कर दिए गए थे। व्यासजी ने 10 जून 1966 को फलौदी में आयोजित सभा में कहा 'चुनाव में मौती हार अनुभव करने वाले चन्द उम्मीदवारों की मांग पर सरकार ने चुनाव स्थगित करके समाज विरोधी कार्य किया है। यह अप्रजातांत्रिक अवैधानिक एवं निन्दनीय है। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए हम सब फलौदी बन्द करके जोरदार प्रदर्शन करना चाहिए ताकि क्रूर इरादों पर रोक लग सके।
11 जून 1966 को फलौदी बंद के आह्वान पर बाजार बंद रहे। प्रातः 9 बजे एक विशाल जुलूस एस डी ओ के निवास स्थान पर पहुंचा तथा चुनाव तिथि घोषित करने की जोरदार मांग की। सायंकाल नयी तिथि की घोषणा कर दी गई। चुनाव में व्यासजी समर्थित श्री डूंगरदास छंगाणी एवं उनके साथी विजयी हुए तथा बाद में अध्यक्ष पद पर भी श्री डूंगरदास छंगाणी ही निर्वाचित हुए। इस पूरे प्रकरण में प्रदर्शनों सभाओं एवं जन जागृति अभियान में जयजवान जय किसान के सम्पादक श्री भीमपाडिया उनके साथ थे।
जून 66 में व्यासजी अपने दल के प्रान्तीय सम्मेलन में भाग लेने बूंदी गये। 25 एवं 26 जून को आयोजित इस अधिवेशन में दल के पार्लियामेन्टरी बोर्ड की बैठक सम्पन्न हुई। इसी में आगामी चुनाव (1967) के सम्बन्ध में प्रत्याशियों का चयन भी किया गया। प्रान्तीय सचिव होने के नाते व्यासजी के पास संभावित प्रत्याशियों के पत्र निरन्तर आते रहते थे

बूंगी म उन दिना माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा 747 छात्रा के परीक्षाफल रोकने के विरुद्ध एक छात्र आन्दोलन चल रहा था। छात्रा ने 2 जून को मशाल जुलूस और पुतला दहन का कायक्रम रखा। 9 जून को पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किये जाने पर 10 जून को बूंगी बन्द का आह्वान किया गया तथा पूरा जन जीवन प्रभावित हुआ। 25 व 26 जून को प्रसोपा के राष्ट्रीय नेताओं के बूंगी आगमन पर पुन छात्रो की विशाल सभा हुई जिसे व्यासजी सहित अनेक नेताओं ने सम्बोधित किया तथा छात्रा की वाजिब मागा का अपना समर्थन दिया।

चुनाव कार्यों के सुव्यवस्थित सचालन के लिए प्रान्तीय स्तर पर एक-दो वाहना का होना नितान्त आवश्यक था पर सवाल यह था कि साधन कहा से आवें। न तो दल के पास अतिरिक्त साधन थे और न व्यासजी के पास कोई सम्पत्ति ही थी। जन सहयोग ही एक मात्र आधार था। यह काय भी अन्तत जन सहयोग से ही पूरा हुआ इसम कलकत्ता के प्रवासी भाइया के साथ-साथ बाबू जयप्रकाश नारायण का सह योग भी मिला उन दिना विधायका (एम एल ए एव एम एल सी) के लिए प्रतिरक्षा मत्रालय की पुरानी जीपा का आवटन सस्ते दामा पर किया जा रहा था। अधिकृति पत्र के आधार पर कोई भी विधायक यह जीप ले सकता था। डिलीवरी की अंतिम तारीख 30 जून 66 थी और उधर साधनो का नितान्त अभाव था। जसे तसे साधना की समस्या सुलझी तो जीप लेने की व्यवस्था सभव हो सकी। डिलीवरी लेने जाने वाला म मोटर वाहनो के जानकार एव लम्बी मोटर बसम के प्रोप्राईटर श्री जेठमल भी थ। उन्होंने मिलिट्री कन्टीन की अनक जीपा म से छाट कर एक जीप व्यासजी के लिए ली तथा उसकी मरम्मत अपनी कम्पनी म करवा कर चुनाव कार्यों के योग्य बनाया। इस काय म दल के वरिष्ठ नेता श्री सुरेन्द्र मोहन का भी सहयोग रहा। उसी एक जीप के बल पर व्यासजी ने प्रातीय चुनाव का काय सम्पन्न किया। बाद म एक और पुरानी जीप भी प्राप्त की गई। विराट राज्य शक्ति का विरोध करने के लिए मात्र ये दो साधन ही थे, लकिन साथ म एक विशाल जनबल अवश्य था इसी के सहारे व्यासजी आग बढते रहे।

बीकानेर म छात्रो की एम एस सी कक्षाओ की न्यायोचित माग के समर्थन म व्यासजी ने पूर्ण सहयोग दिया। इस आदोलन के सदभ म कई गिरफ्तारिया हुई और शहर म धारा 144 लगा दी गई। श्री हनुमानदास आचाय के अनुसार व्यासजी सवदा लोकतन्त्र के हामी थे अत धारा 144 की सरे आम धज्जिया उडाते थ। उन्हाने इस कभी भी बरदाश्त नही किया। दाती बाजार का दृश्य उस दिन सनिक छावनी जसा नजर आ रहा था। हाथ म भण्डा लिए सशस्त्र पुलिस पट्रोलिंग कर रही थी। तत्कालीन डी एस पी श्री एम एन धवन कई थानेदारा को लिए किसी

को ढढ रहे थे। लोगा की अपार भीड   डी एस पी श्री धवन व्यासजी को गिरफ्तार करना चाहते थे लेकिन करें तो कसे करें। आखिर व्यासजी क पास आकर अपने सिर से टोपी उतार कर कहा मैं आपको गिरफ्तार कर रहा हूं। आपने धारा 144 का उल्लघन अपन साथिया सहित किया है। व्यासजी ने स्नेहपूण मुद्रा म कहा गिरफ्तार कर लीजिए। हम तो आये ही इसके लिए हैं हम अपना कतव्य कर रहे हैं आप अपना कीजिए उस स्थान पर गिरफ्तार होने वालो मे व्यासजी के अलावा *हनुमानदास आचाय नारायणदास रगा गोकुल घी वाला और सत्यनारायण* पुरोहित थे। बाद म जब छात्रा की मागें मान ली गई तो सभी को रिहा कर दिया गया। इस आन्दोलन म विभिन्न दलो के नेता एव छात्र नेता जेला म डाले गये थ जिनम श्री मानिक चद सुराणा भीम पाण्डिया हीरा लाल आचाय अशोक आचाय, मास्टर सुन्दर दास पत्रकार राम नारायण, एन डी प्रकाश विगन मतवल्ग आदि मुख्य थ।

व्यासजी का जीवन घटना-बहुल और त्याग की ऊमिया से भरा हुआ है। निश्छल निस्वाथ एव नितान्त निर्भीक जीवन यापन करने वाले व्यासजी न अपना स्थान लोगा के दिला म बनाया। आज उनके निधन को 14 वष हो चुके हैं पर वे अमर हैं और अमर रहेंगे।

माच 1966 म राजस्थान विधान सभा क सामने आयोजित भूख माच सारे प्रात म चर्चित हुआ। 18 3 1966 को विधान सभा भवन के आग जलबी चौक म राजस्थान प्रजा समाजवादी पार्टी क कायकर्त्ताओ द्वारा व्यास जी क नेतृत्व मे भूख माच का प्रदशन हुआ जिसम हजारो प्रदशनकारी सम्मिलित थे। इसम श्री मुरली धर व्यास, श्रीमती भगवती देवी (जयपुर) श्री जोरावर मल बोडा (जोधपुर) श्री भवर लाल आय श्री माधव शर्मा (चुरु) श्री नारायण दास रगा श्री हनुमान दास आचाय (बीकानेर) को भी गिरफ्तार किया गया।

भूख माच न राजस्थान म व्याप्त अकाल की विभीषिका के मध्य जीने वाले करोडा प्रातवासिया की भुखमरी का सजीव चित्रण हुआ। जिला स्तरो पर एसे अनेक आयोजनो क माध्यम से जन जागृति का वातावरण बना तथा राजस्थान भर के पत्रो न भूख माच तथा उससे जुडे हुए अन्य प्रदशनो का विवरण प्रकाशित किया।

श्री हनुमान दास आचाय के अनुसार— व्यासजी ने कभी जन विरोधी हरकत को बरदास्त नहीं किया। उस समय भयकर महगाई और बेरोजगारी व्याप्त थी तथा कानून व्यवस्था बिगड चुकी थी। राजस्थान विधान सभा म राज्यपाल के भाषण पर

आपत्ति करने वाले लोकनायक व्यासजी ने इन सभी बातों के लिए शासन पर करारा काडा फटकारा तथा विधान सभा की कार्यवाही नहीं चलने दी। फलत उन्हें विधान सभा से निलंबित कर दिया गया। जनता के बीच रहने वाले विधायक श्री व्यासजी विधानसभा की चार दीवारी तक ही अपनी बात नहीं कहते थे। अपनी धुन और लगन के सच्चे नेता ने तभी जयपुर शहर में 18 मार्च 1966 को एक भूख मार्च का आयोजन किया। प्रांत के कोने कोने से कार्यकर्त्ता वहां जमा हुए तथा प्रसोपा संसदीय दल के तत्कालीन नेताश्री एस एम द्विवेदी भी जयपुर आये। श्री द्विवेदी ने आम सभा में मंत्रियों को चेतावनी देते हुए कहा व्यास हमारी पार्टी का शेर है।

जब भूख मार्च जयपुर की सडकों पर आगे बढ रहा था तो जयपुर के लोग दांतों तले अंगुली दबा रहे थे कि आज तक के इतिहास में जयपुर शहर में इतना अनुशासित इतना लम्बा जुलूस नहीं देखा गया। जलती चौक में बन्दूकधारी पुलिस तथा घुडसवार पुलिस तैनात थी। प्रदर्शनकारियों पर घोड दौडाये गये लाठियां चली आंसू गैस छूटी जिससे कई महिलाओं और वृद्धों को चोट आई। बहिन भगवती देवी अचेत होकर गिर पडी। श्री व्यासजी भगवतीजी नारायण दास रंगा सहित मुझे भी गिरफ्तार किया गया। इस प्रदर्शन को लेकर विरोधी दलों के सदस्यों ने विधान सभा में जोरदार जनरोष प्रकट किया।

1966 में व्यास जी ने स्वयं पर सारे आरोपों का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेते हुए तत्कालीन गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा को लिखा कि यदि ये आरोप गलत सिद्ध हुए तो वे (व्यासजी) दण्डित होने को तैयार हैं। पत्र को अविकल रूप में यहां दिया जा रहा है– राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया के खिलाफ स्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुरशास्त्री को भ्रष्टाचार के अभियोग पत्र का ज्ञापन देनेवालों में मैं भी एक हूँ। संसद में आप द्वारा एवं उप गृहमंत्री द्वारा दिये गये वक्तव्यों को मैं चुनौती देना चाहता हूं। उप गृह मंत्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा है कि यदि कोई अपने पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ अभियोगों को सिद्ध करने के लिए तैयार होगा तो उसकी यथोचित जांच होगी। मैं उसके लिए पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ अपने आपको आफर करता हूँ। यदि अभियोग सिद्ध नहीं हुआ तो उसके लिए मुझे दण्डित किया जावे। (13 5 66)

व्यासजी या तो आरोप लगाते नहीं थे और यदि लगाते तो उसके लिए किसी भी सीमा तक जाने और गलत होने पर दण्डित होने को तैयार रहते थे। वे राजनीतिक लुका-छिपी या लुक मीचणी का खेल नहीं खेलते थे। जो भी कहते चौडे धाडे" करते थे और उसके लिए व्यापक जनमत भी तैयार करते थे।

व्यासजी की ईमानदारी एव सच्चरित्रता की छाप उनके विरोधियो के मन म भी अंकित थी। वे जानते थे कि प्रतिकूल परिस्थितियां या अभावग्रस्त पारिवारिक स्थितियां भी व्यासजी की ईमानदारी से विमुख नहीं कर सकती। कोई भी प्रलोभन उनको अपने सत्य पथ से डिगाने म समर्थ न हो पाया। यह बात जामसर मजदूरों की हड़ताल को तोड़ने के कुचक्र म व्यवस्थापकों द्वारा दिये गये प्रलोभन की असफलता से सिद्ध हो चुकी थी। इसका एक अन्य दृष्टान्त उस समय मिला जब व्यासजी को 1967 के आम चुनाव से पूर्व के वर्ष म चना काण्ड म लिप्त करने एवं उनकी ईमानदारी को संदिग्ध बनाने का एक और असफल प्रयास किया गया।

व्यासजी के सहयोगी श्री बुलाकी दास (बूला महाराज) के अनुसार चने के चढ़ते हुए भावों से रेवड़ी तांगे वालों का जीवन दूभर हो गया था। बाजार म 4 रुपये साढ़े चार रुपये प्रति किलो के भाव से चना खरीदना उनकी सामर्थ्य म नहीं था। उधर सरकारी व्यवस्था परमिट पद्धति से एक रुपये के दो किलो चने देने की थी। चना डिपुओं म आना और काले बाजार म चला जाना। चारों तरफ हाहाकार मचने लगा था। इक्के तांगे वालों की मान्यता प्राप्त एवं बहुमत की यूनियन के समानान्तर एक अन्य यूनियन खड़ी की गई पर वह चल नहीं सकी। तत्कालीन जिलाधीश श्रीमती ओतिमा बोर्डिया ने दोनों यूनियनों के प्रमाण से पता लगा लिया था कि प्रबल बहुमत की यूनियन व्यासजी के नेतृत्व म चलती है। इक्के तांगे वालों का आरोप था कि बहुत सारे लोगों के नाम परमिट नहीं बने हैं। परमिटों का काम 1962 के रजिस्टरों के आधार पर किया गया था जो पुराने पड़ चुके थे। प्रश्न था कि इस बात का सत्यापन कौन करे कि परमिट वास्तव म बने या नहीं बने। जिलाधीश श्रीमती ओतिमा बोर्डिया ने यह काम व्यासजी पर छोड़ते हुए कहा कि वे जिस किसी के लिए परमिट की सिफारिश करेंगे उसे परमिट दे दिया जायगा।

व्यासजी के सामने दो प्रश्न थे—एक तो सही सत्यापन करना तथा दूसरे डिपोधारियों को भ्रष्ट तरीके अपनाये जाने से रोकना। डिपुओं के लोग जानते थे कि इस कार्य म एक बोरी के पीछे एक रुपये का घाटा है व घाटे की पूर्ति काले बाजार के माध्यम से करने लग थे। व्यासजी के विशेष आग्रह करने पर भी उनके कुछ सहयोगी (जो डिपो भी चलाते थे) चने का कार्य लेने म आनाकानी करने लगे। अन्ततः उन्होंने श्री बुलाकीदास (बूला महाराज) का चने का डिपो लेने के लिए मनाया तथा ताकीद करदी कि किसी भी परिस्थिति म बेईमानी नहीं होनी चाहिए।

श्री बुलाकीदास (बूला महाराज) का कथन है कि इस सारे कार्य म उनको 1500) रुपयों का घाटा हुआ पर उन्होंने किसी भी परिस्थिति म काले बाजार की प्रवृत्ति

का नहीं पनपने दिया। व्यासजी ने परमिटों की जाच का काय डक्का तागा यूनियन के सचिव श्री राधेश्याम गौड को दिया। श्री गौड स्थल पर जाकर जाच करते घोडा के रग तागा नम्बर चरो के ठाण एव घोडा के मालिकों के बारे म पूरा पता लगाते तथा यदि परमिट नही बना हुआ होता तो उसकी रिपोट व्यासजी को देते। व्यासजी उस प्रतिवेदन पर अपनी टिप्पणी देते हुए लिखते कि 'मैंने अपने सूत्रों से तथ्यों का सत्यापन करवाया है। सरकार को चाहिए कि अपने स्तर पर जाच करवाकर सतुष्ट होने पर परमिट जारी कर दे।

व्यासजी से राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता रखने वालो ने बुला महाराज को जाच म फसाने की चेष्टा की। पृथक पृथक तागे वाला से 250 काडस इकट्ठे करके भ्रष्टाचार निरोधक विभाग के माध्यम से अचानक छापा डलवाकर जाच करवाई पर सभी मामला म काडों की प्रविष्टियो से रजिस्टर की प्रविष्टिया मिल गई अत मामला आगे नही बढ सका। अन्त एक प्रकरण ध्यान मे आया जिसम रजिस्टर म प्रविष्टि तो थी पर काड म प्रविष्टि न होने से सन्दिग्ध स्थिति बनती थी। सम्बधित काड वाले तागे वाले ने अपने बयान म बताया कि उस चना मिल गया है—हो सकता है काड म प्रविष्ट करने म भूल रह गई हो। इतना सब होते हुए भी कभी भ्रष्टाचार निरोधक विभाग से जाच का और कभी डी आई आर म गिरफ्तारी का भय दिखाया जाता रहा। उद्देश्य यही था कि श्री बुलाकीदास यह बयान दे दें कि चने काण्ड के कथित भ्रष्टाचार म मुरलीधर व्यास का हाथ है।

व्यासजी उन दिनो बम्बई गये हुए थ। आने पर जब उन्हें सारी स्थिति का ज्ञान हुआ तो वे तत्काल जिलाधीश कार्यालय गये। तत्कालीन डी एस ओ को बुलाया गया। डी एस ओ के यह कहने पर कि व्यासजी ने जानबूझ कर कई ऐसे लोगो को परमिट दिला दिया है जिनके पास पहले से परमिट थे व्यासजी ने हर आवेदन पत्र पर अपनी टिप्पणी दिखाई जिसम लिखा था कि मैंने अपने सूत्रों से तथ्यो का सत्यापन किया है सरकार को चाहिए कि अपने स्तर पर जाच करवाकर सतुष्ट होने पर परमिट जारी करे।' ईमानदारी और आवेश म एक प्रकार का चिर तन सम्बन्ध है। जब जब भी ईमानदारी पर चोट होती है ईमानदार आदमी आवेश म आ जाता है। व्यासजी कह उठे जिस दिन मुझे डी आई आर म रखेंगे भारत की राजनीति चौराहे पर होगी' वे बोले—मैंने लिखकर दिया था कि आप जाच करवाइए सही हो तो परमिट दीजिए आपने जाच करवाई क्या?' और फिर फाइल म से एक कागज खीचते हुए वे बोले मैं राजनीतिक षडयन्त्र के इस मामले को विधान सभा म उठाऊ गा। जिलाधीश श्रीमती बोल्या वास्तविकता को समय

गई और व्यासजी का मान किया। उधर श्री श्यामसुन्दर गोस्वामी की जाच म भी श्री बुलाकीदास के विरुद्ध कोई आरोप सिद्ध नही हुआ।

कालान्तर म राजनीतिक घटनाचक्र के प्रसग म एक प्रतिनिधि मडल इसी चना काण्ड को लेकर मुख्यमत्री मोहनलाल सुखाडिया स उदयपुर म मिला। प्रतिनिधि मण्डल ने जब व्यासजी को डी आई आर म गिरफ्तार करने की माग की तब श्री सुखाडिया मुख्यराय और वहा ऐसा मत कहा इसस कुछ भी नही होगा। मैं जाच भी करवा दूगा पर जिस तरह पत्थर पर मल छटकर अलग हो जाती है व्यास जी एकदम निर्दोष निकल जायेंगे। वे एक ईमानदार आदमी हैं। वर्तमान लोग तो मेरे पाव पकडते हैं। व्यासजी को कमजोर करना हो तो उनकी शक्ति को कम करो। उनके आदमियो को अपने म मिलाओ। तात्पर्य यह कि प्रबल राजनीतिक विरोधी के प्रति उस समय के प्रमुख राजनेता के विचार ईमानदारी और मुरलीधर व्यास पर्याय थ और जीवन भर पर्याय ही बने रहे।

श्री बुलाकीदास व्यास के अनुसार एक बार मुझ स व्यासजी की उपस्थिति म पूछा गया कि यदि मैं (श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित) व्यासजी के खिलाफ खडा होऊ तो तुम किसका साथ दोग। मैंने इस प्रश्न को टालने की कोशिश की पर जब वे अड गये तो मैंने कहा—जहा तक व्यक्तिगत प्रश्न है—जहा आपका चरण पडेगा मेरा सिर रहेगा जहा आपका पसीना बहेगा मेरा खून बहेगा पर जहा तक चुनाव का सवाल है चुनाव म अगर मेरा बाप भी व्यासजी के खिलाफ खडा हो जाये तो भी मैं व्यासजी का साथ नहीं छोडूगा। व्यासजी के साथियो की इस अटूट आस्था के कारण ही वे दो बार विधानसभा म जीत पाये थ। यह आस्था व्यासजी की मृत्यु के पश्चात् भी उसी प्रकार बनी रही। मृत्यु के इतने वर्षो पश्चात् भी व्यासजी का नाम बीकानेर की राजनीति को प्रभावित करता रहा है। जनता के परम हितैषी व्यासजी की चुनाव सभाओ के दृश्य बड ही रोमाचक हुआ करत थ। ऐसा लगता था कि वह चुनाव व्यासजी नही उनकी ओर से उनके सारे समर्थक या यो कहे कि बीकानेर की अधिकाश जनता स्वय लडती थी। एक अजब जोश रहा करता था माहौल म। जन सभाओ म हजारो हजारो की भीड को आकर्षित करने वाले व्यासजी रात को साढे ग्यारह बारह बजे बोलने खडे होते और लगभग डेढ–ढाई बजे तक बोलते रहते उनके खडे होते ही पूरा व्यासजी जिन्दाबाद के नारो से वायु मण्डल गूज उठता था। व्यासजी के अनन्य समर्थक श्री बालचन्द साड के अनुसार– उनकी भावना बडी तीव्र थी। हर व्यक्ति उनके शब्दो पर विश्वास करता था। वह जानता था कि व्यासजी जो भी कह रहे हैं वह सच्चाई की आवाज है। उनका बोलने का तरीका

इतना साफ और स्पष्ट था कि हर श्रोता चाहे बच्चा हो या वृद्ध, औरत हो या मर्द अच्छी तरह से समझ जाता था।

इधर श्रोताओं का यह हाल था कि सभा स्थल खचाखच भरा रहता था। लोग आज भी उन सभाओं को याद करके कहते हैं कि ऐसी मीटिंगें बीकानेर में फिर होनी हो नहीं हैं। जनवरी फरवरी की कड़ाके की सर्दी में लोग ओढ ओढ कर मफलर आदि लगाकर तैयार होकर आते थे क्योंकि वे जानते थे कि व्यासजी की मीटिंग तो दो-ढाई बजे तक चलनी ही है।

व्यासजी का चुनाव जन चुनाव यानि स्वयं जनता द्वारा लड़ा जाने वाला चुनाव था। लोग चला चला कर उनको अपने यहां सभा करने के लिए आमन्त्रित करते थे। छोटे-छोटे चौकों में दिन के समय तथा बड़े बड़े मोहल्लों में रात के समय सभाएं हुआ करती थी। दोपहर को भी लोग उनकी बात सुनने पहुँच जाते थे। रात की सभाओं में व्यासजी को इतनी अधिक मालाएं पहनाई जाती कि उनको कई-कई बार उतार कर मंच पर रखना पड़ता था। अगर नहीं उतारें तो चाहे मालाओं में दब जाए। उनका एक फोटो भी है जिसमें मालाओं के कारण व्यासजी की एक आंख तक बंद हो गई है। फूलों की सैकड़ों मालाओं के बाद शुरु होता था रुपयों की मालाओं का सिलसिला। मोहल्ले वाले 101 रु. से लेकर 501 तक अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनको रुपयों की मालाएं पहनाते थे। लोग जानते थे कि व्यास जी के पास अपने साधन तो हैं नहीं, उनको तो जन सहयोग से ही चुनाव लड़ाया जा सकता है।

आम विधान सभा चुनावों से पूर्व वे कलकत्ता एवं अन्य स्थानों की यात्रा भी किया करते थे। लोगों में उनके प्रति एक सहज श्रद्धा एवं अटूट विश्वास की भावना थी। समर्थकों एवं शुभ-चिंतकों से उन्हें हमेशा प्रबल समर्थन मिला। वे उनके अनाधार तो थे ही, चुनाव के लिए वांछित साधनों की व्यवस्था भी वे ही किया करते थे। व्यासजी की कलकत्ता (पश्चिमी बंगाल), एवं तेजपुर मिस्चर सिलौंग और गोहाटी (असम) की यात्राओं के प्रसंग में श्री बालचन्द साढ ने बताया— कलकत्ता के लोग चुनाव के समय व्यासजी का आत्मीयता से सत्कार किया करते थे। उनके 10 12 साथी तो उन दिनों अपना काम धंधा छोड़ कर चुनाव के लिए धनराशि एकत्रित करने में जुट जाते थे। लहरचन्द मुकीम अपने मामा डा बेगानी से कह देता था कि व्यासजी आ गये हैं-पांच साल में एक बार ही तो काम पड़ता है चुनाव का अब 15 दिनों तक मैं दुकान पर नहीं आऊंगा —यह बात एकदम स्पष्ट थी कि 15 20 दिनों तक कुछ लोग अपने धंधे पर ध्यान तक नहीं देते थे। व्यासजी के कार्यक्रमों

गई और व्यासजी को शांत किया। उधर श्री श्यामसुन्दर गोस्वामी की जांच में भी श्री बुलाकीदास के विरुद्ध कोई आरोप सिद्ध नहीं हुआ।

कालान्तर में राजनीतिक घटनाचक्र के प्रसंग में एक प्रतिनिधि मंडल इसी घटना काण्ड को लेकर मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया से उदयपुर में मिला। प्रतिनिधि मण्डल ने जब व्यासजी को डी आई आर में गिरफ्तार करने की मांग की तब श्री सुखाडिया मुस्कराये और कहा ऐसा मत कहो इससे कुछ भी नहीं होगा। मैं जांच भी करवा दूंगा पर जिस तरह शक्कर पर से छिटककर अलग हो जाती है व्यास जी एकदम निर्दोष निकल जायेंगे। वे एक ईमानदार आदमी हैं। बेईमान लोग तो मेरे पांव पकड़ते हैं। व्यासजी को कमजोर करना हो तो उनकी शक्ति को कम करो। उनके आदमियों को अपने में मिलाओ। तो ये थे प्रबल राजनीतिक विरोधी के प्रति उस समय के प्रमुख राजनेता के विचार ईमानदारी और मुरलीधर व्यास पर्याय थे और जीवन भर पर्याय ही बने रहे।

श्री बुलाकीदास व्यास के अनुसार एक बार मुझ से व्यासजी की उपस्थिति में पूछा गया कि यदि मैं (श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित) व्यासजी के खिलाफ खड़ा होऊं तो तुम किसको मत दोगे। मैंने इस प्रश्न को टालने की कोशिश की पर जब वे अड़ गये तो मैंने कहा–जहां तक व्यक्तिगत प्रश्न है–जहां आपका चरण पड़ेगा मेरा सिर रहेगा जहां आपका पसीना बहेगा मेरा खून बहेगा पर जहां तक चुनाव का सवाल है चुनाव में अगर मेरा बाप भी व्यासजी के खिलाफ खड़ा हो जाये तो भी मैं व्यासजी का साथ नहीं छोड़ूंगा। व्यासजी के साथियों की इस अटूट आस्था के कारण ही वे दो बार विधानसभा में जीत पाये थे। यह आस्था व्यासजी की मृत्यु के पश्चात् भी उसी प्रकार बनी रही। मृत्यु के इतने वर्षों पश्चात् भी व्यासजी का नाम बीकानेर की राजनीति को प्रभावित करता रहता है। जनता के परम हितैषी व्यासजी की चुनाव सभाओं के दृश्य बड़े ही रोमांचक हुआ करते थे। ऐसा लगता था कि वह चुनाव व्यासजी नहीं उनकी ओर से उनके सारे समर्थक या यों कहें कि बीकानेर की अधिकांश जनता स्वयं लड़ती थी। एक अथक जोश रहा करता था माहौल में। जन सभाओं में हजारों हजारों की भीड़ को आकर्षित करने वाले व्यासजी रात को साढ़े ग्यारह बारह बजे बोलने खड़े होते और लगभग दो–ढाई बजे तक बोलते रहते उनके खड़े होते ही मेरे व्यासजी जिन्दाबाद के नारों से वायु मण्डल गूंज उठता था। व्यासजी के अनन्य समर्थक श्री बालचन्द सांड के अनुसार– उनकी भावना बड़ी तीव्र थी। हर व्यक्ति उनके शब्दों पर विश्वास करता था। वह जानता था कि व्यासजी जो भी कह रहे हैं वह सच्चाई की आवाज है। उनका बोलने का तरीका

म सक्रिय रूप से रुचि लेने वाले म सर्वश्री मन्नूलाल पारख, मोतीलाल मालू गोपाल मल बोथरा, भवरलालजी सावणसुखा दुलीचदजी बाचर चम्पालजी अभाणी भवरलाल भण्डावत लहरचन्द मुकीम रायचदलाल पारख धनराज कोठारी, भवर लाल सेठिया, सत्यनारायण पुरोहित मोहनलाल पुरोहित आदि लोग प्रमुख थे।' श्री बालचन्द साह स्वय तो सक्रिय रहते ही थे।

अपराह्न तीन-चार बजे उनके समर्थक एक जगह पर इकट्ठा हो जाते तथा रात को आठ बजे तक गली गली में जाकर उनके लिए धन-सग्रह करते। चूरू लाडनू जसलमेर गगाशहर भीनासर एव नापासर के प्रवासी राजस्थानी भी (चाहे वे कलकत्ता म हो अथवा असम म) व्यासजी को सहायता देने म अग्रणी रहते थे। बीच-बीच म सभाए भी होती रहती।

'व्यासजी अलग अलग समूहो व लोगो स मिलने एव छोटी छोटी राशिया म धन सग्रह को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते थे। उनका कहना था कि इसम व्यापक जन-सम्पर्क हो सकता है। बडी-बडी राशिया वाली जगह तो सीमित होती हैं-अधिक से अधिक लोगो को समाजवादी अभियान म लाने का अवसर तो तभी मिल सकता है जब सब से मिला जाय फिर वे चाहे ग्यारह ग्यारह रुपय दें या इक्कीस-यह महत्त्व-पूर्ण नही है महत्त्वपूर्ण है उनका समर्थन उनका सहयोग उनका अटूट विश्वास।

कलकत्ता के व्यवसायी बधुओ के सहयोग से चुनाव अभियान को गति मिलती थी । लोग इस प्रकार स्वच्छा से 201 रु से लेकर 501 रु तक की धन राशि लिख पाते और इस प्रकार व्यासजी के प्रति अपनी श्रद्धा को व्यक्त किया करते थे। उनका कल कत्ता प्रवास चहल पहल एव गहमा-गहमी से भरा रहता-कभी श्रमिक नेता ब्रजमोहन व्यास की तरफ स मोहम्मद अली पार्क म मीटिंग होती तो कभी लिलुआ वाले साथियो की तरफ से लिलुआ म कभी अग्रसेन भवन म होती तो कभी किसी अन्य स्थान पर। कलकत्ता म उपलब्ध राष्ट्रीय एव प्रान्तीय स्तर के समाजवादी नेता भी व्यासजी के सम्मान म आयोजित सभाओ म बराबर भाग लेते थे। अपनी सजातीय लोगो की एक सभा म जब व्यासजी मानव धर्म मानव प्रेम एव सर्वधर्म सद्भाव की बातें कही तो उनके व्यापक विचार फलक एव विश्वजनीन भावनाओ स लोग अत्यन्त प्रभावित हुए। व्यासजी के व्यक्तित्व को जातिगत साचो म बाधा ही नही जा सकता था। एक विशाल दृष्टिकोण एव जन-जन के प्रति आत्मीयता का भाव लेकर ही वे अपने पथ पर आगे बढे और उसी का निर्वाह उन्होने जीवन पर्यन्त किया। उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व सब को अपनी ओर आकर्षित करता था-उनकी बेलाग निश्छलता सब को प्रभावित करती थी एव उनकी त्यागवृत्ति सब के लिए उदाहरण प्रस्तुत करती थी।

व्यासजी फक्कड वृत्ति के तो थे ही, अपने पास जरूरत से ज्यादा पैसा रखते ही नहीं थे। ऐसे मे अनेक अवसर आए जब उनके पास कुछ भी नही था पर अपनी जनसेवा अपनी निराली मस्ती को उन्होंने कभी नही छोडा। फक्कडपन के साथ साथ भुलक्कडपन भी उनमे था—एक बार लगरा पटटी से धमतल्ला जाने के लिए टक्सी मे तो बैठ गये पर उनको खुद को मालूम नही था कि उनकी जेब मे पैसे तक नही हैं। चाहे जो हो, उनका विश्वास था कि उनका काम कभी नही रुक सकता—अपने मे, अपने साथियो मे, अपने समर्थको और साधारण जनता मे इतना अधिक विश्वास रखने वाले विरले ही होते है और विरले ही ऐसे लोग होते हैं जिनको इतना व्यापक जन समर्थन मिलता है। कलकत्ता के प्रवास के समय उनके साथी हर समय इस बात का ध्यान रखते थे कि व्यासजी को कोई तकलीफ न हो। वैसे उनके बडे भाई साहब स्व बशीधरजी व्यास भी उन दिनो कलकत्ता (धमतल्ला) मे ही रहा करते थे। अत साथियो के साथ साथ परिवार वालो का सम्पर्क भी बराबर बना रहता था। व्यासजी के कार्य मे लोग उत्साह से रुचि से सहयोग देते। सभी लोग अपने अपने प्रकार से सहयोग देते थे। उदाहरणार्थ, सन् 1962 के चुनाव के लिए निर्मित रबर पर झोपडी के निशान का लालरग का बिल्ला श्री भवरलाल सेठिया और जयचन्दलाल पारख के सहयोग से बना था। मामला भावना का था—जिससे जो समझ मे जो आ जाय वह उसी प्रकार से सहयोग दे दिया करता था।

असम के लोगो के हृदया मे भी व्यास जी के प्रति अपार स्नेह आत्मीयता बोध एव श्रद्धा के भाव थे। यह बात उनकी तेजपुर सिल्चर गोहाटी एव शिलौग की यात्राओ से प्रकट हुई।

व्यासजी की असम यात्रा एक निश्चित् प्रयोजन के सदर्भ मे थी आगे आने वाले चुनावो मे राजस्थान से समाजवादी दल के 16 प्रत्याशियो को खडा होना था। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य होने एव प्रातीय महामन्त्री होने के कारण दल के लिए साधन इकटठा करना व्यास जी का काम था। उन्हें धन सग्रह करना था—केवल अपने लिए नही वरन् दल के सारे प्रत्याशियो के लिए। इसके लिए कलकत्ता हो अथवा तेजपुर डिब्रूगढ हो अथवा गोहाटी—उन्हे सभी स्थानो पर जाना था। इन यात्राओ मे भी उनका लक्ष्य व्यापक जन सम्पर्क का था, वित्तीय सहायता जो भी और जितनी भी दे दें, वे उसे सहर्ष स्वीकार करने को तैयार करते थे। उनकी मान्यता थी कि छोटी छोटी राशियो के माध्यम से अधिक से जन सम्पर्क हो सकता है।

कलकत्ता से वे और उनके दो साथी—श्री बालचन्द साड एव लहरचन्द मुकीम हवाई जहाज से गोहाटी गये। उनके पहुचने से पूर्व ही कलकत्ता मे रहने वाले श्री झवर

लाल बोथरा ने अपने भाई श्री कंवरलाल बोथरा का व्यासजी आगमन की सूचना दे दी थी। कंवरलाल बोथरा गोहाटी में धनराज सुराणा के यहाँ रहते थे। धनराज सुराणा ने अपने सभी साथियों को व्यासजी के आगमन के बारे में बताया तथा कहा कि वे राजस्थान के सशक्त विरोधी नेता तो हैं ही, अपने बीकानेर के भी हैं। हमें उनका तहेदिल से स्वागत करना है।' प्लेन से उतर कर व्यासजी जब बस द्वारा डिपो पर पहुंचे तो उनके स्वागत में श्री धनराज सुराणा, कंवरलाल बोथरा एवं अनेक राजस्थानी प्रवासी बंधु डिपो पर खड़े थे। उनमें बीकानेर के अतिरिक्त नापासर, गंगाशहर, भीनासहर तथा लाडनूं तक के प्रवासी बंधु सम्मिलित थे। व्यासजी एवं उनके दोनों साथियों को एक होटल में ठहराया गया। भोजन की व्यवस्था सुराणा जी के यहाँ थी पर अनेक लोगों के आग्रह के कारण उन्हें भिन्न भिन्न स्थानों पर भोजन के लिए जाना होता। अपने गोहाटी प्रवास काल में व्यास जी को अपने दल के कार्यालय (जिसे असमी में माटी कहते हैं) में भी भाषण दिया। देश के प्रख्यात समाजवादी नेता श्री हेम बरुआ भी उस मीटिंग में उपस्थित थे। गोहाटी में व्यासजी का शानदार स्वागत तो हुआ ही सभी सहयोगी बन्धुओं ने आर्थिक सहयोग भी दिया। यह उनके प्रति जबरदस्त श्रद्धा भावना एवं सबमें व्याप्त विश्वास का परिचायक था। गोहाटी यात्रा में श्री तुलसीराम स्वामी का सहयोग भी सराहनीय था।

गोहाटी से प्रस्थान से पूर्व ही श्री धनराज सुराणा ने तेजपुर के रहने वाले श्री रमेशचंद बोथरा को फोन से व्यासजी के आने की सूचना दे दी थी। श्री बोथरा एवं उनके साथियों ने व्यासजी का आत्मीयता पूर्ण भावभीना स्वागत किया। उन्हें अपने निवास स्थान पर ठहराया। करीमगंज से व्यासजी को बोमडिला के उस ऐतिहासिक स्थल को दिखाने ले गये जहाँ बर्बर चीनी सैनिकों की गोलियों से भारतीय सैनिक हताहत हुए थे। वृक्षों और दीवारों पर गोलियों के निशान उस बर्बरता की साक्षी दे रहे थे। अपनी स्मरणीय यात्रा के अन्त में वे सिल्चर से हवाई जहाज द्वारा पुनः कलकत्ता लौट आये। सर्व श्रीयुत् चतुर्भुजजी शाह बोथरा, किस्तूरचन्दजी शाह बोथरा तथा भीनासर के श्याम स्टोर वाले मोतीलाल जी डागा आदि ने व्यासजी का हार्दिक स्वागत किया। उनके पास श्री भंवरलाल सुखाणी का पत्र था जिसमें उन्होंने व्यासजी के आगमन की सूचना दी। श्री भंवरलाल सुखाणी ने अपने समधी को लिखा था कि व्यासजी वहाँ आवें तो आप यही समझना कि स्वयं भंवरलाल सुखाणी ही आये हैं। मैं व्यासजी का इतना आदर करता हूं और व्यासजी आसाम में आ रहे हैं अतः उनका यथोचित सत्कार करना है।' रात को व्यासजी के सम्मान में एक प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमें मारवाड़ी

समाज के 200-250 व्यक्तियो ने भाग लिया। व्यवस्था इतनी त्वरित थी कि व्यासजी एव उनके साथी अपराह्न तीन बजे तो तेजपुर पहुचे थे और रात को 9 बजे प्रीतिभाज की व्यवस्था करदी गई थी। एक प्रकार से पूरी मारवाडी पटटी ही उस अवसर पर वहा विद्यमान थी। व्यक्तिगत स्वागत सत्कार म तो भाजन के समय दस पाच आदमी ही बुलाये जाते पर यह तो एक सामूहिक सत्कार था। पाच दिनो तक लगातार स्वागत होत रहे-कभी गणेश स्टोर वाल बुलाते तो कभी हिन्द मोटर स्टोस वाले कभी बछराज दूगड लाडनू वाले आमन्त्रित करते तो कभी आस करण चतुभज किस्तूर चन्दजी शाह बाथरा आग्रह पूवक निमत्रण देत। बछराज दूगड का सहज स्नेह सभी का आकर्षित करता था-यहा तक कि बाबू जयप्रकाश नारायण भी जब कभी तेजपुर जाते श्री दूगड क यहा ही ठहरत थ। तेजपुर म भी व्यवसायी-बधुओं न व्यासजी एव उनक दल के प्रत्याशियो के लिए आर्थिक सहायता दी। व्यासजी एव उनके दो साथी तजपुर से गोहाटी होते हुए कार द्वारा शिलाँग गये। इस प्रवास म देश नोक के श्री इन्द्र चद गुलगुलिया उनके साथ थे शिलाँग म उनका भव्य स्वागत हुआ जिसम श्री युत् श्री कृष्ण सिहानिया एव गिरधर लाल सुराणा की प्रमुख भूमिका थी। वहा स श्री मगनमल गुलगुलिया क साथ वे करीमगज गये। गरम जोशी का स्वागत और भावभीना आदर सत्कार तो होना ही था। तोलाराम पुगलिया एव श्री सठिया (डूगरगढ) के अतिरिक्त सवश्री भवरलाल बदनी चम्पालाल भूरा आदि अनेक गणमान्य प्रवासी ब धुआ ने राजस्थान के जन नता की अगवानी की-उन्ह समुचित सम्मान दिया। 1957 स 1967 की अवधि व्यासजी का यायावरीय जीवन निरन्तर गतिशील रहा। राष्ट्रीय सम्मेलनो म भिन्न भिन्न स्थानो पर तो वे जाते ही रहते थे, राजस्थान मे उनका भ्रमण इतना व्यापक था कि वे प्राय हर जिले के लागा से सम्पक मे रह सकते थे। व्यक्तिगत सम्ब धा का निमाण निर्वाह तथा उनका सामाजिक प्रतिष्ठान ही उनकी सफलता का मूल मत्र था। स्थान कोई भी हो व्यासजी की उपस्थिति एक अथ रखती थी। उनकी उपस्थिति मात्र से ही वह सम्मेलन अधिवेशन और अवसर महत्त्वपूण बन जाता था। अकाल के दिना मे गाव गाव म उनका परिभ्रमण, पीडिता स व्यक्तिगत सम्पक, जन धन की हानि का स्वयमेव जायजा और विधान सभा मे उसकी अनुगूज-लोगा को आज तक याद है। तथ्या को रखन स पहल वे उनका प्रामाणीकरण अवश्य करते थे।

भास्कर केदार नाथ ने अपने सस्मरणो म ऐसी कई यात्राओ का उल्लेख किया है। जसलमेर और बाडमेर की यात्राआ म तो वे व्यासजी के साथ ही थे। वहा से सग्रहीत तथ्या-रगिस्थान के फलाव अकाल की स्थिति, राहत कार्यों की शिथिलता-आदि बिन्दुओ को विधान सभा म रखने से ये यात्राए अत्य त महत्त्वपूण बन गई थी।

व्यासजी इन परिक्षेत्रो के निकटवर्ती स्थानो पर भी आते रहते थ पोकरण फलोदी और शिव की यात्राए भी प्रसिद्ध है। श्री गोकुल थी वाल न फलौदी और जसलमर क अतिरिक्त दौसा भरतपुर, जोधपुर एव चूरू की यात्राओ का वणन किया है। भीलवाडा की यात्रा म श्री बुलाकी दास व्यास एव गोवा एव बम्बई क अधिवेशनो म श्री भीमपौडिया उनक साथ थ।

कही पर कोई अधिवेशन हो रहा है तो कही पर कायकारिणी की बठक। कहा पर किसी राष्ट्रीय नता का कायक्रम है और कही पर कुछ और प्रसग कोई भी हो उ ह राजस्थान क भिन्न भिन्न भागो म जाना पडता था। प्रातीय महामत्री होन के नाते वे उन समस्त स्थानो पर गय जहा स प्रजा समाजवादी अथवा समाजवादी घटको क उम्मीदवारो न चुनाव लडा था। मित्र दलो के सयुक्त अभियानो म भी उनको जाना पडता था। और फिर कही पर भी आन्दोलन हो, गोली काण्ड अथवा लाठीचाज हुआ हो लम्बी भूख हडताल अथवा श्रमिक अनशन क प्रकरण हो अथवा जुलूसो एव सभाओ क माध्यम स जन जागरण करना हो अपन दल द्वारा शुरू किय गये ऐसे किसी भी अभियान म वे जरूर जात थे। प्रातीय गतिविधियो की रिपोट उ ह राष्ट्रीय कायकारिणी को दनी होती थी। इस प्रसग म उनकी जसलमर स भरतपुर एव श्री गगानगर स उदयपुर तक की यात्राओ को रखा जा सकता है।

व्यासजी के एक निकट सहयोगी श्री मोहनलाल पुरोहित ने उनकी निस्पृहता त्याग वृति एव समाजसवा का सजीव चित्रण किया है। श्री पुरोहित क अनुसार गभीर अर्थ सकट के बीच म रहने वाले व्यासजी ने अपनी सेवाओ और कतव्यो की आहुति कभी नही दी। अथ सकट भल ही हो उनक पाव कभी नही डगमगाये। अपने कथन की पुष्टि म श्री पुरोहित ने कुछ उदाहरण दिये है —

1 वे अपनी जीवन बीमा की पालिसी को रुपयो की कमी के कारण चालू नही रख सके। किश्तो के लिए नियमित धनराशि कहाँ से लाती ? अतत पालिसी ही बन्द हो गई।

2 व आशा दवी क भक्त थ। वहा तक जाने म दो सौ रुपया का खच था। वे वहा मा क दशन तथा जात तक नही दे सक।

3 व अपनी धम पत्नी क तमाम जेवर (दो चार हजार का जेवर) बिक्री कर के बाकी दो चार हजार रुपय और मिलाकर आठ दस हजार रुपया का मकान नही खरीद सक।

4 साधनो क अभाव क कारण इच्छा रखत हुए भी लोकसभा का चुनाव नही लड सक।

5 दस साल तक निरन्तर विधानसभा के सदस्य रहने पर भी उनके पास दवाई तथा घर खर्च चलाने लायक पर्याप्त पैसा कभी नहीं रहा। उन्होंने विधानसभा के दसवर्षीय कार्यकाल में कभी भी दवाई के पर्चे के आधार पर सरकारी कोष से रुपये नहीं लिये।

6 घर में खाना खर्चा तक चलाना उनके लिए कठिन था, क्योंकि अन्य साधन उनके पास नहीं थे। बीमार रहते गये, बीमारी बढ़ती गयी अच्छी देखभाल और चिकित्सा व्यवस्था नहीं मिली जन सेवा की दौड़ धूप जारी रखी और शरीर की चिन्ता नहीं की। और अंत में इसी निधनता और बीमारी की चपेट में आकर असमय में ही संसार से विदा भी हो गये।

व्यासजी के जीवन प्रसंगों में श्री भीमपाडिया का साथ काफी घनिष्ठ रहा है। भीम पाडिया वह व्यक्ति हैं जिन्होंने अनिवार्य शिक्षण शालाओं में रहकर भी व्यासजी द्वारा संचालित आन्दोलनों में भाग लिया उनके साथ राजनीति में सक्रिय भागीदारी की, लूणकरणसर क्षेत्र से विधानसभा का चुनाव लड़ा, जयपुर एवं गंगानगर आन्दोलनों में भाग लिया तथा पूरे देश का परिभ्रमण किया। सभाओं में अपनी चंग ध्वनि और लोकप्रिय कविताओं से वातावरण बनाने वालों में वे अग्रणी रहे हैं।

व्यासजी के साथ अपने जीवन प्रसंगों की एक झलक देते हुए श्री पाडिया ने लिखा है कि व्यासजी लोक शिक्षक लोक नेता, लोक गायक और लोक कवि भी थे। वे हमेशा दुराचार भ्रष्टाचार और तस्कर व्यापार के विरोधी रहे। नगर ही नहीं दूर दराज के गांव-कस्बों में भी वे संकटों का समाधान ढूंढते फिरते थे। मुझे तो उनके साथ अनेक राज्यों की राजधानियों, नगरों-कस्बों में जाने का सौभाग्य मिला है। मेरी चंग व्यासजी के साथ सदा बजती रही और मेरी कविताएं मंचों पर झूमती रहीं। मैं उनके साथ जुड़ा ही रहा। व्यासजी में संगठन की अपूर्व क्षमता थी। कविता से भी उनका हार्दिक लगाव था। मैंने उनके साथ रेगिस्तान से अरब सागर तक की यात्राएं की। गोवा की राजधानी पंजिम (पणजी) में भी उनके साथ जनसभा में चंग बजा कर आया।

अपने राजनीतिक जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना के प्रसंग में भी श्री भीमपाडिया ने व्यासजी का स्मरण किया है। साथ ही कर्मचारी आंदोलनों एवं छात्र आंदोलनों में उनके सक्रिय सहयोग एवं मार्ग दर्शन का भी उल्लेख किया है। उनके अनुसार—

1958 में म्यूनिसिपल बोर्ड की ऐतिहासिक हड़ताल हुई। मैं कर्मचारियों की सहानुभूति में उनके साथ था। व्यासजी के इण्डस्ट्रियल ऐक्ट में मुझ पर भी मुकदमा चला। व्यासजी ने अनिवार्य शालाओं के कर्मचारियों के संकटों का निवारण करने

हेतु मुझे हर सभव सहयोग दिया—विधानसभा के प्रागण म। सचिवालय की फाइलो म 11 विद्यार्थियो की एम एस सी व एल एल एम की शिक्षा व्यवस्था की न्यायोचित माग पर जब सरकार ने लाठिया बरसाई तो 1 सितम्बर 1966 को धारा 144 को हमने भी विरोध किया—फलस्वरूप व्यासजी के साथ बीकानेर जेल म रहने का सौभाग्य मिला। हमारी पीडाए एकाकार थी।

1967 के विधानसभा चुनाव म मुझे भी लूणकरणसर विधानसभा क्षेत्र से प्रसो पाई उम्मीदवार बनाया गया जिसका एकमात्र अभिशसात्मक श्रेय श्री व्यासजी को ही है। हम पूरे राजस्थान म प्राय प्रसोपाइ उम्मीदवारो के निर्वाचन क्षेत्रो म समर्थन म घूमे किन्तु पार्टी के आतरिक खिचाव एव टूटन के कारण भारी क्षति हुई। कुछ ऐसे लोगो के घातक प्रहार पार्टी को सदा के लिए ले बठे।

व्यासजी का नाम प्रसोपा के शीर्षस्थ नेताओ म था वे अपने दल के राजनीतिक प्रभा मण्डल के देदिप्यमान नक्षत्र थे। उनका प्रयत्न रहता था कि ऊर्जावान एव योग्य कार्यकर्त्ता भी राजनीतिक पटल पर उभरें तथा जन नेतृत्व का भार ग्रहण करें। इसी विचार धारा से वे अपने विश्वस्त साथियो को महत्वपूर्ण अवसरो पर साथ रखते थे। श्री भीमपाडिया ने अपने गोवा प्रवास का वर्णन इन शब्दो म किया है—प्रजा समाजवादी पार्टी की बैठक 24 मई 1966 से 26 मई 1966 तक कम्प कोलवा बीच गोवा म हुई। मैं उस अवसर पर व्यास जी के साथ गोवा गया था (दर्शक रूप म)। मेरा परिचय सब श्री एन जी गोरे त्रिलोकीसिन्हजी बसावन सिहजी स हरभजन सिहजी अनुत लिमये पीटर अल्वारिस हरि विष्णु कामथ प्रेम भसीन एस सिवप्पा मधु दण्डवते बेनीप्रसाद माधव एम रामचन्द्रराव सूरज नारायण सिह लखनलाल कपूर रामच द्र शुक्ल नाथ प मुरेन्द्र मोहन नाना अगले आदि से हुआ। गोआ के केन्द्र पजिम (पणजी) म सार्वजनिक सभा म व्यासजी का भाषण और मच पर मेरी कविताए हुई। इसी यात्रा प्रसग म सह्याद्रि—मसूर—पूना—बम्बई आदि स्थानो पर भ्रमण का भी अवसर मिला। सभी स्थानो पर व्यास जी के प्रति लोगो म भारी आकर्षण था। बड ही आदर भाव से लोग व्यास जी को *अपने परिवार का सदस्य ही मानते थ। व्यासजी भी उनसे पूरा स्नेह रखते थ।*

अगर प्रत्याशी अकेला हो दल का पूरा सम्बल हो आर्थिक धरातल मजबूत हो और पर्याप्त समय हाथ म हो तो कोई भी प्रत्याशी अपनी पूरी शक्ति चुनाव म लगा सकता है। पर व्यासजी के साथ यह स्थिति नही थी। अपने स्वय के एव मात्र प्रत्याशी तो वे थे नहीं—उन्हे तो प्रान्तीय स्तर पर भिन्न भिन्न स्थानो से खड़े दल के प्रत्याशियो का भी साथ देना होता था। सभी चाहते थे कि चुनाव प्रचार के लिए

कहने को मदान म एक दजन से ज्यादा उम्मीदवार थे, पर उनमे महत्व के प्रत्याशी कांग्रेस प्रजा समाजवादी एव जनसघ ने ही खडे किय थे। प्रमुख मुकाबला थी मुरलीधर व्यास (प्रसोपा) एव गोकुल प्रसाद (कांग्रेस) क बीच था। सभाओ म हजारा श्रोता आते दोना तरफ क आरोपो के जवाब अगले दिन की सभाओ म दिये जाते मालाएँ रुपया की मालाए नारे जुलूस घर घर प्रचार सभी कुछ होते। चुनाव अवधि म व्यासजी के पक्ष म लोगा ने कई गीत एव कविताए बनाई। ये गीत सभाओ के प्रारभ और बीच बीच म गूजते रहते थे। कुछ लोकप्रिय गीता क अश इस प्रकार है –

(अ) झालादेवे झूपडी थे वोट दीज्यो जी पाच बरस मे पग पग म्हारी सेवा लीज्यो जी

झाला देवे झूपडी

बीस बरस बीताया कागा सुखरी घडी न ल्याया रे आजादी न राख अडाणे दुख रा बादळ छाया रे मिनख बिना बळधा री जोडी बसक पडी झाला देवे

—भीमपाण्डिया

(आ) वल्ला वाला मेळा कर क मन ना साआ खोपडी बीकाण म जीतेला आ मुरलीधर री भापडी
बीस बरस म सुणज्या भाया सत्ता पाकर काम कियो भारत री धरती दीनी और अवमूल्यन रो नाम कियो
द विकास रा धोया नारा कर्जो लीनो रोकडी बीकाण म जीतेला आ मुरलीधर री भापडी

—बुलाकी दास व्यास

(इ) आ तो मजदूरा रा प्यारो झूपडली रा बेटो यारो आवे गाव सू नारा मुरली वाल न। हो मुरली वाले न ओ तो सगला र मन भाव जनता ई ने सारी चाव बच्चा बूढा जवान ध्यान मुरली वाल न

—रूप नारायण पुरोहित

(ई) डिक्टेडर का कट्टर दुश्मन है य बीकानर सारा बीकानर सत्य की रहा है मारा फेर

डिक्टेटर का कट्टर

और भी अनक कविताएँ थी अनेक गीत थे मच पर गायक गाते थ और साथ साथ हजारा श्रोता समवेत स्वरो म गाया करते थ। एक विस्मयजनक नजारा होता था

यह। हजारों कंठों की एक ही आवाज थी–' बीकाण में जीतेला थां मुरलीधर री झूपड़ी'। प्रत्यक्षदर्शी जानते हैं कि लोगों में कितना जबरदस्त उत्साह था। छोटी रातों में सभाएं होने के बाद बड़े तड़के तक नारे गूंजते रहते थे।

1967 का चुनाव परिणाम इसीलिए तो लोगों को अप्रत्याशित लगा था। इसीलिए उन्हें सहज में विश्वास तक नहीं हो रहा था कि व्यासजी पराजित हो गये हैं। वे यह तो जानते थे कि इस चुनाव में राज्य सत्ता और धन की ताकतें व्यासजी के खिलाफ हैं, पर वे यह नहीं सोच पाये थे कि व्यासजी कभी हार भी सकते हैं। मगर आखिर वही हुआ जो होना था। बीकानेर क्षेत्र का 10 वर्षों तक अनवरत प्रतिनिधित्व करने वाले श्री मुरलीधर व्यास 12213 मत लेकर भी पराजित हो गये। यदि उन्हें 2200 मत और मिल जाते तो जीत सकते थे। उनके प्रतिद्वन्दी श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित को 16581 मत मिले थे। कहने को तो मैदान में एक दर्जन से अधिक प्रत्याशी थे पर जनसंघ (7058 मत) तथा एक निर्दलीय श्री गोविन्द नारायण वैद्य (1759 मत) को छोड़ कर सभी पराजित प्रत्याशी 1000 से कम मत ले पाये थे। उनमें एक को तो मात्र 75 मत ही मिले थे। दो को सौ से कम, तीन को दो सौ से कम, एक को तीन सौ से कम एक को चार सौ से कम तथा एक को एक हजार से कम मत मिले थे।

व्यासजी की पराजय अप्रत्याशित थी पर वीतरागी व्यासजी ने उसे भी सहज भाव से स्वीकार किया।

वे चार वर्ष

सावजनिक राजनीतिक क्षेत्र म वे लोग जा केवलचुनावी राजनीति तक सीमित रहते है—चुनाव म पराजय स ऐसे कई नताओ क राजनीतिक जीवन का अन्त हो जाता है। उनम स कई ऐस होते हैं जो कालान्तर म राजनीतिक जीवन से विलुप्त ही हो जाते है। जनता उनको इस तरह भूल जाती है कि मानो व राजनीति के पटल पर कभी आय ही नही थे। उनका कोई नाम लेवा तक न ी रहता। इसके विपरीत कुछ ऐसे भी हाते हैं जो वाटा की गणित म चाहे पिछड जायें पर जनमानस पर पूरी तरह छाये रहते हैं कभी-कभी तो उनकी चुनावी पराजय को जनता अपनी पराजय मानने लगती है। श्री मुरलीधर व्यास ऐसे ही नेता थ। उनकी पराजय को जनता ने अपनी पराजय माना और उ ह पहले से भी अधिक सम्मान दिया। सन् 1967 स आग के चार वप इस वात क साक्षी हैं कि जन साधारण ने मजदूरा निष्ठावान ईमानदार सरकारी कमचारिओ और हर मेहनतकश व्यक्ति ने उनका आदर दिया। उनक निर्देशा पर लोग जुलूम म सभाओ म जाते लाठिया भी खात जेला म जात और न जाने कितन कष्ट सह कर भी अपने प्रिय नेता का म य दत विरोधी दल क नना का साथ दन म क्या लालच हो सकता है? न कोई प्रलोभन न कार्ड पर न परमिट न ठेका न लाइसे स और न सरकारी सरक्षण पर फिर भी लाग उनकी पलको पर उठाये रहे। केवल उनका ही अपना पहरुआ अपना नता अपना माग-दशक मानत रहे। आम चुनाव म हार कर भी व्यास ा आम जनता म तो विजेता ही रह।

सन् 1967 क राजनीतिक परिदृश्य को वलाग दृष्टि से देखने वाल जानत हैं कि पूरे राष्ट्र म उस समय झभावात-सा आया हुआ था। कई राज्या म सविद सरकारें बनी। कई स्थाना पर दल बदल की राजनीतिक भ्रष्टाचार की घटनाए सामने आई। महारावल लक्ष्मणसिंह न जो उस समय राजस्थान विधानसभा क विराधी दल के नेता थे एक वक्तव्य म उस समय की स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया है

पिछल आम चुनाव म कांग्रेस कई प्रान्ता म हारी है और कई जगह कांग्रेसी सरकारें गठित हुई हैं। राजस्थान म कांग्रेस स्पष्ट रूप स हार गई उस राजस्थान विधान-सभा की 184 सीटा म स केवल 87 स्थान प्राप्त हुए हैं। उसके बाद भ्रष्टाचार प्रलोभन अनुचित दवाव तथा राज कमचारिया की सहायता म विरोधी पक्ष के कई

स्व श्री मुरलीधर व्यास के पूज्य पिता स्व श्री सूरजकरणजी व्यास

वैवाहिक यज्ञ-वेदी पर सपत्नीक लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास व श्रीमती सावित्रीदेवी कन्यादान के मंगल संकल्प में भावविभोर हैं।

व्यासजी के ससुराल का परिवार। बायें से (खड़े हुए) क्रमशः श्री शिवनारायण बिस्सा, श्री ब्रजकिशोर पुरोहित और श्री नेमीचंद बिस्सा। (बैठे हुए) श्रीमती बरजीदेवी (सास) तथा श्री आसकरण बिस्सा (ससुर)।
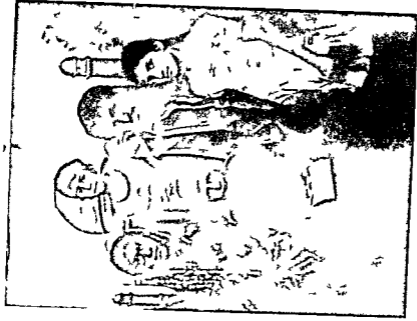
स्व श्री -यासजी के पुत्र श्री घनश्याम यास व श्रीमती तारा व्यास तथा ज्येष्ठ पौत्र श्री वसत कुमार सतोप कुमार और पौत्री कु आरती व्यास।
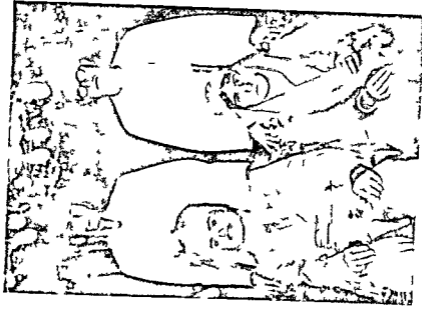
स्व श्री व्यासजी की पुत्री मजुबाला एव दामाद श्री प नालाल आचाय के पाणिग्रहण सस्कार पर सौभाग्य की कामना करते हुए श्री [illegible] और श्री चांदमल अभाणी।

लाकनेता श्री मुरलीधर यास के दामाद श्री सुन्दरलाल जगाणी और पुत्री विमला।

लोकनता मुरलीधरजी यास के दामाद श्री दामोदर गोपा एवम् पुत्री शान्ति।

लोकनेता श्री मुरलीधरजी व्यास के दामाद शिवकुमार थानवी और पुत्री कांति

स्व. श्री मुरलीधरजी व्यास के पुत्र श्री चन्द्रशेखर 'आजाद' और
पुत्रवधू श्रीमती कृष्णा व्यास।

ववाहिक सदभ म सग सम्ब घी (श्री गोपाजी) का स्वागत करते हुए यासजी क बड भाई
श्री वशीलाल्जी व्यास और लाकनता श्री मुरलीधरजी यास।

लाकनता श्री मुरलीधर व्यास की पुत्रियाँ एव नातिन। क्रमश शान्ति कृष्णा थानवी
मजु मीनू थानवी आदि। पीछे खडी हैं कल्पना एव ववी।

नताओ को गिरफ्तार किया गया जनता पर गोलियां चलाई लाठियां बरसाई तथा अश्रुगैस का प्रयोग किया। इस तरह आतंकवाद का सहारा लेकर राजस्थान म काग्रेस न अपन प्राकृतिक अल्प मत को कृत्रिम बहुमत म बदल लिया। जो सरकार बनी है वह विशुद्ध काग्रेसी सरकार नहीं है वही की ईट कही का रोडा भानुमति न कुनबा जोडा की कहावत चरितार्थ होता है।

व्यासजी इस परिदृश्य के साक्षी ही नहीं सक्रिय भागीदार भी थे। उस समय उनको भी जयपुर बुलाया गया था। विरोधी पक्ष की ओर स विशाल जुलूस का आयोजन रखा गया था। तत्कालीन राजा महाराजा रानियाँ जुलूस म पैदल चल रही थी विरोधी पक्ष के सभी दिग्गज नेता थ हजारो हजारो लोग नारे लगाते हुए चल रहे थे जस पूरा जयपुर ही उमड पडा हो। फिर गिरफ्तारियां हुई अश्रुगैस छूटी गोलियां चली लोग हताहत हुए कर्फ्यू लगा जयपुर म आतंक की स्थिति बनी और इस तरह राजनीति का कारवा ऊबड खाबड रास्ते स आगे बढा। राष्ट्रपति शासन की घोषणा काग्रेस का राज्य प्रदान म बनाए रखन का राज्यपाल का प्रयत्न आदोलन और फिर इन प्रयत्न आदि सभी न मिलकर राजनीति म ऊची नैतिक मूल्यों की लगभग समाप्ति कर डाली।

सन् 1967 म विधान सभा चुनाव म अपनी पराजय के एक दिन बाद ही व्यासजी न दाँती बाजार बीकानेर म जो सभा रखी वह स्मरणीय रहेगी। सभा म पग रखने तक को भी जगह नहीं थी। व्यासजी लगभग एक घण्टा बोले। उद्वेलित लोगों न उनकी जय जय कार की। व्यासजी न कहा– राजनीति म जय पराजय चलती रहती है लेकिन इसस मेरी सेवा भावना कम नहीं हो सकती। मैं पहले भी आपका सिपाही था आज भी हूँ और आगे भी रहूँगा। सभा के बाद हजारों लोग नारे लगाते हुए उनके पीछे पीछे चले। यह था उनके प्रति लोगों का आदर भाव। चुनाव म पराजित नेता जनता के लिए तो अब भी उसका प्रतिनिधि ही था। वह चाहे विधान सभा म न गया हो पर जनसभा म तो वही उनका जन प्रतिनिधि था। जनता की अदालत ने पराजय के बावजूद जस मान देने के क्षण म उनके पक्ष म ही निर्णय किया था।

व्यास जी ने सन् 1967 स 1971 तक श्रमिकों मजदूरों एव जन साधारण की समस्याओं पर पूरे दमखम स वक्तव्य दिये तथा प्रदर्शनों का नेतृत्व किया। उन चार वर्षों म एक दिन न दिन भी व सुस्ताये नहीं वरन् पहले स अधिक उत्साह स कार्यरत रहे। श्रम के प्रति अपनी दृढ आस्था व्यक्त करते हुए उन्होंने 21 दिसम्बर 1967 को नादनरोनर व[illegible] श्रमिक [illegible] म जो वक्तव्य दिया वह युग

युग के सत्य को उजगार करने वाला था। व्यासजी ने कहा– हम देश के अथशास्त्र को समझने के लिए कुछ बुनियादी बातों को समझना होगा। जो देश श्रम की ताकत म जितनी ज्यादा दौलत पदा करेगा उतना ही उन्नत होगा। देश की दौलत रुपया पसा नहीं बल्कि श्रम है। सरकार तथा देश के नेताओं को अपने हर कदम म श्रम का मूल्यांकन करना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो देश की दौलत बढ़ेगी तथा औद्योगिक क्षेत्रों म शांति रह सकेगी। मजदूरों की सुविधाओं के लिये तथा उन्हें उचित पारिश्रमिक देने के लिए कुछ प्रगतिशील कानून तो बने हैं पर आज की पूजीवादी व्यवस्था उस पर इतनी हावी हो गई है कि लम्बे अर्से तक मजदूरों को उसका लाभ नहीं मिला यदि सावजनिक एव व्यक्तिगत क्षेत्रों म जायट मैनेजमट कौंसिलो का निर्माण हो तथा बोर्डों म मजदूरों को भी प्रतिनिधित्व मिले तो मालिक और मजदूर अपने अपने उद्योगो की आर्थिक स्थिति समझ सकेंगे तथा मिल कर उसके विकास का प्रयत्न करेंगे।

श्रमिक शिक्षण शिविर म श्रम एव पूजी की महत्ता का एक अत्यन्त ही संक्षिप्त विश्लेषण व्यास जी ने किया जो श्रम सम्बन्धों की बुनियाद बन सकता है।

रेलवे कमचारियों की समस्याओं के प्रति व्यासजी अत्यन्त सजग एव सवेदनशील थे। 31 जुलाई 1967 को नादर्न रेलवे मैन्स यूनियन की सेन्ट्रल कौंसिल के निर्णयानुसार बीकानेर के मण्डल अधीक्षक कार्यालय के सम्मुख भी चौबीस घण्टे का उपवास रखा गया था। रेल क्रांति पाक्षिक ने 16 अगस्त 1967 के अक म इस प्रसग को निम्नानुसार प्रस्तुत किया–'यह उपवास सरकार कमचारियों व जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया था कि सरकार रेलवे कमचारियों का महगाई भत्ता बढाने म आनाकानी कर रही है तथा रेलवे खच म कमी के नाम पर रेलवे कमचारियो पर काम का बोझ अधिक बढाया जा रहा है और उनके तरक्की के साधन रोके जा रहे हैं। उसी दिन शाम को डी एम आफिस के सामने एक सभा हुई जिसम साथी पूर्णानन्द व मुरलीधर व्यास के भाषण हुए। रेल कमचारियो की मांगों का समथन करते हुए उन्होंने कहा कि वेज फ्रीज जिन प्रगतिशील देशों म लागू है वहां बाजार के भाव भी नियत रहते हैं जिसके कारण कमचारियों को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। यहां तो चीजों का भाव बढ़ाना या घटाना पूंजीपतियों के हाथ म है।

ऊपर के दोनों वक्तव्य श्रम की महत्ता श्रम द्वारा दौलत के उत्पादन श्रम के मूल्यांकन की आवश्यकता औद्योगिक क्षेत्र म शांति की उपादेयता व्यवस्था समितियों म

श्रमिकों के प्रतिभागित्व वेज फ्रीज के साथ रेटम फ्रीज [भाव स्थिरीकरण] आदि अनेक ज्वलत बिन्दुआ पर ्यासजी के चिंतन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

व्यासजी इस बीच राजनीतिक राष्ट्रीय धारा से भी बराबर जुडे रह। उन्होंने 9 नवम्बर 1967 को प्रजा समाजवादी दल की राष्ट्रीय कायकारिणी की बठक म भाग लिया जो अहमदाबाद म श्री एन जी गारे की अध्यक्षता म सम्पन्न हुई थी। बठक म प्रमुख नताआ म सवश्री प्रेम भसीन सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी मुल्का गोविंद रड्डी मधु दण्डवत, मुरलीधर व्यास पीटर अल्वरिस एव नाथ प जसे व्यक्ति सम्मिलित थ। बठक म विदशी सूत्रा से मिले धन की सी बी आई रिपोट प्रकाशित करने की माग की गई। उत्तरप्रदेश बिहार और पश्चिमी वगाल की सविद सरकारा के प्रजा समाजवादी मन्त्रिया के अक्टूबर अधिवेशन की रिपोट पर विचार किया गया। चर्चा के उपरान्त यह निणय लिया गया कि उन मन्त्रियो का निर्देश दिये जावें कि वे दल द्वारा निर्धारित 11 सूत्री बिन्दुओ के क्रियान्वयन के लिए अपनी अपनी सरकारो पर जोर डालें। जो अन्य प्रस्ताव स्वीकृत किये गये उनम डाक्टर राममनोहर लोहिया की मत्यु पर शोक प्रस्ताव उडीसा क समुद्री तूफान पर सवदना एव सावजनिक/साम्प्रदायिक दगो पर क्षोभ के प्रस्ताव सम्मिलित थे। दश की राजनीतिक स्थिति का दिग्दशन करवाने वाला एक अन्य प्रस्ताव भी स्वीकृत किया गया जिसम कहा गया कि यद्यपि भारत के आधे से ज्यादा राज्या म गर काग्रेसी सरकारें है पर नयी सामाजिक व्यवस्था के निमाण अथवा सवल विकास की स्थितिया अभी नही बनी हैं। अपने 11 सूत्री बिन्दुआ म दल ने भू राजस्व बन्द करन कृषि कर लगान भूमिहीन कृषको के सभी कर माफ करने भूमिहीना को कृषि भूमि देन नव सिंचित भूमि पर सिंचाई कर नही लगाने प्रति परिवार कृषि के लिए पन्द्रह एकड स अधिक भूमि नही दने भ्रष्टाचार के खिलाफ जाच आयोग गठित करने गरीबो को सस्ते मूल्य पर धान व दालें दने चावल एव गेहूँ क एकाधिकार वाले क्रय की व्यवस्था करने 1800 रु वार्षिक आय तक अभिभावकों के बच्चा से टयूशन शुल्क न लने गुप्त मतदान स बहुमत क आधार पर कमचारी यूनियनो का मान्यता देने एव गहू तथा चावल की मिला को सहकारी क्षेत्र म लेने की बातें कही थी। इस राष्ट्रीय नीति का निमाण करने वाले 15 व्यक्तिया म व्यासजी भी एक थे।

बीकानर स्थित अपने दल की बठको म भी व्यासजी बराबर भाग लेत थ। 25 मई 1967 की एक बठक के वृतात जो स्थानीय समाचार पत्रो मे छपे हैं के अनुसार बठक म अनाज की समस्या डिपो आवटन म हान वाली दुविधाए जल वितरण की स्थिति नगर म कानून एव व्यवस्था क विघटन की स्थिति नगर परिषद् के करो के

निर्धारण आदि समस्याओं पर विचार किया गया तथा आवश्यक कदम उठाये जाने की माग की गई।

राष्ट्रीय मंच पर व्यासजी की छवि त्यागी संघर्षशील और जनता का सबल प्रतिनिधित्व करने वाले जन नेता के रूप में थी। यह छवि वर्षों के त्याग का ही प्रतिफल था।

सन् 1968 का वर्ष व्यासजी के लिए राष्ट्रीय व प्रांतीय धरातल पर घटना प्रधान वर्ष था। वर्ष के प्रारम्भ से ही उन्होंने फरीदनगर (कानपुर) में आयोजित अपने दल के चार दिवसीय नवें राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। इसी सम्मेलन में प्रसिद्ध सात सूत्री कार्यक्रम दल के सामने काम स्वीकृत किया गया था। व्यासजी को एक बार पुनः राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में चुना गया। उस कार्यकारिणी में श्री एन जी गोरे अध्यक्ष तथा प्रेमभसीन महामन्त्री के रूप में निर्वाचित हुए। सदस्या में सर्वश्री पीटर अल्वारिस प्रेम कस्आ नाथ पै समर गुहा सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी ब्रजमोहन तूफान सनत महता एच वी कामथ हर भजन सिंह मधु दण्डवते मुल्का गोविंद रेड्डी मुरलीधर व्यास सूरज नारायण सिंह सुब्रमण्यम प्रो मुकुट बिहारी लाल यमुना प्रसाद शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय है। साप्ताहिक हिन्दुस्तान दिनांक 3 जनवरी 1968 के अनुसार सप्त सूत्री कार्यक्रम में क्रांतिकारी भूमि सुधारों तथा समन्वित मूल्य नीति पर अमल के लिए शांतिपूर्ण जन संघर्ष का आयोजन और साम्प्रदायिक भावनाएं भड़काने एवं विघटनकारी प्रवृत्तियों को बल देने वाली अराजकता की शक्तियों से संघर्ष की बात भी शामिल हैं। प्रस्ताव में यह सुझाव दिया गया कि विशिष्ट विषयों पर समान विचार वाली शक्तियों के सहयोग से संगठित रूप में कार्यवाही की जाय और अंतत समाजवादी एकता की स्थापना हो। अन्य कार्यों में ये बात शामिल हैं—चुने हुए क्षेत्रों में दल के जनता प ा को और व्यापक बनाया जाए संसदीय ढंग से समाजवाद के लिए लड़ा जाए दल के कार्यकर्त्ताओं की असंगठित मजदूरों को संगठित करने में सक्रिय सहायता की जावे आदि। सम्मेलन में व्यासजी सहित महत्वपूर्ण नेताओं के भाषण हुए एवं कुछ विशिष्ट निर्णय लिए गये। यह तय पाया गया कि संविद सरकारों में सम्मिलित प्रजा समाजवादी मन्त्री कुछ और समय तक मन्त्रीमण्डलों में बने रहेंगे क्योंकि उन्हें जनता को दिये आश्वासनों को अभी पूरा करना है। एक करोड टन के खाद्य भण्डार बनाने की माग भी इस अवसर पर की गई। व्यासजी ने अपने दल की राष्ट्रीय नीति के निर्धारण में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया तथा राजस्थान की राजनीतिक स्थिति से भी प्रतिनिधियों को अवगत किया।

अखिल भारतीय प्रसोपा सम्मेलन में भाग लेने के बाद व्यासजी अपने दल के सदस्यों के विशेष आग्रह पर कलकत्ता गये। उस समय प्रचारित एक पम्पलेट के अनुसार — राष्ट्रीय प्रसोपा की कार्य समिति के सदस्य राजस्थान के नेर समाजवादी क्रांति के अजय प्रहरी निर्भीक योद्धा भूतपूर्व राजस्थान असेम्बली के प्रसोपा विधायक श्री मुरलीधर व्यास अखिल भारतीय प्रसोपा अधिवेशन, कानपुर में भाग लेकर जनता व पार्टी के विशेष आग्रह पर कलकत्ता पधार रहे हैं विज्ञप्ति की भावनानुसार व्यासजी का वहां अभूतपूर्व स्वागत हुआ तथा उनके सम्मान में 10 जनवरी 1968 को अग्रसेन स्मृति भवन कलाकार स्ट्रीट सत्य नारायण पार्क के सामने एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता संसद सदस्य प्रो समर गुहा ने की। सभा में मुरलीधर व्यास बृजमोहन पुरोहित एवं रामचन्द्र शर्मा आदि नेताओं ने भाषण दिये। व्यासजी ने विशेषकर राजस्थान की राजनीति पर प्रकाश डालते हुए चुनावोपरान्त राष्ट्रपति शासन दल बदल गोली काण्ड आदि की चर्चा की तथा संविद सरकारों की भूमिका एवं राष्ट्रीय नीतियों पर प्रकाश डाला।

कलकत्ता से लौटकर व्यासजी पुनः अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं को उजागर करने एवं उनके समाधान ढूंढने की दिशा में कार्यरत हो गये। 13 फरवरी 1968 को रतन बिहारी पार्क बीकानेर में एक विशाल आम सभा हुई जिसमें विरोधी दल के नेताओं ने देश की बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला। साप्ताहिक सत्य विचार (दिनांक 15 फरवरी, 1968) के अनुसार— सभा में भारतीय क्रांति दल के प्रदेश महामन्त्री श्री दौलतराम सारण ससोपा नेता श्री माणिकचन्द सुराणा विधायक श्री चुन्नीलाल इन्दलिया प्रसोपा के श्री मुरलीधर व्यास आदि ने भाषण दिये नगर के भूतपूर्व विधायक श्री मुरलीधर व्यास ने कहा कि कानून की आड़ में भयंकर घोटाले किये गये हैं। श्री व्यास ने कहा कि राजस्थान नहर कार्य को पुनः प्रारम्भ कराने के लिए हम जन संघर्ष के लिए तैयार होना होगा। आपने कहा कि फड़ बाजार जो जिले की सब से बड़ी मण्डी है वहां पर सड़क सुधार का आश्वासन देकर भी पूरा नहीं किया जा रहा है। पलाना थर्मल पावर का कार्य भी अधूरा पड़ा है तथा मजदूर बेरोजगार हो गये हैं। व्यासजी ने उस सभा में दल परिवर्तन की भर्त्सना गेहूँ के भाव की बढ़ोतरी से जन आक्रोश, सड़क निर्माण कार्य में विलम्ब आदि अन्य बिन्दुओं की भी चर्चा भी की।

आज इतने वर्षों बाद भी जब फड़बाजार की टूटी सड़कें, भीड़ भरी एवं कीचड़ सनी गलियां देखते हैं और जब पलाना थर्मल पावर के कार्य को अधूरा लटका पाते हैं तो दूर दृष्टा व्यासजी की बरबस याद आ जाती है। राजस्थान नहर के लिए जिस जन-संघर्ष तक की उपादेयता व्यासजी ने प्रतिपादित की वह तो अन्ततः निर्माण की

मंजिल पार करता हुआ बीकानेर तक आ पहुंची है तथा जगतभर की धरा को शस्य श्यामला बनाने के लिए और आगे बढ़ रही है।

अप्रेल 1968 में बीकानेर में आयोजित प्रजा समाजवादी दल की एक सभा में प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता श्री मगनलाल बागडी ने, जो उस समय तक कांग्रेस में सम्मिलित हो चुके थे कहा कि बीकानेर को जब राजस्थान का भाग्य बनाने का अवसर मिला तो उसने राजस्थान का भाग्य बिगाड दिया। श्री बागडी का आशय श्री मुरलीधर व्यास की पराजय से था। कांग्रेसी नेता होते हुए भी भूतपूर्व समाजवादी श्री बागडी ने प्रजा समाजवादी दल की सभा में भाषण दिया तथा कहा कि–'मैं कांग्रेस का हूँ पर देश में सब भाई भाई हैं तथा इन झगडों के भेद को मैं जला कर समाप्त कर देना चाहता हूं। दल परिवर्तन मात्र से दिल परिवर्तन नहीं होता–इस बात का यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण था। जिन बागडी जी ने गंगा निकासी आंदोलन के समय व्यासजी का भरपूर सहयोग दिया था वे वर्षों बाद दल छोड देने पर भी व्यासजी के दल की आम सभा को सम्बोधित करने आए।

सन् 1968 में ही राजस्थान उच्च न्यायालय का एक महत्वपूर्ण निर्णय सामने आया। तत्कालीन मुख्यमन्त्री के विरुद्ध दायर की गई चुनाव याचिका को अस्वीकृत करते हुए भी न्यायालय ने नियमों की अवहेलना में चुनाव से पूर्व उदयपुर में करवाये गये पौने पांच लाख रुपये के निर्माण कार्य सस्ती कीमतों पर जमीन के पट्टों के वितरण बिना स्वीकृति के सडकों तथा सार्वजनिक नलों के निर्माण आदि कार्यों को नियम विरुद्ध घोषित किया तथा चुनाव के अवसर पर किये गये इन कार्यों को अनुचित बताया। न्यायालय ने आदेश दिया कि मुख्यमंत्री को मुकदमे का खर्च भी स्वयं ही वहन करना होगा। विरोधी दलों के अनेक नेताओं ने इस निर्णय के परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन राष्ट्रपति डा जाकिर हुसैन से मुलाकात करके तत्काल उचित कदम उठाने की मांग की ताकि सार्वजनिक जीवन का शुद्धिकरण किया जा सके।

इसी वर्ष प्रजा समाजवादी दल का प्रांतीय अधिवेशन बीकानेर में आयोजित किया गया। इसमें दल के अध्यक्ष श्री एन जी गोरे आल इण्डिया रलवे मैन्स फेडरेशन के अध्यक्ष श्री पीटर अल्वारिस राष्ट्रीय सेवा दल के सचालक श्री नाना डेंगले एवं प्रांतीय अध्यक्ष श्री जोरावरमल बोडा के अतिरिक्त सर्वश्री भगवानदास रतनलाल पुरोहित एवं मौलवी चांद खां जैसे प्रतिष्ठित नेताओं ने भाग लिया। सितम्बर 1968 में आयोजित इस सम्मेलन के अवसर पर श्री एन जी गोरे का बीकानेर स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया तथा उन्हें एक विशाल जुलूस के साथ नगर के विभिन्न भागों में ले जाया गया। जगह जगह पर स्वागत द्वारों के निर्माण एवं मोहल्लों में

स्वागत समितियो द्वारा नोटो की मालाओ के सम्मान से यह कार्यक्रम और भी अधिक आकर्षक बन गया। श्री गोरे ने प्रातीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि सामाजिक न्याय एव लोकतत्रीय परम्पराओ के लिए सघर्ष को और तेज करना होगा। उन्होने कहा आज भारत की जनता सशय वृति मे है। शाति, श्रद्धा और सताप का काल खण्ड समाप्त हो चुका है। प्रारम्भिक समस्याए हल नही हो पाने के कारण जनता मे निराशा की भावना फैलना स्वाभाविक है ताश कन्द मे हमने गलत फैसला किया हाजी पीर और करगिल का हमारा ही क्षेत्र जो हमारी सेनाओ ने भारी कुर्बानी देकर उन्हे जीत लिया था, वापिस लौटा गया दिया

उन्होने कहा कि समान विचार वाले दलो के साथ एक राय हो सकती है पर बिना सिद्धान्त के उपरी एकता हम नही चाहते।

राष्ट्र सेवा दल के सचालक श्री नाना डगले ने कहा कि देश का नव निर्माण मानवीय समाजवादी आधार पर ही हो सकता है। आज जब विश्व भर मे मानवता की एकता की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है साम्प्रदायिक भावनाओ को उभारना किसी भी हालत मे बुद्धि सगत नही है। मौलवी चाद खा ने भी राष्ट्रीय एकता एव इन्सानियत को जिन्दा रखने के लिए कुर्बानी की आवश्यकता पर बल दिया। सम्मेलन के अवसर पर आयोजित आम सभा मे सर्वश्री रतनलाल पुरोहित जोरावरमल बोडा, मुरलीधर व्यास भगवानदास, बुलाकी दास बोहरा, हनुमानदास आचार्य एव नारायण दास रगा के भी भाषण हुए। स्वागताध्यक्ष श्री सुगनचद पुरोहित ने गोवा मुक्ति आदोलन के प्रमुख समाजवादी नेता श्री एन जी गोरे एव आल इण्डिया रेल्व मैंस फेडरेशन के अध्यक्ष श्री पीटर अल्वारिस के आगमन को बीकानेर के लिए सौभाग्य की बात बताया।

सम्मेलन मे पारित एक प्रस्ताव मे चकोस्लावाकिया की जनता के साहस की सराहना की गई। राजस्थान की विषम आर्थिक स्थिति श्रम शक्ति के सगठन की आवश्यकता एव स्थानीय पत्रकार पर किये गये हमले की भर्त्सना सम्बधी कुछ अन्य प्रस्ताव भी पारित किय गये। इस सम्मेलन मे वयोवृद्ध समाजवादी नेता श्री रतनलाल पुरोहित (जोधपुर) को प्रातीय अध्यक्ष एव श्री मुरलीधर व्यास को प्रातीय मन्त्री निर्वाचित किया गया, तथा एक इक्कीस सदस्यीय प्रदेश कार्यसमिति का भी सर्व सम्मति से गठन किया गया।

सितम्बर 1968 मे श्री मुरलीधर व्यास ने रतन बिहारी पार्क मे रेलवे मैंस यूनियन द्वारा आयोजित एक आम सभा मे कर्मचारियो के समक्ष बोलते हुए कहा कि—'अध्यादेश लोकतत्र की हत्या है और इससे मजदूरो मे तनाव बढेगा। 19 सितम्बर, 1968

की प्रस्तावित हड़ताल राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा अवैध घोषित कर दी गई थी। उसी प्रसंग में श्री व्यास ने ये उद्गार व्यक्त किये थे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि समय रहते सरकार को चाहिये कि वह केन्द्रीय कर्मचारियों की बुनियादी मांगें स्वीकार करे। उन्होंने कहा कि वह दिन दूर नहीं कि जो लोग आज रेल का चक्का जाम करने की बात कहते है वे हुकुमत के चक्के भी जाम करने की बात कहेंगे।

अकाल की विभीषिका के बारे में जिलाधीश बीकानेर को दिये गये अपने एक ज्ञापन में दल की ओर से कहा गया कि करीब एक माह से बीकानेर में अकाल की स्थिति भयंकर हो गई है। पानी की आशा में समय बीत गया है तथा किसान और उसका पशुधन काल के मुंह में चला गया है। महंगाई ने जन जीवन को इस कदर घेर लिया है कि उसके लिए रहे सहे पशुधन को बचाना भी कठिन हो गया है। ज्ञापन में निवेदन किया गया कि बीकानेर के समस्त गांवों को अकालग्रस्त मानकर राहत कार्य शुरु किये जाएं। यह चेतावनी भी दी गई कि यदि यह कार्य एक सप्ताह में नहीं किया गया तो गांवों में मरे हुए पशुओं के ढेर के ढेर लग जायेंगे और इन्सान भी इस धरती पर मरते हुए नजर आयेंगे।

अकाल के प्रश्न पर श्री व्यास निरन्तर संघर्ष करते रहे। उन्होंने उत्तरदायी लोगों से सम्पर्क करके इस समस्या के समाधान के लिए अनवरत प्रयत्न किये। 30 नवम्बर 1968 को राजस्थान के खाद्य एवं अकाल राहत मन्त्री श्री परसराम मदेरणा को लिखे गये एक पत्र में उन्होंने कहा कि सर्व प्रथम हम बतलाना चाहते हैं कि बारबार सरकार का ध्यान आकर्षित करने के बावजूद राहत कार्य अत्यन्त मंदगति से चल रहे हैं। राज्य में बहुत तादाद में पशुधन और गायें मर चुकी है। अब स्थिति यह हो गई कि कोलायत तहसील में समय पर राहत व अनाज मजदूरी एवं पौष्टिक खाद्य नहीं मिलने से सैकड़ों लोग मर चुके हैं। कुछ ग्रामीणों के नाम जांच के लिये दे रहा हूँ। 1 तारिका भारत गांव उदट 2 मीरा पत्नी कानाराम गांव केलनासर 3 चूनाराम मघवाल गांव भाणिकसर। इसके अतिरिक्त कोलायत कैम्प में जो लोग अनाज के अभाव में मरे हैं उनकी जांच कर रिपोर्ट अखबारों में प्रकाशित हो चुकी है।

इस तरह स्पष्ट है कि 1968 में व्यासजी ने राष्ट्रीय नीति के परिप्रेक्ष्य में तो महत्व पूर्ण भूमिका निभाई ही प्रांतीय एवं स्थानीय समस्याओं को भी उजागर किया। राष्ट्रीय सम्मेलन हो अथवा प्रांतीय सम्मेलन आयोजित करने का सवाल रेलवे कर्मचारियों के आन्दोलन को सम्बल देने की बात हो या अकाल की विभीषिका में जनधन एवं पशुधन के विनाश के विरुद्ध आवाज उठाने की बात अथवा विरोधी दलों की सम्मिलित आम सभाओं को सम्बोधित करने का सवाल—ऐसे अनेक कार्य थे

जि द् गिनाये तो एक लम्बी तालिका तयार हो जाएगी। व्यासजी अनथक अविरल संघर्षमय जीवन के प्रणेता थे। एक भी आंख में जब तक एक भी आंसू रहे वे अपने कर्त्तव्य से विमुख होकर आराम नहीं कर सकते थे। चिल चिलाती धूप हो या कड़कड़ाती सर्दी वे रात दिन आठों याम लोगों की सेवा के लिए तत्पर रहते थे।

इसी भावना के साथ उन्होंने अकाल के प्रसंग में जन हानि एवं पशु हानि की बात पूरे दमखम के साथ रखी। उनके वक्तव्य सभी महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाओं में सुर्खियों के साथ छपा करते थे। जनता की पीड़ा के प्रति उनकी केवल शाब्दिक सहानुभूति मात्र नहीं थी। उसके लिए उन्हें लाठियों के प्रहार भी सहन पड़े। 1969 का वर्ष इस बात का साक्षी है कि एक जन हितैषी के साथ कितना निर्मम व्यवहार किया गया था। उस अमानुषिक पाशविकता के प्रदर्शन पर चारों ओर से निन्दा एवं भर्त्सना के स्वर भी गूंजे थे। यह घटना 7 अगस्त 1969 की है। झींमड़ी की आवाज (13 अगस्त 1969) अनुसार घटना का वृतान्त इस प्रकार है। जन नेता मुरलीधर व्यास ने दिनांक 5 अगस्त 1969 को मोहता के चौक की आम सभा में यह घोषणा की थी कि मुख्यमंत्री श्री सुखाड़ियाजी जो 7 अगस्त को बीकानेर आ रहे हैं, को ज्ञापन प्रस्तुत कर मांग की जायगी कि बीकानेर में दूर निवासी बन्द की जाए, अकाल राहत कार्यों में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त किया जाए राहत कार्य जो बन्द किये गये हैं उन्हें चालू किया जाए। इस घोषणा के अनुसार सारे मुद्दों को लेकर 7 अगस्त को श्री व्यास के नेतृत्व में एक जुलूस शहर के प्रमुख भागों में प्रदर्शन करते हुए सर्किट हाउस पहुंचा। वहां पर प्रदर्शनकारी शांति पूर्ण तरीके से सर्किट हाउस के बाहर आम सड़क पर खड़े थे। श्री मुरलीधर व्यास ने सड़क पर तांगे के ऊपर खड़े होकर अपना भाषण आरम्भ करते हुए कहा कि हम जनता के दुःख तकलीफों को लेकर आये हैं और हम अपना ज्ञापन पेश करेंगे। सर्किट हाउस में अकाल राहत मंत्री श्री परसराम मदेरणा एवं पी डब्ल्यू डी मंत्री श्री अमीनुद्दीन लुहारु नवाब थे।

श्री व्यास ने कहा कि हम अपना ज्ञापन देंगे, हमें अन्दर जाने दिया जाए तभी सर्व प्रथम प्रसोपा के युवा नेता श्री नारायण दास रंगा पर लाठी प्रहार किया गया। परिणामतः उनका सिर फूट गया। इस पर श्री व्यास तांगे से फौरन नीचे उतरे और मुकामी अफसर एस पी से कहा कि यह सरासर अन्याय है इतने में ही श्री व्यास पर लाठियों से ऐसा जबरदस्त वार किया गया कि वे अचेत होकर गिर पड़े। इतना ही नहीं उनकी अचेतावस्था में भी लाठी प्रहार बन्द नहीं किया गया। नगर परिषद् के भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री शिव किसन आचार्य (कंजल सा) उनके ऊपर हो गये जिससे उनके भी काफी चोटें आई। उन्होंने तथा श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा विष्णु उर्फ नूं व बजरंगदास ने श्री व्यास को उठाया व सर्किट हाउस

क अन्दर ले जाया गया। श्री व्यास रात को दो बजे तक अस्पताल में बेहोश रहे और उनका खून बहता रहा।

अपने पर किये गये निर्मम लाठी प्रहार के प्रसंग में व्यासजी ने स्वयं एक वक्तव्य प्रसारित करते हुए कहा कि साधारण परिस्थिति में यह क्या षडयंत्र था यह तो जाच से ही सिद्ध होगा, पर मैं इतना कह सकता हूँ। कि जिस अमानुषिक तरीके से मुझ पर प्रहार किया गया वह मुझे जान से मार डालने का षडयंत्र था। मुझ पर प्रहार हुआ है इसलिए मैं इस पर अधिक नही कहना चाहता पर लोकतंत्र में विरोध को दबाने के लिए इस ओछे हथियारो का इस्तेमाल कर हत्या की नीति अख्त्यार की गई तो यह देश के लोकतंत्र कानून व न्याय के राज्य को समाप्त कर देगी तथा किसी राजनीतिक व्यक्ति का जीवन खतरे से बाहर नही होगा।

श्री व्यास ने सरकारी विज्ञप्तियो के बारे में टिप्पणी करते हुए कहा कि सर्व प्रथम लाठी चार्ज हो जाने के बाद बीकानेर के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने 7 अगस्त की रात्रि को जन सम्पर्क कार्यालय द्वारा जो विज्ञप्ति प्रकाशित करवाई है उसमें कहा है कि सर्किट हाउस में जबरन प्रवेश करने की स्थिति में मेरे तथा अन्य कुछ साथियो व सिपाहियो के चोट आई। उस वक्तव्य में कही भी प्रदर्शनकारियो के साथ काले झण्डा घेराव तथा मेरी और किसी की गिरफ्तारी की कोई चर्चा नही थी। दूसरी ओर राजस्थान पत्रिका जयपुर में सरकार द्वारा 8 अगस्त को प्रसारित अधिकृत सूचना में कहा गया है कि 6 अगस्त को प्रसाधा ने काले झण्डा के प्रदर्शन एवं घेराव की घोषणा की तथा 7 अगस्त को प्रदर्शन लेकर सर्किट हाउस गये। वहा प्रदर्शनकारियो को पुलिस ने रोका तो उन्होने काले झण्डा के लिए लाए गये बासो से पीटना शुरू कर दिया तथा पुलिस ने बचाव किया। इसके अतिरिक्त कोई भी अखबार अथवा प्रत्यक्षदर्शी पत्रकार नही कहता कि प्रदर्शनकारियो ने लाठियां चलाई तथा मुझे गिरफ्तारी से रोकने के प्रयत्न में चोटें आइ। सच तो इस बात का है कि जब न्यायिक जाच की माग की जाती है तो गृहमंत्री कहते हैं कि लाठी चार्ज नही किया गया तथा मुझ व प्रदर्शकारियो के चोट इसलिए आई कि मेरी गिरफ्तारी को प्रदर्शन कारी रोकने लग गये थे मैं यह स्पष्ट कर देता हूँ कि सरकारी विज्ञप्ति और सदन में दिये गये वक्तव्य में एक भी तथ्य सही नही है। मैं अपने पूर्ण उत्तर दायित्व के साथ कहता हू कि प्रदर्शन में सभी पार्टी फ्लग तथा जनता की मागो के पोस्टर थे। प्रदर्शन में कही भी एक भी काला झण्डा नही था। घेराव की बात पूर्णत गलत है गिरफ्तार करने पर प्रदर्शनकारी रोक रहे थे यह बात भी गलत है। यदि मैं गिरफ्तार होता तो अस्पताल में कमरे के आगे पुलिस की गार्ड होती तथा अस्पताल के अधिकारियो को भी सूचना होती पर ऐसा नही हुआ।

व्यासजी पर किए गए लाठी प्रहार की पूरे राजस्थान में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। स्थान स्थान पर लोगो ने प्रस्ताव पारित करके न्यायिक जाच की माग की। अखबारो के सम्पादकीय लेखो मे लाठी चाज की भर्त्सना की गई तथा राजस्थान विधान सभा मे स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से इस बिन्दु पर तीव्र बहस हुई। आक्रोश से भरे हुए विरोधी दल के नेताओ ने इस काण्ड को जनतत्र पर किए गए निमम प्रहार की सज्ञा दी। सरकारी पक्ष का प्रस्तुत करते हुए गृह मन्त्रालय के राज्य मन्त्री श्री हीरालाल देवपुरा ने कहा कि 'प्रसोपा नेताओ ने धमकी दी थी कि जब श्री सुखाडिया बीकानेर के सर्किट हाउस मे आयेंगे तो उनका घेराव किया जाएगा। उन्होने कहा कि मुख्यमत्री सर्किट हाउस नही गये, लेकिन प्रसोपाई प्रदशनकारी जिनका नेतत्व श्री मुरलीधर व्यास कर रहे थे ने पुलिस का घेरा तोडने की कोशिश की, जो कि सर्किट हाउस के दरवाजे के बाहर थे और हिंसक रूप धारण कर लिया। जब पुलिस ने श्री व्यास को गिरफ्तार करना चाहा तो प्रदशनकारियो ने रोका। उन्होने पथराव तथा डण्डो के वारो से पुलिस कमचारियो को चोटें पहुँचाई। श्री व्यास को उस समय जख्म हुआ जब पुलिस जनता को काबू कर रही थी। 6 पुलिस कमचारियो एव कतिपय प्रदशनकारियो के भी चोटें आई।

मत्री के वक्तव्य से असन्तुष्ट विरोधी विधायको ने इस जमा ये कहते हुए अपना तीव्र आक्रोश व्यक्त किया। श्री रामकिसन (ससोपा) ने कहा कि सावजनिक निर्माण मन्त्री और अकाल राहत मन्त्री सर्किट हाउस मे थे। वे शिष्ट मण्डल से नही मिले जो उनसे अकाल राहत काय के सम्बन्ध मे बात करने आया था। श्री रामानन्द अग्रवाल के अनुसार श्री व्यास पर किया गया वार निदयता पूण एव अन्यायपूण था। सर्किट हाउस के अन्दर एव बाहर काफी सख्या मे पुलिस कमचारी थे। यह लाठी चाज श्री व्यास को जान से मार डालने का षडयत्र था।' स्वतत्र पार्टी के नेता लक्ष्मणसिंह ने लाठी चाज को इरादतन बदले की भावना बताया। श्री भरोंसिंह शेखावत (जनसघ) ने कहा कि पुलिस ने बिना किसी आदेश के लाठी चाज किया। पुलिस ने तब भी उन पर वार किये जब श्री व्यास गिर चुके थे। वे श्री व्यास को मार डालते यदि निजि तौर पर उनका बचाव नही करते। श्री चुन्नीलाल इदनिया ने इसे प्राण घातक हमला बताते हुए कहा कि पुलिस ने श्री व्यास के तागे से नीचे उतरते ही इस प्रकार वार किये जैसे कि उनको जान से ही मार डालना हो। गृहमत्री ने घटना को दुःख पूण बताते हुए कहा कि घेराव बर्दाश्त नही किया जायगा। उन्होंने इस षडयत्र मे पुलिस का हाथ होने से इकार किया तथा कहा कि श्री व्यास के चोटें पुलिस के टकराव से ही आई है जब कि प्रदशनकारी उन्हे गिरफ्तार होने से रोक रहे थे। न्यायिक जाच की माग ठुकराये जाने पर सभी विरोधी सदस्यो ने सदन से बहिर्गमन करके अपना रोष प्रकट किया।

क चार वष

श्री व्यास या जुगाड़ स्वरूप निरंतर बना रहा गणतंत्र के गले में अध्यादेशों का फन्दा' शीर्षक से व्यासजी ने वक्तव्य को छापते हुए 'झोंपड़ी की आवाज' ने अपने 29 जनवरी 1970 के अंक में लिखा है कि 'भूमि सुधारों की माग रखने वाले सत्याग्रहियों पर जेलों में अत्याचार किये जा रहे हैं। उनको नाना प्रकार की यातनाएं दी जा रही हैं जिनके कारण कई सत्याग्रही तो जेलों में मर रहे हैं। निर्ममता पूर्वक गालियों की बौछार हो रही हैं। परिणामतः प्रजा परिषद् के समय के जंग जम्हूरियत के सिपाही श्री कानीराम और वंशीसिंह आज भी सरकार की हठधर्मी के कारण भारत माता की गोद में हमेशा के लिए सो गये हैं' गोली-काण्ड की जांच के आश्वासन के सिलसिले में श्री व्यास ने कहा कि उसमें यह कहीं नहीं कहा गया है कि सागरिया भादरा में हुए गोली काण्डों की जांच उच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा करवाई जाएगी व रिपोर्ट में पाये गये दोषियों को दण्डित किया जाएगा।

23 जनवरी 1970 को बीकानेर नगर में दो ऐतिहासिक कार्यक्रम हुए थे उनमें से एक था सीमान्त गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां का बीकानेर आगमन व दूसरा रामपुरिया कॉलेज में बीकानेर के रियासती शासन के समय के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के अभिनन्दन का कार्यक्रम। सीमान्त गांधी ने स्टेडियम की महती सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था कि महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष पर वह यह देखने के लिए आये हैं कि क्या भारतवासी उस महान् नेता के पद चिह्नों पर चल रहे हैं या नहीं। लगता है भारतवासी आज गांधीजी को भूल गये हैं और महात्मा बुद्ध के रास्ते से भी हट गये हैं। उन्होंने काका कालेलकर के शब्दों को दोहराते हुए कहा कि जापानी लोग कहते हैं कि यह देश आजादी के 22 साल बाद भी अपना पेट भरने के लिए अनाज पैदा नहीं कर सकता वरन् आस्ट्रेलिया जैसे छोटे देशों से अनाज और पैसे की भीख मांगता है। बादशाह खान के भाषणों से दो बातें स्पष्टतः सामने आती हैं—गांधी जी के रास्ते से भटकाव और गरीबी की व्यापकता। व्यासजी ने अपने राजनीतिक जीवन में गांधीजी के रास्ते का अनुगमन किया व गरीबों के हितों की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहे। व्यासजी इस बात से क्षुब्ध थे कि गांधी अथवा बादशाह खान की आकांक्षाओं के अनुरूप आचरण करने वाले अब विरले ही रहे हैं। रामपुरिया कॉलेज में आयोजित स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के स्वागत समारोह में उन्होंने जो भाषण दिया था उसमें आजादी के दीवानों के कार्यों की सराहना की गई। सभा में अभिनन्दित होने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में सर्वश्री रघुवरदयाल गोयल दाऊदयाल आचार्य गंगादत्त रंगा श्रीराम आचार्य रामनारायण शर्मा गोमतीदेवी नेमाराम सतीबाई कृष्ण गोयल गुलदृढ महाराज सुरेन्द्र शर्मा चम्पालाल उपाध्याय चिरंजीलाल सोनार एवं कानीराम स्वामी आदि कई नेता थे। व्यासजी

न राजनीतिक मतभेदों को दूर रखकर इन सभी नेताओं ने 1947 से पहले के त्याग की प्रशंसा की थी। अन्य वक्ताओं में सर्वश्री हीरालाल शास्त्री, भवानी शंकर शर्मा, सत्य नारायण पारीक, ललित आज़ाद आदि सम्मिलित थे।

अक्टूबर 1970 में बीकानेर नगर परिषद् के चुनावों में व्यासजी द्वारा समर्थित कई साथी पार्षदों के रूप में चुने गए। इनमें श्री किशनगोपाल पुरोहित, श्री विष्णुदत्त उर्फ नू पहलवान, श्री सम्पत लाल मजाकची आदि मुख्य थे। 28-10-70 को विरोधी पार्षदों की एक सभा लोकतांत्रिक समाजवादी नागरिक मोर्चे के नाम से व्यासजी के संयोजन में सम्पन्न हुई जिसमें एक स्पष्ट संयुक्त योजना व कार्यक्रम पर विचार किया गया। सभा में विभिन्न राजनीतिक दलों व स्वतंत्र पार्षदों को आमंत्रित किया गया था। सभा में अन्य लोगों के अतिरिक्त सर्वश्री भँवरलाल कोठारी, किशन गोपाल पुरोहित, रफीक अहमद, राम नारायण शर्मा, महेशसिंह, विष्णुदत्त 'नू' व दाऊ दयाल आचार्य ने भाग लिया। व्यास जी प्रजातांत्रिक संगठनों में जन प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर सदा जागरूक रहते थे। यही कारण था कि उनके आह्वान पर कई महत्वपूर्ण पार्षदों ने सभा में भाग लिया था। बाद में अनार आचार्य आदि के सम्मिलित हो जाने से मोर्चे की शक्ति और अधिक बढ़ गई।

सन् 1970 के मार्च में साथियों व प्रांतीय नेताओं के विशेष आग्रह पर व्यासजी ने राज्य सभा में सदस्य के रूप में अपना मनोनयन पत्र भरा। अपनी विज्ञप्ति में व्यास जी ने कहा था 'यह आपको विदित ही है कि राजस्थान से राज्य सभा के उम्मीदवार के रूप में मैं खड़ा हुआ हूँ। लोकतांत्रिक समाजवाद की परम्पराओं तथा आदर्शों को यथा शक्ति पूर्ण बल पहुँचाना मेरे जीवन का लक्ष्य है। इस दिशा में मेरे द्वारा सर्वथा निष्ठा के साथ किए गए सतत प्रयत्न के बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

मतदान 28 मार्च 1970 को प्रातः 10 बजे से 4 बजे अपराह्न तक राजस्थान विधान सभा भवन में हुआ पर जो होना था वह तो पहले से स्पष्ट ही था। जनता के पुरोधा और योद्धा को राज्य सभा में भेजने में वे सारी शक्तियाँ एक बार फिर बाधक बनीं जो राजनीति को अपने निजी हितों या दलीय हितों में संयोजित करने में सिद्धहस्त थीं। एक बार फिर छिछले समूहवाद एवं सत्तापरस्त राजनीति के हाथों त्याग की कथित पराजय हुई पर कसौटी पर बार बार चढ़ा बाना यह त्याग जन सेवा के क्षेत्र में तो पूर्ववत अविजित हो रहा।

व्यासजी ने 1970 में दो महत्वपूर्ण अधिवेशनों में भी भाग लिया। उनमें पहला अधिवेशन बड़ौदा में आयोजित किया गया था। अपने दल के इस अधिवेशन में

व्यासजी ने 2 फरवरी 1970 से 7 फरवरी 1970 तक भाग लिया एव महत्वपूर्ण विषयो पर चर्चाएँ की। इसी प्रकार प्रजा समाजवादी दल के साकरवाडी अधिवेशन मे वे 31 दिसम्बर 1970 से 3 जनवरी 1971 तक सम्मिलित हुए थे। यह अधिवेशन 1971 मे आगामी ससद के चुनावो को दृष्टिगत रखते हुए अत्यन्त महत्व का माना गया था। साकरवाडी (जिला अहमदनगर महाराष्ट्र) मे सम्पन्न हुए इस सम्मेलन से पूर्व व्यासजी जोधपुर होते हुए बम्बई पहुँचे थे तथा अपने साथी रतन लाल पुरोहित (प्रातीय अध्यक्ष) के आमत्रण पर वे वहा पर आयोजित वकीलो के सम्मेलन मे भी उपस्थित हुए।

अगस्त 1970 मे अर्थात अपने निधन से मात्र 9 महीने पूर्व व्यासजी ने बीकानेर मे दूध निकासी के विरोध मे आन्दोलन का सूत्रपात किया। 9 अगस्त 1970 को प्रारम्भ किये गये इस आन्दोलन के बारे मे स्व दादा गवरच द आर्य ने समाजवादी सूचना प्रसारण केन्द्र की एक विज्ञप्ति मे कहा था कि बीकानेर मे 9 अगस्त 1970 से प्रारम्भ दूध निकासी ब द करो आन्दोलन किसी व्यक्ति या किसी जाति की अथवा सगठन की आवाज नही बल्कि यह आवाज है उन छोटे छोटे मासूम बालको की जिन्ह विश्वासवार भारत की बागडोर सभालनी है। यह आवाज है उन माताओ की जो अपने बच्चो को इस बढती हुई महगाई मे दूध नही दे सकती। यह आवाज है उस गरीब जनता की जो दूध के बदले मे अपने को और अपने बच्चो को चाय पर ही गुजारा करने को मजबूर होती है और यह आवाज है बीकानेर के हर नागरिक की जो बढती हुई महगाई मे इतना महगा दूध खरीदने के लिए मजबूर है।
इस प्रकार की परिस्थितियो से विवश होकर जन नेता श्री मुरलीधर व्यास ने आह्वान किया कि अब जुल्म बरदाश्त करने की पराकाष्ठा हो गई है और बीकानेर की जनता अन्याय के खिलाफ आवाज बुल द करने मे अग्रणी रहा है

इस दूध निकासी ब द करो की माग को लेकर 9 अगस्त से बीकानेर के जिलाधीश के समक्ष एक ज्ञापन प्रस्तुत किया गया जिसके फल स्वरूप मुरलीधर व्यास, सुरेन्द्र कुमार शर्मा आशाराम गहलोत देवा दत्त नारायण दास रगा राध श्याम वजनी दास हप आदि कार्यकर्ताओ को घर और दुकान पर बैठो को गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार की कार्यवाही से यह आन्दोलन रुकने वाला नही बल्कि और द्रुत गति से चला। बीकानेर की जनता यह बर्दाश्त करने के लिए कदापि तैयार नही थी कि यहा के बच्चो को दूध के लिए तरसाया जाए तथा दूध जयपुर और दिल्ली चला जाए। इस दूध को उसी स्थिति मे बाहर भेजने की अनुमति दी जा सकती है जब यहा के लोगो को सुचारु रूप से दूध मुहय्या हो सके।

पर स्थायी तागा स्टण्ड की व्यवस्था का आश्वासन दिया था पर वह आज तक क्रियान्वित नहीं किया गया है। तागे वाला का कभी बस स्टेण्ड (उस समय के बस स्टण्ड स्टशन के पास क मदान म था) पर खडे रहने का कहा जाता है तो कभी गगाशहर के टेक्सी स्टेण्ड के पास खडे रहन क आदेश हात है। इस अव्यवस्था का तत्काल दूर किया जाए।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि 1970 का वष भी व्यासजी के लिए अत्य त सक्रियता एव जन सतत्व का वष सिद्ध हुआ। माहवार विवचन किया जाय तो जनवरी 1970 म उ हाने स्वतत्रता सग्राम सनानिया के अभिन दन समारोह को सम्बाधित किया फरवरी म अपने दल क वकोला अधिवेशन म भाग लेने के साथ साथ बीकानेर म विराधी दला की सभा म भू सुधार को लेकर श्रीगगानगर जिले के आदालन का समथन किया। माच म उ हान राज्य सभा की सदस्यता का अभि यान चलाया बीकानेर म चल रहे सफाई मजदूर कमचारिया की हडताल के प्रसग म अपने स्पष्ट एव तकपूण वक्त य भी दिये। मई म तागा यूनियन के प्रस्तावा की परवी अगस्त म दूध निकासी बन्द करा आदोलन का अगुवाई अक्टूबर म नगर परिषद् क चुनावा के सदभ म विरोधी एकता की पहल तथा दिसम्बर म अपन दल के साक्खवाडी म आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन म सिरकत आदि बातें स्पष्ट बताती हैं कि व्यासजी अत्य त बुलन्दी के साथ जय पराजय स प्रभावित हुए बिना निर तर आगे बढते जा रहे थ। चरवेति चरवेति उनक जीवन का एकमात्र सिद्धा त था।

अपने महा प्रयाण वष (1971) म व्यासजी द्वारा लोक सभा के चुनाव म महाराजा डाक्टर करणी सिंह का समथन करना व उनके लिय वातावरण बनाना महत्वपूण घटना है। व्यासजी काग्रेस का समथन कर नही सकत थे तथा सबल विरोध के प्रत्याशी एव सत्ता क विकल्प क रूप म केवल डा करणी सिंह की विजय ही आशा की किरण जगाने वाली थी। अन्य विराधी प्रत्याशिया की विजय न केवल सदिग्ध थी अपितु सवथा असभव प्रतीत होता थी। 31 जनवरी 1971 को लक्ष्मीनाथ जी क मदिर म आयोजित सभा स डा करणीसिंह न अपन चुनावी अभियान का श्रीगणश किया। उन्होन अपन आपको जनता का सिपाही बतात हुए जनता की भलाई क लिए प्राण प्रण स काय करने का विश्वास दिलाया। सगरिया चूरू तथा बीकानेर क गाधी भाण्डा की निन्दा करत हुए डा करणी सिंह न कहा कि जनतत्र का गला घोटन वाला का डट कर मुकाबला किया जाएगा।

विरोधी दला की एकता के अभियान क अन्तगत श्री मुरलीधर व्यास न महाराजा डा करणी सिंह का साथ देना इसी शत पर स्वीकार किया कि व (डा करणी सिंह)

माजवाद म आस्था रग्वत हुए जनहित के काय करेंगे। 31 जनवरी 1971 को ा श्री माणिक चद सुराणा की डा करणी सिंह स वार्ता भी इसी सदभ म हुई थी। माजवादी नेताओ की इस रणनीति पर कुछ क्षेत्रो म आश्चय भी व्यक्त किया गया, र व्यासजी न जिस प्रकार इस मामले को जनता के सामन रखा उससे लोग आश्वस्त हो गय कि तत्कालीन परिस्थितियो मे उनका निणय सही था।

1971 म लोक सभा के प्रत्याशी डा करणी सिंह के भाषण भारतीय ससद मे विरोधी दलो क मान्य सद्धान्तिक/क्रियात्मक बिन्दुओ पर ही आधारित थे। अत विकल्प स्वरूप सबल विरोध को सत्ता मे लाने के लिए विजय प्राप्त करन योग्य प्रत्याशियो का समथन आवश्यक था। व्यासजी न यही किया। सभी प्रमुख विरोधी दलो क नताओ के भाषणो म मुख्य बिन्दु थ आजादी एव सत्ता के कुछ हाथो म केन्द्रीयकरण म स एक का चुनना है कुर्सीवादी सत्तापरस्त एव जन विरोधी ताकतो को हराना है, गोली-काण्डों की जाच सशक्त विरोध का निमाण, राष्ट्रवाद की परवी, सविधान की पवित्रता की रक्षा एव एकाधिनायकवाद का विरोध करना है आदि आदि। व्यासजी द्वारा डॉ करणी सिंह को दिया गया समथन इसी परिप्रेक्ष्य म देखा जाना चाहिए।

मध्यावधि चुनावो म जनता न एक बार फिर कांग्रेस को सत्ता म आने का अवसर दिया। अपनी मृत्यु स केवल दो माह पूव व्यास जी इस विषय म चिन्तित थे। डा श्रीनन्द जसलमेरिया ने अपन 25 माच 1971 क पत्र म प्रजा समाजवादी पार्टी के राज्य मत्री श्री मुरली धर व्यास को लिखा भी था– 'भारत म हुए मध्यावधि चुनावो के बाद जो स्थिति प्रत्यक्ष रूप स हम सब के सामने उपस्थित है उस पर राजस्थान व्यापी विचार करन के लिए राज्य समिति की एक आवश्यक बठक बुलाना मेरी राय म आवश्यक है और आप भी मरी राय से सहमत रखते ही होंगे। आशा है आप मरी राय क पूण समथक होग (कृपया) पार्टी की कायकारिणी समिति की बठक शीघ्र बुलान की कृपा करेंगे'

व्यासजी न अपने निधन स पूव राजकीय वूलन मिल वकस यूनियन की मांगो को भी अपना नतिक समथन दिया था। अपने 7–सूत्री माग पत्र म यूनियन ने राणावत कमीशन के आधार पर वेतन का बकाया चुकाना बोनस का भुगतान करना वरिष्ठता क आधार पर पदोन्नतिया देना चिकित्सा सुविधा दना मिल म होने वाली चोरियो की जांच करवाना ओवर टाइम का भुगतान करना आदि की मांगें रखी था। उनक कायक्रमानुसार 1 मई 1971 को मिल क गट क बाहर सभा का आयोजन 2 मई को मशाल जुलूस तथा 7 मई का पूण हड़ताल की बातें लागू की जाने वाली थीं।

इस बीच व्यासजी का स्वास्थ्य निरंतर गिरता रहा तथा चिकित्सा के लिए उन्हें स्थानीय पी बी एम हास्पिटल में भरती होना पड़ा। उनके गिरते हुए स्वास्थ्य की खबर उनके सभी हितैषियों शिष्यों एवं समर्थकों को मिल चुकी थी। कलकत्ता प्रवासी एवं व्यासजी के समर्थक श्री सत्य नारायण पुरोहित ने अपने एक पत्र में उन्हें लिखा 'आज बालचंद मेरे घर आया था। आपके स्वास्थ्य के बारे में जो समाचार उसने मुझसे कहा है उससे बड़ी चिन्ता तथा निराशा हुई तथा मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वह आपकी सेहत को ठीक रखे। मैं समझता हूं भगवान मेरी इस प्रार्थना पर अवश्य विचार करेंगे। आप जानते हैं कि आपकी जिन्दगी आपके घर वालों के अलावा समाज तथा देश की जिन्दगी है। आपको अपने शरीर का पूरा ख्याल रखना चाहिए। देश तथा समाज को आप जैसे सपूतों की बड़ी जरूरत है ।

दिनांक 30 5 1971 के अपने पत्र में श्री सम्पतलाल रंगाची ने अपने अन्यतम मित्र श्री बालचंद को लिखा व्यासजी हास्पिटल में भरती हैं। मैं खुद मिल कर आया हूँ। कमजोरी काफी है। व्यासजी कहते हैं कि लिवर की खराबी है। इलाज ले रहे हैं। नाग-बाग कहते हैं कि व्यासजी को जलोदर हो गया है। पेट घागा-सा फूला हुआ है लेकिन कोई ऐसी चिंता की बात नहीं लग रही है। इलाज हो जाएगा टाइम लगेगा। आगे तो ईश्वर ही जान सकता है ।

वास्तव में ईश्वर ही नियति को जानता था। जिस तारीख (30 5 71) को श्री रंगाची ने उक्त पत्र लिखा उन्हें क्या पता था कि वही दिन व्यासजी के जीवन का आखिरी दिन होगा। श्री रंगाची तो आश्वस्त थे कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। इलाज हो जाएगा। थोड़ा सा टाइम तो लगेगा। पर इधर नियति अपना क्रूर चक्र चलाने में व्यस्त थी। 30 मई 1971 की रात्रि को 11 30 बजे व्यासजी अपनी पार्थिव देह के बंधन से मुक्त हो गये। जिसने भी यह समाचार सुना वह अवाक् रह गया। देखते ही देखते पूरा शहर इस बात से अवगत हो गया कि व्यासजी अब इस संसार में नहीं हैं। एक वेदना एक नहीं मिटने वाली टीस सबके चेहरों पर थी। जंगल की आग की तरह यह समाचार फैला और दूसरे दिन प्रातःकाल सारे शहर पर इसकी कारुणिक छाया देखी जा सकती थी।

श्री सम्पतलाल रंगाची ने श्री बालचंद साह के लिये एक अन्य पत्र में इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है– व्यासजी की अर्थी सोमवार को सुबह 7 बजे उन्हीं के घर से निकली था। रविवार की रात को 11 30 बजे यह दुखद घटना घटी थी। व्यासजी की अर्थी के साथ हजारों आदमी थे। सात-आठ हजार आदमी निश्चित थे। सारा बाजार अपने आप बन्द रहा। किसी को कहने की जरूरत नहीं थी। सारे आश्चर्य थे। कलक्टर भी वहां पहुंचा था। कलक्टर साहब बार बार

हास्पिटल भी गये थे। काताजी द्वारका प्रसादजी पुरोहित गोपाल जी जोशी भी शाह–सस्कार म साथ थे। श्री गोकुल प्रसाद एम एल ए अर्थी के साथ नहीं थे। लोगों का कहना है कि वे उस दिन बीकानेर म नहीं थे, लेकिन तवे म वे गये थे। घन श्याम को भी कहा कि मेरे लायक कोई काय हो तो अवश्य कहना लेकिन घन श्याम ने कहा कि बस आपका आशीर्वाद चाहिए और काता जी ना जिस टाइम चिता जलाई गई उसको देखते ही बेहोश हो गए। एम्बुलेंस म उन्हें अस्पताल ले जाया गया। दो–तीन घटा बाद होश आया और सारा बीकानेर शोका कुल था।'

30 मई का घटना चक्र बडी तेजी से घूम चुका था। कलकत्ता प्रवासियो को व्यासजी के स्वास्थ्य से बराबर अवगत रखा गया। 30 मई को बीमार होने की सूचना तार से श्री बालचन्द साढ को कलकत्ता दी तथा उन्हें तुरत आने के लिए आग्रह किया। श्री बाल चन्द जी के भाई श्री लालचद साढ ने भी उसी दिन व्यासजी के स्वास्थ्य की गभीरता की तार से सूचना भेजी पर इसस पहले कि जाना सभव हो उसी रात्रि (30 मई 1971) को ही व्यासजी ने अपना नश्वर शरीर छोड दिया तथा सभी को शोकाकुल करके वे इस भौतिक माया–जाल से मुक्त हो गये।

व्यासजी के निधन पर पूरे देश म शोक व्यक्त किया गया। 31 मई 1971 को मध्याह्न एक बजे एव दो बजे की हिन्दी एव अंग्रेजी बुलेटिनो म आकाशवाणी ने प्रजा समाजवादी दल की राष्ट्रीय कायकारिणी के सदस्य श्री व्यास के निधन का समाचार दिया तथा राष्ट्रीय कायकारिणी की बैठक म व्यक्त श्रद्धाजलि की भी सूचना दी। स्थान स्थान पर शोक सभाए आयोजित की गईं। दिनाक 6 जून 1971 को कलकत्ता म जन भवन कलाकार स्ट्रीट म भी एक शोक सभा रखी गई जिसम कई सस्थाओं के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इन सस्थाओ म वीर मण्डल जन मित्र मण्डल आदीश्वर जन मण्डल जन सभा माहेश्वरी सभा श्री पुष्टिकर सभा, काशी विश्वनाथ सेवा समिति कलकत्ता किरायेदार सघ पुष्टिकर सेवा समिति ब्रह्म बगीचा शिव टम्पल ट्रस्ट बीकानेर नागरिक सभा राजस्थान भारती समाज प्रगति सघ शाकद्वीपी ब्राह्मण सभा शाकद्वीपी मित्र मण्डल राजस्थान कला केन्द्र तथा पिजरापोल सुधार समिति के नाम उल्लेखनीय है। शोक सभा के लिए प्रसारित विज्ञप्ति म कहा गया कि 'गत दिनाक 30 5 71 को राजस्थान के भूतपूर्व विधायक एव विरोधी के दल के सशक्त नेता एव जनप्रिय कर्मयोगी श्री मुरलीधर व्यास का निधन बीकानेर म हो गया। देश भर म हुई ऐसी शोक सभाओ तथा श्रद्धाजलियो का विवरण के आगे अध्यायो म है। श्रद्धाजलि सभा का सामूहिक कायक्रम स्थानीय जन भवन कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता म दिनाक 6 6 71 को दिन के एक बजे किया गया है।

सम-सामयिको की दृष्टि मे

सघष और जीवन्तता सिद्धान्त प्रियता और त्याग नि स्वाथ सेवा और साधना के ताना बाना स बुना व्यास जी का दीप्त जीवन विगत इतिहास का अग बन चुका है। इतिहास न तो व्यक्तियो और घटनाओ की कब्रगाह है और न अभिलेखागारो का निर्जीव निष्पन्द लेखा जोखा ही है। वह विगत की धारदार यात्रा का सजीव वृतान्त है भविष्य की यात्रा की सकेतिका है और वतमान के पाँवो की गति है। वह त्रिकालदर्शी भी है और त्रिकालगामी भी। व्यास जी इतिहास के उन पृष्ठो म आज भी जीवित हैं जो तीनो कालो म कही परिक्रमा स कही गतिशीलता स और कही भावी जीवन की निर्माण सारणियो म लिखे गए हैं।

व्यासजी के बारे म इतने अधिक लोगो स इतने अधिक विचार आए हैं जो पूरे के पूरे लिखे जाएँ तो एक हजार पृष्ठो का एक पृथक ग्रथ तयार हो जाए। इनम राष्ट्रीय दलो के पदाधिकारी समाजवादी विचारक सासद और विधायक राज्य के महत्वपूण नेतागण सामाजिक कायकर्ता शिक्षाविद् मजदूर नेता साहित्यकार पत्रकार एव साधारण जन आदि सभी सम्मिलित है।

जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर से ही शुरुआत की जाए। उनके अनुसार— 'श्री मुरलीधर व्यास ने आजीवन एक निष्ठावान जन सवक के रूप म नि स्वाथ भाव स स्वतत्रता सघष और समाजवादी आन्दोलन के लिए भारी यातनाए सही। उन्होने बराबर जुल्म और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई। तरुणाई के दिनो म सेवाग्राम वर्धा म प्रशिक्षित हुए और उन पर गाधीवादी आचरण का गहरा प्रभाव पडा अत विनम्रता सच्चरित्रता सादगी अपरिग्रह उनके स्वभाव क अग बन गए थे।

प्रजा मण्डल के आ दोलन म श्री यास लोकतत्र की स्थापना के लिए लडे और सन् बयालीस की अगस्त क्रान्ति म भी सक्रिय रह कर जेल गये। मजदूर आदोलन का बराबर नेतत्व करने के कारण भी उनको स्वतत्र भारत म कारावास सहना पडा। वास्तव म पुलिस की बबर हिंसा के कारण ही उनके प्राण गय।

श्री व्यास बेधडक और प्रभावी वक्ता थे और विधान सभा म उन्होने जनता क सवालो को बराबर पश किया। मैं उनको श्रद्धाजलि देता हूँ।

य हैं एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल के अध्यक्ष के विचार। सच म ल्याग जो स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी समाजवादी विचारक, सघषशील जन नता, प्रभावी वक्ता सच्चरित्र व्यक्ति एव सतत् आन्दोलनकारी जन सवक थ।

जनता पार्टी के भूतपूव सासद एव वतमान महामत्री श्री सुरेन्द्र मोहन के शब्दों म—'श्री मुरलीधर व्यास एक प्रबुद्ध स्वतन्त्रता सनानी, निष्ठावान समाजवादी नता और प्रभावशाली विधायक थे। श्री व्यास न बीकानर एव पडोसी इलाको म मजदूरो और किसानो को पूरी लगन के साथ सगठित किया और व उनक सघष का नतृत्व करत हुए ही शहीद हो गय। उनकी जीवन गाथा तप-त्याग और अथक-अविरल जन सवा की प्रेरणा भरी कहानी है।

और आज के पाठक व देश के नागरिक को इस तप-त्याग और अथक अविरल जनसवा की प्रेरणा भरी कहानी की ही तो आवश्यकता है।

इन दोनो दिग्गजो के विचारो म व्यासजी के निष्ठावान, त्यागपूण, सघषमय एव उत्प्रेरक जीवन की सराहना की गई है। उनके लिए जन सवा का विकल्प कुछ भी नही था। उनकी साधना सघष और साहसिक क्रियाएँ सभी जनसवा के लिए समर्पित थी।

जनता पार्टी की राष्ट्रीय कायकारिणी के सदस्य, सुप्रसिद्ध समाजवादी चितक और नताजी सुभाष चन्द्र बोस के अनुयायी प्रो समर गुहा न श्रद्धाजलि देत हुए कहा है—'मैं मरे मित्र मुरलीधर व्यास जी को राजस्थान म जन आन्दोलन के निर्विवाद नेता के रूप म याद करता हूँ। व एक ऐस स्वतन्त्रता सनानी थे जो भारत छोडो आदोलन के दौरान कई वर्षों तक जेल म रह। स्वतन्त्रता आन्दोलन की दीक्षा तो उन्ह तभी मिल गई थी जब वे वर्धा म एक छात्र के रूप म अध्ययनरत थे। उन्ह बचपन मे ही भारत के उन महान् नताओ के दशन का सौभाग्य मिला था जो महात्मा गाधी स मिलन उनके वधा आश्रम म आया करते थे। — इनम विशेष उल्लखनीय थ नताजी सुभाषचन्द्र बोस जय प्रकाश नारायण एव सरदार वल्लभ भाई पटेल। अनक अन्य महान् नेताओ क दशन का भी उन्ह सुअवसर मिला।'

बाद म व दिग्गज समाजवादी नताओ—आचाय नरेन्द्र देव जयप्रकाश नारायण, अशोक महता राम मनोहर लोहिया, एस एम जोशी एन जी गोरे आदि के सम्पक म आए। इन नताओ की प्रेरणा स ही उन्होंन काग्रेस समाजवादी दल म प्रवेश लिया तथा चौथे दशक के प्रभावशाली युवा नता के रूप म स्वतन्त्रता सग्राम म सिरकत की।

वर्धा नगर उन दिनों महात्मा गांधी द्वारा सचालित स्वतन्त्रता आन्दोलन की राजधानी था। व्यास जी को इस देशभक्तिपूर्ण वातावरण में विकसित होने तथा महान् नेताओं को देखने व उनसे मिलने का सौभाग्य मिला। सन् 1944 में जेल से छूटने के बाद उन्होंने बीकानेर को अपनी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बनाया। सन् 1947 के बाद जब कांग्रेस के हाथों में राज्य सत्ता आई व्यास जी ने समाजवादी दल में रहना ही पसन्द किया। उन्होंने आचार्य नरेन्द्र देव एवं जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में कार्य किया। कांग्रेस ने उन्हें अपने में मिलाने के कई बार प्रयास किये। यदि वे एक साधारण किस्म के अवसरवादी राजनीतिज्ञ होते तो अवश्य ही कांग्रेस में जाकर अपने भविष्य को बना सकते थे लेकिन वे तो एक ऐसे निष्ठावान समाजवादी थे जो जन साधारण की सेवा में रह कर उसे दरिद्रता निरक्षरता एवं पिछड़ेपन से मुक्ति दिलाना चाहते थे। यही कारण था कि वे विपक्ष में रहे।

राजस्थान पिछड़े हुए राज्यों में से एक था। स्वतन्त्रता से पूर्व इस पर सामन्तशाही का शिकंजा रहा था। व्यास जी ने किसानों, मजदूरों एवं जनजातियों के लोगों को जगाने का संकल्प लिया। नतीजा स्पष्ट था। कांग्रेस एवं उसके सहयोगी (राजा महाराजा तथा पूंजीपति) लोग उनसे नाराज हो गये। व्यास जी जैसे निर्भीक नेता ने किसी की धमकी की परवाह किये बिना किसानों और मजदूरों को संगठित किया तथा उन्हें अपनी मांगों को मनवाने के लिए सबल बनाया।

साधारण जनता के लिए किये गये संघर्षों के कारण व्यास जी को स्वतन्त्र भारत में भी कई बार जेल की यातनाएं भोगनी पड़ी। वे जनता के लोकप्रिय नेता थे। अतः उन्हें चुन कर दो बार राजस्थान विधान सभा का सदस्य बनाया गया। व्यास जी ने राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री स्व. मोहनलाल सुखाड़िया के सोना घोटाले काण्ड का पर्दाफाश किया—इसी का परिणाम था कि उन्हें 1967 के चुनाव में पराजित होना पड़ा। श्री सुखाड़िया ने व्यासजी को हराने के लिए क्रूर, घिनौने एवं दुराचरण के सभी उपाय किये।

व्यास जी एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी एक महान् समाजवादी नेता और एक महान् संघर्षधर्मी व्यक्ति थे। वे एक सुप्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार भी थे। व्यास जी ने सादा जीवन बिताया। वे हर प्रकार से जनता के आदमी थे। उन्होंने अपने राजनीतिक वर्चस्व में कभी गर्व नहीं दिखाया। मुझे विश्वास है कि स्वभाव से मृदु तथा गरीबों व पीड़ितों के हितैषी श्री व्यास सदैव के लिए एवं विशेषकर के युवा पीढ़ी के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

प्रो समर गुहा ने व्यास जी को स्वतंत्रता आन्दोलन के निर्भीक नेता समाजवादी चिंतक, किसान-मजदूरों के हितैषी निःस्वार्थ जनप्रिय विधायक, संघर्षशील व्यक्ति, महान् संगठन-कर्मी दृढ़ संकल्पवान वक्ता एवं अच्छे पत्रकार के रूप में याद किया है। एक ही व्यक्तित्व के इतने प्रखर कोण हों तथा हर कोण उसे महानता की ओर ले जाए—ऐसा कम ही देखने-सुनने को मिलता है। व्यास जी लीक से हट कर चलने वाले नेताओं में से थे जिनको अपनी सूखी रोटी का सुख शाही व्यंजनों से अधिक प्रिय था।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी में उनके पूर्ववर्ती साथियों में आज कई लोग ऐसे हैं जो राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर अत्यन्त दीप्त एवं चर्चित व्यक्तियों में माने जाते हैं। ये हैं सर्वश्री अनन्तराम जायसवाल, एस जयपाल रेड्डी, मधु दण्डवते, जार्ज फर्नान्डीस, रामकृष्ण हेगडे, सुरेन्द्र मोहन, एम एस गुरुपादस्वामी श्रीमती मृणाल गोरे प्रोफेसर समर गुहा डा सरोजिनी महिषी एवं हरभजन सिंह आदि। इनमें से कुछ एक तो तत्कालीन समय में व्यास जी से राजनीतिक रूप से काफी घनिष्ठ थे। आज यदि वे होते   लेकिन जब हैं ही नहीं तो क्या बात करें।

महाराजा डा करणी सिंह ने बीकानेर परिक्षेत्र का 25 वर्षों तक लोक सभा में प्रतिनिधित्व किया। उनका व्यास जी से एक निजी, आत्मीय एवं घनीभूत सम्बन्ध था। यह सम्बन्ध झोंपडी और राज महल की दूरियों का नहीं अपितु मानवीय गुणों को समर्पित दो व्यक्तियों का था। महाराजा डा करणी सिंह के शब्दों में— स्वर्गीय श्री मुरलीधर व्यास मानवता के पुजारी, दीन-दुखियों के सहारे और सच्चे निष्ठावान जननेता थे। समाजवाद में उनकी दृढ़ आस्था थी। वे जन समस्याओं के लिए संघर्ष करने और अधिकारों के लिए जनता को आन्दोलित करने में अग्रणी रहते थे।'

सच्चाई की रक्षा के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकते थे। उन्हें न तो सत्ता का भय विचलित कर सकता था—और न कोई लाभ ही डिगा सकता था। वे निरन्तर जागरूक निरन्तर गतिशील एवं निरन्तर संघर्षशील नेता थे। उनका छोटा किन्तु ऐतिहासिक जीवन जन जन के लिए आस्था एवं विश्वास का एक अध्याय है।

सांसद के रूप में मेरे पच्चीस वर्ष के कार्यकाल में श्री व्यास दस वर्षों तक विधायक रहे। मुझसे उनका निरन्तर सम्पर्क बना रहा। जन समस्याओं के निराकरण में वे तत्परता से सहयोग देते थे। यही कारण है कि उनके माध्यम से विधान सभा में और मेरे माध्यम से संसद तक बीकानेर की वाणी निरन्तर गूंजती रहती थी।'

उनका निधन बीकानेर के लिए तो एक अपूरणीय क्षति था ही मेरे लिए एक निजी आघात के समान था। उनके शिष्य, सहयोगी और प्रशंसक जिस ग्रंथ प्रकाशन का पुनीत कार्य कर रहे हैं उसके लिए मेरी शुभ कामनाएं।

सच्चाई की सीमा जहा से शुरु होती है वहा स खतरे की सीमा भी शुरु हो जाती है। सच बोलने, सच्चा काम करन और यहा तक कि सत्ता पक्ष की सच्ची व बेलाग आलोचना करने तक के अपने अलग-अलग खतर हा सकत है। खतर की सीमा रखा स पार जाकर कबड्डी कबड्डी बोलने विरोधियो का आउट करने तथा स्वांस बचाकर पुन अपने सुरक्षा घेरे म आने वाल को पग पग पर विराधी (चक्र) व्यूहा की कुचालो स अपन मरन का खतरा सामन दिखाई देता है। बचे भी ता आखिर कहा तक। अपने (सत्ता) घर क रक्षक एक अकेल विरोधी को हर तरह स पटकी देन तथा उस मार गिराने का कला भी जानत हैं और कलाबाजी भी। व्यास जी न इन व्यूहो की कभी भी परवाह नही की—चाहे अकेल ही हो उनके घरो म घुस एक साथ कई कई महारथियो का आउट' किया तथा जब तक अभिमन्यु की तरह पूरी तरह कुचालो का शिकार नही हो गय जूझत ही रहे। महाराजा डा करणीसिंह का यह कहना कितना साथक है कि- सच्चाई की रक्षा क लिए व किसी भा सीमा तक जा सकते थे। उ हे न ता सत्ता का भय विचलित कर सकता था और न कोई लोभ ही डिगा सकता था। एस व्यक्ति कभी कभी ही पदा हान हैं और जब भी पदा होत है अपने गरिमामय जीवन स वतमान तथा भावी पीढिया को आलोकित ही करते है।

राजस्थान की राजनीति म एक एसा समय भी आया जब सन् 1977 म कांग्रेस के एक को छोड कर सभी उम्मीदवार लोक सभा का चुनाव हार गय। 25 म 24 प्रत्याशी पराजित हुए थ — एक मात्र सफल उम्मीदवार थे श्री नाथूराम मिर्धा। श्री मिर्धा ने कांग्रेस म रह कर कभी केबिनट स्तर के मत्री के रूप मे तो कभी सगठन के अध्यक्ष के रूप म अपनी प्रभाव पूर्ण भूमिकाओ का निवाह किया। अब वे विरोधी पक्ष म हैं तथा लोकदल (ब) के प्रदेशाध्यक्ष एव राजस्थान विधान सभा म लोकदल विधायकों के नता है। व दस वर्षो तक व्यास जी के साथ विधायक रहे—व्यास जी विरोधी दल के नता थ और श्री मिर्धा केबिनट स्तर क मत्री। श्री मिर्धा के शब्द विचारणीय है— मैं और श्री मुरलीधर व्यास राजस्थान विधान सभा म एक साथ रह थ। जितना मेरा उनके बारे म ज्ञान है उसस लगता है कि वे बडे कत्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थ। अपने सिद्धान्तो और विचारो के बडे पक्के थ और अपनी बात का बडे ठोस तरीके से कहन मे समथ थ। उ होने अपने जीवन काल म गरीबा की सवा की। विधान सभा म मैं इनके भाषणो को अच्छी तरह सुनता था। जब वे विरोध पक्ष म बठत थे मैं सरकारी बचो पर बठता था और प्राय व लोगो के कामकाज के सिलसिल म मिलत रहत थ और मैं उनकी गरीबो के प्रति निष्ठा देखकर अपनी तरफ स हर तरह से मदद करने की कोशिश करता था। व्यक्तिगत मुलाकातो म उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा रहता था। वे एक सूझ बूझ वाल बुद्धिमान व्यक्ति

थे। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की यादगार बनाये रखनी चाहिए, ऐसा मैं मानता हूँ। इसलिए आप सब मित्रों का उनके बारे में एक बहुत ही अच्छा काम है। जो कोई उसे पढ़ेगा वह उससे कुछ प्रेरणा ही ग्रहण करेगा। यही मेरे विचार हैं—उनके जीवन के बारे में।

श्री मिश्रा का मानना है कि व्यास जी सिद्धान्तों और विचारों के पक्के थे और अपनी बात ठोस तरीके से कहते थे, इतना सब कुछ होते हुए भी व्यक्तिगत व्यवहार और निजी सम्बन्धों में वे हमेशा प्रिय बने रहे। श्री सुखाड़िया तक इस बात के कायल थे। व्यास जी ने 'घरलू' या निजी आदमियों के काम नहीं करवाये, गरीबों के लिए दौड़-धूप की। जब भी मिले, जहां भी मिले—किसी गरीब की समस्या लेकर मिले। उनका यह व्यक्तिगत मिलन हमेशा गरीबों के हित में रहा।

व्यास जी के संघर्षों के साथी, प्रजा समाजवादी दल के तत्कालीन प्रदेश संयुक्त मंत्री एवं सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री रामशरण अत्यानुप्रासी ने मुरलीधर व्यास को बीकानेर के लोक गीतों में चर्चित लोक नेता बताया है। व्यास जी क्या थे, क्या नहीं थे इस बिन्दु को उठाते हुए श्री अत्यानुप्रासी ने कहा है कि—'व्यास जी लोहियावादी नहीं थे—आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों को उन्होंने स्वभावत: स्वीकार किया था। गांधी के दर्शन से भले ही वहीं कहीं उन्हें असहमति रहे हों किन्तु आदर्श और आचरण की साम्यता में व्यास जी पूरे गांधीवादी थे। 'व्यास जी की पहचान कथन से नहीं काम से होती थी। उनका कदम कुछ भी हो, अन्याय के के विरुद्ध है— (ऐसा माना जाता था) इस प्रकार उनका जीवन एक साधना का प्रतीक बन गया था।'

प्रदेश के लाखों छोटे किसान, भूमिहीन मजदूर, ग्रामीण दस्तकार, उपेक्षित अल्प संख्यक हरिजन आदिवासी कारखाना खदानों, सार्वजनिक निर्माणों, रेल जेल, डाक तार और सरकारी दफ्तरों के कार्यरत श्रमिकों और कर्मचारियों का समुदाय और शोषण का शिकार नारी समाज व्यास जी के सृजन, संगठन और संघर्ष के भरोसे मुक्ति संघर्ष' में आगे बढ़ता रहा।'

'बीकानेर की गली मोहल्लों की छतों और फुटपाथों से शेर व्यास जी! जिन्दाबाद!! की आने वाली आवाजें ऐसा प्रमाण देती थी कि जनमन पर व्यास जी का पूरा आधिपत्य था। क्या महिलाएं क्या बुढ्ढे—बच्चे व्यास जी को देवता मानते थे। बिना सुविधा के इस संत ने राजस्थान की धरती को पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक नापा था। मरु प्रदेश का कोई भी आन्दोलन व्यास जी के बिना अधूरा था।'

'हिगनघाट और वर्धा आश्रम मे बीकानेर पर सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद् के सम्मलेन म प्रथम बार व्यास जी स मेरा साक्षात्कार हुआ था। तब हि द सेवा दल के दल प्रमुख व्यास जी' न केवल राजनीतिक मच पर अपनी प्रतिभा को मुखरित करते थे वरन् अपन सेवादल के माध्यम से जहाँ उ होन बडे भोजो दहेज विरोधी अभियानो को गति दी वहाँ रोग-निवारण शिविर लगाकर पीडित मानवता की सेवा भी की।

विशाल राजस्थान की पहली लोकप्रिय शास्त्री सरकार ने जब जन-सुरक्षा कानून लागू किया तब इस काले कानून के विरुद्ध व्यास जी न जन आन्दोलन छेड दिया आन्दोलन का उनका तरीका एक भावात्मक प्रेरणा देने वाला था। लोकतन्त्र के शिशु की हीरा लाल शास्त्री (मुख्यमत्री राजस्थान) सुरक्षा कानून का छुरा घोप कर हत्या कर रहे हैं।

बीकानेर का एतिहासिक कफन निकासी विरोधी आन्दोलन जिस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भारत के महान् सघर्षशील नेता राम मनोहर लोहिया ने कहा था- बल इन बीकानेर 'मैं इस आन्दोलन म बीकानेर गया था। प्रात की पहली रेलगाडी जो जोधपुर स बीकानेर पहुँची थी-मैं स्टेशन पर ही रुका। दूसरी गाडी आई दिल्ली स-इस रेल स आये थ श्री मगन लाल बागडा। अपार जन-समूह और प्रशासन द्वारा शहर म धारा 144, क्या करे? सामूहिक रूप स धारा 144 का उल्लघन किया गया तीन बज रतन बिहारी पार्क म आमसभा की तज रजाकी बिल्डिग की छत पर खडे समाजवादी नेता सादिक अली ने कहा था आज जनता का सगठित आक्रोश इतना बलशाली है कि मुरलीधर व्यास चाहे कि सरकार को उखाड फेंको तो देर नही लगे।' यही था व्यास जी का प्रभावशाली व्यक्तित्व।

बीकानेर म लम्बे काल तक निरन्तर हडताल-अनुशासित आन्दोलन ठीक 3 बज बिना किसी सूचना क रतन बिहारी पार्क म प्रतिदिन सभा होती थी। व्यास जी और स्थानीय नेता सत्य नारायण पारीक रामेश्वर पाडिया, भवरलाल स्वर्णकार भवर लाल महात्मा माणिक चन्द सुराणा आदि बन्दी बना लिये गये थे। प्रसिद्ध समाजवादी नेता प्रो केदार अपने गगानगर क जत्थे के साथ गिरफ्तार हो चुके थ। बाहर मैं अकेला था रतन बिहारी पार्क की आम सभा को सम्बोधन के बाद आह्वान करता था-रात के राही थक मत जाना सुबह की मजिल दूर नही है।'

चार धोती-चार बनियान चार चद्दरें और कुर्तों की सम्पदा का बटवारा व्यास जी ने चार जगह कर रखा था। एक तन पर एक अटेची म, एक वो 10 रूम एम

एल ए क्वाटर म तथा एक बीकानेर म। गृहस्थी थे, घर था पर अपना नहीं घर जाना नहीं खाना नहीं जनता को समर्पित यह व्यक्तित्व हर कहीं सडक–चौराहे पर आसानी स उपलब्ध हो जाता था।'

और यह व्यक्तित्व राजस्थान विधान सभा के सम्पूर्ण विरोधी दल के सशक्त नेता का था। श्री अत्यानुप्रासी के विचारो का इतनी लम्बाई से उद्घत करने के पीछे आशय यही है कि इनसे व्यास जी का व्यक्तित्व कई कोणो से उद्घाटित हो सकता है। व्यास जी क साथी होने के कारण इन विचारो की प्रामाणिकता निर्विवाद बन जाती है।

और अब प्रजा समाजवादी दल के तत्कालीन प्रदेशाध्यक्ष श्री रतन लाल पुरोहित क विचारो से बात को आगे बढाया जाए। विचार किसी के हो, उसका मूल स्वर प्राय एक ही रहता है–निष्ठा, ईमानदारी सच्चरित्रता, साहस, दरिद्रनारायण की सेवा, सकल्प की दृढता और एस ही अनेक अन्य गुण सभी के विचारो म बिखरे मिलते है।

श्री पुरोहित व्यास जी को अपना राजनीतिक गुरु मानते हैं। व्यास जी से उनका सम्पर्क 1957 स शुरू हुआ जब वे बीकानेर अधिवेशन म राजस्थान प्रजा समाजवादी दल क अध्यक्ष चुने गये। उनके अध्यक्ष काल म ही सुप्रसिद्ध जामसर श्रमिक आन्दोलन चला था जिसमे व्यास जी के धारदार व्यक्तित्व ने शोषित मजदूरो म एक नई चेतना का सचार किया था।

श्री पुरोहित क लम्बे लेख के आशिक उद्धरण इस प्रकार हैं – मैं अपने राजनीतिक गुरु आदरणीय व्यास जी के साथ देश की प्रजा समाजवादी पार्टी की मीटिंगो मे भी खास निमन्त्रण आने पर गया। उनके साथ एसी ही एक मीटिंग म मान्दसौर (मसूर) गया मैं उनके साथ मान्दसौर स रामेश्वर मद्रास व बम्बई पूना आदि कई जगह गया। सब जगह प्रजा समाजवादी पार्टी म आदरणीय व्यास जी का भारी सम्मान देख कर चकित रहा। उन्होने देश के सब नेताओ और साथियो स मेरा यथोचित परिचय कराया जिसके कारण मैं उनकी मृत्यु के पश्चात् भी जब भी बम्बई दिल्ली आदि गया तो पार्टी क नेताओ ने मुझे पूर्ण सम्मानित किया ।'

व्यास जी का रेल्वे मजदूरो क आन्दोलन स निकट का सम्पर्क था। उन्होंने अखिल भारतीय आन्दोलनो म रेल मजदूरो का सफल नेतृत्व किया तथा कारावास की यातनाए भोगी। नार्दन रेल्वे मेन्स यूनियन के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री टी एन

वाजपयी ने व्यास जी के प्रति श्रद्धावनत होत हुए उनके गुणो की चर्चा इन शब्दो म की है स्वतन्त्रता सग्राम स लेकर स्वतन्त्र भारत की राजनीति म जिस ढग स (व्यास जी न) समाज सेवा की एसे उदाहरण भारतीय राजनीति म विरले ही मिलते हैं ट्रेड यूनियन आन्दोलन म राजस्थान हिन्द मजदूर सभा के सस्थापक सदस्य और बाद म कमठ कायकर्ता एव नेता के रूप म स्वर्गीय मुरलीधर व्यास का नाम आता है। राजस्थान म जहा भी मजदूरी ने सघष का बिगुल बजाया वहाँ वे अगुवा रह। नादन रल्वे म स यूनियन तथा आल इण्डिया रल्वे मन्स फेडरेशन भी हमेशा उनका कृतज्ञ रहा। उन्होन 1960 तथा 1968 म रल कमचारियो के समथन म जल यातना भी सही तथा हडताल के बाद प्रताडित रल्वे कमचारियो की सहायता म स्वय को कायरत रखा जब कभी भी बीकानेर क्षेत्र म रल कमचारियो ने सघष किया मुरलीधर जी हमेशा अग्रणी रहे। अधिकारियो की दृष्टि म भी व सम्मानित रहे। जब कभी कोई मामला वे इन अधिकारियो के सामने रखते तब व अधिकारी आश्वस्त रहते कि यह मामला अवश्य ही उचित एव सत्य है।

मेरा मुरलीधर व्यास म व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा है। जब कभी मैं बीकानेर जाता उन्ह मिले बिना ऐसा प्रतीत होता कि बीकानेर की यात्रा अधूरी रह गई है। उनका जीवन राजनीति स लेकर ट्रेड यूनियन तक शिक्षाप्रद रहा। ऐसे व्यक्ति समाज म बिरले ही पदा होते है। स्वर्गीय साथी जय प्रकाश नारायण स्वर्गीय साथी राम मनोहर लोहिया तथा साथी डी डी वशिष्ठ की दृष्टि म मुरलीधर जी सम्मानित रहे।'

जो व्यक्ति दिग्गज समाजवादी नेताओ की दृष्टि म सम्मानित हो अधिकारियो की दृष्टि म सच्चे एव उचित मामले लाने वाला व्यक्ति हो मजदूर नेताओ की दृष्टि म प्ररणा पुरुष हो तथा साधारण जनता की दृष्टि म शुभचिन्तक हो—उसके बहुआयामी व्यक्तित्व के लिए युग पुरुष से अच्छा और क्या टाइटल दिया जा सकता है? वाजपयी जी के शब्दो म शब्द मिला कर हम भी यही कह सकते है कि ऐसे व्यक्ति समाज म विरले ही होते हैं।

और अब कुछ साथियो के विचारो का मथन करे। य साथी चाहे उनके स्वय के दल के हो या दूसरे दलो के प्रातीय स्तर के नेता ही या स्थानीय निष्ठावान नेता/ कायकर्ता या फिर व्यास जी के प्रबल समथक अथवा कट्टर विरोधी ही क्या न हो, सब के विचारो म थोडा-बहुत समानता अवश्य मिलेगी। पूववर्ती अध्यायो म प्रसिद्ध समाजवादी नेता तथा इग्लण्ड में भारत के पूव हाई कमिश्नर श्री एन जी गोरे,

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरों सिंह शेखावत पूर्व गृहमंत्री प्रो केदारनाथ, पूर्व वित्तमंत्री श्री माणिक चंद सुराणा, स्व विधायक श्री गोकुल प्रसाद, सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री मूलचंद पारीक, आदि के विचारों के उद्धरण दिये जा चुके हैं। अब प्रस्तुत हैं कुछ और महत्वपूर्ण विचार। (इनमें स्थानीय प्रांतीय अथवा राष्ट्रीय का कोई आग्रह नहीं है)। सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री सत्य नारायण पारीक के अनुसार व्यास जी की जिन्दादिली गजब की थी। कैसी ही मुसीबत क्यों न आ पड़े उनके सदा हसमुख चेहरे पर कोई शिकन नहीं। जीवन के साथ हसते-हसते कठिनाइयों को झेलना और युवा पीढ़ी को अपने दृढ़ और सकल्पपूर्ण चरित्र से प्रेरित करना उनका आदर्श था उनकी शिक्षा वर्धा में गांधी जी के आश्रम के एक प्रख्यात आश्रमवासी और शिक्षाविद् आचार्य आर्यनायकम् और वर्धा कामर्शियल कॉलेज के प्राचार्य और बाद में गुजरात के राज्यपाल स्व श्रीयुत् श्रीमन्नारायण अग्रवाल के सान्निध्य में हुई। उसी काल में उन्हें कांग्रेस के अध्यक्ष नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से स्वयं सेवक दल में राष्ट्रीयता की दीक्षा मिली थी जमनालाल बजाज के छोटे लड़के श्री रामकृष्ण बजाज और सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां के लड़के श्री वली खां उनके सहपाठी थे। महाराष्ट्र के हिंगणघाट कस्बे में आज भी उनका नाम बड़े आदर और स्नेह से याद किया जाता है। पिछले दिनों वहाँ के एक सज्जन से जब उनका प्रसंग आया तो सजल नेत्रों से कहा था– अरे! मुरली तो बस मुरली ही था।'

सन् 1953 के ऐतिहासिक गेहूँ निकासी आन्दोलन में व्यास जी की भूमिका बड़ी शानदार रही। मिना की जोड़ भी गजब की थी। हालांकि बीज रूप में आन्दोलन की शुरुआत तो श्री श्रीनिवास थिरानी ने की पर व्यास जी ने अपनी स्वाभाविक पकड़ से उस एक आन्दोलन का रूप दे दिया गेहूँ निकासी आन्दोलन के बाद गोआ सत्याग्रह तथा जामसर आन्दोलन व्यास जी की कीर्ति में चार चांद लगाने वाले आन्दोलन सिद्ध हुए। गोआ सत्याग्रह में जहाँ उनकी उत्कृष्ट देशभक्ति की भावना के दर्शन हुए वहीं उन्हें राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में आने का मौका भी मिला। जामसर और रेलवे मजदूर आन्दोलन के कारण व्यास जी का व्यक्तित्व एक मजदूर नेता के रूप में लोगों के सामने आया व्यासजी मेरे निकट के सहकर्मी थे मित्र थे। कभी कभार कुछ मतभेद जरूर हुए पर मन-भेद कभी नहीं और मत-भेद भी किसी स्वार्थ को लेकर नहीं हुए शुद्ध सैद्धान्तिक आधार पर। (झोंपड़ी की आवाज 1 जून 1984) श्री सत्यनारायण जी पारीक व्यासजी के अंतरंग मित्र और सहकर्मियों में से रहे हैं अतः उनके विचार काफी महत्वपूर्ण बन जाते हैं।

इसी क्रम में सुप्रसिद्ध साहित्यकार समीक्षक एवम् शिक्षाविद् श्री अभय चन्द्र शर्मा के विचारों का जायजा लिया जाए तो उपयुक्त होगा। व्यास जी के चिरपरिचित फक्कड़पन पर टिप्पणी करते हुए श्री अभय चंद्र शर्मा ने कहा है कि जब भी श्री

हैं) नात हो जाती है। राजनीति म कम पर लोक सवा म अधिक रुचिशील प्रखर चक्ता एव तत्कालीन भारतीय जनमध के नेता श्री मवर लाल कोठारी यासजी के प्रति सम्मान एव श्रद्धा रखते रहे हैं। व्यास जी की स्टेशन ग्राउण्ड स्थित प्रतिमा की निर्माण व्यवस्था एव स्थापना म उनकी महती भूमिका सवविदित है। श्री कोठारी न व्यास जी को पीडिता का ममीहा बताया है। उनके शब्दा म उद्धरण इस प्रकार है – स्व श्री मुरलाधर व्यास बीकानेर के मर्वाधिक लोकप्रिय जन नेता थ। वे गरीब शोपित व पीडित के हिमायती और उसके सुख दुख के भागीदार थे।
दस साल तक विधायक रह कर भी वे उनस एकात्म बन रहे उनकी आवाज बुलन्द करते रहे। सदा सवेदनशील रहे। इसी कारण स जन जन के प्रिय और पीडितो के मसीहा बन गये।'

उनका व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे आदश शिक्षक और योग प्रशिक्षक थे। जन चेतना क प्रखर अभिवक्ता थे। श्रमिको के हित रक्षक थे। कला–प्रेमी और सेवा प्रेरक थे। बीकानेर के जन जीवन पर उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप थी।

आज भी उनका व्यक्तित्व जीवन्त है। स्मृति अक्षुण्ण है। बीकानेर के नागरिको ने रेल्वे स्टेशन के सामने उनकी आदमकद प्रतिमा स्थापित करके उनके प्रति आन्तरिक सौहाद का प्रदर्शन किया है। नेपाल के पूव प्रधान मत्री श्री एम पी कोइराला द्वारा प्रतिमा का शिलान्यास और लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा उसका अनावरण उनके राष्टीय व्यक्तित्व का परिचायक है। लोकतन्त्र क सजग प्रहरी के रूप म राष्ट उनका सदा स्मरण करता रहेगा।

श्री काठारी ने व्यास जी के राष्ट्रीय व्यक्तित्व का प्रभावशाली शब्दा म वणन किया है। साथ ही उनके व्यक्तित्व के बहुआयामी पक्षा को भी उजागर किया है। एक ही व्यक्ति राजनीति क साथ साथ शिक्षा कला लोक सवा आदि म समान रूप से रुचिशील और गतिशील हो तो उसकी प्रखर सवेदना स्वत ही प्रकट हो जाती है। व्यास जी इसी प्रखर चेतना के मूर्तिमन्त व्यक्ति थ। उनका जनाधार ही उनकी सम्पत्ति था।

व्यास जी के परम स्नेही सरदार शहर निवासी श्री सोहन लाल डागा ने व्यास जी को स्वय सर्जित व्यक्तित्व के धनी एव आदश कर्मयोगी माना है। श्री डागा के अनुसार वे विचारा म बचपन स ही समाजवादी थे। समाजवादी दशन का उनका अध्ययन अत्यन्त व्यापक था। उन्होने अपने अध्ययन तथा ज्ञान व कम की कसौटी पर एक विराट कायक्रम अपने हाथ म लिया। वे राजनीति म उतर पडे। उतरे ही नही जनता के साथ घुल मिल गये।

'जिस आदर और गरिमा से लोकनायक व्यास को जनता ने चुना, उन्होंने विधान सभा में जन प्रतिनिधित्व का दायित्व उतनी ही निष्ठा, लगन बहादुरी और साहस के साथ निभाया–यह विधान सभा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा।'

व्यासजी एक औलिया पुरुष या फक्कड़ व्यक्ति थे। वे सर्वथा निस्पृह थे। पद लोलुपता, अर्थाकांक्षा और यशोलिप्सा से वे कोसों दूर थे। उन्हें केवल एक ही चिन्ता थी–जनता के कष्ट कैसे दूर हों, जनता स्वतन्त्रता का सच्चा सुख कैसे प्राप्त करे। उनकी निस्पृहता तो यहां तक थी कि जो कुछ उनके पास होता वे साथियों के लिए खुशी खुशी खर्च कर देते थे। उनकी जेब में दस बीस रुपयों से अधिक की राशि हमने तो कम ही देखी।'

' व्यासजी की प्रकृति में जहां सहज सुकुमारता और मृदुलता थी वहां उनके जीवन का दूसरा पक्ष था जिसमें वे वज्र के समान कठोर थे। अन्याय, अनीति और अनौचित्य से लड़ते समय उनके योद्धा रूप को जिन्होंने देखा है वे भलीभांति जानते हैं कि उनके साहस का पार नहीं था। वे संघर्षों में कभी नहीं घबराये। एकाकी डट गये अनेकों के सामने और पर्वत की तरह निश्चल हो गये। अड़ गये। वे तेजस्वी प्राणी थे और कभी हार न मानने वाले जीवट के धनी थे।

व्यासजी जहां बहुत बड़े खिलाड़ी, व्यायामी और प्रबल राजनेता थे वहां बड़े ही भावनाशील व्यक्ति भी थे। संगीत से उन्हें सच्चा प्यार रहा। संगीत सीखने का जीवन में अवसर नहीं पा सके लेकिन संगीत सुनने में बड़ा रस लेते थे। बातचीत के बीच अक्सर कहा करते थे संगीत जीवन के लिए आवश्यक है इससे जीवन में सरलता और मधुरता का समावेश होता है। व्यास जी मुझे कई दफा तानपुरा पकड़ा देते और सामने बैठ जाते। मैं गाता और वे सुनते। मुझे उन्हें गीत एवं कविताएं सुनाने के अनेकों अवसर मिले। उन अवसरों को जब याद करता हूँ तो भावविह्वल हो जाता हूँ।

सामन्तशाही के खिलाफ संघर्ष करने, बीकानेर से निष्कासित किए जाने, और जीवनपर्यन्त समाजवाद की अलख जगाने का श्रेय जिन व्यक्तियों को मिला है उनमें से एक हैं श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा। 72 वर्षीय श्री शर्मा समाजवादी दल में व्यासजी के प्रबल समर्थक रहे हैं। श्री राम मनोहर लोहिया की प्रेरणा से उन्होंने अपने विद्यार्थी काल में बम्बई में वानर सेना में भाग लिया तथा अशोक मेहता के नेतृत्व में स्वदेशी नमक बेचन तथा विदेशी माल का बहिष्कार करने के लिए दुकानों पर पिकेटिंग की। इस अपराध में उन्हें कई बार पुलिस थाने ले जाया गया। स्व. जयनारायण व्यास के आदेश पर वे बीकानेर आये तथा प्रजातन्त्र की गतिविधियों

म सक्रियता से भाग लेना शुरू किया। महाराजा गंगासिंह जी की स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर वायसराय को काले झण्डे दिखाने की योजना के संदेह में पहले तो उन्हें कारावास में डाल कर यातनाएँ दी गई और बाद में देश निकाला दे दिया गया। आजादी के बाद शर्मा समाजवादी दल में आ गये। श्री शर्मा के अनुसार समाजवादी दल के राष्ट्रीय सम्मेलन (1948) के अवसर पर मगनलाल बागडी ने मुरलीधर व्यास का परिचय देते हुए कहा था कि 'मैं बीकानेर का एक ऐसा अनमोल हीरा देता हूँ जो बीकानेर का ही नहीं, राजस्थान और भारत का नाम चमकाएगा'। जिप्सम श्रमिक आन्दोलन के समय जिप्सम माइन्स के डायरेक्टरों ने मुरलीधर व्यास की ईमानदारी को खरीदने के लिए बड़े बड़े प्रलोभन दिये लेकिन उन्होंने उसको ठोकर मारी। यही उनकी ईमानदारी की सबसे बड़ी जीत है।

व्यास जी एक बार दिल्ली गये हुए थे। मोहनलाल सुखाडिया भी दिल्ली आये हुए थे। दिल्ली में सुखाडिया जी ने महाराजा करणी सिंह जी से सम्पर्क कर व्यासजी को बुलवाया। सुखाडिया जी और व्यासजी में बातें करवाई गई। सुखाडिया जी ने कहा— व्यास जी आपका हर कार्य हो जाएगा कृपया आप विधान सभा में या पब्लिक प्लेटफार्म पर मेरी आलोचना नहीं करें। व्यासजी ने महाराजा साहब के सामने कहा— मेरी सुखाडिया जी से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है। मैं जन प्रतिनिधि हूँ। जनता ने मुझे अपनी बात रखने के लिए चुना है उसकी आवाज बुलन्द करना मेरे लिए आवश्यक है। व्यक्तिगत आलोचक न तो मैं कभी रहा हूँ न कभी आगे रहूँगा। सभी जानते है कि सुखाडिया जी व व्यास जी के रास्ते सर्वथा पृथक पृथक रहे लेकिन उनमें व्यक्तिगत मनमुटाव नहीं आया।

भारतीय साम्यवादी दल के नेता एवं प्रसिद्ध पत्रकार (जन जन के सम्पादक) श्री हीरालाल आचार्य ने व्यासजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार प्रकट करते हुए कहा है कि साहस और संकल्प के धनी, शान्त स्वभावी तथा संवदनशीलता की सजोये गम्भीर मुखमण्डल की आभा के जन अपेक्षित लोकप्रिय जन नेता थे—मुरलीधर व्यास। उनकी उत्पीडन से छुटकारा दिलवाने की कसमसाहट ग्रस्त दृष्टि की गहनता उस हिलोरें लेने वाले विशाल सागर सी अनुभूत होती थी मानो आने वाले किसी तूफानी उफान से पूर्व की सूचक हो। इस महान प्रतिभा को जनता ने अपने बीच के संघर्षों के दौर में तपाया निखारा और अपने नेतृत्व की बागडोर का हकदार घोषित किया था।

राजनीतिक रिक्तता की बदौलत बीकानेर क्षेत्र की ऊपरी नेतृत्व द्वारा कठपुतलीनुमा प्रतिनिधित्व थोपने की हरकतों से जन अपेक्षाओं की उपेक्षा के फलस्वरूप जन

मानस उद्वेलित हो उठा था। अतएव क्रांतिकारी शौकत उस्मानी तथा साहसी राजनेता बाबू मुक्ताप्रसाद, बाबू रघुवरदयाल और बाबा मघाराम की धरती ने ऊपरी नेतृत्व को ललकारा और समूचे प्रदेश और राष्ट्र को झकझोर कर रख दिया। प्रख्यात अनाज निकासी आन्दोलन ने सिद्ध कर दिया कि यह मरुधरा बांझ नहीं है। 1953 के स्मी स्वत स्फूर्त गेहूं निकासी आंदोलन को जनता स्वयं ने अग्नि परीक्षा से क्षेत्रीय नेतृत्व को संजोया-संवारा और मुरलीधर व्यास, मानिक सुराणा मदन आजमानी तथा सत्यनारायण पारीक आदि अनेक नेतृत्वकारी प्रतिभाओं को जन अपेक्षाओं का प्रहरी घोषित किया। 1957 के विधान सभा चुनावों में प्रवासी अहमद बख्श सिंधी को भारी शिकस्त देकर क्षेत्रीय नेता मुरलीधर व्यास के प्रति जनता ने अपनी आस्था व्यक्त की।

स्व व्यास जी ने जन-अपेक्षाओं के अनुरूप बीकानेर क्षेत्र के गरीबों पिछड़ों मेहनतकशों की संजीदगी के साथ रहनुमाई की। लोहा कूटने वाला गाडिया लुहार हो, मिट्टी के बर्तन बनाने वाला कुम्हार हो अथवा जिप्सम श्रमिक या जर्जर जीवन भुगतने वाले बजरी खनिक उन सभी मेहनतकशों के साथ कन्धे से कंधा मिला कर व्यासजी संघर्षरत रहे।

अकाल पीड़ित क्षेत्र में अन्न पानी व चारे के लिए मानव पशु तड़प तड़प कर कष्टमय जीवन व्यतीत करते रहे थे इस क्षेत्र में सरकार की बेमिसाल लापरवाही की हरकतों में व्यासजी स्वयं गांव गांव घूम कर उनके राहत के विभिन्न कार्य करते। और सरकारी पदों पर आसीन मिनिस्टरों के प्रति आक्रोश की आग से यहां तक आन्दोलन करते थे कि बीकानेर में उनका घुसना असम्भव हो जाता।

मुखाड़िया के बहिष्कार के जुझारू कार्यक्रम के दौरान ही जन अपेक्षाओं के राजनेता मुरलीधर व्यास को बेरहम पुलिस ने लाठियों से प्रहार करके अपना मनहूस परिचय दिया। लेकिन उस जुझारू राजनेता ने पूरे एक माह अपना उपचार करवाया और रोगावस्था अवधि के दौरान पुनः अपनी जनता के बीच वे आ खड़े हुए।

अनेक बार व्यासजी के स्वयं के राजनीतिक दल द्वारा लिये गये फैसलों के विरुद्ध संघर्षों में हिस्सेदारी लेने पर जब उन्हें जवाबदेही के लिए तलब किया जाता तो वे कहते जहां तक उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष का सवाल है मुझे कोई नहीं रोक सकता। स्व मुरलीधर व्यास का विशाल व्यक्तित्व किसी भी दलगत मान्यताओं और घेरा-बन्दियों से ऊपर था। मुरलीधर व्यास स्वयं एक संस्था थे। वे जन चेतना के प्रहरी थे।'

अपने राजनीतिक जीवन म नेतागण भिन्न भिन्न दलो म भले ही रह, शीप नेता व्यक्तिगत जीवन म दल निरपेक्ष रह कर भी पारस्परिक सम्ब ध बनाये रखते हैं। सावजनिक हित क मामलो मे तो कई बार वे एक साथ भी आ जात हैं। ऐसे ही दो नताओ म श्रीमती का ता कथूरिया एव मुरलीधर व्यास क नाम लिये जा सकते हैं। अपने राजनीतिक मतभेदो के बावजूद श्रीमती का ता कथूरिया ने श्री व्यास का कई बार साथ दिया। श्रीमती का ता कथूरिया क श दो म व्यासजी का व्यक्तित्व इस प्रकार उभरता है--'स्वर्गीय मुरलीधर व्यास सच्चे अर्थों म एक जननेता थ। जनता विशेष कर क गरीब एव श्रमिक वर्गों की सेवा म उन्होंने अपने आपको समर्पित कर रखा था।

'अपन विधान सभा के कायकाल म उन्हान अनेक जन समस्याओ को प्रभावशाली ढग स उठाया तथा उनके समाधान क लिए अनथक प्रयास किया। वे ओजस्वी व्यक्तित्व के एक ऐस मुखर नेता थ जिनक भाषणो का जनता पर जबरदस्त असर होता था। राजनीति का उन्होंने कभी भी अपने स्वार्थों की सिद्धि का साधन नही बनाया वरन् जनसेवा के माध्यम के रूप म उसका उपयोग किया। उनकी महत्वाकाक्षा पद म न होकर सेवा म थी।'

व अपने दल की राष्ट्रीय कायकारिणी के वरिष्ठ सदस्य थे राजस्थान विधान सभा म विरोधी दल के नेता थे तथा एक उद्भट सघर्षशील व्यक्तित्व होन के साथ साथ जागरूक पत्रकार भी थे। एक आदश नेता म जो गुण होने चाहिए जैसे सत्य निष्ठा, सच्चरित्रता, साहस, सदाशयता सघर्षशीलता परोपकार उदार भावना सतत जागरूकता–ये सब गुण व्यासजी म थे।

श्रीमती का ता कथूरिया ने व्यासजी को अनक गुणो का सगम माना है। बीकानेर की जनता इस बात को जानती है कि व्यास जी के निधन के आघात को श्रीमती कथूरिया सहन नही कर पाई थी तथा श्मशान भूमि पर व्यास जी के दाह के समय व बेहोश होकर गिर पडी थी और उन्ह अस्पताल ल जाना पडा था। श्रीमती का ता कथूरिया न सच ही कहा है कि म उनकी स्मृति को नमन करती हू।

अब जरा उन लोगो के विचारो का जायजा ल जिन्होने व्यासजी के नेतृत्व को सर्वो परि माना तथा उनके प्रति 'देव स्वरूप निष्ठा व्यक्त की। उनम से एक हैं श्री शिव दयाल जी उर्फ बुई महाराज। बुई महाराज का कहना है–'मीरा जस कृष्ण की दीवानी थी—मीरा को जस कृष्ण ही कृष्ण दिखते थे—हम लोगो को वसे ही मुरली ही 'मुरली दिखाई देते थे। मैं सन् 1952 म व्यासजी के साथ था। हर

चुनाव म मैंन उनके समथन म काम किया। मोटिगो म जहा व्यास जी बोलत थे, जनता उमड पडती थी।'

"यास जी का मृत्यु का वणन करते हुए बुई महाराज न कहा—'व सत्य के पुजारी थ। मैं उनका पूरी तरह से भक्त बना रहा। जब उनका निधन हुआ तो सारा बीकानेर शोकमग्न हो गया। उनकी शवयात्रा मे हजारा हजारा लोग थ। मकडा नर-नारी अपनी छता स उनके दशन कर रह थे। मैं अन्त्येष्ठी स्थल तक नग पाव गया। जेठ का महीना था। पावो म छाल हो गये। पूरे रास्ते लाग रोत-बिलखत दिखाइ देत थे। लागो की अश्रुधारा रोके नहीं रुकती थी। श्रीमती कान्ता कथूरिया तो बेहोश हाकर गिर पडी। व्यासजी गरीब नवाज थे। हिन्दू मुसलमान सभी रो रहे थ।

बुई महाराज न "यासजी की स्मृति म कुछ ममस्पर्शी गीता की रचना का थी। गीतो क उद्धारण इस प्रकार ह —

(1) तेरे जान के बाद तेरी याद आइ
दिल लगाने क बाद तेरी याद आइ
जब तेरी चिता जल रही था/तो मेर मन म यह उमड रहा था
तेर लोवाने ने तेरे मरघट पर यह कसम खाई
दिय वोट तुझको, अब किसी का नहीं देंगे मेरे भाई
तेर जाने के बाद तेरी याद आई

(2) जीना तेरी गली म मुरला मरना तेरा गली म
मरन के बाद खुशबू हागी गली गली म।

बुई महाराज न "यास जा के प्रति समपण भाव रखा। अपनी भावात्मक शपथ का निवाह करत हुए 1971 के बाद उ होने किसी भी चुनाव म अपना मतदान नहीं किया। जीवन भर का वोट मुरलीधर जा के साथ ही समाप्त हो गया।

"यासजी न बीकानेर नगर म कइ दीवान भक्तो की एक अनमोल कतार तयार की। इनम स एक हैं श्री नटवर लाल, जो नटवर 'उबाडा' क नाम से विख्यात ह। श्री नटवर लाल का कहना है — हम व्यासजी को माइत समझत थ। उनका भी हमार साथ ऐसा हा सम्बध था। व मुझे पुत्रवत मानते थ। मरा "यासजी स 1966 म सम्पक हुआ। मैं उन दिनो उनकी जीप चलाया करता था। मैंन 18 20 महीना तक गाडी चलाई। जब बिन्नाणी बगीचा म शिविर लगाया गया तो मैंने उसम भाग लिया था। इस शिविर मे नाना डैंगल और लखनलाल कपूर आए थे। मैं "यासजी के साथ लोकसभा चुनाव म महाराजा डा करणी सिंह जी के समथन म चुरू गया। देशनोक

भा गया। 1967 के चुनाव में मैं व्यासजी का कार्यकर्ता था। हम लोग साइकिल पर प्रचार करते पर्चे बाँटते तथा जन समर्थन जुटाते थे।

श्री नटवर लाल ने व्यासजी की जनसेवा का चित्रण इन शब्दों में किया है – व्यासजी बहुत बीमार थे। उन्हें अपने कावर और तिल्ली के इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती होना पड़ा लेकिन लोग अपनी समस्याएं लेकर उनके पास आते रहते। आमतौर से व्यासजी सवेरे अस्पताल में भर्ती होते और शाम को फिर बिना किसी सहायता के अस्पताल से वापिस आ जाते। ऐसा कम से कम 50 बार अवश्य हुआ होगा। मृत्यु से दो-तीन महीने पहले डॉ. के. डी. गुप्ता और डॉ. आभा ने लिवर के खराब होने तथा तिल्ली बढ़ जाने की चेतावनी व्यासजी को दे दी थी। उन्हें पूर्ण विश्राम करने एवं नियमित उपचार करवाने का परामर्श भी दिया था। व्यासजी ने बात मान ली, लेकिन बाद में फिर वही क्रम शुरू हो गया। उन दिनों अकाल के प्रसंग में घास मंगवाया गया था। समय पर नहीं उठा पाने से झमेला लग गया। व्यासजी ऐसी प्रकरण को लेकर अपने स्वास्थ्य की पूर्ण उपेक्षा करते हुए अस्पताल से वापिस आ गये। मृत्यु के संकट का सामना करते हुए भी उन्होंने जनसेवा से मुँह नहीं मोड़ा।

श्री नटवर लाल व्यासजी के विश्वस्त शिष्यों में रहे। 30 मई की रात को जब व्यासजी का निधन हो गया तो प्रजा समाजवादी पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय तथा अन्य नेताओं को उन्होंने ही तार द्वारा यह दुखद सूचना दी। मृत्यु वाली रात को ही जगह जगह घूमकर लोगों को भी सूचित किया। श्री नटवरलाल तो उस रात तांत्रिक उपाय करके भी व्यासजी पर टूटे के खतरे को समाप्त करना चाहते थे (चाहे श्मशान में रात को अकेले ही तांत्रिक उपाय क्यों न करना पड़े) पर विधि को यह मंजूर नहीं था। व्यासजी का निधन होना था नियति के चक्र को कोई नहीं रोक सका। वे चल बसे।

व्यासजी की इस शिष्य परम्परा में एक नहीं अनेकों नाम हैं। उनके शिष्यों के साथ सत्ताधारियों ने चाहे कठोरता दिखाई हो पर उनमें से एक भी शिष्य विचलित नहीं हुआ। सभी फौलादी चट्टान सिद्ध हुए। ऐसे ही एक अन्य फौलादी व्यक्तित्व हैं श्री रूपनारायण। रूपनारायण के मन में व्यासजी की मंजुल मूर्ति की छवि जैसे आज भी उसी दिव्यता के साथ जगमगा रही है। उनका कहना है – '1967 के चुनाव में मैंने व्यासजी के समर्थन में एक गीत बनाया था जिसे सभाओं में खूब गाया गया। मैं व्यासजी के साथ प्रजा समाजवादी दल के राष्ट्रीय अधिवेशन के समय कानपुर भी गया था। बाद में हम लोग कलकत्ता गये। कलकत्ता में व्यासजी का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। श्री समर गुहा साहब भी उस अवसर पर उपस्थित थे।

-यवस्थापकों में श्री बृज मोहन तूफान श्री सत्य नारायण पुरोहित श्री मोहन लाल पुरोहित आदि भी थे। चुनाव में पराजित होने के बाद व्यासजी कलकत्ता गये थे लेकिन उनके प्रति लोगों में श्रद्धा बसी की बसी बनी रही। महान् जनसेवक थे -यासजी।

श्री रूपनारायण ने भी बताया कि व्यासजी गम्भीर रूप से बीमार होने तथा अस्पताल में भर्ती होने के बावजूद गरीब लोगों के काम के लिए प्रायः अस्पताल से आ जाया करते थे। धीरे धीरे रोग गम्भीर होता चला गया। मृत्यु की रात को 10 बजे तक मैं उनके पास था। सत्य नारायण पारीक से व्यासजी ने बातचीत की। अपने पुत्र घनश्याम को बुलाया – बात की। बस उसी रात वे चल बसे। हमारे सिर से उनका साया उठ गया। गरीबों का हितैषी, गरीबों का मसीहा चल बसा।'

-यासजी का -यक्तित्व तो राष्ट्रव्यापी था लेकिन उन्होंने अपने स्थानीय समर्थन को सदैव मजबूत बनाये रखा। उनके समर्थक ऐसे थे और हैं जो आजीवन उनके साथ रहे और -यासजी की मृत्यु के उपरान्त भी उनकी विचारधारा के साथ है। ऐसे एक समर्थक हैं श्री काशीराम स्वर्णकार। श्री स्वर्णकार उन दिनों के साथी हैं जब -यासजी जन विद्यालय में अध्यापक थे तथा बच्चों को आजादी की कहानियां सुना कर प्रेरित किया करते थे। श्री स्वर्णकार ने बताया कि व्यासजी छात्रों के जबरदस्त हितैषी थे। जब जन विद्यालय समिति ने मोहनलाल पुरोहित नामक छात्र को अकारण विद्यालय से निकाल दिया तो मोहल्ले वालों ने इसका विरोध किया। -यासजी ने भी छात्र को पुनः प्रवेश देने की हिमायत की। विद्यालय पर कांग्रेसी विचारधारा वाले लोगों का वर्चस्व था तथा छात्र मोहनलाल कांग्रेस का विरोध करता था। बस इतनी सी बात पर उसे निकाल दिया गया था। बाद में मोहल्ले के निवासियों और व्यासजी की पुरजोर हिमायत के दबाव में आकर उसे वापिस भर्ती करना पड़ा।

श्री स्वर्णकार प्रजा समाजवादी दल की कार्यकारिणी के सदस्य थे। विधान सभा के लिए उम्मीदवार का चयन किया जाना था। श्री सत्य नारायण पारीक एवं व्यासजी के बीच में उम्मीदवारी का निर्णय होना था। भारी दबाव के बावजूद श्री स्वर्णकार ने व्यासजी के पक्ष में मत दिया तथा वही सम्भवतः निर्णायक मत था। व्यासजी का चयन हो गया। उन दिनों प्रत्याशी का निर्णय करने के लिए राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री अशोक मेहता आए हुए थे। -यासजी के चुनाव की खुशी सब को हुई– यहां तक कि श्री भंवर लाल महात्मा की पत्नी (जिसे व्यासजी ने धर्म बहिन बना रखा था) भी काफी प्रसन्न थी। उनके पति श्री महात्मा श्री सत्य नारायण पारीक के पक्षधर थे लेकिन व्यक्तिगत जीवन में व्यासजी के साथ उनका पारिवारिक सम्बन्ध बना रहा।

यासजी जन हितैषी थ। लोगो की सेवा म अहर्निश जुटे रहते थ। श्री स्वणकार न एस दो-तीन दृष्टान्त बताय जब अस्पताल म रोगियो को भर्ती नही किया गया लकिन व्यासजी ने रात को दो दो तीन तीन बजे जाकर उन्ह भर्ती करवाया। एसा एक प्रकरण क हैया लाल सोनी का है जिसक रीढ की हड्डी म चोट आई थी। राज नीतिक दबाव क कारण उस अस्पताल म भर्ती नही किया गया। नाग बाग व्यासजी के घर पहुँचे। आधी रात को स्वय बीमार होत हुए भी व्यासजी पदल कोटगट तक बुड्डा बाडी वाला क निवास पर गय तथा वहा स फान करक अस्पताल वालो स रागी को भर्ती करन के लिए कहा। जब उन्हान आना कानी की ता स्वय अस्पताल पहुँच तथा उस भर्ती करवाया। इसी तरह कसर क रागी मालचद को जब लम्बी बीमारी देखत हुए अस्पताल स निकाल दिया ता व्यासजी ने हस्तक्षेप कर क उस पुन प्रवेश दिलाया तथा अस्पताल की तरफ स कीमती औषधियो और इजक्शनो की भी नि शुल्क व्यवस्था करवाई।

स्वण नियत्रण अधिनियम क विराध म व्यासजी न कई सभाए की-कई जुलूस निकाले तथा इस काल कानून की सजा दी। उस समय मोरारजी दसाई वित्त मत्री थ। श्री स्वणकार न बताया कि व्यासजी गरीबा क हित म अलख जगात थ। अस्पताल और जल म व पाय चक्कर लगा कर देखत रहत थे कि रोगियो/बदियो को कोई परशानी तो नही हो रही है। व वास्तव म एक देवपुरुष थ।

व्यासजी क अनन्य समथको म से एक है हनुमान आचाय (एडवोकेट)। श्री आचाय सन् 1956 स 1966 तक 10 वर्षों तक प्रजा समाजवादी दल के सचिव रहे। सन् 1957 म व्यासजी के चुनाव अभियान क समय व उनके इलेक्शन एजेन्ट भी थ। 1962 के चुनाव क समय दल म आन्तरिक सघष की स्थिति आ गई लेकिन श्री हनुमान आचाय काशीराम स्वणकार तथा दादा घेवरचद आदि न व्यासजी का प्रबल समथन किया। श्री आचाय तो उस निणयाक सभा क अध्यक्ष थ जिसम प्रत्याशी का चयन गुप्त मतदान द्वारा होना था। कुछ नताओ न मतदान क परिणाम को नही माना। बाद म अशोक महता बीकानर आए। श्री हनुमान आचाय ने उनको दल की आतरिक स्थिति स अवगत कराया। निणय व्यासजी के हक म ही हुआ। श्री माणिकचद सुराणा को कालायत स प्रत्याशी बनाया गया। लोगो म इस भ्रान्ति को पनपाया गया कि व्यासजी एव सुराणाजी म घने मतभेद है तथा वे एक दूसर को पराजित करना चाहत है। इस भ्रान्त धारणा को उन्मूलन करन क लिए श्री हनुमान आचाय (व्यासजी के चुनाव एजेन्ट) तथा श्री धनसुख दास चाण्डक (सुराणा के चुनाव एजेन्ट) ने मिल कर एसी व्यवस्था की जिसक अनुसार सुराणा के चुनाव क्षेत्र की सभाओ म व्यासजी ने भाषण दिये तथा व्यासजी के चुनाव क्षेत्र मे सुराणाजी

ने समाओ म भाग लिया। इस गगा-जमुनी मिलन से दोनो चुनाव क्षेत्रो मे प्रजा समाजवादी दल की ही विजय हुई। एक और एक मिल कर दो नही, ग्यारह बन गये।'

श्री हनुमान आचाय एडवोकेट, ने बताया कि मैं व्यासजी के साथ बढैया (बिहार) म प्रजा समाजवादी दल के राष्टीय अधिवेशन म भाग लेन गया था। उस अधिवेशन म (जो 1966 मे हुआ) जयप्रकाश नारायण, एन जी गोरे, सूरज बाबू और लखनलाल कपूर जस दिग्गज नेता मौजूद थ। व्यासजी ने राजस्थान की राजनीतिक स्थिति बताते हुए तत्कालीन मुख्य मत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया के 'भ्रष्टाचार' का पदाफाश किया। उनके अकाटय प्रमाणो स सभी लोग बेहद प्रभावित हुए। बिहार के जन समुदाय पर व्यासजी का जादू इस कदर छाया कि उन्हे आसपास के कई क्षेत्रो स निमत्रण मिला। पूव निर्धारित कायक्रम को रोक कर भी व्यासजी उन सभा क्षेत्रो म गय तथा लोगो म राजनीतिक जागृति पदा की। बाद मे कलकत्ता मे व्यासजी का अभूतपूव स्वागत किया। मैं उस समय भी उनके साथ था।'

श्री आचाय न बताया कि इक्के ताँगे वालो न घोडो के लिए सस्ती दर पर चना दिये जाने की माग की तब कलक्टर स मिलन एक तरफ व्यासजी और दूसरी तरफ गोकुल प्रसाद आ गय। कलक्टर ओतिमा बोडिया ने कहा कि 'मैं नही जानती इक्के ताँगा वालो का असली नेता कौन है?' व्यासजी कुछ नही बोले। दूसरे दिन इक्के ताँगे वालो का जुलूस लेकर पब्लिक पाक गय – पूरा पब्लिक पाक इक्का ताँगा से भर गया। जिलाधीश को मानना पडा कि वास्तविक नेता व्यासजी ही हैं।

व्यासजी की आर्थिक स्थिति बहुत खराब रहा करती थी। कई बार तो ऐसा होता कि घर म 5 10 रुपये लेकर निकलते ताकि घर पर गेहूँ भिजवा सकें लेकिन रास्ते म ही लोगो के साथ उनके काम करवाने इधर उधर चल जाते। सारा रुपया ताँगे के किराये म ही चला जाता। घर वाले भी भूखे और खुद भी भूखे – ऐसी घटनाए तो अनेको बार हुई थी। 1967 म व्यासजी पर राजस्थान भर का दायित्व डाल दिया गया। उन्हे प्रजा समाजवादी दल के प्रत्याशियो के समथन म जगह जगह पर जाना पडा। स्वय के चुनाव क्षेत्र की उपेक्षा करके भी उन्होने यह काय किया। उनकी पराजय के अनेक कारणो मे एक कारण यह भी था कि वे अपने चुनाव क्षेत्र पर अधिक ध्यान नही दे पाए। और भी अनेक कारण थे जिन्हें जनता अच्छी तरह जानती है।

श्री नारायण दास रगा ने भी एक घटना के बारे म बताते हुए कहा कि व्यासजी धारा 144 तोडने में अग्रणी रहते थे। 29 माच 1966 के भारत बद के दिन

उन्होंने सज्जनालय के सामने 'इन्कलाब जिन्दाबाद' कह कर धारा 144 की धज्जियां उड़ाई तथा अपनी गिरफ्तारी दी। धारा और राइफलधारी पुलिस की टुकड़िया थी। वातावरण में तनावपूर्ण अशान्ति था। गिरफ्तार होने वालो में व्यासजी के अतिरिक्त श्री वी डी राठी, और दो तीन राज्नीधर के कर्मचारी तो थे ही, मुझे भी गिरफ्तार कर लिया गया। दो तीन दिनों बाद छोड़ दिया गया।

प्रश्न गिरफ्तारी अथवा रिहाई का नहीं – प्रश्न इस बात का है कि जन चेतना के क्षेत्र में खतरे के सामने पहला वार कौन करता है। व्यासजी सदैव हरावल पंक्ति में रहने वालो में से थे। खतरे का सामना दम्भ कर वे विचलित होने के स्थान पर उससे जूझने को तत्पर रहा करते थे। उनके जीवन के अनेक प्रसंग अनेक साथियों को आज भी कण्ठस्थ हैं। ऐसे ही एक साथी हैं सरदार मोहकम सिंह जो बीकानेर में ध्वनि प्रसारकों के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं।

सरदार मोहकमसिंह का व्यासजी से सम्पर्क सन् 1952 में ही हो गया जब वे गंगा गेट के पास न्यू रेडियो सेन्टर के नाम से ध्वनि प्रसारक यंत्रों की दुकान चलाया करते थे। व्यासजी के चुनाव अभियान में सभी ध्वनि प्रसारक यंत्रों दरियां, मंच तथा बिजली का प्रबन्ध सरदार साहब के जिम्मे ही रहा करता था। यहां तक कि सभाओं के लिए तांगों में प्रचार की व्यवस्था भी सरदार साहब अपने व्यक्तियों के माध्यम से ही करवाते थे। सरदार मोहकमसिंह ने बताया कि जब मैंने अपना स्वतंत्र व्यापार/व्यवसाय शुरू करना चाहा तो सब से पहले किराये के भवन की समस्या सामने आई। व्यास जी ने अपने कार्यालय की चाबी मुझे सुपुर्द करते हुए कहा कि आगे की तरफ आप दुकान चलाइये पीछे के कमरे में हमारी पार्टी का कार्यालय चलता रहेगा। तब से मैंने वहीं पर अपना कार्य शुरू कर दिया। भवन तथा बिजली का किराया मैं देता रहा। उन दिनों जामसर आंदोलन के श्रमिक नेता राधेश्याम गौड़ तथा गुप्ता जी आदि वहां आते जाते रहते थे। व्यास जी की सभाओं में व्यवस्था का दायित्व प्राय मुझे ही संभालना होता था। सभाओं में भीम पांडिया डफली लेकर गीत गाते बावरा जी हरीश जी तथा लालचंद भावुक ओजस्वी कविताएं सुनाते बुलाकी जी व्यास (बुला महाराज) चुनावी गीत गाते गोपाल चन्द्र सत्य नारायण पारीक माणिकचंद सुराणा आदि के भाषण होते और तब कहीं जाकर अंत में व्यासजी अपना भाषण दिया करते थे। यदि व्यासजी का भाषण पहले करवा दिया जाता तो लोग बाग उठकर चले जाते तथा सुनने वाला नहीं बचता। सारे शहर में मीटिंग होती थी–राना बाजार चौपड़ा कटला गंगा गेट, नायकों का बास, दम्मा णियों का चौक बारह गुवाड़ कोचरों का चौक मोहता का चौक और नाता बाजार समाजों के प्रमुख स्थान थे।

'मैंने व्यासजी के साथ रह कर काम किया। देश के बड़े से बड़े नेता उन दिनों बीकानेर आया करते थे जिनमें श्री एस एम जोशी, श्री नाथ पाई श्री अशोक मेहता, श्री मगनलाल बागडी तथा अन्य लोग सम्मिलित हैं। व्यास जी मेरे साथ कई बार अकेले दो दो तीन तीन घण्टा तक बैठे रहते। व्यासजी के कार्यालय में मेरी दुकान उस समय तक रही जब तक वहा कार्यालय रहा। रामपुरिया कटला बन जाने पर कार्यालय उस भवन में अन्यत्र ले जाया गया।

'सन् 1967 के चुनाव में भी व्यासजी को अपनी जीत का पूरा भरोसा था लेकिन गोकुल प्रसाद के पीछे सत्ता का जबरदस्त समर्थन होने तथा ट्रासफर की राजनीति के चलाये जाने से बहुत से लोग उनके पक्ष में हो गये, फर्जी वोट भी डलवाये गये। गुण्डागर्दी भी बहुत हुई। व्यास जी की 1967 में पराजय तो भले ही हो गई लेकिन जनता ने उसका बदला सन् 1972 में गोकुल प्रसाद की जमानत जब्त करवा कर ले ही लिया। तब तक व्यासजी ससार से जा चुके थे।

सरदार साहब के कथनानुसार—'कई बार आदोलनों के समय पुलिस हमारे माइक उठा ले जाती, जब्त कर लेती अथवा उन्हें तोड फोड देती। व्यासजी ऐसे अत्याचारों के चित्र विधान सभा में भी दिखाने से नही चूकते थे। जब जयपुर में विधान सभा के सामने प्रदर्शन किया गया तो मैं भी व्यासजी के साथ गया था। बीकानेर से दो तीन बसें भर के प्रदर्शनकारी जयपुर गये थे। जबरदस्त जुलूस निकला, जलेबी चौक में लाठी चार्ज हुआ। जलेबी चौक भरा हुआ था। विधान सभा के घेराव का कार्य नम था। व्यास जी इन अत्याचारों से तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने ओजस्वी भाषण दिया।

सरदार साहब तो व्यासजी के पल पल के साथी थे। उनका कहना है कि 'व्यासजी आदोलन के दिनों में कई बार डागा बिल्डिंग के बद कमरों से भाषण देते तथा माइक बाहर की ओर लगा दिया जाता। हजारों लोग सडकों पर खड़े हो कर भी उनका भाषण सुना करते थे। हमारे माइक तो कई जगह तोडे गये—स्टेशन पर रतन बिहारी पार्क में, डागा बिल्डिंग पर, लेकिन मैंने पार्टी से कभी भी पैसा नहीं लिया। पूरे चुनाव में व्यासजी की अनेकों सभाएं होती पर मैं नाममात्र की राशि से माइक व्यवस्था कर दिया करता था। मेरा उनसे ऐसा आत्मीय सम्बन्ध था। व्यास जी एक सच्चे नेता थे। जनहित में जिससे लडते तो खुल कर लडते थे। लुक्का छिपी नहीं करते। उन्हें काग्रेस में आने एव मिनिस्टर बनाये जाने के प्रलोभन भी दिये गये लेकिन कोई भी प्रलोभन उन्हें कभी भी डिगा नहीं सका। वे वास्तव में महान् नेता थे।'

य विचार हे एक सच्चे, सात्विक समर्थक थे। अब जरा एक कलाकार की भावनाओं से व्यासजी के व्यक्तित्व को परखा जाए तो उसमें और अधिक ताजगी मंदगति चालता तथा साहित्यिक सांस्कृतिक रुझान के दर्शन होंगे। कलाकार है सुप्रसिद्ध स्वर साधक श्री मोतीलाल रंगा, जिन्होंने अपनी रचनाओं तथा संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से व्यासजी के संदेश को जन जन तक पहुँचाने का श्लाघनीय कार्य किया और आज भी कर रहे हैं।

श्री मोतीलाल रंगा ने व्यासजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर मुरली और माता नाम से एक हस्तलिखित संकलन तैयार किया है जिसमें उनके संस्मरण दिये गये हैं। कुछ एक उद्धरण यहां पर प्रस्तुत हैं—

एक बार व्यासजी को न मालूम क्या मेरी आवश्यकता हुई। उन्होंने श्री नारायण दास रंगा को मुझे घर से बुला लाने को कहा। मैं घर व अन्य जगहों पर भी नहीं मिला। दूसरे दिन जब मैं उनसे मिलने गया तो उन्होंने मुझे कहा—आप कहां चले जाते हैं कहीं भी नहीं मिलते ? मैंने स्पष्ट किया कि व्यासजी इस विकट जमाने में खुराक नहीं मिलने से रियाज (अभ्यास) तो होता नहीं। सोमवार को शिवजी, मंगलवार को श्री नागणेचेजी मां एवं पवनसुत हनुमानजी, बुधवार को गणेशजी गुरुवार को श्री गुरु महाराजा शुक्रवार को संगीत तथा शनिवार को माताजी हनुमान जी के जाया करता हूं। व्यास जी बोले रविवार बच गया है। मैंने कहा देखिये व्यासजी, आपकी और मेरी सिंह राशि है। आप मुझसे बड़े हैं। रविवार आपको समर्पित है। व्यासजी ने कहा—इसका मतलब हुआ कि हर रविवार को आप मुझसे मिलने आया करोगे। मैंने कहा—हाँ। मैं नियमपूर्वक हर रविवार को व्यासजी से मिलने जाने लगा। बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि व्यासजी ने रविवार को ही इस संसार से हमेशा के लिए प्रस्थान किया लेकिन मैं अभागा हॉस्पिटल जाकर भी उनसे अंतिम समय नहीं मिल सका क्यों कि मैं उन्हें मरते देख सकने में काँप रहा था। देख नहीं सकता था।

सन् 1967 में एक बार मेरे मकान संबंधी संकट उत्पन्न हुआ। मेरे रिश्तेदारों ने नोटिस दिया कि दे दो या ले लो। मैं इस संकट में दुःखी होकर व्यासजी के पास गया। मैंने कहा—व्यासजी ! मेरे घर में मेरे चाचा लोगों ने कमरों के ताले लगा दिये हैं। संकट है। मुझे उस वक्त बहुत वर्ष पहले हाउस बिल्डिंग लोन का काम मेरा हुआ था, याद आ गया जो जिलाधीश की स्वीकृति पर निर्भर था। व्यासजी बोले—मैं जिलाधीश से बात करूंगा। व्यासजी ने मुझे उपयुक्त लोन दिला कर मेरे लिए घर दिलाया जबकि व्यासजी दस वर्ष एम एल ए रह कर भी अपना घर नहीं बसा

सके। सारी उम्र किराये के मकान में रहे। मकान मरम्मत हो जाने पर व्यासजी मेरा घर देखने पधारे-ऊपर से नीचे तक घर देख कर बड़े खुश हुए।'

साले की होली मे कांग्रेस की चुनाव सभा चल रही थी, जिसे देखने परखने सुनने समझने बीकानेर की सारी जनता वहा उपस्थित थी। चारो ओर टोपधारी पुलिस गश्त लगा रही थी। मोहनलाल सुखाडिया, तत्कालीन मुख्यमंत्री ने कहा-ऐसे सकड़ो मुरलीधर सुखाडिया से टकराकर खत्म हो जायेंगे। लोग मुस्कराकर कहने लगे-यह एक डिक्टेटर है। इस आबोहवा मे मेरा मानस भी कुछ बदला। याद आई व्यास जी की बात। (वे मुझसे सहयोग चाहते थे) सहयोग। सहयोग।। सहयोग।।। विह्वल स्थिति। घर जाकर बंद कमरे मे कलम उठाई। गीत को स्वरूप देने। 15 मिनटो म गुरु महाराजा की कृपा से डिक्टेटर के भावो के अनुरूप ही गीत तयार हो गया। जसे पहले से बना हुआ हो। नीचे टपकने मात्र की देर हो। दौडा दौडा पहुचा व्यास जी के पास। वे बोले-यह ठीक है लेकिन इसे गायेगा कौन? इस पर चुप्पी साधना ही ठीक समझा। मेरे पास कोई गायक नही था और मैं ठहरा सरकारी कर्मचारी। निराश मुद्रा म बठा हुआ ही था कि मेरा लडका स्व झवरलाल आ गया। मैंने उस गीत की प्रेक्टिस करवाई। उसने पहली बार यह गीत भुजिया बाजार की सभा म गाया। डा हरिप्रसाद के पुत्र स्व प्रद्युम्नकुमार तथा जयहिन्द प्रकाश ने वाद्ययत्रो पर सगति की। चुनाव सभा म अपार जन समुदाय था। दोरे व्यासजी जिन्दाबाद के नारे जम कर लग रहे थे। गुरु महाराज की कृपा से गीत हिट हो गया। जनता साथ साथ गाने लगी। हर अन्तरे पर करतल ध्वनि होने लगी। गीत जनता की जबान पर चढ गया—

डिक्टेटर का कट्टर दुश्मन है यह बीकानेर

सारा बीकानेर सत्य की रहा है। माला फेर। डिक्टेटर सच्चे नेता की पहचान यही है कि वह अपने साथ भावी नेतृत्व को भी पनपाता रहता है। वह आत्म केन्द्रित नही होता-किशोरो और युवको की एक पीढी का तयार करता है। स्व मुरलीधर व्यास म यह विशेषता थी। वे प्रत्येक व्यक्ति के छद्म गुणो को पहचानकर उसे आम लोगो के सामने आगे लाने की चेष्टा किया करते थे। उनके चुम्बकीय प्रभाव म किशोर भी आए और युवक भी। साधारण आर्थिक स्थिति के किशोर और युवको म से एक है श्री विशन मतवाला। श्री विशन मतवाला आपत कालीन स्थिति के दौरान 19 महीनो तक बीकानेर की जेल म बदी रहे थे। उन्होने साहस और जीवट की दीक्षा व्यासजी से ही ली थी। श्री मतवाला का कहना है– आदरणीय श्री मुरलीधर जी व्यास मेरे सार्वजनिक जीवन के अग्रणी रहे है। उनके जीवन को देख कर उनसे प्रेरणा लेकर मैंने अपना सार्वजनिक जीवन बनाया। मैंने स्व

मुरलीधर जी व्यास के साथ पहली बार सन् 1966 वे जेल यात्रा की। दाती बाजार मे धारा 144 को हमने तोडा तथा गिरफ्तार कर लिए गए। ठिठुरती सर्दी म हम पहले पुलिस लाइ स ले जाया गया फिर रात्रि को लगभग 2 3 बजे जेल म डाल दिया गया। आन्दोलन के दौरान बहुत सारे लोग जेल गए थे जिनम स्व मुरलाधर व्यास, भीम पाडिया, हनुमान दास आचाय माणिकचद सुराणा मास्टर सु दर दास स्व डा जगन्नाथ (जग्गू) तथा मेरा नाम सम्मिलित है। इस आन्दोलन के दौरान सिटी उच्च माध्यमिक विद्यालय के पास अश्रुगस छाडी गई। अदालत के अहाते म लाठी चाज किया गया तथा सारे स्कूल कॉलेज बन्द रहे।

'दूध-निकासी आदोलन' के समय कई महिलाए भी जेल गई जिनम चादा देवा, गुलाब देवा मन्नजी व्यास की धम पत्नी वशीधर जी व्यास की धम पत्नी श्रीमती राधा बाई तथा मुरलीधर जी की लडकी शान्ति भी थी। पुलिस चुपचाप महिलाओ को रिहा करना चाहती थी लेकिन व्यासजी का जबरदस्ती जेल म डाल कर बाद म रिहाई करने को आमादा थी। व्यासजी ने उन्ह डाटा मुझे जबरदस्ती जेल म डाल कर महिलाओ के साथ अभद्र व्यवहार कर के उन्ह अपमानित करना चाहते हो। मैं ऐसा नही होने दूगा। पहले महिलाओ को जेल के भीतर भेजो फिर मैं बात करूगा। महिलाओ के छोडे जाने पर उन्ह मालाए पहनाई गई।

जब मुझे मजिस्ट्रेट के सामन पेश किया गया ता मजिस्ट्रट न पूछा तुमन धारा 144 तोडी? मैंने कहा-हा बार बार तोडी और बाहर निकला तो फिर तोडूगा। यह सारा जोश खरोश और साहस व्यास जी की ही देन थी।

व्यासजी ने जिन परिपक्व चितनशील युवको को तयार किया उनम दो नाम सहज ही सामन आते हैं। एक हैं श्री बुलाकी दास बावरा तथा दूसरे हैं श्री लालचन्द भावुक। दोनो कवि हैं ओजस्वी वक्ता हैं तथा शिक्षक समाज म प्रतिष्ठित हैं। श्री बावरा जन विद्यालय के समय स ही व्यासजी की सभाओ म कविताए बोला करते थे जुलूसो म जाते सभाओ की व्यवस्था करते तथा चुनाव के समय लोकप्रिय गीत बना कर सभाओ म गाया करते थे। उनका गीत 'मतवाली दुल्हन' आज भी जन जन की जुबान पर है। श्री भावुक अत्यन्त ओजस्वी वक्ता तथा प्रखर कवि हैं। उन्होंने कई सघर्षों म किशोरावस्था से ही व्यासजी का साथ देना शुरू कर दिया था। व्यासजी की सभाओ म वे कविताए बोलते तथा भाषण दिया करते थे। चुनाव के दिनो म व्यासजी के लिए प्रचार करने, जनमत को प्रभावित करने तथा कई यात्राओ म उनके साथ रहने का सौभाग्य श्री भावुक को प्राप्त है। सरकारी सेवा म रहते हुए भी श्री भावुक ने सदव साहस का वरण किया। श्री भावुक आज भी कमचारी आन्दोलनो तथा अन्य सघर्ष की घडियो म सदा आगे रहते हैं। यही स्थिति श्री बावरा की भी है।

कवि श्री अब्दुल वहीद कमल का कहना है कि आदरणीय व्यासजी की जिंदगी के मुख्तलिफ पहलुओं पर बहुत कुछ कहा जा सकता है और कहा जाता रहेगा। यह है भी एक हकीकत कि उनकी शख्सियत, खासतौर पर सियासी शख्सियत का जामा इतना वसीह है कि उस पर जितना भी कहा जाय कम है। उनके नजदीकी और दूर के लोग इस सच्चाई से वाकिफ वावस्ता है कि व्यासजी की शख्सियत सही मान में सैक्यूलेरिज्म की हामी जुल्म के खिलाफ, मजलूम और मेहनतकश की बहुत बडी हिमायती थी। ऐसी शख्सियत का, जिसकी मुल्क की जंगआजादी मे लेकर किसी सियासी मामला में मुल्क के किसी बड़े लीडर से कम देन नहीं रही है जिसकी आवाज का बुलन्दी राजस्थान की असैम्बली में ही नहीं, बल्कि मरकजी हकूमत के कानों तक को चाका देती थी और मरकज की नेहरू सरकार से लेकर प्रोविंस की सुखाडिया सरकार तक में एक मुखालिफ पार्टी के लीडर की हैसियत से जनाब व्यासजी को जो दर्जा हासिल था वह सियासतदां को खूबी जानता है।'

व्यासजी के जीवन का इतिहास अनेक घटनाओं को समेटे हुए है। अनेक व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए तथा पूरे प्राणप्रण से उनके अनुयायी—एक प्रकार से अंध समर्थक तक बन गये। आज भी ऐसे हजारों व्यक्ति—व्यापारी, सरकारी कर्मचारी, मजदूर, ठेले वाले श्रमिक संघों के सदस्य पुरुष और महिलाएँ हैं जो बात बात में व्यासजी का गुणगान करते नहीं चूकते। उनके लिए मुरलीधरजी एक पूर्णतया आदर्श पुरुष, एक निस्पृह समाजसेवी एवं एक ऐसे सशक्त जननेता थे जिनका विकल्प आज तक उन्हें नहीं मिला।

व्यासजी के प्रमुख समर्थकों में श्री रजनीदास हर्ष का नाम महत्वपूर्ण है। श्री हर्ष ने उनके नेतृत्व में आन्दोलनों में भाग लिया सम्मेलनों का आयोजन किया तथा कर्मठ युवकों का एक समूह तैयार किया। 'द्रौपदी की आवाज' के सम्पादक के रूप में श्री हर्ष का योगदान सदैव याद रहेगा। व्यासजी जैसे नेता के सान्निध्य में रहने से उन्हें भारत के महान समाजवादी नेताओं के सम्पर्क में आने का भी अवसर प्राप्त हुआ। श्री हर्ष स्वयं एक अच्छे लेखक है। जब माया पत्रिका ने मुरलीधर जी का नामोल्लेख किये बिना अपना एक लम्बा लेख छापा तो श्री हर्ष ने उसका अत्यन्त पुरजोर प्रतिवाद किया। 'माया' के सम्पादक का कहना था कि भविष्य में यदि ऐसी कोई सामग्री मुद्रित होगी तो उस समय इस तथ्य पर पूरा ध्यान रखा जाएगा।

व्यासजी के समर्थकों में श्री गिरधर चन्द सुराणा एवं श्री सुखदेवजी मुनीम का नाम अग्रगण्य है। इन लोगों ने विरोधी शक्तियों की परवाह नहीं करते हुए सदैव व्यासजी का साथ दिया तथा उनके द्वारा संचालित आन्दोलनों में पूर्ण सहयोग दिया। व्यासजी

के चुम्बकीय व्यक्तित्व से ये हमेशा प्रभावित तथा अनुप्राणित रहे तथा आज भी हैं।

बीकानेर में भारत सेवक समाज को प्रारम्भिक वर्षों में गतिशील बनाने वाले तथा समाज सुधार के अनेक आयाम स्थापित करने वालों में श्री लूणकरण जी पुरोहित का नाम अग्रगण्य है। श्री पुरोहित भी व्यासजी के प्रमुख समर्थकों में रहे हैं। उन्होंने सामाजिक जीवन में जो मानक स्थापित किये व आज भी भारत सेवक समाज के उन दिनों के संचालकों तथा सदस्यों में चर्चित हैं। व्यासजी के संस्मरण सुनाते हुए श्री पुरोहित भावविभोर हो जाते हैं तथा ऐसे प्रेरणास्पद ढंग से सारी घटनाओं का वर्णन करते हैं कि उस समय का चित्र आँखों के सामने आ जाता है। सब जानते हैं कि व्यासजी का बहुआयामी व्यक्तित्व राष्ट्रीय धरातल से गाँव शहर तक छाया हुआ था। उन्होंने एक ऐसी पीढ़ी का नेतृत्व किया जो आज भी जीवन के विविध क्षेत्रों में पूरी सिद्धान्तप्रियता तथा संघर्षशीलता से अपना वर्चस्व स्थापित किये हुए है।

इस अध्याय में राष्ट्रीय स्तर के नेताओं से लेकर किसान मजदूर तथा छात्रवर्ग तक के विचार संकलित किये गये हैं। सैकड़ों ने अपनी बात कही पर हजारों हजारों के विचार इन बातों के समर्थन में अनकहे रह गये हैं। हर पीढ़ी अपने लिए एक आदर्श पुरुष चाहती है जिससे संकट की घड़ियों में भी प्रेरणा ली जा सके। आज के समझौतापरक सिद्धान्तहीन तथा स्वार्थी युग में उन महापुरुषों की पीढ़ी सिमट कर रह गई है जो जन की पीड़ा को मिटाने के लिए अपने आप को कुर्बान करने को तैयार रहें जो जनहित में समर्पित हों तथा किसी भी परिस्थिति में अथवा किसी भी लोभ के कारण विचलित नहीं हों। ऐसे शिखर पुरुष, ऐसे सलाका पुरुष, ऐसे आदर्श पुरुष कम अवश्य होते हैं। लेकिन जब भी सामने आते हैं जमाना उनके साथ चलने लगता है। व्यासजी उनमें से एक थे।

व्यासजी की मृत्यु के बाद बीकानेर तथा राजस्थान में उनके नाम पर कई आयोजन हुए हैं। बीकानेर नगर में उनकी दो मूर्तियाँ हैं—एक स्टेशन के पास आदमकद प्रतिमा तथा दूसरी सुथारों की बड़ी गुवाड़ में मूर्ति। एक का अनावरण लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने किया तो दूसरी का लोकप्रिय महाराजा डा. करणीसिंह ने। उनके नाम पर ट्रस्ट स्थापित हुआ सम्मेलन आदि किये गये तथा कलकत्ता में भी कार्यक्रम हुए—उन सबका विवरण आगामी अध्याय में है।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास पी बी एम हास्पिटल क एक कक्ष म।
क्रूरतम लाठिया की मार स आहत।

लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास का पार्थिव शरीर एवं पास में बैठे हैं व्यासजी के परिजन एवं अनुयायी श्री विष्णुदत्त नू एवं श्री मगनलाल आचार्य।
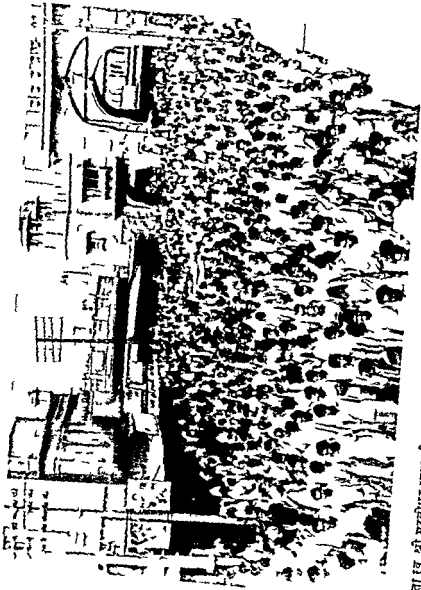
नेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास की महा प्रयाण यात्रा का एक विशाल जुलूस बीकानेर के सिंह द्वार कोटगेट के आर पार।

महाप्रयाण का एक दृश्य।
अपार जन समुदाय अपने नेता को कंधा देकर अश्रुपूरित विदाई दे रहा है।

चिर निद्रालीन लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास का अंतिम दर्शन

लाकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की अतिम यात्रा। महाप्रयाण के पदचाप ।
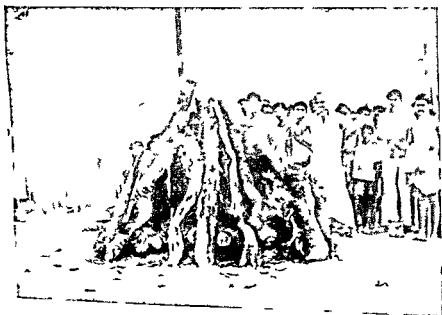
लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्याम की अतिम धूम यात्रा। पचभूत म विलीन काया भस्मीभूत हुई। अगणित जन समुदाय की अश्रुपूरित आँखें नम हाकर गम म घर गइ—जब तक सूरज चाँद रहेगा—मुरली तेरा नाम रहेगा।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर यास की स्मति म आयोजित कायक्रमा के बारे म जानकारी देते हुए श्री बालच द साड। तत्कालीन पुलिस उप महानिरीक्षक श्री भागीरथ राय विश्नाई एडवाकेट श्री पुनमचद खडगावत श्री प्रमबहादुर सक्सना श्री कमल मुकीम एव श्री नारायणदास यास दत्त चित्त हाकर सुन रह हैं।
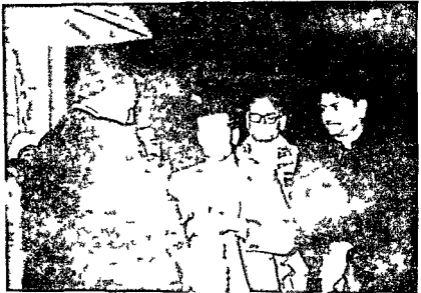
नोकनता स्व श्री मुरलीधरजा व्यास की पुण्य स्मति म आयाजित सभा म मुख्य अतिथि डा करणीसिहजी भूतपूव महाराजा बाकानर का स्वागत कर रह हैं माल्यापण स

लाकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति स्वरूप मुकीम-बोथरा चौक, बीकानेर म
आयाजित थली भेंट सभा के माक्षी हैं डॉ करणीसिंहजी, गाकुलप्रसाद पुरोहित
गोपाल जोशी, मानीलाल रगा, भवानी शकर व्यास, बालचन्द सांड ।
श्री लहरचन्द मुकीम श्रद्धाजलि देते हुए ।

लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति में थली भेंट सभा क मच के एक दश्याकन मे
श्री नारायणदास रगा श्री लहरचन्द मुकीम डा करणीसिंहजी श्री बालचन्द साड
श्रीशुभू पटवा श्री गणेश रगा, श्री मातीलाल रगा श्री भवानी शकर व्यास
विनाद एव श्री राजेन्द्र कुमार साड आदि स्मृतियां की लहरा म आत्मविभोर

बीकानेर स्टेशन पर स्थित स्व. श्री मुरलीधर व्यास की आदमकद मूर्ति की
स्थापना हेतु नेपाल के भू.पू. प्रधानमंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोयराला
भूमि-पूजन करते हुए।
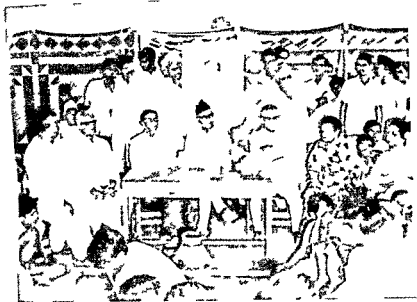
बीकानेर म स्व श्री मुरलीधर व्यास की प्रतिमा प्रतिस्थापन के म दम् म पधार नेपाल क भू पू प्रधानमंत्री श्री मातृका प्रसाद कोयराला दम्पति क साथ मच पर सर्व श्री भानुप्रतापसिंह (भू पू मंत्री नपाल) भवरलाल काठारी सत्यनारायण पारीक, तालाराम दुग्गड एव अन्य नागरिकगण
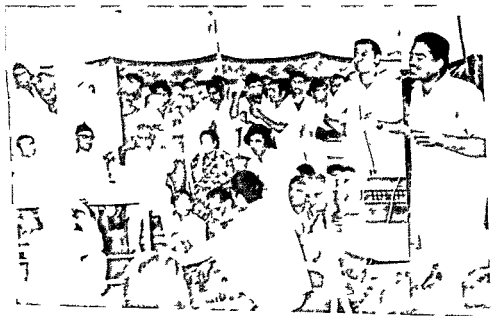
स्टेशन के पास स्व व्यासजी के प्रतिमा स्थल पर शिलान्यास कायक्रम का एक दृश्य। चित्र म मुख्य अतिथि श्री एम पी कायराला परिवार, श्री भानुप्रतापसिंह (भू पू मंत्री नपाल) एव श्री भँवरलाल कोठारी क सान्निध्य म कायक्रम का सचालन करत हुए श्री भवानीशंकर व्यास। आत्मविभार हाकर गीत प्रस्तुत करत हुए श्री शिवदयाल व्यास बुई महाराज'।

लोकनायक स्व. श्री जयप्रकाश नारायण बीकानेर में लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास की मूर्ति अनावरण के बाद जुलूस में जनता का अभिवादन स्वीकारते हुए आगे बढ़ रहे हैं। जीप में आगे की ओर बैठे हैं प्रमुख सर्वोदयी नेता श्री गोकुल भाई भट्ट एवं श्री सिद्धराज ढड्ढा। श्री आर. के. दास गुप्ता पास में खड़े हैं।
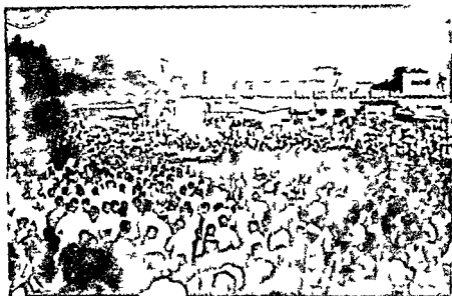
व्यासजी की मूर्ति के अनावरण के अवसर पर लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के आगमन पर बीकानेर स्टेशन के बाहर उमड़ता हुआ जन-समुदाय।

बीकानेर रेल्वे स्टेशन के बाहर स्थित जननेता स्व. मुरलीधर व्यास की आदमकद मूर्ति का एक दृश्य। मूर्तिकार श्री ईसरजी सुथार द्वारा माल्यार्पण।

स्व श्री मुरलीधरजी व्यास की प्रतिमा

डा करणीसिहजी द्वारा लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की मूर्ति को माल्यापण।

काल को चीरती हुई एक दिव्य स्मृति-रेखा

राजनीतिक जीवन अनेकों उतार चढ़ावों से युक्त होता है। बुलन्दी के दिन आते हैं तो गर्दिश के दिन भी पीछा नहीं छोड़ते। जनता की स्मृति इतनी लघु होती है कि गर्दिश में आये हुए नेताओं को विस्मृत करते देर नहीं लगती। बुलन्दियों के जो शिखर केवल राजनीतिक जोड़तोड़ के बल पर दमदमाये थे वे देखते ही देखते ध्वस्त हो जाते हैं। कई नेताओं का तो कोई नामलेवा भी नहीं रहता। हाँ, त्याग और तपस्या, सेवा और साधना, संघर्ष और चेतना के बल पर जो आगे बढ़ते हैं वे नेता अमर हो जाते हैं। न तो उन्हें राजनीतिक बुलन्दी लुभाती है और न गर्दिश के दिन उनके उज्ज्वल नाम के आगे धब्बा ही ला सकते हैं। स्व. मुरलीधर व्यास ऐसी उज्ज्वल और त्याग परम्परा के अंग थे। यही कारण है कि न तो जनता ने उनको अपने जीवन काल में भुलाया और न मृत्यु के बाद के 18 वर्षों में ही आज तक भुला पाई है।

बीकानेर नगर में उनकी दो भव्य मूर्तियाँ हैं—एक आदमकद मूर्ति स्टेशन के बाहर है तो दूसरी सुथारों की बड़ी गुवाड़ में है। नगर निवासी प्रतिवर्ष उनके दो दिवस मनाते हैं—30 मई को स्मृति दिवस तथा 4 जुलाई को जयन्ती उत्सव। समाज सुधार के काम हों या चुनावी दंगल के दिन—मुरलीधर व्यास आज भी लोगों की चेतना में छाये हुए हैं।

व्यासजी की मृत्यु के एक वर्ष के भीतर दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। 23 जनवरी 1972 को सुथारों की बड़ी गुवाड़ में उनकी भव्य मूर्ति का अनावरण किया गया। मुख्य अतिथि महाराजा डॉ. करणीसिंह ने जब जनता के श्रद्धा भाजन नेता की मूर्ति का अनावरण किया तो सारा वातावरण व्यासजी की जय जयकार से गूंज उठा। सुभाष जयन्ती का दिन और व्यासजी की प्रतिमा का अनावरण—दोनों ऐसी बातें थीं जो सिद्धान्तों और आदर्शों के लिए उत्सर्ग करने वाले नेताओं की स्मृति को जीवन्त बना रही थीं। सभा में लगभग सभी विचार धाराओं और दलों के नेताओं ने व्यासजी को अपनी श्रद्धांजलियाँ दीं। कवियों ने उनकी स्मृति में कविता पाठ किया तथा श्रद्धालुओं ने मेरे व्यासजी जिन्दाबाद के नारों के साथ अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की। श्रद्धांजलि देने वाले नेताओं में प्रमुख थे सर्व श्री पण्डित प्रेम नारायण वैद्य, बाबूलाल व्यास, शिवकिशन आचार्य, नन्दलाल, जनार्दन व्यास, भंवरलाल कोठारी

किशन भा, बुलाकीदास वोहरा और नारायणदास रंगा आदि। काव्यांजलि देने वाले कवियों में बुलाकीदास बावरा', भवानीशंकर व्यास विनोद', लालचंद भावुक भंवरलाल जोय अम्बिकादत्त गोस्वामी आदि के नाम उल्लेखनीय है। कार्यक्रम का संचालन श्री बुलाकीदास जोशी ने किया। प्रतिमा को माल्यार्पण करने एव पुष्पांजलि देने वालों का उत्साह देखते ही बनता था। दो तीन हजार व्यक्तियों के कंठों से निकलने वाली जय जयकार ध्वनि वातावरण को एक मादक एव अविस्मरणीय स्वरूप दे रही थी। महाराजा डा करणीसिंह जी तो इतने अभिभूत थे कि उनके शब्दों में विषाद और आन्तरिक भावनाओं की मिलीजुली ध्वनियाँ मुखरित हो रही थी। व्यासजी के निधन को उ होंने पूरे राजस्थान के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया। दूसरी महत्वपूर्ण घटना 9 फरवरी 1972 को हुई। कलकत्ता के प्रवासी राजस्थानी भाइयों और व्यासजी के शिष्यों ने श्रद्धा के अनुष्ठान के रूप में बीस हजार रुपयों की धनराशि एकत्रित की थी। व्यासजी के परिवार के लिए एक कोष का निर्माण किया जा रहा था। सबकी इच्छा थी कि इस अवसर पर महाराजा डा करणीसिंह जी पधारें और बीस हजार रुपयों की यह राशि व्यासजी के परिवार हेतु अपने कर कमलों से प्रदान करें। मुकीम बोथरा के मोहल्ले में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। सभा प्रारंभ होने से लगभग दो घण्टे पहले ही वाहनों के आवागमन को रोक दिया गया था। सड़क के दोनों ओर जहां तक नजर जाती थी, लोगों की अपार भीड़ थी। विशाल जन समुदाय और जय जयकार के गगन भेदी नारे श्रद्धा का एक उमड़ता हुआ सैलाब मुख्य अतिथि को माल्यार्पण करने वालों की एक अपूर्व होड़ और उसके बीच में व्यासजी के चित्र के सामने पुष्पांजलि के मार्मिक दृश्य सभी लोग जैसे एक अविस्मरणीय दृश्य पटल के गवाह बने हुए थे।

व्यासजी को श्रद्धांजलि देने वालों में प्रमुख थे—महाराजा डा करणीसिंह जी, सर्व श्री रतनलाल पुरोहित (जोधपुरवाले) विधायक गोकुलप्रसाद पुरोहित गोपाल जोशी, गोविन्दलाल वैद्य सत्यनारायण पारीक माणकचंद सुराना, भंवरलाल कोठारी शिवकिसन आचार्य कजासा' सत्यनारायण पुरोहित नारायणदास रंगा मक्खन जोशी भंवरलाल चोरडिया शुभू पटवा बुलाकीदास बोहरा और विष्णुदत्त टू पहलवान आदि। ट्रस्ट की तरफ से बीस हजार रुपयों की थैली श्री बालचन्द सांड एव श्री लहरचन्द मुकीम ने अर्पित की तथा महाराजा डा करणीसिंह जी ने उसे ग्रहण करते हुए व्यासजी के परिवार के लिए बनाये गये कोष हेतु प्रदान कर दी। इस अवसर पर दो प्रमुख श्रमिक नेताओं के भी भाषण हुए। काव्य के माध्यम से श्रद्धांजलि देने वालों में सर्व श्री बुलाकीदास बावरा लालचन्द भावुक एवं भंवरलाल जोय प्रमुख थे। स्वर-साधक मोतीलाल रंगा उनके सुपुत्र भंवरलाल रंगा एवं साथी बुई महाराज ने जब अपने भावप्रवण गीत प्रस्तुत किये तो हजारों कंठों ने उनके साथ संगति की।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोयराला एवं भूतपूर्व मंत्री श्री भानुप्रतापसिंह किसी विवाह समारोह में भाग लेने बीकानेर आये हुए थे। स्मारक निर्माण समिति के सदस्यों ने श्री कोयराला से आग्रह किया कि वे मूर्ति स्थल का विधिवत् शिलान्यास करें। समारोह में कोयराला दम्पति और भानुप्रतापसिंह दम्पति के अतिरिक्त प्रमुख उद्योगपति श्री तोलारामजी दुगड़ (नेपाल वाले) भी उपस्थित थे। मंत्रोच्चारण एवं भूमि पूजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। स्थानीय प्रतिनिधि दैनिक (सप्ताक) के अनुसार समारोह में सैकड़ा नर नारियों ने उपस्थित होकर व्यासजी के प्रति श्रद्धा और प्रेम का परिचय दिया। इस अवसर पर श्री एम पी कोयराला ने लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मारक समिति के सदस्यों और पदाधिकारियों का आभार प्रकट करते हुए व्यासजी की लोक सेवा की भावना की सराहना की। समिति के अध्यक्ष श्री भवरलाल कोठारी ने उपस्थित जन समुदाय के सामने समिति द्वारा किये गये कार्यों का विस्तार से ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए व्यासजी की लोकप्रियता और महानता को निर्विवाद बताया। व्यासजी के भक्त श्री मोतीलाल रंगा ने समारोह में अपने बहुचर्चित गीत सुनाये जो जनता ने बहुत पसंद किये। कवि बुलाकीदास बावरा ने कविता पाठ किया। शिला न्यास से पूर्व समिति के सचिव श्री हीरालाल आचार्य ने अपने विचार रखते हुए इस समारोह को दलगत राजनीति से ऊपर एक लोकमंच की संज्ञा दी। समाजवादी नेता सत्यनारायण पारीक ने अवसर के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी महानुभावों को धन्यवाद दिया। संयोजन श्री भवानीशंकर व्यास विनोद ने किया।

सभा में भाषण देने वालों में सर्वश्री मातृकाप्रसाद कोयराला (भूतपूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल), श्री भानुप्रतापसिंह (भूतपूर्व मंत्री नेपाल) श्री भवरलाल कोठारी श्री सत्यनारायण पारीक श्री हीरालाल आचार्य तथा श्री नारायणदास रंगा आदि प्रमुख थे। बुई महाराज के मार्मिक भावप्रवण गीतों को सुनकर श्रोतागण अभिभूत हुए बिना नहीं रहे।

लोकप्रिय पाक्षिक पत्र सप्ताहान्त ने अपने राजस्थान दिवस विशेषांक में समारोह का सटीक विवरण प्रस्तुत किया। पत्र के अनुसार स्टेशन के सामने जहाँ प्रतिमा अवस्थित होगी एक विशाल समारोह हुआ। नेपाल के भू पू प्रधानमंत्री कोयराला ने कहा कि इस महान नेता की प्रतिमा लगाना बीकानेर की राजनीतिक चेतना के प्रति अमिट श्रद्धा का कार्य है। श्री व्यासजी राजस्थान में समाजवादी दल के प्रमुख नेता थे तथा एक दशक तक प्रदेश की विधानसभा में विरोधी दल के प्रमुख नेता रहे थे। स्थानीय साप्ताहिक के अनुसार सभा में नगर के प्रसिद्ध सामाजिक, राजनीतिक तथा मजदूर संगठनों के लोग काफी संख्या में उपस्थित थे। पत्र ने

कायरालाजी को उद्धृत करते हुए लिखा कि व्यासजी उन लोगो मे से एक थे जो समाज को कुछ देते हैं, लेते नही। समारोह मे घोषणा की गई कि व्यासजी की प्रतिमा के अनावरण के लिए लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण से अनुरोध किया जाएगा।

स्थानीय एव बाहर के प्रमुख पत्रो के माध्यम से इस कार्यक्रम का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। प्राय सभी ने मुरलीधरजी के अनन्य शिष्य श्री बालचन्द साड के प्रयत्नो की सराहना की जो व्यासजी के अन्य समर्थको के साथ मिलकर इस जन-नेता की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने मे सक्रिय रहे हैं।

मार्च 1974 मे ही एक विचार रह रह कर कौंधने लगा था कि व्यासजी जैसे तपोनिष्ठ व्यक्ति के जीवन वृत्त को प्रकाशित करवाया जाए ताकि आने वाली पीढियो के सामने एक मानक आदर्श प्रस्तुत किया जा सके। 20 मार्च 1974 को जब सप्ताहान्त कार्यालय की एक मित्र गोष्ठी मे इस विचार को संस्थाबद्ध स्वरूप दिया गया उस समय एक धुंधली सी रूपरेखा सामने था। विचार यह था कि लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु एक व्यवस्था समिति गठित की जाये जो ग्रंथ सम्बन्धी प्रबन्धकीय दायित्वो का निर्वहन करे। कुछ समय बाद जब समिति गठित की गई तो उसमे निम्नांकित सदस्य सम्मिलित किये गये सर्वश्री बालचंद सांड, महरचन्द मुकीम, भवरलाल कोठारी, चांदमल अम्भाणी, झवरलाल बोथरा, मोहनलाल पुरोहित, नारायणदास रंगा, रिखबदास भमाली, हिम्मत भाई मानीलाल मालू तथा धनराज कोठारी।

व्यासजी के मूर्ति-स्थल के शिलान्यास के समय से ही लोगो की इच्छा थी कि मूर्ति का अनावरण लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के कर कमलो द्वारा करवाया जाए। इस सम्बन्ध मे जयप्रकाशजी से जब अनुरोध भी किया गया तो वे तत्काल तैयार हो गये लेकिन तिथि फिर भी निश्चित नही हो पा रही थी। 25 अक्टूबर 1974 को एकाएक यह सूचना मिली कि बाबू जयप्रकाश नारायण 27 अक्टूबर 1974 को बीकानेर आने वाले हैं। दो दिन मे ही अनथक प्रयासो से मूर्ति स्थल पर मूर्ति को अवस्थित कर लिया। 27 अक्टूबर को प्रात दिल्ली मेल से जयप्रकाशजी बीकानेर पधारे। स्टेशन पर उनका भावभीना स्वागत किया गया। बीकानेर मे उनका प्रथम सार्वजनिक कार्यक्रम स्व मुरलीधर व्यास की प्रतिमा के अनावरण का ही था। अनावरण के समय जयप्रकाशजी ने कोई भाषण नही दिया, सिर्फ इतना भर कहा कि शाम को स्टेडियम मे होने वाली सभा मे वे मुरलीधर व्यास के बारे मे अपने विचार

प्रकट करेंगे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण को एक भव्य जुलूस एवं जय जयकार के नारों के साथ नगर में ले जाया गया।

दिन के समय चिलचिलाती धूप की पर्वाह न करते हुए हजारों नागरिक स्टेडियम मैदान में एकत्रित हुए। सभा की अध्यक्षता की सुप्रसिद्ध दर्शनवेत्ता एवं तात्विक चिंतक डा छगन मोहता ने। स्व मुरलीधर व्यास को श्रद्धांजलि देते समय श्री जयप्रकाश नारायण भाव विभोर हो गये—बोले वे मुझसे बहुत छोटे थे—होना तो यह चाहिए था कि वे मेरी प्रतिमा का अनावरण करते लेकिन नियति को यही मंजूर था कि उनकी प्रतिमा का अनावरण आज मैं करूं। वे त्याग और संघर्ष की मूर्ति थे। कोई भी लालच उन्हें डिगा नहीं सकता था। वे सच्चे गांधी थे और राजनीतिक भ्रष्टाचार का विरोध करने में सदैव आगे रहते थे। ऐसे नेता दुर्लभ होते हैं और उनका स्थान जनता के दिलों में होता है। जिस समय जयप्रकाशजी ये उद्गार प्रकट कर रहे थे रह रह कर नारे सुनाई देते थे—लोकनायक जयप्रकाश नारायण—जिन्दाबाद स्वर्गीय मजदूर नेता मुरलीधर व्यास—अमर रहे। लगभग एक घण्टे से भी अधिक समय तक जयप्रकाशजी ने देश की हालत से लोगों को अवगत किया। उनके भाषण का तेवर क्रांतिकारी था—आने वाले दिनों की पद चाप साफ सुनाई देती थी उस भाषण में।

स्वर्गीय व्यासजी की मृत्यु के उपरान्त उनकी स्मृति में समय समय पर विशेष कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। कुछ कार्यक्रम तो इतने स्मरणीय थे कि समय का अन्तराल भी उनके प्रभाव को मिटा नहीं सकता। ऐसा ही एक भव्य आयोजन 1 दिसम्बर 1974 को महावीर जैन स्कूल 18 सुकियास लेन कलकत्ता में सम्पन्न हुआ। यह अपने आप में एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन तो था ही, पर उपस्थित वक्ताओं के भाषणों ने उसे एक स्मृति सभा का रूप भी दे दिया। कलकत्ता के नियमित हिन्दी दैनिक विश्वमित्र एवं सन्मार्ग में कार्यक्रम की पूर्व सूचना प्रकाशित हुई तथा दूसरे दिन समाचार-पत्रों में कवि सम्मेलन एवं स्मृति सभा का सचित्र विवरण प्रकाशित किया गया। खचाखच भरे हुए हाल में एक तरफ मुरलीधरजी का चित्र सज्जित था। श्रद्धा पुष्पों से सुरभित और दमकते हुए चेहरे का एक भव्य चित्र और सामने बैठे थे सैकड़ों प्रशंसक श्रोता के रूप में। प्रारम्भ में श्री शिवबदास भसाली एवं भवानीशंकर व्यास विनोद ने व्यासजी के जीवनवृत्त का वर्णन करते हुए उनकी स्मृति में आयोजित कई समारोहों का परिचय दिया तथा व्यासजी के व्यक्तित्व पर प्रकाशित होने वाले ग्रंथ की रूपरेखा प्रस्तुत की। कवि सम्मेलन में देश के सुप्रसिद्ध कवि श्री आत्मप्रकाश शुक्ल, श्री रामावतार शशि आदि के साथ श्री भवानीशंकर व्यास विनोद ने अपनी रचनाओं से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध

कर दिया। कलकत्ता के गहमागहमी भर जीवन म यह समारोह अपनी अमिट छाप छोड़ने वाला था। समारोह को सफल बनाने म श्री बालचन्द साड, श्री लहरचन्द मुकीम, श्री चादमल अभ्माणी, श्री मोतीलाल मालू, श्री रिखबदास भसाली श्री मोहनलाल पुरोहित श्री इन्द्रचद बेगानी और श्री कमल मुकीम आदि मुख्य थे। व्यासजी के जीवनकाल के सकडो-सैकडो प्रशसक उस सभा म उपस्थित थे। 28 नवम्बर 1974 से 3 दिसम्बर 1974 तक और भी अनेक आयोजन हुए तथा एक बार तो एसा लगन लगा जस व्यासजी भौतिक नही पर आत्मिक रूप स कलकत्ता वापस आए हों। कवि सम्मेलन और स्मृति-सभा के ये आयोजन महीनो तक लोगो की चर्चा के केन्द्र म रहे।

न तो समय कभी थकता है, न अमिट स्मृतियाँ कभी धुधली ही होती है। व्यासजी तो इस बात के मूर्तिमान प्रतीक थ। मृत्यु के पश्चात भी वे लोगो की स्मृतियो म लगातार छाए रह। अवसर चाहे जो हो, धुर विरोधी नेताओ के मिलन म भी उनकी स्मृति को जीवन्त रूप म देखा जा सकता था। राजनीतिक कार्यक्रमो (चुनाव अथवा जन अभियान) का प्रारम्भ मुरलीधर व्यास की प्रतिमा पर माल्यार्पण स होना शुरू हो चुका था। सामाजिक समारोहो मे भी उनके व्यक्तित्व की चर्चाओ की अनुगूज सुनी जा सकती थी। 15 फरवरी 1975 म शादी के एक समारोह म भाग लेने वाले नेता थे तत्कालीन विधायक गोपाल जोशी, सत्यनारायण पारीक गोविन्द नारायण वद रामरतन कोचर मक्खन जोशी और साहित्यकार नदकिशोर आचार्य हरीश भादानी, शुभू पटवा एव समाज के अनेक वर्गो के प्रतिनिधिगण। दूसरे दिन महेश भवन मे आयोजित पार्टी म सगीत एव कविताओ के कार्यक्रम रखे गये। स्वर और शब्दो की उस दुनिया म भी स्वर्गीय नेता मुरलीधर व्यास के कार्यो की प्रतिध्वनि रूपायित हो रही थीं। राजनीति साहित्य व्यवसाय आदि के खांचे सिमट गये थे और सभी लोग मुक्त-कठ से स्वर्गीय नेता के सम्बन्ध म मार्मिक रचनाओ का आनद ले रहे थ। गोष्ठी म सवश्री रामरतन कोचर लालचन्द कोठारी, गोपाल जोशी शुभू पटवा, हनुमान सीपानी गोपाल कल्ला किशनलाल चाडक बालचन्द सांड गिरधर बद, अजीतसिंह सिंघवी मातीलाल रगा, भीम पाडिया मोहनलाल बरड़िया, गणेश रगा भगवानदास व्यास, शिवनारायण जोशी एव मोहम्मद सदीक आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

सुथारो की बडी गुवाड स्थित व्यासजी के प्रतिमा स्थल की समय-समय पर मरम्मत करवाने प्रतिवर्ष उनकी जयन्ती एव पुण्य तिथि पर कार्यक्रम आयोजित करने श्मशान के निकट स्थित प्रतिमा के चारो ओर सगमरमर पर जीवन वृत्त का उत्कीर्ण करवाने आदि के काम साथ-साथ चलते रह। हिसाब किताब का सारा

दायित्व स्व श्री शिवविमल बिस्सा पर था जिन्होंने जीवन पर्यन्त उसे अत्यन्त सजगता और ईमानदारी से सम्पन्न किया।

इस बीच 25 जून 1975 को देश भर म आपात्कालीन स्थिति लागू कर दी गई। दमन का एक चक्र चला और विरोधी दलों के प्रमुख नेताओं के साथ साथ देश भर म हजारों अन्य व्यक्तियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। व्यासजी के सच्चे साथी और अनुयायी भला इससे कैसे वचित रह सकते थे। उनम से कुछ प्रमुख व्यक्तियों को तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया और राजस्थान की भिन्न भिन्न जेलों म रखा गया। उन्नीस महीनों का यह समय समाजवादी विचारधारा के लोगों के लिए घोर त्रासदी का समय था। वातावरण म भय, आतक सन्नाटा और किसी भी अभिव्यक्ति की आशका वाली व्यथा थी। राजनीतिक गतिविधियाँ थम चुकी थीं। लोग सकेता म बातें करते और पुण्य तिथि जैसे अवसरों पर भी सामने आने से कतराते थे लेकिन जहाँ तक उनके हृदयों का प्रश्न है, श्रद्धा के भाव जस के तस थे। सोंवतगिरी की गुफा म अब भी कार्यक्रम होते थे। ऊपर से भक्ति के आवरण म भी जब कभी मौका मिलता व्यासजी की विचारधारा के गीत गूज उठते। सामाजिक समारोहों म लोग उन्हें याद करते। आपात्काल की पकड ज्यों ज्यों ढीली पडती गई लोगों का मौन कुछ अधिक मुखर होने लगा। और देखते-देखते सन् 1976 आ गया।

राज्य के प्रमुख नेता सर्वश्री प्रो केदार, मानिकचन्द सुराणा ज्योतिसिंह भैरोसिंह शेखावत, ललित किशोर चतुर्वेदी, पडित रामकिशन आदि जेलों म बद थे। उनम से कुछेक को बीकानेर जेल म भी रखा गया। बीकानेर जेल म बन्दी स्थानीय लोगों म श्री आर के दास गुप्ता, श्री मक्खन जोशी श्री नारायणदास रंगा श्री पूर्णानंद और श्री किशन मतवाला मुख्य थे। पूर्व विधायक श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित भी उन दिनों बन्दी बना कर बीकानेर जेल म रखे गये थे।

4 मई 1976 को कर्नाटक के तत्कालीन राज्यपाल एव राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया दिल्ली मेल से बीकानेर आए। गगाशहर मे रामपुरिया विद्या निकेतन के सामने वाले मैदान म उनका नागरिक अभिनन्दन किया गया। सभा म श्रीमती कान्ता कथूरिया ने अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया। श्री सुखाडिया ने उसी दिन शाम को लक्ष्मीनाथजी मंदिर के परिसर म एक महती सभा को सम्बोधित किया। सभा म उन्होंने स्व मुरलीधर व्यास को श्रद्धाजलि अर्पित की तथा गरीबों, मजदूरों एव उत्पीडित व्यक्तियों के लिए उनके जीवन पर्यन्त सघर्ष की सराहना की। श्री सुखाडिया ने श्री व्यास के साथ अपने मतभेदों की बात स्वीकारते हुए कहा कि

जहाँ तक सिद्धान्तो के प्रति अडिगता एवं जन सेवा की प्रतिबद्धता का प्रश्न है, व्यासजी को, नहीं भुलाया जा सकता। वे एक तपे तपाये जन नेता थे। लक्ष्मीनाथ जी परिसर की सभा में तत्कालीन विधायक श्री गोपाल जोशी भी उपस्थित थे।

मई 1976 मे आपात्कालीन नियत्रणा में कुछ कमी आने लगी थी। बीकानेर जेल में राजनीतिक बदियो से मिलने जाने वाले साहित्यकार बधु छोटी-छोटी अनौपचारिक गोष्ठियां करने लगे थे। उन दिनो जेल में चूरू के श्री प्रदीप शर्मा भी थे। सर्व श्री श्योपतसिंह, हेतराम, मक्खन जोशी, नारायण रंगा आदि श्रोता बनते और स्थानीय कवि एव बदी साहित्यकार कविताएँ सुनते-सुनाते थे।

18 मई 1976 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री शभुदयाल सक्सेना का निधन हो गया। श्री सक्सेना ने ही व्यासजी के लोकप्रिय पत्र 'झोपडी की आवाज' का विमोचन किया था। साहित्यकारो एव राजनेताओ की मिलीजुली शोक सभा में साहित्यकार पत्रकार श्री सक्सेना को भावभीनी श्रद्धाजलियां दी गई। सभा में सेनानी के साथ साथ 'झोपडी की आवाज' का भी जिक्र आया।

उ ही दिनो स्टेशन के निकट स्थित व्यासजी की प्रतिमा के चारो ओर शिलालेख लगाने का उपक्रम चलने लगा था। श्री शिवदयाल (बुई महाराज) इस दिशा मे काफी सक्रिय थे। वे ग्रथ के सम्पादको से निरन्तर सम्पर्क में रहते तथा शिला लेखो पर उत्कीर्ण होने वाली सामग्री की प्रगति से अवगत करते रहते। श्री मवरलाल कोठारी भी इस कार्य में पूर्ण रुचि ले रहे थे।

आपात्काल की विभीषिका से भरा हुआ 1976 का वर्ष बिना किसी विशेष उल्लेखनीय घटना के समाप्त हो गया। 1977 के प्रारंभ में जिस अप्रत्याशित राजनीतिक घटना चक्र ने पूरे देश को प्रभावित किया उसका प्रभाव राजस्थान की राजनीति पर भी पडना स्वाभाविक था। कांग्रेस के पराभव एव जनता पार्टी के अभ्युदय ने प्रशासन की संस्कृति को एक नया स्वरूप दिया। खुलेपन और स्वतंत्रता का एक नूतन वातावरण बना और समाजवादी नेताओ के हाथो में नये दायित्व आए। बाबू जयप्रकाश नारायण एव आचार्य कृपलानी के प्रयासो से मोरारजी देसाई के नेतृत्व मे नये केन्द्रीय मत्रिमण्डल के गठन का पथ प्रशस्त हुआ।

केन्द्रीय मत्रिमण्डल के महत्वपूर्ण समाजवादी नेता थे सर्व श्री मधु दण्डवते जार्ज फर्नांडिस और राजनारायण जबकि राजस्थान मत्रिमण्डल में मानिकचन्द सुराणा एव प्रोफेसर केदार जैसे पुराने समाजवादी नेताओ के सम्मिलित होने से आशा बधी कि स्व व्यासजी के सपनो के समाज की सरचना हो सकेगी।

व्यासजी के शिष्यों के मन में अपने गुरु के प्रति आस्था तो थी ही, वे चाहते थे कि व्यासजी के छोटे पुत्र और पुत्री की शादी भी धूमधाम से हो। कलकत्ता और बीकानेर में अपने अपने स्तर पर तैयारियाँ होती रहीं और जब शादी की तिथि तय हो गई तो उसमें भाग लेने के लिए सर्व श्री बालचंद सांड और चांदमल अभानी विशेष रूप से कलकत्ता से बीकानेर आए। 19 मई 1977 को आयोजित इस भव्य समारोह में बीकानेर के अनेकों जन प्रतिनिधियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं प्रवासी व्यवसायियों ने भाग लिया। बीकानेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री डी एन उपाध्याय एवं पुलिस उप महानिरीक्षक श्री भागीरथ राय विश्नोई आदि भी इस अवसर पर उपस्थित थे। स्वर्गीय नेता मुरलीधरजी की अनुपस्थिति तो निश्चित रूप से अखरने वाली थी लेकिन अन्य सभी पक्षों में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि शादी की व्यवस्था, अतिथियों के स्वागत एवं सम्भ्रान्त नागरिकों की उपस्थिति आदि ऐसी हो जिससे यह आभास हो सके कि लोगों के हृदयों में व्यासजी के परिवार के प्रति अपरिमित प्रेम एवं सद्भाव है। शादी की औपचारिक आवश्यकताओं, रीति रिवाजों, उत्सवों, विद्युत सजावट आदि पर पूरा पूरा ध्यान दिया गया। व्यासजी के पुत्र श्री चन्द्रशेखर आजाद और पुत्री मंजु के विवाह पर समाज के सभी वर्गों के उत्साह ने प्रदर्शित किया कि लोगों के मन में स्वर्गीय नेता के प्रति अपार श्रद्धा के भाव हैं।

दो दिन पश्चात् 21 मई 1977 को आ भव्य कवि सम्मेलन रखा गया बीकानेर के निवासी आज भी उसे याद करते है। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं गीतकार पंडित भरत व्यास ने की। अभिनेता बी एम व्यास भी इस अवसर पर उपस्थित थे। मुख्य अतिथि थे पुलिस उप महानिरीक्षक श्री भागीरथ राय विश्नोई। हजारों श्रोताओं ने देर रात तक कवि सम्मेलन का आनन्द लिया। सभी उपस्थित महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने स्व व्यासजी की सुथारों की बड़ी गुवाड़ स्थित प्रतिमा को माल्यार्पण किया तथा कविताओं के अतिरिक्त श्री मोतीलाल रंगा के व्यासजी विषयक गीतों के साथ स्वर संगति करके वातावरण को व्यासमय बना दिया। कवियों में पंडित भरत व्यास के अतिरिक्त भीम पांडिया, धनजय वर्मा भवानीशंकर व्यास 'विनोद' प्रेम सक्सेना राजानन्द भटनागर अजीज आजाद दीन मोहम्मद मस्तान, इब्राहिम गाजी भूरसिंह निर्वाण शिवराज छंगाणी, बुलाकीदास बावरा लालचंद भावुक, मदन केवलिया, किशन मतवाला, सांवर दइया, भूपेन्द्र अग्रवाल, चिरंजीलाल, अम्बिकादत्त गोस्वामी आदि मुख्य थे। पंडित भरत व्यास ने अनेक लोकप्रिय कविताएं एवं गीत सुनाकर लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया।

उसी वर्ष 30 मई 1977 को व्यासजी की छठी पुण्य तिथि मनाई गई। दोनों प्रतिमाओं

पर माल्यापण तो हुआ ही, सुथारो की बडी गुवाड म रात्रि के समय एक महती जन सभा का आयोजन भी किया गया। वक्ताओ ने व्यासजी के जीवन के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डाला। प्रमुख वक्ता थे सर्वश्री सत्यनारायण पारीक, महबूब अली, मक्खन जोशी, ओम आचाय, कजलीदास हूप, नारायणदास रगा, भवरलाल कोठारी, श्यामसुदर व्यास, नवदाशकर आचाय, डी पी जोशी, गणपत शर्मा एव नरेन्द्र बिस्सा।

इस बीच देश भर के प्रमुख नेताओ स ग्रथ प्रकाशन हेतु पत्रो द्वारा सम्पक किया जाता रहा। साथ-साथ आधारभूत सामग्री का सकलन और चयन भी चलता रहा। कई स्थानो से दुलभ चित्र एकत्रित किये गये। व्यासजी की प्रतिमा के चारो ओर लगाये जाने वाले शिला लेखो को उत्कीण करने का काय श्री मगलाजी सुथार को दिया गया था। वह काय भी प्रगति पर था।

लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रथ प्रकाशन समिति की ओर से समय-समय पर कलकत्ता म भी कई आयोजन किय गये। ऐसा ही एक आयोजन 1 जनवरी 1978 को जन विद्यालय 18 D सुकियाम लेन, ब्राबोन रोड कलकत्ता म सम्पन्न हुआ। वक्ताओ ने व्यासजी के जीवन के अनेको प्रसगो पर प्रकाश डाला। खचाखच भरे हुए हाल और गलरियो म लोगो न भाषणो के साथ साथ कविताओ का भी आनन्द लिया। उपस्थित लोगो म कलकत्ता के प्रमुख व्यक्तियो के अतिरिक्त बीकानेर के सवश्री गोपाल जोशी, ब्रजूभा, मठाधीश, हनुमान ठाकुर, नथमल पुरोहित, मुखियाजी आदि भी उपस्थित थ। कवियो म सर्व भीम पाडिया, श्री हूप, शिवराज छगाणी धनजय वर्मा भवानीशकर व्यास विनोद, नानचद भावुक, वल्लभेश दिवाकर एव जोशी निर्भीक ने अपनी भावप्रवण कविताए सुनाइ। व्यासजी के भव्य चित्र पर लोगो न पुष्पाजलियाँ दी।

3 जनवरी 1978 को माहेश्वरी पुस्तकालय 4 शोभाराम बशाख स्ट्रीट कलकत्ता म आयोजित एक अन्य समारोह म भी देश के प्रख्यात भोजपुरी कवियो के अतिरिक्त बीकानेर के साहित्यकारो न भाग लिया। कविताओ और गीतो की अनुगूज लगभग वसी ही थी जसी ग्रथ प्रकाशन समिति के कायक्रम म सुनाई दी थी। कलकत्ता के मुख्य कायक्रमो म सवश्री मन्नू बाबू पारख बालचद साड, चाँदमल अभाणी लहरचद मुकीम, नथमल भसाली रिखबदास भसाली आदि की सक्रियता उल्लेखनीय थी। दिनाक 25 माच 1978 से 27 माच 1978 तक होने वाले एक त्रिदिवसीय आयोजन म भी स्व मुरलीधर व्यास स प्रेरित और प्रभावित व्यक्तियो ने पर्याप्त रुचि प्रदर्शित की।

ग्रथ के लिए सामग्री आनी शुरू हो गई थी। उसम सन्देशो और श्रद्धाजलियो के

काल को चीरती हुई एक दिव्य स्मृति रेखा

अतिरिक्त व्यासजी के जीवन पर आधारित आलेख भी सम्मिलित थे। सामाजिक समारोहों में भी जब कभी समाजवादी विचारधारा के लोग मिलते व स्वर्गीय व्यासजी की चर्चा अवश्य करते। ऐसा ही एक अवसर श्री मानिकचंद सुराणा (तत्कालीन वित्त मंत्री राजस्थान) के लड़के की शादी का था। 9 सितम्बर 1978 को आयोजित इस समारोह में जोधपुर से सुप्रसिद्ध श्रमिक नेता श्री जोरावरमल बोडा भी आए थे। जहाँ श्री जोरावरमल बोडा, सत्यनारायण पारीक, चम्पालाल उपाध्याय, श्री चौधरी, श्री कजल्सा गागुन घी वाला और नारायणदास रंगा जैसे व्यक्ति उपस्थित हों और पुरानी बातें हो रही हों तो चर्चा का रस सहज में ही समझा जा सकता है। श्री बोडा ने व्यासजी के जीवन के अनेक प्रसंग सुनाये और ग्रंथ के बारे में अपने कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये।

10 सितम्बर 1978 को 'श्री मुरलीधर व्यास फमिली ट्रस्ट' की एक आवश्यक बैठक श्री मोतीलाल मालू के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि दिवंगत श्री बनीलालजी व्यास के स्थान पर श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद' को ट्रस्ट का सदस्य बनाया जाय। प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया। सुथारों की बड़ी गुवाड़ स्थित व्यासजी की प्रतिमा के प्लेटफार्म को पत्थर एवं मजिये से पक्का बनवाने तथा नियमित मरम्मत करवाते रहने के लिए ट्रस्ट ने कुछ राशि पृथक से निश्चित कर दी।

4 फरवरी 79 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार और मध्यप्रदेश की पूर्व मंत्री श्री बाल कवि बैरागी राजसमंद आए हुए थे। अपने मित्र श्री बालचंद सांड के अस्वस्थ होने का समाचार पाकर वे बीकानेर आ गये। अपने त्रि दिवसीय प्रवास में बालकवि बैरागी ने मुरलीधर जी व्यास की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तथा स्मृति ग्रंथ प्रकाशन समिति के तत्वावधान में आयोजित एक कवि गोष्ठी में भी भाग लिया। 6 फरवरी 1979 को आनन्द निकेतन में आयोजित विचार गोष्ठी एवं कवि गोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध दर्शनवेत्ता डा. छगन मोहता ने की। बालकवि बैरागी ने दिल खोलकर अपनी प्रगतिशील रचनाएं सुनाईं। स्थानीय कवियों ने भी रचना पाठ किया। सम्मेलन में श्री अजीतसिंह सिंघवी, श्री घुघू पटवा, श्री भंवरलाल कोठारी, श्री शिवकिसन बिस्सा एवं श्री प्रकाश बाधू के अतिरिक्त प्रायः सभी प्रमुख स्थानीय कवि तथा सहृदय श्रोतागण उपस्थित थे। शिक्षा विभाग की पत्रिका शिविरा ने इस गोष्ठी पर एक विशेष आलेख प्रकाशित किया। तीन घंटा तक चली इस महत्त्वपूर्ण गोष्ठी का ध्वन्यांकन कर लिया गया जिसे आज भी सुना जा सकता है।

25 फरवरी 1979 को राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया एक बार पुनः बीकानेर आए। श्री सुखाडिया जो किसी समय विधान सभा में व्यासजी

व विकट प्रहारों को येनन रहते थे, बाद के दिनों व्यासजी के प्रसंग आने पर श्रद्धा पूर्ण भाव प्रकट करने से नहीं चूकते थे। कर्नाटक के राज्यपाल के रूप में जब उन्हें व्यासजी के ग्रंथ के बारे में सूचना मिली तो उन्होंने यह इच्छा प्रकट की थी कि वे व्यासजी पर अपनी ओर से कुछ अवश्य लिखेंगे। उन्हीं दिनों बीकानेर के एक साहित्यकार ने श्री सुखाडिया से पत्र व्यवहार किया। श्री सुखाडिया ने उस समय भी व्यासजी के प्रति श्रद्धा भाव प्रदर्शित किये तथा ग्रंथ प्रकाशन के कार्य की जिज्ञासा के साथ जानकारी प्राप्त की। व्यासजी की मृत्यु के पश्चात् पेंशन आदि के प्रकरण में भी श्री सुखाडिया काफी सक्रिय रहे थे।

यह तो था श्री सुखाडिया का एक पक्ष लेकिन दूसरा पक्ष सत्ता में रहते समय विरोधी दलों के नेताओं के साथ उनके व्यवहार का था। 'माया' ने अपने मार्च 1978 के अंक में 'मोहनलाल सुखाडिया—राजस्थान के मुगल सरदार' शीर्षक से सुभाष मान्नी का एक लेख प्रकाशित किया था। पूरे आलेख में कहीं भी श्री मुरलीधर व्यास की भूमिका के बारे में एक शब्द भी नहीं था। हां विरोधी दलों के अन्य नेताओं (जो बाद में सत्ता में आ गये थे) की विस्तृत चर्चा की गई थी। इस आलेख से खिन्न होकर बीकानेर के समाजवादी नेता श्री कजलीराम हर्ष ने 29 अप्रेल 1978 को 'माया' के सम्पादक श्री आलोक मित्र को एक पत्र लिखा। पत्र में 14 बिन्दुओं का उल्लेख किया गया जो व्यासजी की जारदार विरोधी भूमिका को प्रकट करने वाले थे। श्री कजलीराम हर्ष ने प्रारम्भ में लिखा, 'या तो व्यक्ति विशेष को जो इस समय सत्ता में आये हैं—उन्हें उभारने या फिर राजस्थान में असली व्यक्तित्व जिसने अपने खून से राजस्थान में विरोध (सुखाडिया सरकार का) की मशाल को जीवन पर्यन्त प्रज्वलित रखा को इतिहास से साफ करने के लिए यह एक सुनियोजित षड़यन्त्र है। लेख में सुभाष मान्नी ने उस महान विभूति को नमन तक नहीं किया। लेखन में यह बौद्धिक बलात्कार या तो सत्ता में नये आये चेहरों से कुछ लाभ लेने के लिए या फिर घटकवाद की घुड़दौड़ में अपने सम्बन्धित घटक के घोड़े को ही आगे रखने की चतुर चाल से लेकर राजस्थान के इतिहास में महाराणा प्रताप को हटाकर अकबर के विरोधियों की सी स्थिति उत्पन्न की है।

श्री कजलीराम हर्ष ने जो 14 बिन्दु गिनाये उनमें प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को दिया गया सुखाडिया विरोधी आरोप पत्र विधान सभा में गुडा बीन्द की जमीन की व्यापित जाने का प्रकरण ठोस एवं सटीक प्रमाणों के साथ आरोपों को पुष्ट करने की क्षमता सरकारी मशीनरी की सहायता से विरोधियों को कुचलने की साजिश पर प्रहार आनेन्द के राष्ट्रीय गौरव सम्मान में सुखाडिया सरकार सम्बन्धी प्रस्ताव का प्रस्तुति भ्रष्टाचार के अनेक प्रकरणों का साहसिक उद्घाटन

चुनाव म पराजित होने के पश्चात् भी राजस्थान-व्यापी विरोध के शीप पुरुप वाली स्थिति, अगस्त 70 म व्यासजी पर निमम लाठी प्रहार और झापडी की आवाज के माध्यम स जन-जागरण के बिन्दु आदि सम्मिलित थ। प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार पूवक चर्चा की गई थी।

'माया' के सम्पादक ने 6 जून 1979 के पत्र म उत्तर दिया था, 'आप माया को बडे मनोयोग से पढते हैं। यह जानकर हम अच्छा लगा है। आपने श्री मानी व सुखाडिया सम्बन्धी लेख पर अपनी प्रतिक्रिया भेजी है पर अब हम इसका उपयोग नही कर पायगे। इसलिए हम आग राजस्थान सम्बन्धी विषयो पर सामग्री की आवश्यकता पडगी तो आपसे सम्पक स्थापित करेंगे।

14 महीना क बाद किसी पत्र का ऐसा औपचारिक, रूखा और सवेदनहीन उत्तर स्वय सिद्ध करता है कि पत्रिका को सच्चाई के उद्घाटन म कोई विशेष रुचि नही थी। पत्रकारिता की भी अपनी एक राजनीति होती है। अस्तु।

4 जुलाई 1979 को सुथारो की बडी गुवाड म व्यासजी की 61 वी जयन्ती मनाई गई। मोहल्ले के निवासियो ने दरियो पाटा, सत्त लाइटो और ठण्ड पानी की मुकम्मिल व्यवस्था की। कुछ युवा साथी—श्री नरेन्द्र बिस्सा श्री बृजरतन पुरोहित श्री हेमू बिस्सा एव श्री गोविन्द जोशी आदि न इस काय म पर्याप्त रुचि ली। भाषण हुए, कविताएँ हुई श्रद्धाजलियाँ दी गइ। अन्य लोगो क अतिरिक्त श्री हरीश भादानी श्री नन्दकिशोर आचाय श्री कजलीदास हप एव श्री के राज ने भी अपन विचार व्यक्त किय। बीकानेर के प्राय सभी प्रमुख कवि इस अवसर पर उपस्थित थ।

1979 की एक अविस्मरणीय घटना स्व लोकनायक जयप्रकाश नारायण के अस्थि विसजन की थी। दिनाक 28 अक्टूबर 1979 को बाबू जयप्रकाश नारायण की पवित्र अस्थियो का एक लघु कलश बीकानेर लाया गया। बीकानेर स्टेशन पर तत्कालीन जिला कलक्टर श्री गुमानसिह ने उस आदर एव राजकीय सम्मान सहित ग्रहण किया। पुलिस की एक टुकडी न हथियार उल्टे करके सलामी दी। जिला कलक्टर ने कलश ग्रहण करके उसे सुप्रसिद्ध सर्वोदय नेता श्री मोहनलाल मोदी को दिया जो कलश लेकर एक जुलस के रूप म सव प्रथम मुरलीधरजी की प्रतिमा स्थल पर पहुचे। गगनभेदी नारा ने बाबू जयप्रकाश अमर रहे मुरलीधर व्यास अमर रहे का स्वरनाद किया। प्रतिमा स्थल पर कलश पर माल्यापण किया गया तथा पुष्पा जलियाँ दी गइ। बाबू जयप्रकाश क महाप्रयाण (8 अक्टूबर 1979) क बीस दिन बाद कोलायत म उनकी भस्मी विसजन का दृश्य अत्यन्त मार्मिक था। कोलायत के घाट पर श्री आर के दास गुप्ता की अध्यक्षता म एक श्रद्धाजलि सभा आयोजित

की गई। सभी महत्वपूण दलो के नेताओ म बाबू जयप्रकाश नारायण को अपनी श्रद्धाजलियाँ अर्पित की। महत्वपूण वक्ता थे सवश्री स यनारायण पारीक, सोहनलाल मादी रामेश्वर पाडिया, बाबूलाल ओझा, शुभू पटवा, मक्खन जोशी, भवरलाल कोठारी तथा ओमप्रकाश रगा। सूर्यास्त के समय कोलायत के पवित्र सरोवर म रामधुन के साथ अस्थि विसजन कर दिया गया। 1980 के अप्रैल माह म व्यासजी के एक प्रिय शिष्य गिरधर वद का लुधियाना मे निधन हो गया। व्यासजी की पुण्य तिथि एव जय ती इस वष भी पूरी श्रद्धा के साथ मनाई गई।

व्यासजी द्वारा सस्थापित नेताजी सुभाष सभा म सुभाष जय ती का आयोजन होता रहता है। 1981 मे सुभाष जय ती के अवसर पर एक त्रिदिवसीय आयोजन रखा गया। पहले दिन 22 जनवरी का क्रांति की बुनियादी अवधारणा' पर एक विचार गाष्ठी हुई जिसम अमरनाथ कश्यप, नद किशोर आचाय बी डी जोशी आदि ने भाग लिया। दूसरे दिन एक विराट कवि सम्मेलन तथा तीसरे दिन सास्कृतिक आयोजन सम्प न हुए।

जीवन म सयोग की भी अपनी एक निराली ही भूमिका होती है। राजस्थान की राजनीति ने 1957 स 1971 तक दो ध्रुव पुरुष देखे थे एक छोर पर थे स्व श्री मोहनलाल सुखाडिया तथा दूसरे पर थे स्व श्री मुरलीधर व्यास। व्यक्तिगत जीवन म एक दूसर क प्रति स्नेह एव सम्मान रखने वाले य दोनो ध्रुव पुरुष सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र म एक दूसरे से सवथा विपरीत थे। एक सत्ता के शिखर पुरुष थे तो दूसरे विरोध के सशक्त स्वर।

अब जरा सयोग की ओर देखें। सन् 1971 म व्यासजी को जिस चिकित्सालय मे स्वगवास हुआ था सन् 1982 म उसी चिकित्सालय मे सुखाडियाजी भी देवलोक को प्राप्त हुए। व्यासजी को जिस वाइटल केयर सेंटर (गहन चिकि सा कक्ष) म रखा गया था, सुखाडियाजी को भी मृत्यु से पूव के 2 3 दिन उसी मे गुजारने पडे। व्यासजी के पार्थिव शरीर को थोडी देर क लिए जहाँ रखा गया सुखाडियाजी की निष्प्राण देह भी जनता क दशनाथ उसी स्थान पर लाई गई। व्यासजी के कारण सुखाडियाजी क सावजनिक कायक्रम बीकानेर म प्राय कम ही होते थे पर सुखाडियाजी का अतिम सावजनिक भाषण बीकानेर के स्टेडियम के मैदान म ही हुआ। दिनाक 30 जनवरी 1982 को कांग्रेस के तत्कालीन महामत्री श्री राजीव गाधी बीकानेर आये थ। यहाँ पर उन्होंने पचायत राज सम्मेलन का विधिवत् उदघाटन किया। एक विशाल समारोह म जिन नेताओं ने भाषण दिया उनम केंद्रीय गृहमत्री ज्ञानी जैलसिंह कृषि उपमत्री बाल्देश्वर राव स्व श्री सुखाडिया शिवचरण माथुर (तत्कालीन मुख्य

मत्री) श्री बी डी कल्ला, मोहम्मद उस्मान आरिफ और कांता कथूरिया आदि मुख्य थे। श्री सुखाडिया को सभास्थल पर ही दिल का दौरा पडा था और उन्हे तत्काल ही बीकानेर के पी बी एम राजकीय चिकित्सालय मे भरती करवाया गया। बम्बई स डा मेहता बुलाये गये लेकिन उपचार का कोई असर नही हुआ और अतत दिनाक 2 फरवरी 1982 का सुखाडियाजी का स्वगवास हो गया। शव को बी एस एफ के एक विशेष वायुयान से उदयपुर ले जाया गया। स्व सुखाडिया के पार्थिव शरीर को लेकर जान वाले लोगो म तत्कालीन उपमत्री श्री बी डी कल्ला एव नगर विकास यास के अध्यक्ष श्री भवानी शकर शर्मा मुख्य थ। व्यासजी के ध्रुव राजनीतिक विरोधी को बीकानेर की ओर स यह अतिम विदाई थी।

व्यासजी के घनिष्ठ मित्रो और समाजवादी नताओ म प्रोफसर केदार काफी निकट के व्यक्ति मान जाते हैं। दोना अतरग मित्र थ। बाद म प्रोफेसर केदार राजस्थान के गृह मत्री भी रहे। दिनाक 16 अप्रेल 1982 का प्रो केदार ने व्यासजी के ग्रथ के लिए तीन घण्टे का एक वृहद साक्षात्कार दिया तथा स्वर्गीय नता के कई ज्ञात-अज्ञात प्रसगो को उद्घाटित किया। दिनाक 17 जून 1982 को व्यासजी की प्रतिमा स्थल (स्टेशन के निकट) पर सगमरमर की विवरण पट्टिकाए लगाई गई। श्री मगनजी सुथार द्वारा उत्कीण इन पट्टिकाओ को लगाय जान के समय प्रतिमा स्थल पर सवश्री वालचद सांड भवरलाल कोठारी शिवकृष्ण आचाय कजल्मा नारायण दास रगा आदि उपस्थित थे। और इस तरह 1982 भी बीत गया।

व्यासजी क एक पुराने साथी श्री मोहनलाल कोचर के बीकानेर आगमन पर 20 अप्रल 1983 को एक स्नेह सम्मेलन रखा गया। इस अवसर पर श्री कोचर ने पाचवें दशक की राजनीतिक गतिविधिया पर प्रकाश डाला। 18 जून 1983 को मुरलीधर व्यास परिवार ट्रस्ट की एक आवश्यक बठक म ट्रस्ट की लेखा स्थिति पर विचार किया गया। इस बठक म ट्रस्ट के लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे। बठक में ट्रस्ट की गतिविधिया के साथ साथ ग्रथ प्रकाशन की प्रगति की समीक्षा भी की गई। सन् 1984 म 30 मई एव 4 जुलाई का क्रमश व्यासजी की पुण्य तिथि एवम् जयती के अवसर पर पारम्परिक कायक्रम आयोजित किये गये।

काल की नियामक गति के आगे कोई नही टिक पाता। व्यक्ति का यश ही ऐसा है जिस काल का चक्र भी भेद नहा सकता। मुरलीधर व्यास एसे व्यक्ति थे जो कालचक्र के प्रहारो के बावजूद अमर है और अमर रहेंगे।

□
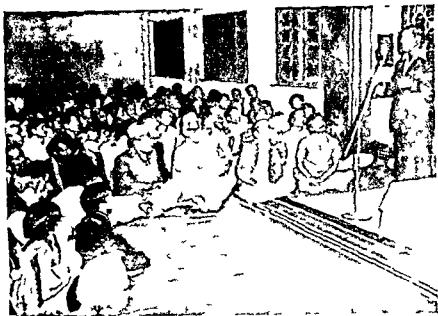
लाकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म कलकत्ता म जन विद्यालय, 18 डी सुकिया लेन म आयोजित कवि सम्मेलन म श्री भवानीशकर -यास 'विनोद' कविता पाठ कर रह हैं।

लोकनता स्व श्री मुरलीधर -यास की स्मृति म आयोजित कवि गोष्ठी मे अनिथि कवि

वरागी कविता पाठ कर रह हैं। पास म बठे हैं गोष्ठी के अ-यक्ष डॉ छगन
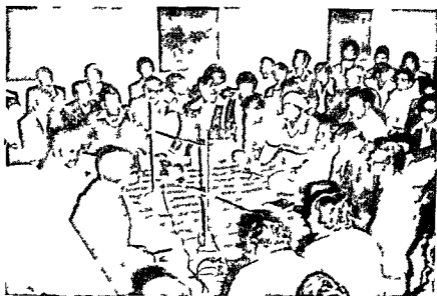
लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म आयोजित एक काव्य गोष्ठी का दृश्य। गोष्ठी म देश के लब्ध प्रतिष्ठ कवि श्री बालकवि बरागी ने भी भाग लिया। चित्र म सवश्री बालकवि बरागी और डा राजानन्द (कविता पाठ करत हुए)। सभागी हैं सवश्री बालचद सांड, गौरीशकर मधुकर इद्रनारायण मूथा भवानी शकर व्यास शिवकिसन बिस्सा गोविन्द जोशी बुलाकीदास बावरा लालचद भावुक मोहम्मद सदीक बिशन मतवाला अजीतसिह सिंघवी भवरलाल कोठारी एव अजीज आजाद आदि भाव विभोर होकर सुन रहे हैं।
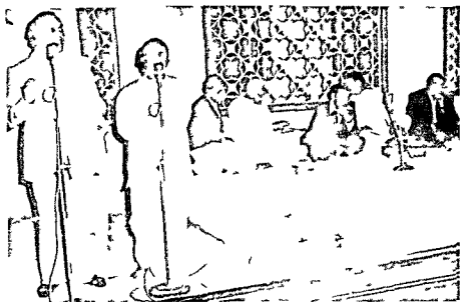
लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म आयोजित कवि सम्मलन म श्री गोपाल जोशी विशिष्ट अतिथि और श्री रिखबदास मसाली सबोधित कर रहे हैं। सभागी हैं श्री लालचद भावुक, अध्यक्ष श्री बृजरतन व्यास (ब्रजूभा), श्री भवानीशकर व्यास विनोद श्री भीम पांडिया, श्री शिवराज छगाणी और धनजय वर्मा आदि।

सुथारो की बडी गुवाड प्रतिमा स्थल, बीकानेर म स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म आयोजित कवि सम्मेलन म कविता पाठ करते हुए कवि श्री भरत व्यास

सुथारो की बडी गुवाड, बीकानेर स्थित स्व श्री मुरलीधरजी व्यास की मूर्ति के पास आयोजित विशाल कवि सम्मेलन के मंच की एक भव्य झांकी
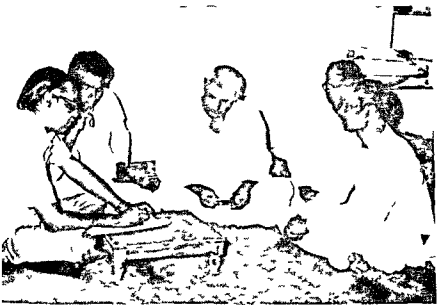
लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रथ के लिए सस्मरण लिखत हुए श्री भवानीशकर व्यास। सस्मरण सुनात हुए समाजवादी नता प्रो केदार और उपस्थित है श्री बालचद सांड जतनलाल डागा व नारायणदास रगा

लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति सभा म सुप्रसिद्ध गायक श्री मातीलाल रगा व्यासजी के गुण-गौरव की स्वर-सौरभ महका रह हैं। साथ म है श्री गणेश रगा।

लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म सुथारो की बडी गुवाड, बीकानेर म आयोजित कवि मम्मलन का रमास्वादन कर रहे है विशेष गणमान्य नागरिक साहित्यानुरागी सुधी श्रोतागण। मुख्य सभागी गण है (दायें से) श्री भवरलाल बद श्री मोतीलाल मालू श्री भवरलाल कोठारी एव श्री रतनलाल डागा।

लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्याम की स्मृति म सुथारा की बडी गुवाड, बीकानेर मे आयोजित कवि सम्मलन म मच का गौरवान्वित कर रहे हैं सवश्री भरत व्यास भवन जोशी *बृजमोहन व्यास महबूबअली बुलाकीदास बावरा गोकुलजी पुरोहित (धरनाव वाल)* शिवनारायणजी बिस्सा इलाहीबक्श उस्ता शायर इब्राहिम गाजी, मस्तान, शमीम, अविकादत्त गोस्वामी आदि।

और अन्त मे । कुछ विचार, कुछ सस्मरण

स्मृति शेष की स्थिति ही ऐसी है जब व्यक्ति नही होता लेकिन उसकी स्मृति कायम रहती है। इसे यो भी कह सकते हैं कि स्मृति ही उस व्यक्ति का पर्याय बन जाती है। आज व्यासजी की स्मृति जन जन मे रमी हुई है और यही उनको जन नायक भी बनाये हुए है। इस स्मृति को राष्टीय फलक के नेतागण तो प्रणाम करते ही हैं प्रातीय और स्थानीय लोग भी उससे प्रेरणा प्राप्त करत हैं। सच पूछो तो स्थानीय लोगा के लिए यह एक प्रकार की निधि है जिसे वे वडे ही मनोयोग स सजोय हुए हैं। ्यासजी के स्मृति ग्रथ के लिए और भी कई लोगा ने अपने विचार और श्रद्धाजलि आलेख भेजे हैं। कुछ एक आलेखो के अश जो कुछ विनम्र से प्राप्त हुए, यहाँ उद्धृत किय जाते हैं।

पूव विदेश राज्यमत्री, ससद सदस्य और सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री समरेन्द्र कुन्दु ने अपने आलेख म य विचार प्रकट किये हैं हम दोनो लम्बे समय तक साथ रहे। हमने सामाजिक परिवतन और समान न्यायवादी समाज की सरचना के लिए साथ-साथ सघप किया। वे मेरे परम निजी मित्र थे। उनक निधन स हमने सामाजिक न्याय एवम् आर्थिक समानता के महान् योद्धा को खोया है। मुझे विश्वास है कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समर्पित यह ग्रथ कई लोगा का प्रेरणा देगा जिससे वे उन लाखो करोडा दीन हीन लागो के लिए समर्पित जीवन बिता सकेंगे। श्री समरेन्दु कुन्दु ने हिन्द मजदूर सभा म ्यासजी की भूमिका का विशेष जिक्र करत हुए कहा है कि उन्होने श्रमिका और दलिता के लिए सघप किया और इस क्रम मे प्रतिष्ठा और सम्मान अर्जित किया। व अपने सिद्धा तो म अटल एक एसे जननता थ जिनकी चुम्बकीय उपस्थिति को हर जगह महसूस किया जाता था। वे समाज वादी धम निरपेक्षता और प्रजातत्र के महान् हिमायती थे। कोई भी लालच उनको अपने पथ से नही डिगा सकता था।

राजस्थान के पूव शिक्षा मत्री श्री बुलाकीदास कल्ला ने अपनी श्रद्धाजलि देत हुए कहा है कि 'व्यासजी एक लोकप्रिय जननता थे। उन्हाने राजस्थान और विशेष कर बीकानेर की जनता को एक सुयोग्य और सफल नेतृत्व दिया। वे अपन सिद्धान्ता म अटल एक ऐसे ओजस्वी वक्ता थे जो अपने पथ स कभी विचलित नहीं होते थ।

उनके नेतृत्व ने बीकानेर का एक राष्ट्रीय पहचान दी । उन्होने जनता को दिल खोल कर सेवा की और जनता ने भी उनको दिल खोलकर श्रद्धा दी । बीकानेर की जनता के लिए व्यासजी को भुला पाना सभव नही है ।

राजस्थान विधानसभा के पूव सदस्य, बीकानेर नगर परिषद् के पूव अध्यक्ष एवम् प्रदेश काग्रेस के उपाध्यक्ष श्री गोपाल जोशी ने ये विचार व्यक्त किये हैं,' राज नीति म उन्होने सत्य त्याग और सात्विकता के अध्याय जोडे। राष्ट्रीय स्तर के प्रभावशाली नेता होत हुए भी उन्होने न तो कभी राजनीति को अपनी स्वाथ सिद्धि का साधन बनाया और न ही समूहवाद एवम् सकुचित परिवार वाद के पोषक बने । सेवा उनका धम एवम् ध्येय था । विधानसभा म उनकी सिंह गजना अकाटय तक शक्ति और वाग्विदग्धता अपने आप म एक मिसाल थी । व जनहित की बात कहने म कभी भी नही चूकते थे लेकिन ऐसा करत हुए व्यक्तिगत कटुता की भावना से दूर रहते थे—यही उनका प्रबल जनाधार था ।'

गोआ मुक्ति सग्राम के एक सेनानी हैं श्री भैरूदत्त चौधरी। वे स्वर्गीय मुरलीधर व्यास के नेतृत्व म बलिदानी जत्थे के सदस्य के रूप म गोआ गये थे । उन्होने व्यासजी के योग्य नेतृत्व और देश हित म प्राणोत्सग करने की भावना का मार्मिक वणन किया है । अपने सरल शब्दो मे उन्होने गोआ सग्राम के उन दिनो को याद किया है जब मातृभूमि के लिए मरने को एक पव माना जाता था। उनके शब्दो मे 'मैंने मुरलीधर जी व्यास को कहा कि मैं भी आपके साथ गोआ चलूगा । मेरे जज्बात उठ खडे हुए थे । मेरे साथियो ने समझाया कि तुम मत जाओ तुम नौकर आदमी हो। लेकिन मैं रेलगाडी म बठ गया। मेडता रोड स्टेशन पर व्यासजी न कहा—'चौधरी साहब, आप भावना म आकर बठ तो गये हैं । अभी CROSS गाडी जा रही है । चाह तो बीकानेर लौट सकते है। इस पर मैंने कहा—'मैं एक्स सविस मन हू। सिपाही कदम आगे बढान के बाद वापस नही लौटता। व्यासजी समझ गये कि इनका निश्चय अटल है। बीकानर से जयपुर तक की उस यात्रा म ही मैं व्यासजी के अत्यन्त निकट आ गया । हम दोनो की काफी घनिष्टता हो गई।

जयपुर होत हुए हम बम्बई पहुचना था । जयपुर स बलिदानी जत्था पहले ही निकल चुका था । हम वहाँ जयनारायण जी व्यास से भी मिलन के लिए गये । उन्होने हमे आशीर्वाद दिया । उन्हान कहा कि आप 13 अगस्त को ही रवाना हो जाओ ताकि समय पर गोआ पहुच सको । गोआ म हमे 15 अगस्त को प्रवेश करना था ।

14 अगस्त को हम सुबह 8 बजे कल्याण पहुचे । फिर पूना, सितारा होते हुए रात को 2 - $2\frac{1}{2}$ बजे बेलगाम पहुचे । वहा लोहिया जी और अनक उच्च नेता तथा

कायकर्ता मौजूद थे। व्यासजी और त्यागी बाबा उनसे मिले तथा आगे के कायक्रम के लिए परामश किया। लोहिया जी ने बताया कि राज्य सरकार ने आगे के रास्ते बन्द कर दिये हैं। 15 तारीख को सत्याग्रह करना है। अगर आपका जाना है तो इसी गाडी से लौंडा जक्शन चले जाओ। वहाँ से गाडी कैशलरॉक जाती है। यह रास्ता पहाडी और दुगम है। अगर आप हिम्मत रखते हो तो इस रास्ते से जा सकते हो। व्यासजी और त्यागी बाबा ने निश्चय किया कि चाहे जो हो जाए, हम गोआ की धरती म अवश्य प्रवेश करेंगे। सत्याग्रह जरूर करेंगे। जयपुर की पार्टी के 11 आदमी पहले ही आ चुके थे—वे भी हमारे साथ हो लिये। त्यागी बाबा के साथ 28 आदमी थे। त्यागी बाबा मथुरा के थे। 4 बजे लौंडा जक्शन पहुचे। वहाँ की जनता ने हम कहा कि हम प्रभात फेरी कर रहे हैं—आप भी हमारे साथ आइये। हम उनके साथ हो लिये। तब तक बलिदानी जत्था के 181 आदमी इकट्ठा हो चुके थे। प्रभात फेरी के बाद झण्डा फहराया गया। व्यासजी ने हिन्दी ने ओजस्वी भाषण दिया। इस भाषण का सभी साथियो और स्थानीय जनता पर गहरा असर पडा।

फिर हम कैशलरॉक पहुचे। लोगो ने बताया कि यहा से आगे गाडी नही जाती। हम खुश्की रास्ते से आगे बढना पडेगा। तीन मील का पहाडी रास्ता है। उसके आगे फिर रेलवे लाइन मिल जाएगी। कैशलरॉक मे हमने पार्टी कार्यालय म अपना रुपया पैसा और फालतू सामान जमा करवा दिया। कारण यदि गोआ मे हम गिरफ्तार किया जाता तो वहा की पुलिस यह सब कुछ छीन लेती। वहा से हम 12 बजे रवाना हो गये। बरसात हो रही थी और पहाडी पर चारो ओर झरने टपक रहे थे। दो-ढाई मील चलने पर इण्डियन पुलिस का चेक पोस्ट आया। उन्होंने हमे कहा कि इस रास्ते से मत जाओ। यह दुगम रास्ता है। पहाडो के अन्दर से गुफाओ के अन्दर से गुजरना होगा। बेहतर है आप लौट जाए। हमने नही माना और भारत माता की जय का नारा लगाते हुए आगे बढ गये। मील भर के बाद एक बडी गुफा थी, फिर जगल था। हम लोग रेलवे लाइन के साथ साथ चलते रहे। मार्ग दशक हमारे साथ था। आधा मील चलने पर एक बोर्ड दिखाई दिया जिस पर एक तरफ लिखा था—बोम्बे और दूसरी ओर लिखा था—गोआ। एक कदम रखते ही हम गोआ मे प्रवेश करने वाले थे। हमने वहा पर मीटिंग की। व्यासजी ने भाषण दिया। सभी बलिदानी जत्थो ने अपने अपने नाम लिखकर फेहरिस्त बनाई। कुल 181 आदमी थे। सबने गोआ की धरती की मिट्टी से तिलक किया और हम गोआ मे प्रवेश कर गये।'

'एक फर्लांग के बाद फिर एक गुफा थी जिसमे से होकर रेलवे लाइन आगे गई थी। हमारे दल मे भैरूदत्त भारद्वाज के हाथ म झण्डा था। फिर व्यासजी और उनके पीछे हम लोग चल रहे थे। हमारे आगे भी कुछ लोग थे और पीछे भी कई

लोग थे। हम बीच मे थे। गुफा के अंधेरे म तीन आदमी दिखाई दिये। उन्होंने हम कहा कि लौट जाओ। हमारे स्वामी बाबा ने कहा—हम नहा लौटेंगे। हम आग बढेंगे। भारत माता की जय। लाठी गोली खायेंगे, गोआ मुक्त कराएग आदि वे नारे लगाय। वे तीनो आदमी गायब हो गय। अभी नारे बन्द ही नही हुए थे कि स्टनगन स तररन्तरर गोलियाँ चलने लगी। फायर शुरू हो गया। रिपीट फायर आने लगे। गुफा म हडबडी मच गई। लगातार फार्यारिंग हो रही थी। इतने मैं भन्दत्त भारद्वाज के पेट की साइड म गोली लगी और वह चक्कर खाने लगा। मरे बायें कधे पर एक झटका लगा। मैं व्यासजी का कुर्ता पकड कर एक दम दीवार के सहारे खडा हो गया। मैंने कहा नीचे लमन्ट हो जाओ वरना गोली लग जाएगी। एक गोली व्यासजी के दाहिनी बाँह स निकल गई। इतने मैं मैंन देखा—अजमेर वाला साथी रेंगते हुए जा रहा था। उसकी कमर म गोली लगी थी। मैंने कहा—देखलो यह हालत होगी। व्यासजी ने कहा हिम्मत रखो। हमने देखा कि एक सज्जन के गोली लगने से उनका कधा गिर गया था। बहुत स लोग रेंगत हुए गुफा स बाहर निकलने लग। हम लोग गुफा के बाहर आकर दाहिनी ओर खडे हो गये। बहुत स लाग बाइ तरफ स आकर बायें भाग म खडे हो गय। बीच म गोलियाँ चल रही थी।

व्यासजी कहने लग—भन्दत्त भारद्वाज सत्यनारायण हप और भवरलाल को देखो। भन्दत्त भारद्वाज गोली लगने स जख्मी हो चुका था। शेष दोनो सुरक्षित थे और गुफा के बाहर खड थे। गुफा म वापस जाने पर मैंने देखा कि भन्दत्त भारद्वाज बेहोश पडा है। भगवती देवी औरत होते हुए भी हमारे साथ दुबारा गुफा म घुसी थी। हमने भारद्वाज को उठाया और गुफा के बाहर लाये। वहाँ एक आदमी और था। उसन हमारी मदद की। हम लोग फिर गुफा म गय। और भी जख्मी लोगो को बाहर निकाला। कुछ व्यक्तियो ने हमारी मदद की। हमने देखा कुछ लोग मरे पडे हैं। कुछ जिन्दा ही दीवारो के साथ दुबके हैं और मिलिट्री वाले उन्हें बन्दूकों के कुन्दो से मार रहे हैं। जब उन्होने हमारे पांवो की आहट सुनी तो फिर फायर किया। हम लोग गुफा से बाहर आ गये। हमने गिनान्दो लाशें और 61 जख्मी थ। फिर हमन टाटल मिलाया तो हमारे 26 व्यक्ति कम मिले। 7 आदमी गिरफ्तार कर लिये गये थे जिन्ह तीन दिन बाद छोड दिया गया। 19 मारे गये। दो की लाशें हमारे सामने थी। कुल 21 लोग मरे थे। धातियो के स्टेचर बनाकर हम लोग मुर्दो और गभीर रूप से घायलो को चैक पोस्ट तक लाये। जहाँ इण्डियन पुलिस थी। उन्होने कहा—हमन आपको पहले ही बता दिया था कि गुफा म मत जाओ पर आप नही माने। हमने कहा—यह हमारा फर्ज था। हमने मातृ भूमि का कर्ज उतारा है।

सुप्रसिद्ध श्रमिक नेता श्री कल्याणसिंह व्यासजी के काफी निकटस्थ रहे हैं। व्यासजी ने समय-समय पर मार्गदर्शन, परामर्श एवम् सहयोग देकर बीकानेर म श्रमिक आदोलनो को गति दी थी। 1968 मे आयोजित एक दिवसीय रलवे हडताल का स्मरण करते हुए श्री कल्याणसिंह न निम्न विचार व्यक्त किये, पूरे भारतवर्ष म रलवे हडताल का आह्वान किया गया था। उसी क्रम मे 19 सितम्बर 1968 को बीकानेर मे भी एक दिवसीय हडताल का आयोजन किया गया। उस समय बीकानेर के पुलिस अधीक्षक श्री पी सी मिश्रा थे। व्यासजी के नेतत्व म हमने 16 सितम्बर को उनसे मुलाकात की और कहा कि यह केवल प्रतीकात्मक हडताल है। अनावश्यक दमन और गिरफ्तारियो से स्थिति बिगड सकती है। पुलिस अधीक्षक ने इस सुझाव पर ध्यान नही दिया और सभी महत्त्वपूर्ण नेताओ को गिरफ्तार कर लिया। व्यासजी को ता 17 सितम्बर को ही गिरफ्तार कर लिया गया। अन्य गिरफ्तार लोगो मे श्री हीरासिंह और श्री लक्ष्मणसिंह (ए ग्रेड ड्राइवर) तथा श्री पूर्णानद व्यास सम्मिलित थे।

19 तारीख को प्रात 8 बजे ही स्टेशन पर गोली काण्ड हो गया। बाजार बद हो गये। पूरे नगर म हडताल रही। मैं उस समय रतनबिहारी पार्क मे कही पर भूमिगत था। गोली काण्ड का सुनकर मैं स्टेशन गया। फिर जब मैं हास्पीटल की तरफ जाने लगा तो रास्ते म मुझे भी गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय मैं यूनियन का अध्यक्ष था। जब तक मुझे जेल म डाला गया, 4 बज चुके थे। उधर व्यासजी हीरासिंह और लक्ष्मणसिंह ने गोली काण्ड के विरुद्ध भूख हडताल कर रखी थी। व्यासजी ने बाहर की स्थिति के बारे म पूछा। मैंने कहा कि चतुर्भुज शकर के गोली लगी है, किसनगोपाल शहीद हो चुका है तथा एक रेलवे कर्मचारी की लडकी मजु सक्सेना के पिण्डली म गोली लगी है। मजु काफी आक्रामक मुद्रा म थी उसने एक अधिकारी के थप्पड जड दिया था। व्यासजी को बहुत गुस्सा आया। उसी समय जेल अधीक्षक के पास गये—कहा मुझे कलेक्टर से बात कराओ। कलेक्टर से बात हुई। व्यासजी ने कहा कि बीकानेर की जनता इस बबर अत्याचार को कभी बर-दास्त नही करेगी। उधर बीकानेर के हालात गभीर हो रहे थ। सरकार ने जाच के लिए शेरसिंह आयोग की घोषणा करदी। दूसरे दिन एक विराट आम सभा हुई। व्यासजी ने सरकार की नीयत पर अविश्वास प्रकट करते हुए शेरसिंह आयोग को धोखे की सज्ञा दी।

श्री कल्याणसिंह मानते है कि व्यासजी ने ही उनको ट्रेड यूनियन का रास्ता सिखाया था। 1961 म मै नादर्न रेलवे मन्स यूनियन वर्कशाप शाखा म कार्यकारिणी का सदस्य बना। व्यासजी का इस शाखा पर प्रभाव था। व्यासजी ने एक बार मेरी

ईमानदारी की परीक्षा भी ली थी। उन्होंने मुझे कहा कि "मैं तुम्हें सीमण्ट व टिना का परमिट दिला देता हू। हाथ अच्छी तरह चलेगा। सुखी रहोगे। उन दिनो सीमन्ट का बडा टिन 5 6 रुपया म आता था। मैंने कहा—व्यासजी मुझे तो बस, आपका आशीर्वाद चाहिए। कुछ देना ही हो तो ट्रेड यूनियन की शिक्षा दीजिए। व्यासजी बोले— शाबास मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। मेरे पास जो भी आता है मैं उसकी भावना देखता हू। तुम्हारी भावना लालच की नही हैं।

बाद म व्यासजी न मुझे हिन्द मजदूर सभा का उपाध्यक्ष बनाया। व मुझे लडके क समान मानत थ। उनकी ही कृपा स मैं आज सात वकशापो का अध्यक्ष हू। सात वकशाप हैं—जोधपुर, जगादरी अमृतसर कालका लखनऊ आलम बाग और चार बाग। व्यासजी न रेलव कमचारियो के लिए क्या नही किया? उन दिनो चौपूटी स लालगढ तक की सडक नही थी। रलव कमचारियो क बच्च रल पटरी क साथ साथ चलकर अपन घरो स आत जात थ। हर समय दुघटना का खतरा बना रहता। व्यासजी ने पी ड ल्यू डी मत्री राजा हरिश्चन्द्र स मिलकर 27000 रुपया की स्वीकृति पी डब्ल्यू डी का दिलवाई। उसी से यह सडक बनी।

सस्मरणों की शृखला म श्रमिक नता श्री राधेश्याम गौड न दो घटनाओ का जिक्र किया है। उनके शब्दो म सन् 1958 म हम लोग जल मे थ। जल म व्यासजी की तबियत कुछ खराब हो गई मेरा भी स्वास्थ्य ठीक नही था अत हम दोनो को अस्पताल ले जाया गया। दो चार मजदूर भी हमारे साथ थ। पी बी एम हास्पिटल म भी हमार हथकडियाँ लगी हुई थी। व्यासजी विधायक थ अत उनक हथकडी नहा लगाई गई। पीछे-पीछ सिपाही चल रह थ। जब हम डाक्टर क कमर स निकले तो एक छोटी सी लडकी न पीछ म व्यासजी का पल्ला पकडा और कहा कि आपको वह स्त्री बुला रही है। मैंने देखा—व्यासजी की पत्नी वहाँ खडी थी। गोदी म बच्चा था जो सीरियस था। उस डाक्टर को दिखान क इतजार म वह वहाँ खडा था। पत्नी न कहा—आप तो जलो म जात रहत हो—यहाँ यह बच्चा [illegible] म जा रहा है।

सुविधाएँ ही स्वीकार करेंगे। हम सब थड क्लास के हकदार थ। व्यासजी ने लिख कर दे दिया कि 'मैं स्वच्छा स थड क्लास म रहना चाहता हू। ऐस महान् नेता का भला कौन भूल सकता है?'

इसी सदभ म सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री रामदवर पाडिया का एक अतरग अनुभव उल्लेखनीय है। श्री पाडिया ने उन दिना का याद करत हुए लिखा है कि 'इन्ही दिना मरी पत्नी बीमार बच्चे को लकर पी बी एम हास्पिटल डाक्टर को दिखाने गई थी। डाक्टर की राय के अनुसार खून की जाँच जल्दी स जल्दी होनी जरूरी थी। लगभग 12 बज चुक थ। खून जाँच विभाग क लागा न उस दिन खून की जाच करने क लिए इन्कार करक दूसर दिन आन के लिए कहा क्योकि जाँच का समय समाप्त हा चुका था। पत्नी बच्च का लकर निराश मन स जब हास्पिटल स बाहर जा रही थी ता अचानक श्री व्यासजी की दृष्टि उन पर पडी। व्यासजी ने तुरत अपने पुत्र घनश्याम को भजा और हास्पिटल आने का कारण पूछा। खून जाँच न करन की बात का सुनकर बच्च का अपनी गाद म ल लिया और पुन अपने साथ खून परीक्षण केन्द्र म ल गय। जाँच के लिए खून दिलवाया और मेरी पत्नी को यह कहकर घर भज दिया कि इस काय के लिए आपका दुबारा यहाँ आने की जरूरत नही है। उसी दिन शाम हात-होते जाँच की रिपोट हास्पिटल स लकर घर भिजवादी।

ऐसे अनक प्रसग और सस्मरण हैं जा व्यासजी के अतरग जीवन की झाँकी प्रस्तुत करत हुए उनके उत्तम मानवीय गुणा का दिग्दर्शित करत है। सच बात ता यह है कि व्यासजी का जीवन उन सब के लिए एक प्रतिमान बन गया है जा राजनीति का आदर्शों से जोडना चाहत हैं। इसी सदभ म पूव विधायक श्री रामकिसनदास गुप्ता के विचार उल्लखनीय हैं। श्री गुप्ता के अनुसार राजनीतिक दृष्टि स दखा जाए तो बीकानेर सभाग म आजादी के बाद के बीस वष मुरलीधर व्यास क माने जाएग।

साधारण लागा क मता स जीतकर उन्होंने लगातार दस वर्षों तक विधानसभा म सत्ता व धन के नशे म चूर तत्कालीन प्रजातान्त्रिक राजाओं क समक्ष उनके भ्रष्ट कृत्यो को चीर-चीर क नगा कर जनता जनार्दन के सामन उन्ह दयनीय स्थिति म खडा कर दिया। साथ ही जनता क अभाव अभियोगा को अपनी आजस्वी हुकार स विधानसभा मे रखकर विधायक क दायित्व का सफलता पूवक निर्वाह भी किया।

'मुझे आज भी याद है। जब मुझे सन् 1977 म विधायक के रूप म राजस्थान विधानसभा म बालने का अवसर मिला तब विधानसभा के कई कमचारियो और दशकाने कहा कि, 'अच्छा, आप मुरलीधर जा के शहर स आय हैं तब ही विधानसभा के हॉल का गुजा रहे हैं, हिला दे रहे हैं। आपने ता व्यासजी की याद दिला दी है।

ईमानदारी की परीक्षा भी ली थी। उन्होंने मुझे कहा कि 'मैं तुम्हें सीमेण्ट के टिना का परमिट दिला देता हूं। हाथ अच्छी तरह चलेगा। सुखी रहोगे। उन दिनों सीमेन्ट का बडा टिन 5 6 रुपयो म आता था। मैंने कहा—"यासजी, मुझे तो बस, आपका आशीर्वाद चाहिए। कुछ देना ही हो ता टेड यूनियन की शिक्षा दीजिए। व्यासजी बोले— शाबास मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। मरे पास जो भी आता है मैं *उसकी भावना देखता हूं। तुम्हारी भावना लालच की नहीं है।*

बाद म "यासजी ने मुझे हिंद मजदूर सभा का उपाध्यक्ष बनाया। व मुझे लडके के समान मानते थे। उनकी ही कृपा स मैं आज सात वर्कशापों का अध्यक्ष हूं। सात वर्कशाप हैं—जोधपुर, जगादरी, अमृतसर, कालका, लखनऊ आलम बाग और चार बाग। "यासजी ने रेलवे कर्मचारियों के लिए क्या नही किया? उन दिनो चौखूटी से लालगढ तक की सडक नही थी। रेलवे कर्मचारियों के बच्चे रेल पटरी के साथ साथ चलकर अपने घरो स आते जाते थ। हर समय दुर्घटना का खतरा बना रहता। "यासजी ने पी डब्ल्यू डी मत्री राजा हरिश्चन्द्र स मिलकर 27000 रुपया की स्वीकृति पी डब्ल्यू डी को दिलवाई। उसी से यह सडक बनी।

सस्मरणों की शृंखला मे श्रमिक नेता श्री राधेश्याम गौड ने दो घटनाओं का जिक्र किया है। उनके शब्दों मे सन् 1958 मे हम लोग जेल मे थे। जेल म व्यासजी की तबियत कुछ खराब हो गई मेरा भी स्वास्थ्य ठीक नही था अत हम दोनो को अस्पताल ले जाया गया। दो चार मजदूर भी हमारे साथ थ। पी बी एम हॉस्पिटल म भी हमारे हथकडियाँ लगी हुई थी। "यासजी विधायक थे अत उनके हथकडी नही लगाई गई। पीछे पीछे सिपाही चल रहे थ। जब हम डाक्टर के कमरे स निकले तो एक छोटी सी लडकी ने पीछे स "यासजी का पल्ला पकडा और कहा कि आपको वह स्त्री बुला रही है। मैंने देखा— "यासजी की पत्नी वहाँ खडी थी। गोदी म बच्चा था जो सीरियस था। उसे डाक्टर को दिखान के इतजार म वह वहाँ खडी थी। पत्नी ने कहा—आप तो जेल म जाते रहते हो—यहाँ यह बच्चा मौत के मुह म जा रहा है। मै दिखाने लाई हू। "यासजी डाक्टर स मिले। बच्चे को भरती करवाया। पत्नी के भोजन की "यवस्था होटल स करवाई। मैंने कहा—' यासजी, बच्चा इस कदर बीमार है तो फिर जमानत क्यों नही करवा लेते?' "यासजी बोले—'बच्चे का इलाज तो डाक्टर करेगा। बचेगा तो बचेगा। मैं क्या करूगा? मेरी आँखो म आँसू आ गये। "यासजी बोले— मैं जेल से तभी छूटूगा जब सरकार सभी साथियो को छोड देगी।

1958 म जेल यात्रा के समय व्यासजी विधायक थ अत उन्हें प्रथम श्रेणी की सुविधा दी जानी थी। व्यासजी ने जेल अधीक्षक स कहा कि वे अन्य साथियों को मिलने वाली

सुविधाएं ही स्वीकार करेंगे। हम सब यह बनास के इन्चार्ज थे। व्यासजी ने लिख कर दे दिया कि 'मैं स्वेच्छा से यह क्लास में रहना चाहता हूं। ऐसे महान् नेता को भला कौन भूल सकता है ?'

इसी संदर्भ में सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री रामदेव पांडिया का एक अंतरंग अनुभव उल्लेखनीय है। श्री पांडिया ने उन दिनों को याद करते हुए लिखा है कि 'इन्हीं दिनों मेरी पत्नी बीमार बच्चे को ज्वर पी बी एम हास्पिटल डाक्टर को दिखाने गई थी। डाक्टर की राय के अनुसार खून की जाँच जल्दी से जल्दी होनी जरूरी थी। लगभग 12 बज चुके थे। खून जाँच विभाग के लोगों ने उस दिन खून की जाच करने के लिए इन्कार करके दूसरे दिन आने के लिए कहा क्योंकि जाँच का समय समाप्त हो चुका था। पत्नी बच्चे को लेकर निराश मन से जब हास्पिटल से बाहर जा रही थी तो अचानक श्री व्यासजी की दृष्टि उन पर पड़ी। व्यासजी ने तुरंत अपने पुत्र घनश्याम को भेजा और हास्पिटल आने का कारण पूछा। खून जाँच न करने की बात को सुनकर बच्चे को अपनी गोद में ले लिया और पुनः अपने साथ खून परीक्षण केन्द्र में ले गये। जाँच के लिए खून दिलवाया और मेरी पत्नी को यह कहकर घर भेज दिया कि इस कार्य के लिए आपको दुबारा यहाँ आने की जरूरत नहीं है। उसी दिन शाम होते-होते जाँच की रिपोर्ट हास्पिटल से लेकर घर भिजवादी।

ऐसे अनेक प्रसंग और संस्मरण हैं जो व्यासजी के अंतरंग जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हुए उनके उत्तम मानवीय गुणों का दिग्दर्शन करते हैं। सच बात तो यह है कि व्यासजी का जीवन उन सब के लिए एक प्रतिमान बन गया है जो राजनीति को आदर्शों से जोड़ना चाहते हैं। इसी संदर्भ में पूर्व विधायक श्री रामकिसनदास गुप्ता के विचार उल्लेखनीय हैं। श्री गुप्ता के अनुसार 'राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो बीकानेर संभाग में आजादी के बाद के बीस वर्ष मुरलीधर व्यास के माने जाएंगे।'

साधारण लोगों के मतों से जीतकर उन्होंने लगातार दस वर्षों तक विधानसभा में सत्ता व धन के नशे में चूर तत्कालीन प्रजातान्त्रिक राजाओं के समक्ष उनके भ्रष्ट कृत्यों को चीर-चीर के नंगा कर जनता जनार्दन के सामने उन्हें दयनीय स्थिति में खड़ा कर दिया। साथ ही जनता के अभाव अभियोगों को अपनी ओजस्वी हुंकार से विधानसभा में रखकर विधायक के दायित्व का सफलता पूर्वक निर्वाह भी किया।

'मुझे आज भी याद है। जब मुझे सन् 1977 में विधायक के रूप में राजस्थान विधानसभा में जाने का अवसर मिला तब विधानसभा के कई कर्मचारियों और दर्शकों ने कहा कि, 'अच्छा, आप मुरलीधर जी के शहर से आये हैं, तब ही विधानसभा के हाल को गुंजा रहे हैं हिला दे रहे हैं। आपने तो व्यासजी की याद दिला दी है।'

'मैंने विधान सभा से लेकर सचिवालय तक व आम सडको पर लोगो को व्यासजी का नाम इज्जत के साथ लेते हुए सुना है। आम लोगो द्वारा आज भी बीकानेर मे राजनीतिक कार्यकर्ताओ की जाँच-परख व्यासजी के व्यक्तित्व और योगदान को ही मद्देनजर रख कर की जाती है। वास्तव मे व्यासजी राजनीतिक पैमाना बन गये हैं।'

बीकानेर मे व्यासजी के राजनीतिक जीवन के प्रथम दशक मे श्रम आन्दोलनो तथा विधि प्रकरणो मे सक्रिय सहयोग देने वाले सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्री जयचद लाल नाहटा ने संस्मरण के रूप मे ये विचार व्यक्त किये हैं— स्व श्री मुरलीधरजी के साथ मुझे भी काय करने का अवसर मिला। सन् 1956 मे जामसर मे जिप्सम कपनी वालो ने मजदूरो पर भयकर अत्याचार किये एवम् सैकडो मजदूरो को नौकरी से भी निकाल दिया था। उस समय श्री मुरलीधरजी समाजवादी नेता के रूप मे आगे आये एवं उन्होने बीकानेर जयपुर एव दिल्ली तक लडाई लडी। इस लडाई मे मैं उनके साथ था। श्री व्यासजी को इसमे पूर्ण सफलता मिली और उसके परिणाम स्वरूप बीकानेर के मजदूर वग मे जबरदस्त चेतना आई। स्व श्री मुरलीधरजी एक सच्चे जननेता थे।

व्यासजी के जीवन से सक्रिय रूप से जुडे हुए कुछ नेताओ का स्मरण करना समीचीन होगा। इन नेताओ मे कर्पूरी ठाकुर, बाँका विहारी राजवत सिंह सेठ गोविन्ददास और गेंदासिंह आदि सम्मिलित हैं। अन्य राजनीतिक नेताओ एव कार्यकर्ताओ मे महारानी गायत्री देवी, परमानन्द त्रिपाठी चौधरी रामचन्द्र बशीलाल एडवोकेट भाई भगवान, चौधरी राजेन्द्रसिंह, परसराम त्रिवेदी, शान्ति त्रिवेदी (उदयपुर) परमानद त्रिपाठी (भीलवाडा) रामचन्द्र सक्सेना (बूदी) माणकलाल ठाकुर (नगवा) मिश्रीलाल (निंबाहेडा) प्रदीप बोस (कलकत्ता), प्रकाश पुरोहित (पापूलर) नवनीत पालीवाल (नाथद्वारा), सूर्यनारायण व्यास, शकुन्तला देवी (श्रीमती कल्याणसिंह), डा रामनारायण व्यास एव कुशलसिंह (चूरू) आदि अनेक नाम गिनाये जा सकते हैं।

ग्रंथ का समाहार सुप्रसिद्ध साहित्यकार एव चिंतक श्री हरीश भादानी के शब्दो से किया जा रहा है। उनके अनुसार स्व मुरलीधर व्यास के राजनैतिक कायकलाप की अलग पहचान बनाने के कई कारण रहे। सबसे पहले तो यह कि गाधी विचार और पद्धति से प्रभावित होकर भी कम पक्ष का जहाँ तक सम्बन्ध रहा वे कांग्रेस मे चलते आ रहे समाजवादी चिंतको-आचार्य नरेन्द्र देव जयप्रकाश नारायण और डा राममनोहर लोहिया से अधिक प्रभावित रहे। अलग पहचान का दूसरा और अहम् कारण उनका अपना राजनैतिक काय क्षेत्र अमरावती-अकोला हिंगनघाट वर्धा मे दीक्षित होकर उन्होने अपने राजनैतिक काय के लिए सामंती क्षेत्र को चुना। निश्चित रूप से परिस्थितियो का सही अनुमान करते हुए मुरलीधर व्यास ने बीकानेर को अपना राजनीतिक काय क्षेत्र बनाया। और विरोधी दल के रूप मे समाजवादी दल की पहल मुरलीधर व्यास ने की।' □

संदर्भ सूची

ओ, औ

क

ख

ग

त

द

ध

न

प

त

द

ध

न

प

म

र

म

र

ल

व

स

□